ॐ

विशद
अभिनव कल्पतरु
महामण्डल विधान

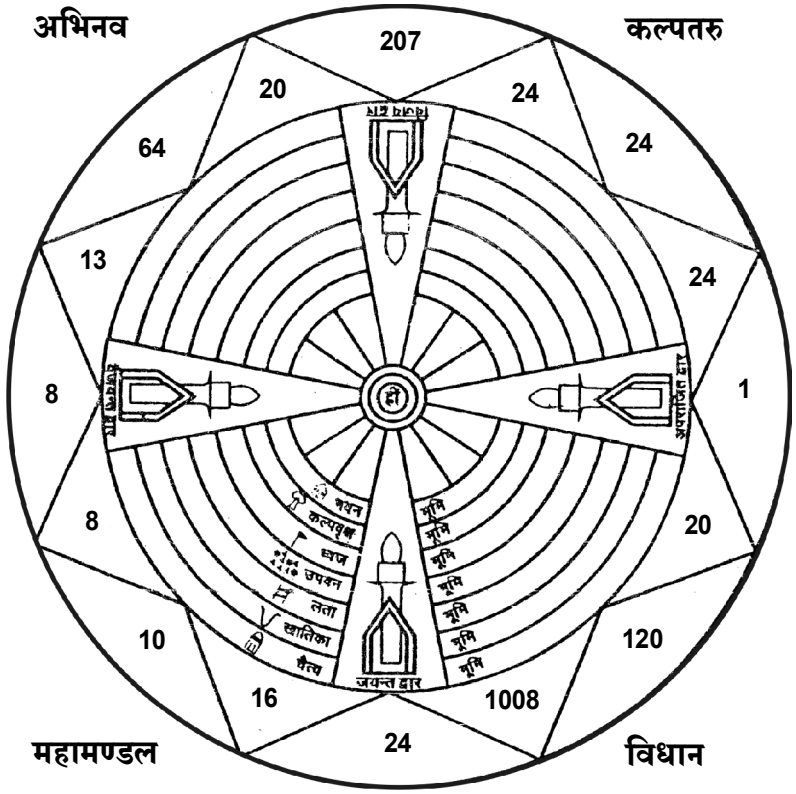

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद अभिनव कल्पतरु महामण्डल विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - द्वितीय -2017 • प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि विशालसागर जी,क्षु.विसोमसागर जी,ब्र. प्रदीप भैया

सहयोग - आर्यिका भक्ति भारती, क्षु. वात्सल्यभारती माताजी

संपादन - ब्र.ज्योतिदीदी(9829076085)
आस्थादीदी (9660996425), सपना दीदी 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

2. हरीश जैन, जय अरहंत ट्रेडर्स ,6561 नेहरू गली
गांधीनगर, नियर लालबत्ती चौक,दिल्ली 9818115771

3.सुरेश सेठी पी 958 शांतिनगर रोड न.3 दुर्गापुरा जयपुर

4.श्री दिगंबर जैन नेमीनाथ मंदिर, नेमिनाथ तीर्थ,
नैनवां बूंदी राज.

मूल्य - 151/- रु. मात्र

मुद्रक : एन.एस. एन्टरप्राईजिज
47,I फ्लोर, विजय ब्लाक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092
दूर0 : 9811725356, 9810035356,
01-40395480,e-mail:swaneeraj@rediffmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पेज नं.
1.	विशद वक्तव्य	4
2.	प्रणामाञ्जलि	5
3.	ज्ञातव्य (काव्य)	6
4.	मंगलाष्टकम्	11
5.	विनायक यंत्र पूजा	11
6.	ध्वजारोहण-विधि	20
7.	मण्डप प्रतिष्ठा विधि	23
8.	जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)	28
9.	लघु शान्ति धारा	31
10.	आरती	33
10.	विनय पाठ	33
11.	मंगल पाठ एवं पूजन प्रारम्भ	35
12.	श्री देव-शास्त्र-गुरु समुच्चय पूजन	38
13.	मूलनायक सहित समुच्चय पूजन	42
14.	अभिनव कल्पतरु विधान पूजन	47
15.	सोलहकारण भावना पूजा	51
16.	दशलक्षण पूजा	57
17.	रत्नत्रय पूजा	63
18.	सम्यक् दर्शन पूजा	66
19.	सम्यक्ज्ञान पूजा	71
20.	सम्यक् चारित्र पूजा	75
21.	चौंसठ ऋद्धि पूजा	81
22.	समवशरण पूजन	96
23.	श्री नवदेवता पूजा	105
24.	श्री अरहंत पूजा	110
25.	श्री सिद्ध पूजा	124
26.	आचार्य परमेष्ठी की पूजन	130
28.	उपाध्याय परमेष्ठी की पूजन	141
29.	सर्व साधु पूजन	149
30.	श्री जिनधर्म पूजन	159
31.	जैनागम पूजा	164
32.	श्री जिनचैत्य पूजन	170
33.	श्री जिन चैत्यालय पूजन	177
34.	श्री त्रिकाल तीर्थंकर पूजन	184
35.	भूतकालीन श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन	187
36.	भविष्यकालीन श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन	193
37.	वर्तमानकालीन श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन	200
38.	ऐरावत क्षेत्रस्य जिन पूजा	207
39.	विद्यमान बीस तीर्थंकर की पूजन	210
40.	श्री तीर्थंकर पंचकल्याणक समुच्चय पूजन	218
41.	तीर्थंकर गर्भ कल्याणक पूजन	221
42.	तीर्थंकर जन्म कल्याणक पूजा	227
43.	तीर्थंकर तप कल्याणक पूजा	233
44.	तीर्थंकर केवलज्ञानकल्याणक पूजन	240
45.	तीर्थंकर मोक्ष कल्याणक पूजा	247
46.	सहस्त्रनाम पूजन	255
47.	24 तीर्थंकर गणधर मुनि पूजन	367
48.	प्रशस्ति	377
49.	आरतियाँ	379-380
50.	समुच्चय महार्घ्य	381
51.	शांतिपाठ (भाषा)	382
52.	विसर्जन	385
53.	परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन	385
54.	आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती	389
55.	ग्रन्थ सूची	391

विशद वक्तव्य

पूर्वोपार्जित कर्मोदय के फल से संतप्त हुआ मानव दुखों से मुक्ति पाने के लिए अनेक पुरुषार्थ करता है किन्तु सम्यक् श्रद्धान् और ज्ञान के अभाव में समीचीन मार्ग पर नहीं चल पाता है। भगवान तीर्थंकर की वाणी को सुनकर पूर्वोचार्यों ने दुःख से मुक्ति एवं शास्वत सुख की प्राप्ति के लिए धर्म का मार्ग प्रशस्त किया है वह दो भागों में विभाजित है- (1) साधु धर्म (2) श्रावक धर्म। प्रथम साधु धर्म-वीतराग का मार्ग है जहाँ सकल संयम के द्वारा निर्विकारता को प्रखाप्त होकर एवं सम्यक् तप करते हुए साधक असंख्यात गुण कर्म निर्जरा करते हुए मुक्ति का राही बनते हैं। द्वितीय श्रावक धर्म-अशुभ कर्म की निर्जरा के लिए पुण्यार्जन कर शास्वत धर्म की प्राप्ति के लिए देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति का सहारा प्राप्त करता है।

श्रावक अधिकांश समय राग-द्वेष, मोह के वातावरण में अपना समय व्यतीत करता है पूर्व के संस्कार वशात् कहें या अन्तर्मन की वाञ्छा की प्रबलता कहें कि मानव संसारिक कार्यों में अधिक रुचिवान रहता है। अतः श्रावक के मन को भोग छोड़कर योगों की ओर मोड़ने का सरल तरीका जिनेन्द्र भक्ति है- जो मुक्ति का भी कारण हैं। कहा भी है-**''भक्ति मुक्ति दायिनी''** और भक्ति का लक्षण करते हुए आचार्यों ने कहा- **''पूज्येषु गुणानुरागोभक्ति''** अर्थात् पूज्य पुरुषों के गुणों में होने वाला अनुराग ही भक्ति है।

देखा जाता है संगीतमय विधान इत्यादि के अवसर पर इन्द्र-इन्द्रानियाँ एवं श्रोतागण भक्ति में भाव-विभोर होकर झूमने लगते हैं। उस समय लगता है वह स्वयं इन्द्र बनकर प्रभु की भक्ति में उपस्थित हुए हैं अतः भक्ति के लिए नवीन कृति की भावना लोगों के द्वारा जाहिर होने पर यह **''अभिनव कल्पतरू विधान''** का सृजन करने का उद्यम किया गया, जिसका प्रकाशन 'रेवाड़ी' शहर के धर्मानुरागी महानुभावों के द्वारा किया जा रहा है तथा सर्वप्रथम विधान भी यहीं पर होने जा रहा है। अंत में यही भावना भाते हैं इस विधान के द्वारा अधिक से अधिक लोग धर्म लाभ लेकर आत्मकल्याण की ओर बढ़ते हुए पुण्य का अर्जन करें।

-आचार्य विशदसागर

प्रणामाञ्जलि

पूजार्हणार्चा यजनं च यज्ञ इज्या सपर्या परिसेवनं च।
महः क्रतुः कल्प उपासनेति प्रभृत्युपाख्या जिनपूजनस्य।।

पूजा, अर्हणा, अर्चा, यजन, यज्ञ, इज्या, सपर्या, सेवा, मह, कृतु, कल्प, उपासना आदि पूजा के पर्यायवाची नाम हैं। सभी का तात्पर्य है पाप क्रियाओं का त्याग करके, विकल्परहित निर्मल भावों से, आराधना में, मन, वचन, काय से समर्पित होना। आचार्यों ने दान, पूजा, शील, उपवास से ही श्रावक के पापों का प्रक्षालन होना बताया है, यहाँ तक कि निधति, निकाचित कर्मों का क्षय भी इसी पवित्र भावना से सम्भव है। इसी भावना को हृदयगंत करते हुए परम पूज्य **आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज** ने **'विशद अभिनव कल्पतरू विधान'** की रचना की है, जैसे महापुराण में पूजन के भेद बताते हुए आचार्य लिखते हैं–

प्रोक्ता, पूजार्हतामिज्या, स चतुर्धासदार्चनम्।
चतुर्मुखः महः कल्पद्रुमश्चाष्टाह्निकोऽपि च।।

पूजा चार प्रकार की होती है– सदार्चन, चतुर्मुख, कल्पद्रुम और अष्टाह्निक इसमें कल्पद्रुम पूजा का एक विशेष महत्त्व होता है। यह कल्पद्रुम पूजा कैसे की जाती है और कौन करता है इसका उल्लेख करते हुए आचार्य लिखते हैं–

दत्वां किमिच्छकं दानं सम्राड्भिर्यः प्रवर्त्यते।
कल्पद्रुम महासोयं जगदाशाप्रपूरणः।।

अर्थात् जो चक्रवर्तियों द्वारा किमिच्छिक दान देकर किया जाता है और जिसमें जगत के सब जीवों की आशायें पूर्ण की जाती हैं वह कल्पद्रुम नाम का यज्ञ कहलाता है।

पूज्य आचार्यश्री विशदसागरजी की लेखनी से सृजित **'विशद अभिनव कल्पतरु विधान'** समस्त श्रावकों के संविधान को परिवर्तित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। जैसे श्रावकों को संत सान्निध्य के सौभाग्य के साथ धार्मिक अनुष्ठानों का लाभ भी निरन्तर मिलता रहता है। जहाँ–जहाँ संतों के चरण पड़ते हैं, वहाँ ज्ञान की गंगा बहती है जिसमें आबाल, वृद्ध अवगाहन कर आत्मा को निर्मल करते हैं। आचार्यश्री की यह कृति सभी जीवों को लाभान्वित करेगी। ऐसी हम सभी की भावना है।

गुरु चरणों में त्रय बार नमोस्तु–3

प्रतिष्ठारत्न – ब्र. नितिन भैया (खुरई)

ज्ञातव्य (काव्य)

मंगलमय मंगल कहे, श्री जिनवर अरहंत।
मंगलमय मंगल परम, सिद्ध अनन्तानन्त।।
मंगलमय आचार्य हैं, उपाध्याय जिन सन्त।
राही मुक्ति मार्ग के, शिवरमणी के कन्त।।
वृषभादिवीरान्त हुए, कुन्द कुन्द आचार्य।
इसी परम्परागत हुए, आदि सागराचार्य।।
महावीर कीर्ति आचार्य जी, विमल सिन्धु आचार्य।
भरत सिन्धु आचार्य अरु, विराग सिन्धु–आचार्य।।
तीन लोक में और सब, तिष्ठें जैन ऋशीष।
उन सबका मुझको मिले, विशद श्रेष्ठ आशीष।।
पूजा अभिनव कल्पतरु, पावन परम विधान।
शुभ भावों से किया है, जिनवर का गुणगान।।

अनुपम भक्ति गंगा में अवगाहन हेतु शांति सौभाग्य वर्द्धित करने हेतु श्रद्धावान् महानुभावों के लिए **''विशद अभिनव कल्पतरु''** विधान की रचना की गई जिसकी संक्षिप्त रूप रेखा इस प्रकार है–

भव्य जीवों के पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में सुख–शांति एवं मुक्ति के सोपान स्वरूप इस कृति में भगवान जिनेन्द्र देव की समवशरण में विराजमान भक्ति आराधना का श्रेष्ठ फल प्राप्त हुआ है। भक्ति भाव से शुभ काल में विधान करने कराने अनुमोदना से असीम पुण्य का संचय जिससे मनोवांछित फल एवं सातिशय पुण्य प्राप्त होगा जो परम्परा से मोक्ष का साधन होगा।

पूज्य आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में भी कहा है–

देवाधिदेव चरणे परिचरणं सर्व दुःख निर्हरणं।
काम दुहि काय दायिनी, परिचिनुयादादृतो नित्यम्।।

देवाधिदेव सर्वज्ञ प्रभु के चरण–कमलों की नित्य पूजा सर्व इच्छित फलों को प्रदान करने के लिए फलप्रद एवं समस्त दुःखों का क्षय करने वाली है।

श्री कुन्दकुन्दाचार्य ने श्रावक के कर्त्तव्य का वर्णन करते हुए कहा है–

''दाणं–पूजा मुक्खं, सावय धम्मो–ण–तेण विणा'' दान और पूजा श्रावक का मुख्य धर्म है। इसके अभाव में श्रावक का धर्म नहीं हो सकता है।

रचना

जैनधर्म सत्य, अहिंसा, वीतरागता एवं स्याद्वाद सिद्धान्त को अपने गर्भ में संजोये हुए है, आचार में अहिंसा विचार में अनेकान्त एवं वाणी में स्याद्वाद इसका स्वाभाविक गुण है। अध्यात्म के साथ-साथ जैनधर्म में भक्ति का विशेष स्थान है। स्याद्वादी जिनभक्त श्रावकों की भक्ति को दृष्टि में रखते हुए इस विधान की रचना की गई।

आयोजन

सोलहकारण, दशलक्षण अष्टाह्निका आदि महापर्वों में यह विधान अच्छी तरह से किया जा सकता है। पर्वों के अनन्तर शुभ मुहूर्त, शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र एवं शुभ योग में अथवा पंचकल्याणक तिथियों से प्रारम्भ करना श्रेयस्कर रहेगा। चतुर्थी नवमीं एवं द्वादशी से विधान का शुभारम्भ नहीं करना श्रेयस्कर रहेगा।

सिद्ध, अमृत एवं आनन्दादि शुभ योगों में ही ध्वजारोहण, कलश स्थापना, विधान का शुभारम्भ, समापन एवं हवन आदि करना चाहिए।

विधान का आयोजन 9 से 12 दिन तक सानन्द सम्पन्न किया जा सकता है।

विधान के शुभारम्भ में सौधर्म इन्द्र या यज्ञनायक के शुभ स्थान से मंगल कलश, घट यात्रा एवं समापन पर श्री जी की विशाल रथयात्रा विशेष धूमधाम से निकालना चाहिए।

पात्र

अभिनव कल्पतरु महामण्डल विधान, विश्व शान्ति महायज्ञ में यज्ञनायक (विधानकर्ता) का विशेष महत्व है। यज्ञनायक के अतिरिक्त चक्रवर्ती सौधर्म इन्द्र, कुबेर आदि पात्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। सौ इन्द्रों की स्थापना करना चाहिए यदि सम्भव हो तो अन्यथा 6-8-12-16 आदि में कार्य पूर्ण कर सकते हैं।

विधानाचार्य

विधान की विधि सम्पन्न करने वाला विद्वान् आर्ष परम्परानुयायी, स्याद्वादी,

भाषा विशेषज्ञ, स्पष्ट उच्चारण करने वाला, मधुर भाषी, अणुव्रती, शुद्ध आचरण वाला निर्लोभी एवं ज्योतिष, मन्त्र तथा शुभा-शुभ शास्त्रों का जानकार होना चाहिए। लालची एवं श्रावक के मूलगुणों से रहित मिथ्याभाषी स्वार्थी विद्वानों से विधि विधान का आयोजन नहीं करना चाहिए।

सामग्री

विधान सामग्री संग्रहीत करते समय यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि सभी सामग्री शुद्ध एवं प्रासुक ही हो।

विधान में श्रीफलों का प्रयोग श्रेयस्कर होगा, यदि समुचित अर्घ्यों के लिए श्रीफल उपलब्ध नहीं हो तो पूर्णार्घ्यों में श्रीफल तथा सामान्य अर्घ्यों में बादाम, अखरोट, सुपारी आदि उत्तम फल चढ़ाना चाहिए।

धूप की सामग्री शोध सुखाकर कुटवाना चाहिये। बाजार की कटी हुई धूप प्रयोग में नहीं लेना चाहिए।

इन्द्र-इन्द्राणियों को सादा एवं शुद्ध भोजन दिन में एक बार करना चाहिये और जितने दिन तक विधान चले उतने दिनों तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए व्रतियों के समान सुबह शाम की सामायिक भी करना चाहिए तथा गृह कार्यों से मुक्त रहने का प्रयत्न करना चाहिये।

इन्द्र-इन्द्राणियों को केशरिया शुद्ध-सादा वस्त्रों के साथ हार मुकुट आदि आभूषण यथा शक्ति धारण करना चाहिए।

इन्द्र प्रतिष्ठा के अनन्तर इन्द्र-इन्द्राणियों को सूतक-पातक नहीं लगता किन्तु ऐसे समय में उन्हें घर पर भोजन नहीं करना चाहिए।

इन्द्रसभा

आरती एवं शास्त्रजी की सभा के अनन्तर प्रतिदिन रात्रि को इन्द्रसभा का आयोजन अथवा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम करना चाहिये, जिसमें तत्त्व चर्चा का समावेश होना चाहिए।

(1) विधान शुभारम्भ से पूर्व आचार्य निमन्त्रण करना चाहिए। जिसमें सर्वप्रथम आचार्य, मुनिसंघ को श्रीफल समर्पित कर विधान में सम्मिलित होने का

निवेदन करना चाहिए। तदन्तर विधानाचार्य को श्रीफल एवं वस्त्रादि समर्पित कर निमन्त्रित करना चाहिए।

(2) विधान के शुभारंभ में यज्ञनायक के स्थान से मंगल कलश यात्रा शुभारंभ कर मण्डप एवं शुद्धि हेतु घट यात्रा अर्थात् धूमधाम के साथ कुए से प्रासुक जल लाना चाहिए।

(3) विधान मंडप के सन्मुख पाण्डाल से कम से कम सात हाथ ऊँचे ध्वज दण्ड के साथ ध्वजारोहण विधि विधान से करना चाहिए।

(4) मंत्रित जल एवं पीली सरसों आदि से मण्डप शुद्धि करना चाहिए।

(5) इन्द्र प्रतिष्ठा, सकलीकरण, अंकन्यास आदि।

(6) विधि-विधान के साथ सवा लाख या 31 हजार जाप्य अनुष्ठान करना चाहिये तथा जाप्य पूरा होने के अनन्तर दशांश आहुतियों के साथ हवन करना चाहिये।

(7) विधान के शुभारम्भ में मंगलाष्टक एवं सिद्ध, चैत्य व पंच गुरु भक्ति पूर्वक शुद्ध प्रासुक जल से श्रीजी का अभिषेक एवं शान्ति धारा करना चाहिये।

(8) देव-शास्त्र-गुरु, समुच्चय या पंच परमेष्ठी तथा स्वयंभू पूजन प्रतिदिन करना चाहिये।

(9) विधान के प्रारम्भ में निर्धारित अर्घ्य चढ़ाकर अभिनव कल्पतरु प्रारम्भ करना चाहिए।

(10) प्रतिदिन विधान पूर्ण होने पर अंतिम जयमाला से पूर्व विधान मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिये।

(11) रात्रि को भक्ति भाव से आरती, प्रवचन एवं सांस्कृतिक आयोजन करना चाहिये तथा सम्भव हो तो इन्द्र सभा भी करनी चाहिए।

(12) विधान के अंत में प्रातःकाल हवन एवं दोपहर को श्रीजी की रथयात्रा, महामस्तकाभिषेक तथा प्रीतिभोज आदि करना चाहिए।

– मुनि श्री विशालसागरजी

मण्डल रचना

12′/12′ के चौकोर चबूतरे या चौकियों पर सुन्दर नक्शे (मानचित्र) के अनुसार समवशरण की एवं मण्डल की रचना करनी चाहिए। बीच में गंध कुटी (पाण्डुक शिला) पर चतुर्मुखी प्रतिमाएँ विराजमान करना चाहिए। मानस्तम्भ गोपुर, मंगल द्रव्य एवं प्रातिहार्य आदि से समवशरण को विशेष विभूषित करना चाहिये।

मण्डल रचना

प्रतिदिन पूजनोपरान्त निम्नलिखित मंत्र का 108 बार जाप पूर्वक लघु आहुति सभी इन्द्र इन्द्राणियों से करायें।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिनवकल्पतरु स्वयंभुवे नमः

जाप्यानुष्ठान में भी इसी मंत्र का विधि पूर्वक जाप करें।

विधान पूजन समापन के समय विधान में भाग लेने वाले सभी महानुभावों को शुद्ध मिष्ठानादि अवश्य वितरित करना चाहिये। इसी अवसर पर ज्ञान दानादि का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि विधानोपलक्ष्य में कोई शास्त्र छपवाकर वितरित किया जाये तो अति उत्तम होगा। यह सम्भव नहीं हो तो कम से कम 108 शास्त्र मँगवाकर योग्य पुरुषों, साधु-सन्तों, जिनमन्दिरों एवं वाचनालय आदि को अवश्य ही भेंट करना चाहिये।

विधान का फल– इस विधान को उत्तम भावना एवं विधि विधान के साथ करने वाले महानुभाव इस लोक में मनोवांछित पुण्यार्जन करते हुए परम्परा से इन्द्र चक्रवर्ती आदि उत्तम पदों को प्राप्त होते हुए मुक्ति फल को प्राप्त करेंगे।

विधान के प्रकाशन में प्रेस, कॉपी आदि करने में संघस्थ साधुओं विशेष रूप से ब्रह्मचारिणियों ने अपना समय दान देकर तथा समाज के धर्मानुरागी विशेष श्रावकों ने अर्थदान देकर सहयोग प्रदान किया है। उन सभी के ज्ञानावरण कर्म का क्षय हो एवं सभी भक्ति के प्रभाव से सम्यक् सुख प्राप्ति की ओर अग्रसर हों, यही भावना है।

(पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें-)

3

2 卐 24

5

श्लोक– रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

मंगलाष्टकम्

(नोट– ''कुर्वंतु ते मंगलम्'' बोलते हुए पुष्पांजलि क्षेपण करें)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र–महिता: सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा:।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा: पूज्या उपाध्यायका:।।
श्रीसिद्धान्त–सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका:।
पञ्चैते परमेष्ठिन: प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र – सुरा – सुरेन्द्र – मुकुट, प्रद्योत – रत्नप्रभा–
भास्वत्पाद–नखेन्दव: प्रवचनाम्भोधीन्दव: स्थायिन:।
ये सर्वे जिन–सिद्ध–सूर्यनुगतास्ते पाठका: साधव:,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरव: कुर्वन्तु ते मंगलम्।।1।।

सम्यग्दर्शन–बोध–वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति–श्री–नगराधिनाथ–जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रद:।
धर्म: सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम्।।2।।

नाभेयादि–जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशति:,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु–प्रतिविष्णु–लांगलधरा: सप्तोत्तरा विंशतिः
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषा: कुर्वन्तु ते मंगलम्।।3।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणा: कुर्वन्तु ते मंगलम्।।4।।

ये सर्वौषधऋद्धय: सुतपसो वृद्धिंगता: पञ्च ये,
ये चाष्टांग–महानिमित्त–कुशला येऽष्टौ वियच्चारिण:।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वरा:,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृत: कुर्वन्तु ते मंगलम्।।5।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपते: सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणाऽवनय: प्रसिद्धविभवा: कुर्वन्तु ते मंगलम्।।6।।

ज्योतिर्व्यन्तर–भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बू–शाल्मलि–चैत्यशाखिषु तथा वक्षार–रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहा: कुर्वन्तु ते मंगलम्।।7।।

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जात: परिनिष्क्रमेण विभवो य: केवलज्ञानभाक्।
य: कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावित: स्वर्गिभि:,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मंगलम्।।8।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य–संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुष:।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यापाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि।।9।।

।। इति मंगलाष्टकम्।।

विनायक यंत्राभिषेक

प्रासुक निर्मल नीर गंध से, श्रेष्ठ कलश भर लाय।
करने यंत्राभिषेक यहां पर ,निर्मल भाव बनाय है।।
तीन लोक के स्वामी जिनवर, जिनवाणी का करें प्रकाश।
बीज मंत्र युत यंत्र जीव के, करता है विघ्नों का नाश।।

अभिषेक मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्षीं क्षीं ह्वीं ह्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन यंत्रमभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)(जोगीराशा छंद)

विनायक यंत्र पूजा

स्थापना

पञ्च परम परमेष्ठी पावन, मंगल कहे गए हैं चार।
चार लोक में उत्तम गाए, शरण चार हैं अपरम्पार।।
विघ्न विनाशन हेतू सबका, करते हैं हम आह्वानन् ।
आओ तिष्ठो हृदय हमारे, कृपा करो तुम हे ! भगवन्।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूताः ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जोगीराशा छंद)

गंगा जल को प्रासुक करके, धारा तीन कराएँ।
जन्म–जरा–मृत्यु विनाशकर, मोक्ष महल को जाएँ ।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का चन्दन घिसकर , केसर साथ मिलाएँ।
भव सन्ताप नाश हो मेरा, विशद भावना भाएँ।।

अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत धोकर उसके, अनुपम पुञ्ज बनाएँ।
अक्षत पद पाएँ हम दाता, जग में न भटकाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रंग बिरंगे पुष्प निराले, लेकर थाल भराएँ।
काम रोग नश जाए हमारा, आत्म विशुद्धि पाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू बावर फेनी आदि, मीठे सरस बनाएँ।
क्षुधा वेदनी नाश हेतु शुभ, भर–भर थाल चढाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

घृत की ज्योति जला दीपक में, मोह महातम नाशें ।
भेद ज्ञान के द्वारा अनुपम, आतम ज्ञान प्रकाशें।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ने हमें सताया, दुःख सहे अतिभारी।
धूप जलायें कर्मनाश को, आई हमारी वारी।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला सेव नारंगी पिस्ता, के यह थाल भराए।
मोक्ष महाफल पाने को यह, चरणों आज चढ़ाए।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत-जिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए।
पद अनर्घ पाने को हम भी, आज शरण में आए।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत-जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य शंभू छंद

जिनने कर्म घातिया नाशे, केवलज्ञान प्रकाश किया।
दोष अठारह से विरहित हो, निज स्वभाव में वास किया।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
अर्हन्तों के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रां अनन्तचतुष्टयादि लक्ष्मीविभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए फिर, अष्ट सुगुण जो प्रगटाए।
ज्ञान शरीरी हुए महाप्रभु, अष्टम वसुधा को पाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
जिन सिद्धों के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठ-भस्मीकुर्वते सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षा दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, मुक्ती पथ के हैं आधार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
जैनाचार्यों के चरणों में, सादर शीश झुकाते है।।3।।

ॐ ह्रूं पञ्चाचार-परायणायाचार्य-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, पाठी मुनिवर रहे महान्।
पच्चिस मूलगुणों के धारी, उपाध्याय हैं जगत प्रधान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, बनाकर उनके चरण चढ़ाते हैं।
उपाध्यायों के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रौं द्वादशांग-पठनपाठनोद्यताय उपाध्याय-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की आशा के त्यागी, हैं आरम्भ परिग्रह हीन।
रत्नत्रय के धारी मुनिवर, ज्ञान ध्यान तप रहने लीन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
सर्व साधुओं के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रः त्रयोदश-प्रकारचारित्राराधकसाधु-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज: नशे घातिया.....)

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, अर्हत् पदवी पाए।
केवलज्ञान जगाने वाले, मंगल प्रथम कहाए।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिविध कर्म से रहित हुए हैं, आठों कर्म नशाए।
सिद्ध शिला पर धाम बनाया, मंगल सिद्ध कहाए।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।7।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता भाव धारने वाले, रत्नत्रय के धारी।
सहते हैं उपसर्ग परीषह, साधू मंगलकारी।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।8।।

ॐ ह्रीं साधुमंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म केवलज्ञानी कृत, जानो जग हितकारी।
सुख शांती सौभाग्य प्रदायक, जग में मंगलकारी।।

मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।9।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्म-मंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज : नन्दीश्वर श्री जिन धाम.....)

हे लोकोत्तम ! अरहन्त, जग-जन हितकारी।
हो जाए भव का अन्त, भव भव दुख हारी।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सिद्ध शिला के ईश, शिव सुख के कर्ता।
हे लोकोत्तम ! जगदीश, कर्मों के हर्त्ता।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यादिक निर्ग्रंथ, रत्नत्रय धारी।
यह लोकोत्तम है संत, अतिशय अविकारी।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधुलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी उपदिष्ट, जैन धरम जानो।
है लोकोत्तम जग इष्ट, हितकारी मानो।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलिप्रज्ञप्त-धर्मलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

शरण श्रेष्ठ है अर्हन्तों की, सारे जग में पावन।
सुख शांती आनन्द प्राप्त हो, जीवन हो मन भावन।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाए।
शाश्वत पद पाने को, पद में सादर शीश झुकाए।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हत्शरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शरण है मंगलकारी, हम भी शरणा पाएँ।
कर्म नाशकर अपने सारे, भव में न भटकाएँ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाए।
शाश्वत पद पाने को, पद में सादर शीश झुकाए।।15।।

ॐ ह्रीं सिद्धशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनाचार्य उपाध्याय साधु, होते पञ्चाचारी।
शरण प्राप्त हो हमको उनकी, पाने पद अविकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाए।
शाश्वत पद पाने को, पद में सादर शीश झुकाए।।16।।

ॐ ह्रीं साधुशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म केवलज्ञानी कृत, उत्तम शरण कहाये।
पाया नहीं है अब तक हमने, अतः जगत भटकाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाए।
शाश्वत पद पाने को पद में सादर शीश झुकाए।।17।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्त-धर्मशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठी मंगल हैं उत्तम, चार शरण सुखकारी।
भवि जीवों के लिए अनादि होते मंगलकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाए।
शाश्वत पद पाने को, पद में सादर शीश झुकाए।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि-सप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- परमेष्ठी जिन पञ्च हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार हैं भक्ति के, परम पूज्य आधार।।

(छन्द चौपाई)

विघ्न विनाशी आप कहाए, नर सुर के स्वामी कहलाए।
अग्रेसर जिनवर को जानो, इष्ट सभी जीवों को मानो।।1।।
अनाद्यानन्त कहा जो भाई, जग में फैली है प्रभुताई।
मम् विघ्नों का वारण कीजे, विनती मेरी यह सुनलीजे।।2।।
मुनियों के आधीश कहाए, गणाधीष इस जग में गाए।
स्तुति जिनकी मंगलकारी, सब विघ्नों की नाशनहारी।।3।।
शांति प्रदायक जग में भाई, जिनवर की स्तुति अधिकाई।
कलुषित कली काल के प्राणी, मिथ्यावादी हैअतिमानी।।4।।
भव्य जीव सद्दर्शन पावें, ज्ञान सुधारस सम हो जावें।
पाप पुञ्ज नश जाए सारा, जीवन मंगलमय हो प्यारा।।5।।
यही मान्य गणराज कहाए, जिनकी भक्ती शान्ति दिलाए।
विनय आपकी जो भी धारे, वह सब दोषों को परिहारे।।6।।
नाम आपका जो भी ध्यावे, श्रेष्ठ गुणों को वह पा जावे।
इष्ट सिद्धि हो जावे भाई, यह जिन भक्ति की प्रभुताई।।7।।
जय-जय हो जिनराज तुम्हारी, सर्व गुणों के तुम अधिकारी।
सुर-गुरु कोटि वर्ष तक गावें, तो भी पूर्ण नहीं कहपावें।।8।।
विशद अल्प बुद्धी के धारी, कितना जोर लगावे भारी ।वह गुण क्या
तुमरे कह पावें,अपना जीवन की पूर्ण कह लगावें।।9।।

सोरठा- **तुम हो सर्व महान्, हम दोषों के कोष हैं।**
किया अल्प गुणगान, अल्पबुद्धि से आपका।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश मन्त्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **बुद्धि अनाकुल होय, धर्म प्रीति जागे परम।**
मोक्ष प्राप्त हो सोय, जैन धर्म को धारकर।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ध्वजारोहण-विधि

* ध्वजदण्ड मण्डप की ऊँचाई से दुगना हो, 3 कटनी हो, ध्वजदण्ड पीले खोले से ढका हो ऊपर से गोट लगा हो।

* शिखर पर लगे हुए कलश से 1 हाथ ऊँची ध्वजा नीरोगता, 2 हाथ ऊँची ऋद्धि, 3 हाथ ऊँची सम्पत्ति, 4 हाथ ऊँची शासक समृद्धि, 5 हाथ ऊँची सुभिक्ष राष्ट्रवृद्धि में कारण होती है।

* ध्वजा त्रिकोण विलस्त तक लम्बी और 11 अंगुल से 24 अंगुल चौड़ी होनी चाहिये।

ध्वजा फहराने का फल-

ध्वजा फहराने पर प्रथम ही वायु वेग से पूर्व दिशा में फहरे तो सर्वमनोसिद्धि, उत्तर में फहरे तो आरोग्य सम्पत्ति, पश्चिम वायव्य एवं ऐशान दिशा में फहरे तो वर्षा हो, शेष दिशा व विदिशा में फहरे तो शांति कर्म करना चाहिए।

ध्वजा रोहण स्थल में-

1. पहली कटनी में नवदेवता के प्रतीक 9 श्री फल रखना चाहिए।
2. दूसरी कटनी में 5 मिट्टी के कलश रखना चाहिए।
3. तीसरी कटनी में दश दिशा संबंधी ध्वजायें रखना चाहिए।
4. बड़ी शांतिधारा के मंत्रों से हवन स्थल में अग्नि रख धूप खेना।

नोट- ध्वजा रोहण से पूर्व सर्वप्रथम विनायक यंत्र या पंचपरमेष्ठी पूजन करें, उसके बाद 108 या नौ बार णमोकार मंत्र का जाप्य करें।

भक्ति पाठ

लघु सिद्ध श्रुत एवं आचार्य भक्ति।

अर्घ- ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वजादण्ड एवं ध्वजा की जल से शुद्धि–

ज्ञान शक्तिमयीं मत्वा ध्वजदण्डाग्र चूलिकाम्।
अनादि सिद्ध मंत्रेण स्नपनं ते करोम्यहम्।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ह्रीं क्लीं श्री सर्वशान्ति कुरु–कुरु स्वाहा।

अर्घं– **पंचपरमेष्ठिनस्ते मंगललोकोत्तमाश्च शरणानि।**
धर्मोऽपि कर्णिकायां समर्चिताः सन्तु नः सुखदाः।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यो नवदेवताभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वजदण्ड पर पुष्पक्षेपण

1.देवेन्द्र मणि मौलि समार्चितांघ्रि, देवाधिदेव परमेश्वर कीर्तिभाजः।
पुष्पायुध प्रथमनस्य जिनेश्वरस्य, पुष्पांजलि विरचितोऽस्तु विनेय शांत्यैः।।

ॐ परब्रह्मणे नमो नमः, स्वस्ति–स्वस्ति, नंद नंद, वर्धस्य–वर्धस्य, विजयस्व–विजयस्व, पुनीहि–पुनीहि, पुण्याहं–पुण्याहं, मांगल्यं–मांगल्यं, जय–जय।

2. तत् कुंभ वार्मिवर मंत्रपूतैः, सत्संमुखानि प्रतिबिंबितानाम्।
यक्षादि सर्वध्वज देवतानां, संप्रोक्षण सांप्रतमातनोमि।।

ॐ सर्वराष्ट्र क्षुद्रोपद्रवं हर–हर ॐ स्वास्ति भद्रं भवतु स्वाहा।

शुद्ध जल से ध्वज दण्ड शुद्धि–

ॐ ह्रीं श्री नमोऽर्हते पवित्रतरजलेन ध्वजदण्ड शुद्धिं करोमि।

ध्वजा एवं ध्वज दण्ड पर स्वस्तिक लेखन–

ॐ ह्रीं ध्वजदण्डे पताके च स्वस्तिक लेखनं करोमि।

ध्वजदण्ड में रक्षा सूत्र बांधे–

श्री सूत्राम शतार्चितांघ्रि जलजद्वान्द्वय लोकत्रये,
प्रेष्ठोन्मिष्ठ गरिष्ठ सुष्ठ सुवचो जुष्टाय तेऽर्हन्नमः।
अंतातीत गुणाय निर्जित भव व्रताय बुद्धोल्लसः,
ऋद्धे बुद्धि विशुद्धि दायक महा विष्णो विजिष्णो जिनः।।

ॐ ह्रीं त्रिवर्ण सूत्रेण ध्वजदण्ड परिवेष्टयामि। ॐ णमो अरहंताणं स्वाहा। (इस मंत्र का 9 बार जाप करें)

ध्वजदण्ड पर माला काली चोटी, मंगल सूत्र बांधने का मंत्र–

ध्वजदण्डाग्र भागस्थ, कोकिला त्रय वर्तिनः।
वेणुदण्डस्य तस्याग्रे, वहनामि ध्वजकूर्चिकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं ध्वजदण्डं मालामंगलसूत्रेण वेष्टयामि।

ध्वजा गर्त शुद्धि (अष्ट द्रव्य से)

1.ॐ ह्रीं नीरजसे नमः (जल गर्त में छोड़े) 2.ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः (सुगंध)
3. ॐ ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतान्) 4.ॐ ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पं)
5. ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यं) 6. ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योता नमः (दीपं)
7. ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपं) 8. ॐ ह्रीं अभीष्ट फलप्रदाय नमः (फलं)
9. ॐ ह्रीं परम सिद्धाय नमः (अर्घं)।

ध्वजदण्ड में पंचरत्न–स्वस्तिक स्थापन–

ॐ ध्वजदण्डगर्ते पंचरत्न हिरण्य स्वस्तिकं स्थापनं करोमि।

ध्वजारोहण मंत्र–

रत्नत्रयात्मक–तयाभि–मंतेऽन्नदण्डे, लोकत्रय प्रकृत केवल बोधरूपम्।
संकल्प पूजित मिदं ध्वजमर्च्य लग्ने, स्वारोपयामि सति मंगल वाद्य घोषे।।

ॐ णमो अरिहंताणं स्वस्तिभद्रं भवतु सर्वलोक शान्ति र्भवतु स्वाहा।

तदग्रदेशे ध्वज दण्ड मुच्चै, र्भास्वद्विमानं गमनाद्विरूंधत्।
निवेश्यलग्ने शुभोपदेश्ये, महत्पताकोच्छ्रयणं विदध्यात्।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासनपताके सदोच्छ्रिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा।

(इन मंत्रों को बोलकर गाने बाजे की ध्वनि के साथ ध्वजा फहराना)

ध्वजा पर पुष्पक्षेपण करना–

सजयुत जिन धर्मो यावदा चन्द्र तारम्, व्रत नियम तपोर्भि–वर्द्धतां साधुसङ्घः।
अह–रह–रभि–वृद्धिं यान्तु चैत्यालयस्ते, तदधिकृत–जनानां क्षेम मारोग्यमस्तु।।

ॐ ह्रीं दशचिह्नाष्ट गुंटिकालंकृत ध्वजायै पुष्पं।

प्रतिष्ठाकारक, प्रतिष्ठाचार्य एवं सम्मिलित श्रावक गण ध्वजा पर पुष्प फेंके एवं नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें। (तीन परिक्रमा लगावें)

ध्वज गीत

(तर्ज– जन गन मन अधिनायक..

तीन लोक अधिनायक जय हे, अर्हत् सिद्ध विधाता।
मोक्षमार्ग के अनुपम नायक, जग में शांति प्रदाता।।
गणधरादि तुम नमते, साधु चरण प्रणमते, हे मुक्ति पद दाता।
मण्डल की पूजा विधान में, पहले ध्वज फहराता।
जय हे – जय हे – जय हे – जय जय जय जय हे।।
जग में शांति प्रदाता।।1।।

पञ्च रंग अथवा केसरिया, ध्वज अनुपम बनवाएँ।
स्वस्तिक चिह्न बनाकर उसमें, सुरभित पुष्प बंधाएँ।।
शुभ जैन ध्वजा फहराएँ, हम सादर शीश झुकाएँ, जो फहर फहर फहराता।
स्वस्तिक चिह्न सहित ध्वज को जग, सारा शीश झुकाता।।
जय हे....।।2।।

पञ्च परम, परमेष्ठि जग में, मोक्ष मार्ग दर्शाते।
भवि जीवों से तीन लोक में, वह सब पूजे जाते।।
उनके गुण हम गाएँ, पद में शीश झुकाए, हे भविजन के त्राता।
विशद भाव से आज झुका है, ध्वज के आगे माथा।।
जय हे....।।3।।

मण्डप प्रतिष्ठा विधि

हस्त प्रक्षालन मंत्र–ॐ ह्रीं असुजर सुजर हस्त प्रछालनं करोमि स्वाहा।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मण्डप शुद्धि करोमि स्वाहा (मण्डप पर जल से शुद्धि करें।)

मण्डप स्थित मंगल कलश में हल्दी सुपारी रखने का मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं पुंगी फलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट स्वाहा। (मंगल कलश में हल्दी, सुपारी, पीली सरसों, नवरत्न, सवा रुपया हाथ में लेकर सावधानीपूर्वक रख दें।)

निम्न मन्त्रपूर्वक पंचवर्ण सूत्र से मण्डप को तीन बार वेष्टित करें।

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्त्वाभमनेकमेकम्।
तेनत्रिवारं परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्रम्।।

मन्त्र : ॐ अनादिपरमब्रह्मणे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः। ॐ चतुर्मंगलाय नमो नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ चतुःशरणाय नमो नमः अस्य..... (विधान का नाम) नामधेय यजमानस्य ..... (विधान कर्ता का नाम) नामधेय–याजकस्य च सुरासुरनरनृपयक्ष देवतागण गन्धर्वस्य कुलगोत्रनामदेशादिभागृहाराम–परिचारकस्यपुण्याहमंत्रैः पुण्याहं वाचयेत् (करोमि) प्रीयंतां ते कुलं, प्रीयंतां ते आयुः प्रीयंतां ते मातृपितृसुहृद् बन्धुवर्गस्य प्रीयंतां। त्वं जीव, त्वं विजयस्व, ते मांगल्यं–मांगल्यं भवतु। सपरिवार वर्धस्व–वर्धस्व विजयस्व–विजयस्व, भवतु भवतु सर्वदा शिवं कुरु।।

श्रीमण्डपाभं मिलितत्रिलोकी–श्रीमंडितंपण्डितपुण्डरीकं।
श्रीमण्डपं खण्डितपापतापं तमेनमर्घ्येण च मण्डयामः।।

ॐ ह्रीं मण्डपायार्घ्यं दद्यात्। (मण्डप के लिये अर्घ्य चढ़ावें।)

मण्डप शुद्धि की संक्षिप्त विधि

नीचे लिखे मंत्र को 5 बार पढ़कर मण्डप पर जल छिड़क देवें।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप वेदी प्रभृति स्थानानां शुद्धिं कुर्मः।

(मण्डप की आठों दिशाओं में क्रमशः नीचे लिखे मंत्र पुष्प क्षेपते हुए मण्डप शुद्धि करें।)

1. ॐ आं क्रौं ह्रीं नमः चतुर्णिकाय देवाः सर्व विघ्नः निवारणार्थाय... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।(वेदी में आगे चढ़ाएं)
2. ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्व दिशा के प्रतिहारी कुमुदेश्वर देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय.....

कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।

3. ॐ आं क्रौं ह्रीं आग्नेय दिशा के प्रतिहारी यमेन्द्र देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
4. ॐ आं क्रौं ह्रीं दक्षिण दिशा के प्रतिहारी वामन देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
5. ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी नैऋतेन्द्र देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय.....कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
6. ॐ आं क्रौं ह्रीं पश्चिम दिशा के प्रतिहारी अंजन देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
7. ॐ आं क्रौं ह्रीं वायव्य दिशा के प्रतिहारी वायुकुमारः देवाः.....विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
8. ॐ आं क्रौं ह्रीं उत्तर दिशा के प्रतिहारी पुष्पदन्त देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
9. ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशान दिशा के प्रतिहारी ऐशानेद्र देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
10. ॐ आं क्रौं ह्रीं वास्तुकुमारदेवाः..... मेघकुमारदेवाः, नागकुमारदेवाः..... विघ्न निवारणार्थाय ..... कार्य सिद्धयर्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
11. ॐ आं क्रौं ह्रीं मणिभद्रादिक क्षेत्रपाल।

जल शुद्धि की विधि ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंच्छ केशरी महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालितं परिपूरित नवरत्नगन्धपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

शुद्धि मंत्र ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

रक्षा मन्त्र ॐ नमो अर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से पीले चावलों या पीले सरसों को सात बार मन्त्रित कर सभी पात्रों पर पुष्प प्रक्षेप किया जावे।

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु। ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते भवतु।

यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगावें।

दिग्वन्दना मंत्र

ॐ ह्राँ णमो अरिहंताणं ह्राँ पूर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। पूर्व दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।दक्षिण दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ पश्चिमदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। पश्चिम दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।उत्तर दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। सर्वदिशाओं में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री विशद तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान कार्यर्थं। .. श्री वीर निर्वाण निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्धयर्थं, पात्रशुद्धयर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं

मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं ह्रीं ह्रीं हं सः स्वाहा।

नोट :– यह पढ़कर मण्डल के उत्तर कोने में जल, अक्षत, पुष्प, हल्दी, सुपारी, सवा रुपया, श्रीफल और पुष्पमाला सहित मंगलकलश श्रावक द्वारा स्थापित कराया जावे। इस कलश को पुण्याहवाचन कलश भी कहते हैं।

दीपक स्थापन मंत्र

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।
ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापन मंत्र

कोटी शतं द्वादश चैव कोट्यो,लक्षाण्यशीतिस् त्र्यधिकानि चैव।
पंचाश दष्टौ च सहस्र संख्या मेतच्छ्रुतं पंच पदं नमामि।।

ॐ ह्रीं मण्डलोपरि शास्त्र स्थापनं करोमि।

जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभिः।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्।।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीमज् जिनेन्द्र- मभि- वन्द्य जगत् त्र्येशं,
स्याद्वाद- नायक- मनन्त- चतुष्टयार्हम्।
श्री- मूलसंघ- सुदृशां सुकृतैक- हेतुर्,
जैनेन्द्र- यज्ञ- विधि- रेष मयाभ्य- धायि।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्न श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, मुदरी, कंगन और मुकुट धारण करना।)

श्रीमन्मन्दर-सुन्दरे शुचि- जलै- र्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद- पद्म- स्रजः।
इन्द्रोऽहं निज- भूषणार्थक- मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।2।।

ॐ ह्रीं ..... देवाभिषेकोत्सवे/जन्माभिषेकोत्सवे।

श्वेत वर्णे सर्वोपद्रव हारिणि सर्वजन मनोरंजिणि परिधानोत्तरीयं धारिणि हं हं झं झं सं सं तं तं पं पं अहम् इन्द्रोचित परिधानोत्तरीयं आभूषणानि च धारियामि।

ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय- स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा। (स्वयं पर पुष्प क्षेपण करें।)

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, कलाई और पीठ) पर तिलक करें।)

सौगन्ध्य- संगत- मधुव्रत- झङ्कृतेन,
संवर्ण्य- मान- मिव गंध- मनिन्द्य- मादौ।
आरोप- यामि विबु- धेश्वर- वृन्द- वन्द्य-
पादारविन्द- मभिवन्द्य जिनोत्- तमानाम्।।3।।

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखि श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि- दिह दिव्य कुल प्रसूता,
नागाः प्रभूत- बल- दर्पयुता विबोधाः।
संरक्ष णार्थ- ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षाल- यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्-यदनेक- वारम्।
अत्युद्ध- मुद्यत- महं जिन- पादपीठं,
प्रक्षाल- यामि भव-सम्भव- तापहारि।।5।।

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्री- शारदा- सुमुख- निर्गत बीजवर्णं,
श्रीमङ्गलीक- वर- सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश्य- विघ्नं,
श्रीकार- वर्ण- लिखितं जिन- भद्रपीठे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार- लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें।)

यं पाण्डुकामल- शिलागत- मादिदेव-
मस्नापयन् सुरवराः सुर- शैल- मूर्ध्नि।
कल्याण- मीप्सु- रह- मक्षत- तोय- पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला-पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुखवाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सत्पल्ल-वार्चित-मुखान् कलधौत-रौप्य-ताम्रार-कूट-घटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्, संस्थापयामि कलशाज्जिन-वेदिकांते।।8।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण- कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर इन्द्रगण अभिषेक करें।)

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी-संलग्न-रत्न-किरणच्छवि-धूस-राघ्रिम्।
प्रस्वेद-ताप-मल मुक्तमपि प्रकृष्टैर्-भक्त्या जलै-र्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि- वर्धमानपर्यन्तं- चतुर्विंशति- तीर्थंकर- परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे..... देशे... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे श्री 1008 ... जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं. ... मासोत्तममासे.... पक्षे... तिथौ.. वासरे.. पौर्वाह्निक /अपराह्निक समये मुन्यार्यिका- श्रावक-श्राविकानां सकल- कर्म- क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं।।

(चारों कलशों से अभिषेक करें।)

इष्टै- र्मनोरथ- शतैरिव भव्य- पुंसां, पूर्णैः सुवर्ण- कलशै- र्निखिला- वसानैः।
संसार- सागर- विलंघन- हेतु- सेतु- माप्लावये त्रिभुवनैक- पतिं जिनेन्द्रम्।।10।।

अभिषेक मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्षीं क्षीं ह्वीं ह्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

द्रव्यै- रनल्प- घनसार- चतुः समाद्यै- रामोद- वासित- समस्त- दिगन्तरालैः।
मिश्री-कृतेन पयसा जिन-पुङ्गवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि।।11।।

अभिषेक मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं..... जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप ल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, अर्घ्य चढाय।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते अभिषेक अन्ते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु शान्ति धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** मृत्युं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** अतिकामं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** रतिकामं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** क्रोधं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** अग्निभयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वशत्रुं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वोपसर्गं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वविघ्नं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वभयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वराजभयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वचौरभयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वदुष्टभयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वमृगभयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वात्मचक्रभयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वपरमंत्र **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वशूल रोगं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्षय रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वकुष्ठ रोगं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्रूर रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वनरमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वगजमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वाश्वमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वगोमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वमहिषमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वधान्यमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्ववृक्षमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वगुल्ममारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वपत्रमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वपुष्पमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वफलमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वराष्ट्र मारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्व देशमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्व विषमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्ववेताल शाकिनी **भयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्ववेदनीयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वमोहनीयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वकर्माष्टकं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।**

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु। सर्व जनानन्दनं **कुरु-कुरु।** सर्व भव्यानंदनं **कुरु-कुरु।** सर्व गोकुलानन्दनं **कुरु-कुरु।** सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं

कुरु-कुरु। सर्व लोकानन्दनं **कुरु-कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु।** सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति-मस्तु! (नाम....) कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि- वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्र **ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय (.....) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।**

शांतिः शिरोधृत जिनेश्वरशासनानां, शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां, शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकांनां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शांति धारा देते हैं।।
अर्घ शांति धारा करके हे प्रभू ! ,अर्घ्य चढ़ाते अपरंपार।
विशद शांति को पाने हेतु, वदंन करते बारंबारं।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां अनन्तरे (पश्चात्) अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरूवर!, थाल सजाकर लाये है।
महाव्रतो को धारण कर लू ,मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें, गुरू चरणों में सिर धरतें हैं।।

ॐह्रूं प.पू. ~~क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागर मुनीद्राय~~ अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है...)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है ।।

(1) दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।

(2) मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभु जी, द्वार आपेके आए हैं।।

(3) शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।

(4) हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।।

(5) नैया पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिर नाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं।।

जिनवर का...।

विनय पाठ

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान ।अनन्त चतुष्टय
के धनी, जग में हुए महान् ।।
दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।

निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव।।
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।

मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि ह्वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः।।3।।
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।।4।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैक हेतु - जैनेन्द्र - यज्ञ - विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।

स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकाम:।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नो; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।
ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो न: स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजित:।
श्री संभव: स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दन:।
श्री सुमति: स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभ:।
श्री सुपार्श्व: स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभ:।
श्री पुष्पदन्त: स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतल:।
श्री श्रेयांस: स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्य:।
श्री विमल: स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्त:।
श्री धर्म: स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्ति:।
श्री कुन्थु: स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथ:।
श्री मल्लि: स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रत:।
श्री नमि: स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथ:।
श्री पार्श्व: स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमान:।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघा: स्फुरन्मन: पर्यय शुद्धबोधा:।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधा: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधाना: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंत: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:।।3।।
प्रज्ञा-प्रधाना: श्रमणा: समृद्धा: प्रत्येकबुद्धा: दशसर्वपूर्वै:।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञा: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:।।4।।
जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वा:।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।5।।
अणिम्नि दक्षा:कुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ता: कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।6।।
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ता:।
तथाऽप्रतिघातगुण प्रधाना: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्था:।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंत: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:।।8।।
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशा:,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो न:।।9।।
क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्त:।
अक्षीणसंवास महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:।।10।।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्) *(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)*

श्री देव-शास्त्र-गुरु समुच्चय पूजन

स्थापना

देव शास्त्र गुरु के चरणों, हम सादर शीष झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में बश एक सहारा है।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।

मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन्।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
यह परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।श्री देव।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
यह अक्षत लाए चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।श्री देव।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
अब काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

येषट्रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट पूर्ण न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटनेको, नैवेद्य चरण में हम लाए।।श्री देव।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति

तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।श्री देव।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को लाए।।श्री देव।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।श्री देव।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभू, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।श्री देव।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त।।

छन्द तोटक

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालिस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1।।
जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।

श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।। 3।।
जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समीति शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।
गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम बह्म बिहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।
जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनका यश मंगल गावत हैं।।7।।

(आर्या छन्द)

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक तिहुँ काल के, नमू सर्व अरहंत।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (कायोत्सर्ग कुरु...)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र-गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।जिन।3।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।जिन।4।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।जिन।5।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।जिन।6।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।जिन।7।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।जिन।9।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।

चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।

शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अभिनव कल्पतरु विधान पूजा

स्थापना

अभिनव कल्पतरु पूजा शुभ, अभिनव फल देने वाली।
भक्ति भाव सहित भव्यों की, कभी नहीं जाती खाली।।
अति वैभव से युक्त यहाँ पर, करते पूजा श्रेष्ठ विधान।
विशद भाव से हृदय कमल पर, करते जिनवर का आह्वान।
मंगलमय मंगलकारी है, श्री जिनेन्द्र का समवशरण।
अनन्त चतुष्टय धारी जिनके, हृदय बसावें श्रेष्ठ चरण।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो, भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

छन्द–जोगीरासा

नीर यह निर्मल विशद,हम, अर्चना को लाए हैं।
जन्म–मृत्यु अरु जरा को, नाश करने आए हैं।।
कर रहे हैं अर्चना हम, तव चरण में हे प्रभो ! ।
कर्म आठों नाश करके, मोक्ष पद पायें विभो ! ।।1।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ यह चन्दन सुगन्धित, हम चढ़ाने लाए हैं।
नाश हो भव ताप मेरा, अर्चना को आए हैं।।
कर रहे हैं अर्चना हम, तव चरण में हे प्रभो ! ।
कर्म आठों नाश करके, मोक्ष पद पायें विभो ! ।।2।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पुनः उगते नहीं, वह श्रेष्ठ अक्षत लाए हैं।
प्राप्त अक्षय पद हमें हो, भावना यह भाए हैं।।
कर रहे हैं अर्चना हम, तव चरण में हे प्रभो ! ।
कर्म आठों नाश करके, मोक्ष पद पायें विभो ! ।।3।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मोहते मन को सुगन्धित, पुष्प हम वह लाए हैं।
काम की बाधा नशे मम्, हम शरण में आए हैं।।
कर रहे हैं अर्चना हम, तव चरण में हे प्रभो ! ।
कर्म आठों नाश करके, मोक्ष पद पायें विभो ! ।।4।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

यह सरस नैवेद्य सुरभित, हम चढ़ाने लाए हैं।
क्षुधा पीड़ा हम अनादी, शांत करने आए हैं।।
कर रहे हैं अर्चना हम, तव चरण में हे प्रभो ! ।
कर्म आठों नाश करके, मोक्ष पद पायें विभो ! ।।5।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

दीप ज्योतिर्मय जलाकर, शुद्ध घृत के लाए हैं।
मोहतम को नाश करने, भाव से हम आए हैं।।
कर रहे हैं अर्चना हम, तव चरण में हे प्रभो ! ।
कर्म आठों नाश करके, मोक्ष पद पायें विभो ! ।।6।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

चन्दनादि की सुगन्धित, धूप ताजी लाए हैं।
कर्म की शक्ती नशाने, यह जलाने आए हैं।।
कर रहे हैं अर्चना हम, तव चरण में हे प्रभो ! ।
कर्म आठों नाश करके, मोक्ष पद पायें विभो ! ।।7।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सरस फल श्रेष्ठ ताजे, हम चढ़ाने आए हैं।
मोक्षफल हो प्राप्त हमको, प्रार्थना हम लाए हैं।।
कर रहे हैं अर्चना हम, तव चरण में हे प्रभो ! ।
कर्म आठों नाश करके, मोक्ष पद पायें विभो ! ।।8।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों का मिलाकर, अर्घ्य हम लाए अहा।
प्राप्त शाश्वत् सुपद पाना, लक्ष्य मम अन्तिम रहा।।
कर रहे हैं अर्चना हम, तव चरण में हे प्रभो ! ।
कर्म आठों नाश करके, मोक्ष पद पायें विभो ! ।।9।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चरणों में दे रहे, निर्मल जल की धार।
शांती धारा कर मिले, हमको शांति अपार।।

शान्तये शान्तिधारा...

सुरभित पुष्पों से यहाँ, चरण पूजते आज।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने निज साम्राज्य।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– समवशरण में शोभते, तीर्थंकर चौबीस।
जयमाला गाते परम, चरण झुकाते शीश।।

चौपाई

स्वयं आत्म पुरुषार्थ जगाये, अभिनव कल्पतरु कहलाए।
तीर्थंकर पदवी शुभ पाए, केवलज्ञान स्वयं प्रकटाए।।1।।

महिमा वचनातीत कहाई, बने जगत के आप सहाई।
भव्य भावना सोलह भाते, तीर्थंकर शुभ पदवी पाते।।2।।

गर्भावस्था में भी स्वामी, सुख से रहते अन्तर्यामी।
जन्मोत्सव मिल देव मनाते, तुमरी शुभ जय–जय–जय गाते।।3।।

स्वर्ग से ऐरावत जो लाते, उस पर प्रभु जी को बैठाते।
मेरु गिरि पर न्हवन कराते, चरणों में नत शीश झुकाते।।4।।

तुम्हें स्वयंभू कहते प्राणी, स्वयं बुद्ध हों जग कल्याणी।
आप स्वयं वैराग्य जगाते, लौकान्तिक भक्ति से आते।।5।।

आप दिगम्बर दीक्षा धारे, जन–जन के हो आप सहारे।
निज आतम का ध्यान लगाए, अपने घाती कर्म नशाए।।6।।

क्षण में केवलज्ञान जगाए, समवशरण आ देव बनाए।
स्याद्वाद वृष ध्वज फहराए, प्रातिहार्य सुर वसु प्रगटाए।।7।।

गंधकुटी पर शोभा पाते, सुर–नर जिनकी महिमा गाते।
मानस्तम्भ का दर्शन पाए, मान स्वयं सब का गल जाए।।8।।

प्राणी सम्यक् दर्शन पावें, अपने वह सौभाग्य जगावें।
दिव्य देशना जग हितकारी, भव्यों को देते शुभकारी।।9।।

पूजा करते जग के प्राणी, जो है इस जग की कल्याणी।
दर्शन कर सद्दर्शन पाते, प्राणी सम्यक् ज्ञान जगाते।।10।।

सम्यक् चारित्र पाने वाले, प्राणी कोई कहे निराले।
मैत्री भाव जगे शुभकारी, जिन दर्शन की है बलिहारी।।11।।

हमने अभिनव भाव बनाए, तव गुण गाने को हम आए।
महिमा भाव सहित हम गाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।12।।

दोहा– अभिनव गुणधारी प्रभू , अभिनव आप महान।
अभिनव गुण पाने विशद, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– तुमरी महिमा का प्रभु, नहीं है जग में पार।
शीश झुकाते तव चरण, अपना बारम्बार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

दोहा मण्डल पर पुष्पांजलि,लेकर दोनो हाथ।
भाव सहित करते विशद, हे त्रैलोकी नाथ।।

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सोलहकारण भावना पूजा 1

स्थापना

सोलह कारण भावना, भाते हैं जो जीव।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, पाते सौख्य अतीव।।
कर्म घातिया नाशकर, पावें केवलज्ञान।
सोलह कारण भावना, का करते आह्वान।।
है अन्तिम यह भावना, हृदय जगे श्रद्धान।
सर्व कर्म का नाश हो, मिले सुपद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणानि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल-छन्द)

हमने संसार बढ़ाया, न रत्नत्रय को पाया।
हम नीर सु निर्मल लाए, जन्मादि नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप साधु-समाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्ग प्रभावना, प्रवचन वात्सल्य, इति षोडश कारणेभ्योः नमः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने हमें सताया, भारी संताप बढ़ाया।
हम चन्दन घिसकर लाए, भव ताप नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

खण्डित पद हमने पाए, जग में रह भ्रमण कराए।
हम अक्षय अक्षत लाए, शास्वत पद पाने आए।।

है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों ने हमें लुभाया, जग कीच के बीच फँसाया।
यह पुष्प चढ़ाने लाए, हम काम नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन कई सरस बनाते, निशदिन हम नये-नये खाते।
नैवेद्य दवा बन जावे, भव क्षुधा रोग नश जावे।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह कर्म मतवाला, चेतन को कीन्हा काला।
हम दीप जलाकर लाए, हम मोह नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिल आठों कर्म सताए, जिससे हम चेत न पाए।
यह धूप जलाने लाए, हम कर्म नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर फल जग के सारे, न कोई रहे हमारे।
फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ति पद पाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पद अनर्घ न पाए, आठों पृथ्वी भटकाए।
यह अर्घ्य बनाकर लाए, पाने अनर्घ पद आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोहलकारण भावना, शिवपद के सोपान।
तीर्थंकर पद प्राप्त हो, जिससे विशद महान्।।

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सोलह कारण भावना के अर्घ्य

(ताटंक छन्द)

मिथ्या भाव रहेगा जब तक, दृष्टी सम्यक् नहीं बने।
दरश विशुद्धी हो जाये तो, कर्म घातिया शीघ्र हने।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्ती, कर्म पाप का हरण करे।
दर्शन ज्ञान चरित उपचारिक, विनय भाव जो हृदय धरे।।तीर्थंकर।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित विनयसम्पन्नभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोटी से शील व्रतों का, निरतिचार पालन करता।
सुर नर किन्नर से पूजित हो, कोष पुण्य से वह भरता।।तीर्थंकर।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अनतिचारशीलव्रतभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की ॐकार मय, दिव्य देशना है पावन।
नित्य निरन्तर ज्ञान योग से, भाता है जो मनभावन।।तीर्थंकर।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म और उसके फल में भी, हर्षभाव जिसको आवे।
सुत दारा धन का त्यागी हो, वह सुसंवेग भाव पावे।।तीर्थंकर।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित संवेगभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वशक्ती को नहीं छिपाकर, त्याग भाव मन में लावे।
दान करे जो सत पात्रों में, त्याग शक्तिशः कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित शक्तितस्त्यागभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर सुतप करे जो, निज शक्ती को प्रगटावे।
निज आतम की शुद्धी हेतू, सुतप शक्तिशः वह पावे।।तीर्थंकर।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित शक्तितस्तपभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साता और असाता पाकर, मन में समता उपजावे।
मरण समाधी सहित करे तो, साधु समाधि कहलावे।।तीर्थंकर।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित साधुसमाधिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधक तन से करे साधना, उसमें कोइ बाधा आवे।
दूर करेअनुराग भाव से, वैयावृती कहलावे।तीर्थंकर पदवी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित वैय्यावृत्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया अरि के नाशक, श्री जिन अर्हत् पद पावें।
दोष रहित उनकी भक्ती शुभ, अर्हत् भक्ती कहलावे।।तीर्थंकर।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अर्हद्भक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चाचार का पालन करते, दीक्षा देते शिवदायी।
उनकी भक्ती करना भाई, आचार्य भक्ति कहलाई।।तीर्थंकर।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित आचार्यभक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुतधारी गुरु अनगारी, मुनि जिनसे शिक्षा पावें।
उपाध्याय की भक्ती करना, बहुश्रुत भक्ती कहलावे।।तीर्थंकर।।12।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग वाणी जिनवर की, द्रव्य तत्त्व को दर्शावे।
माँ जिनवाणी की भक्ती ही, प्रवचन भक्ती कहलावे।।तीर्थंकर।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित प्रवचनभक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्नाचार सहित चर्या से, षट् आवश्यक पाल रहे।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, मुनिवर स्वयं सम्हाल रहे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।14।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित आवश्यकापरिहार्यभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव वन्दना भक्ति महोत्सव, रथ यात्रा पूजा तप दान।
मोह-तिमिर का नाश प्रकाशक, ये ही धर्म प्रभावना मान।।तीर्थंकर।।15।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित मार्गप्रभावनाभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्य पुरुष त्यागी मुनिवर से, वात्सल्य का भाव रहे।
गाय और बछड़े सम प्रीति, प्रवचन वात्सल्य देव कहे।।तीर्थंकर।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित वात्सल्यभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भाय भावना, तीर्थंकर पद पाते हैं।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनके गुण को गाते हैं।।तीर्थंकर।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारणभावनायै नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा - अष्ट द्रव्य का अर्घ्य शुभ, दीपक लिया प्रजाल।
सोलह कारण भावना, की गाते जयमाल।।

(चौपाई)

काल अनादिअनन्त बताया, इसका अन्त कहीं न पाया।
लोकालोक अनन्त कहाया, जिनवाणी में ऐसा गाया।।1।।

जीव लोक में रहते भाई, इनकी संख्या कही न जाई।
जीवादि छह द्रव्यें जानो, सर्व लोक में इनको मानो।।2।।

चतुर्गती में जीव भ्रमाते, कर्मोदय से सुख-दुख पाते।
मिथ्यामती के कारण जानो, भ्रमण होय ऐसा पहचानो।।3।।

उससे प्राणी मुक्ती पावें, जैन धर्म जो भी अपनावें।

प्राणी तीर्थंकर पद पाते, भव्य भावना जो भी भाते।।4।।

सोलह कारण इनको जानो, प्रथम श्रेष्ठ आवश्यक मानो।
दर्श विशुद्धी जो कहलावे, सम्यक् दृष्टी प्राणी पावे।।5।।

तो भी कोई काम न आवें, इसके बिना श्रेष्ठ सब पावे।
विनय भावना दूजी जानो, शील व्रतों का पालन मानो।।6।।

ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण बताया, फिर संवेग भाव उपजाया।
शक्तिस्तः शुभ त्याग बताया, तप धारण का भाव बनाया।।7।।

साधु समाधि करें सद् ज्ञानी, वैयावृत्य भावना मानी।
अर्हद् भक्ती श्रेष्ठ बताई, है आचार्य भक्ति सुखदाई।।8।।

आवश्यक अपरिहार्य जानिए, प्रवचन वत्सल श्रेष्ठ मानिए।
काल अनादी से कल्याणी, श्रेष्ठ भावना भाए प्राणी।।9।।

हम भी यही भावना भाते, अपने मन में भाव बनाते।
विशद भावना हम ये भावें, फिर तीर्थंकर पदवीं पावें।।10।।

अपने सारे कर्म नशाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ।
मुक्ति पद हम भी पा जावें, और नहीं अब जगत भ्रमावें।।11।।

दोहा- सोलह कारण भावना, भाते योग सम्हाल।
भाव सहित हम वन्दना, करते 'विशद 'त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शाश्वत पद के हेतु हम, शाश्वत सोलह भाव।
भाने को उद्धत रहें, करके कोई उपाव।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

दशलक्षण पूजा 2

स्थापना

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम धारी।
तपस्त्याग आकिंचन धारें, ब्रह्मचर्य धर अनगारी।।
दश धर्मों को धारण करते, कर्म निर्जरा करें मुनीश।
विशद भाव से वन्दन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।
सुख शांती सौभाग्य प्रदायक, धर्म लोक में रहा महान।
उत्तम क्षमा आदि धर्मों का, करते हैं हम भी आह्वान।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

ध्यानमयी उत्तम जल लेकर, धारा तीन कराए हैं।
जन्मादिक त्रय रोग नाशकर, निज गुण पाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादर्श का शीतल चन्दन, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
भव संताप विनाश हेतु हम, आज यहाँ पर आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव के अक्षय अक्षत, जल से धोकर लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, भाव बनाकर आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चिदानन्द मय पुष्प मनोहर, चुन-चुनकर के लाए हैं।
काल अनादी काम वासना, यहाँ नशाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण के, शुभ नैवेद्य बनाए हैं।
क्षुधा शांत करने को अपनी, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव का दीप बनाकर, ज्ञान की ज्योति जलाए हैं।
मोह अंध के नाश हेतु हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म की धूप बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
सम्यक् तप की अग्नि जालकर, स्वाहा करने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण ही फल हैं अनुपम, वह प्रगटाने आए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतू, ताजे फल यह लाए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत पद के बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें हम, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण शुभ धर्म के, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने सुपद अनर्घ्य।।

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ प्रत्येकार्घ्य (चाल छन्द)

जो रंच क्रोध न लावें, मन में समता उपजावें।
हे ! उत्तम क्षमा के धारी, जन जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम क्षमा धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके उर मान न आवे, मन समता में रम जावे।
हे ! मार्दव धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम मार्दव धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुटिल भाव को त्यागें, औ सरल भाव उपजावें।
वे उत्तम आर्जव धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम आर्जव धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन से मूर्छा त्यागें, औ आतम ध्यान में लागें।
वे उत्तम शौच के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम शौच धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन में हो सो भाषें, तन को उसमें ही राखें।
वे उत्तम सत्य के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम सत्य धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो इन्द्रिय मन संतोषें, षट्काय जीव को पोषें।
वे उत्तम संयम धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम संयम धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादश विध तप धारें, वसु कर्मों को निरवारें।
वे उत्तम तप के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम तप धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्य नहीं अपनावें, चेतन में ही रम जावें।
वे त्याग धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।

श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।।8 ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम त्याग धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किंचित् राग न लावें, वे वीतरागता पावें।
हैं आकिञ्चन व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।9 ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम आकिञ्चन धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज पर तिय के त्यागी, शुभ परम ब्रह्म अनुरागी।
वे ब्रह्मचर्य व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।10 ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत् चेतन चित्धारी, निज आतम ब्रह्म बिहारी।
वे क्षमा आदि वृषधारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।11 ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, क्षमादि धर्म सहित श्री अभिनव कल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - विशद धर्म के भाव से, कटे कर्म का जाल।
क्षमा आदि दश धर्म की, गाते हैं जयमाल।।

(बेसरी छन्द)

धर्म कहा दशलक्षण भाई, भवि जीवों को है सुखदायी।
मोक्ष मार्ग में नौका जानो, मुक्ती का शुभ कारण मानो।।1 ।।

धारण करें धर्म जो कोई, कर्म नाश उसके भी होई।
मोक्ष मार्ग का साधन जानो, जगजन का हितकारी मानो।।2 ।।
धर्म कहा है रक्षक भाई, धारण करो हृदय हर्षाई।
कहा मान का नाशनकारी, पग-पग पर होता हितकारी।।3 ।।
मायाचारी को भी नाशे, आर्जव धर्म हृदय परकाशे।
लोभ हृदय में न रह पावे, शौच धर्म उर में प्रगटावे।।4 ।।
मुख से सत्य वचन उच्चारे, सत्य धर्म जो उर में धारे।
मन को वश में करते भाई, इन्द्रिय दमन करें हर्षाई।।5 ।।
बनते हैं संयम के धारी, हो जाते हैं जो अविकारी।
मूलधर्म का सुतप बताया, मोक्ष मार्ग का कारण गाया।।6 ।।
करे निर्जरा तप से प्राणी, तीर्थंकर की है ये वाणी।
त्याग धर्म सब पाप नशावे, जो निज के गुण भी प्रगटावे।।7 ।।
धर्मार्किंचन सम न कोई, परम ब्रह्म प्रगटावे सोई।
ब्रह्मचर्य की महिमा न्यारी, सारे जग में विस्मयकारी।।8 ।।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने वाले, प्राणी जग में रहे निराले।
सारे जग में रहा निराला, शिव पद में पहुँचाने वाला।।9 ।।

दोहा- विधी सहित जो व्रत करें, पूजन करें विधान।
सुख-शांती सौभाग्य पा, पावें पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा दशलक्षण जिन धर्म का, रहे हृदय में वास।
सम्यक् दर्शन ज्ञान का, नित प्रति होय विकास।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

रत्नत्रय पूजा 3

(स्थापना)

चतुर्गती का कष्ट निवारक, दुख अग्नि को शुभ जलधार।
शिवसुख का अनुपम है मारग, रत्नत्रय गुण का भण्डार।।
तीन लोक में शांति प्रदायक, भवि जीवों को एक शरण।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय का आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-नन्दीश्वर)

ले हेम कलश मनहार, प्रासुक नीर भरा।
देते हम जल की धार, नशे मम जन्म-जरा।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की गंध अपार, शीतल है प्यारा।
है भवतम हर मनहार, अनुपम है प्यारा।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह धवल अनूप, हम धोकर लाए।
अक्षत पाएँ स्वरूप, अर्चा को आए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाँति-भाँति के फूल, उत्तम गंध भरे।
हो कामबाण निर्मूल, निर्मल चित्त करे।।

रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बना रसदार, मीठे मनहारी।
जो क्षुधा रोग परिहार, के हों उपकारी।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रकाश, तम को दूर करे।
हो मोह महातम नाश, मिथ्या मती हरे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी ले धूप सुवास, दश दिश महकाए।
हों आठों कर्म विनाश, भावना यह भाए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल ले रसदार, अनुपम थाल भरे।
हो मुक्ती फल दातार, भव से मुक्त करे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- थाल भरा वसु द्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, रत्नत्रय शुभ धर्म कहा।
जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष अहा।।
प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन, करना तत्त्वों में श्रद्धान।
निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान्।।1।।
श्रद्धाहीन ज्ञान चारित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।
कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता है सभी व्यर्थ।।
गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग में जीवों का उपकार।।2।।
ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान्।
पुद्गल अर्ध परावर्तन में, जीव करे निश्चय कल्याण।।
सम्यक्श्रद्धापूर्वक ,सम्यक्चारित में जो करते वास। वस्तु तत्त्व का
निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का ह्रास।।
निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।।3।।
निजानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान।।
कर्मों का संवर हो जिससे, आश्रव का हो पूर्ण विनाश।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवलज्ञान प्रकाश।।4।।
रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे। प्राप्त।।
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त।।
अन्तर्मन की यही भावना, रत्नत्रय का होय विकास।
कर्म निर्जरा करें विशद हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास।।
दोहा- तीनों लोकों में कहा, रत्नत्रय अनमोल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, बोल सके जय बोल।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिसने भी इस लोक में, पाया यह उपहार।
अनुक्रम से उनको मिला, 'विशद' मोक्ष का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सम्यक् दर्शन पूजा 4

(स्थापना)

शंकादिक वसु दोष अरु, रही मूढ़ता तीन।
छह अनायतन आठ मद, पच्चिस दोष विहीन।।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति, धारे सद् श्रद्धान्।
ज्ञान और चारित्र में, सम्यक् दर्श प्रधान।।
सम्यक् दर्शन श्रेष्ठ है, मंगलमयी महान्।
विशद हृदय में हम करें, जिसका शुभ आह्वान।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शन ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शन ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शन ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-छन्द)

हम भव-भव रहे दुखारी, मिथ्यामति हुई हमारी।
यह नीर चढ़ाने लाए, भव रोग नशाने आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने भव रोग बढ़ाया, न सम्यक् दर्शन पाया।
हम चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाएँ, भव का सन्ताप नशाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जग में रह अकुलाए, न अक्षय पद को पाए।
अब अक्षय पद प्रगटाएँ, अक्षत यह धवल चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की आश लगाए, तीनों लोकों भटकाए।
अब कामबाण नश जाए, हम फूल चढ़ाने लाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने व्यंजन कई खाए, सन्तुष्ट नहीं हो पाए।
अब क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह की महिमा न्यारी, मोहित करता है भारी।
हम दीप जलाकर लाए, यह मोह नशाने आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम होता अविकारी, कर्मों से बना विकारी।
हम कर्म नशाने आए, अग्नी में धूप जलाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भटकते आए, न मोक्ष महाफल पाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरणों श्रेष्ठ चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चतुर्गती भटकाए, न पद अनर्घ शुभ पाए।
यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।।

अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य

दोहा– अष्ट अंग युत श्रेष्ठ है, सम्यक् दर्श महान्।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(छन्द : जोगीरासा)

देव शास्त्र गुरू जैन धर्म में, शंका मन में आवे।
दोष करे सम्यक्दर्शन में, भव वन में भटकावे।।
हो निशंक जिन धर्म वचन में, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।1।।

ॐ ह्रीं शंकामल–दोष रहित निःशंकित गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्मवशी जो अंत सहित है, बीज पाप का गाया।
भव सुख की चाहत करना ही, कांक्षा दोष कहाया।।
यह सुख वांछा तजने वाला, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।2।।

ॐ ह्रीं कांक्षित मल दोष रहित निःकांक्षित गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है स्वभाव से देह अपावन, है रत्नत्रय से पावन।
त्याग जुगुप्सा गुण में प्रीति, मुनि तन है मन भावन।।
ग्लानि को तजने वाला ही, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।3।।

ॐ ह्रीं विचिकित्सा मल दोष रहित निर्विचिकित्सा गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुपथ पंथ पंथी की स्तुति, और प्रशंसा करना।
भव दुख का कारण है भाई, दर्शन दोष समझना।।

करें मूढ़ की नहीं प्रशंसा, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।4।।

ॐ ह्रीं मूढ़दृष्टि मल दोष रहित अमूढ़दृष्टि गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वयं शुद्ध है मोक्ष का मारग, मोही दोष लगावे।
धर्म की निन्दा होय जहाँ यह, दर्शन दोष कहावे।।
अवगुण ढाके दोषी जन के, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।5।।

ॐ ह्रीं अनुपगूहन मलदोष रहित उपगूहन गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् दर्शन या चरित्र से, चलित कोई हो जावे।
अज्ञानी भव भ्रमण करे वह, दर्शन दोष लगावे।।
धर्म भाव से उनके मन में, पुनः धर्म उपजावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।6।।

ॐ ह्रीं अस्थितिकरण मल दोष रहित स्थितिकरण गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्म और साधर्मी जन में, प्रीति नहीं जो धरते।
सम्यक्दर्शन में वह प्राणी, दोष अनेकों करते।।
वात्सल्य का भाव धरे तो, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।7।।

ॐ ह्रीं अवात्सल्य मलदोष रहित वात्सल्य गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मिथ्या अरु अज्ञान तिमिर जो, फैला सारे जग में।
समकित में वह दोष लगावे, चले न मुक्ती मग में।।
जैन धर्म को करे प्रकाशित, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।8।।

ॐ ह्रीं अप्रभावना मल दोष रहित प्रभावना गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् दर्शन के रहे, आठ अंग शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने शिव का द्वार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट अंगयुत सम्यक्दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- श्रेष्ठ कहा त्रय लोक में, सम्यक् दर्श त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, जिसकी हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

सम्यक्दर्शन रत्न श्रेष्ठ है, मिथ्या मति का करे विनाश।
भेद ज्ञान जागृत करता है, जीव तत्त्व का करे प्रकाश।।
जिन वच में शंका न धारे, लोकाकांक्षा से हो हीन।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति किंचित्, ग्लानि से जो रहे विहीन।।1।।
देव धर्म गुरु के स्वरूप का, निर्णय करते भली प्रकार।
दोष ढाकते गुण प्रगटित कर, हुआ धर्म गुरु के आधार।।
श्रद्धा चारित से डिगते जो, स्थित करते निज स्थान।
संघ चतुर्विध के प्रति मन से, वात्सल्य जो करें महान्।।2।।
धर्म प्रभावना करते नित प्रति, तपकर आगम के अनुसार।
लोक देव पाखंड मूढ़ता, पूर्ण रूप करते परिहार।।
छह अनायतन सहित दोष इन, पच्चीसों से रहे विहीन।
द्रव्य तत्त्व के श्रद्धाधारी, सप्त भयों से रहते हीन।।3।।
सम्यक् दर्शन तीन लोक में, होता भाई अपरम्पार।
वृहस्पति भी इसकी महिमा, का ना जान सका है पार।।
सम्यक्दर्शन पाने हेतू, विशद हृदय जागे श्रद्धान।
अतीचार भी कभी लगे ना, रहे हृदय में हरदम ध्यान।।4।।।

दोहा- दर्शन के शुभ आठ गुण, संवेगादि महान।
मैत्री आदिक भावना, श्रद्धा के स्थान।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सम्यक् दर्शन लोक में, मंगलमयी महान्।
इसके द्वारा भव्य जन, पाते पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सम्यक्ज्ञान पूजा 5

(स्थापना)

अन्तर भावों में जगे, जिनके सद् श्रद्धान।
पा लेते हैं जीव वह, अतिशय सम्यक् ज्ञान।।
संशय विभ्रम नाश हो, हो विमोह की हान।
पावन सम्यक् ज्ञान का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञान ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - सोलह कारण पूजा)

नीर लिया यह क्षीर समान, करने निज गुण की पहिचान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन श्रेष्ठ सुगन्धीवान, करता है जो शांति प्रदान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत लिए महान, अक्षय पद के हेतु प्रधान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित आभावान, करने कामबाण की हान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।

अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ठ सरस लाए पकवान, क्षुधा रोग नाशी हम आन।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध का होय विनाश, करते अनुपम दीप प्रकाश।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेते धूप अग्नि में आन, कर्म नसे करके निज ध्यान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदिक लिए महान्, मोक्ष महाफल मिले प्रधान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य बनाया यह मनहार, पद अनर्घ पाने भव पार।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

दोहा– आठ अंग युत सद्ज्ञान, सम्यक्ज्ञान प्रमाण।
पुष्पांजलि के साथ हम, करते हैं गुणगान।।

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सम्यक्ज्ञान के आठ अंग वर्णन

शुद्ध शब्द उच्चारण करते भाई रे!, व्याकरण अनुसार बोलवें भाई रे!
शब्दाचार का धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे !।।1।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित शब्दाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शब्दों के अनुसार भाव से भाई रे!,अर्थ लगावें सही चाव से भाई रे!
अर्थाचार का धारी जानो भाई रे!,जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई **रे!।।2।।**

ॐ ह्रीं जिनवर कथित अर्थाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुद्ध शब्द अरु अर्थ लगावें भाई रे!,शब्द अर्थ का ज्ञान लगावें भाई रे !
उभयाचार के धारी जानो भाई रे!,जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।3।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित उभयाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो सुकाल में ही आगम का भाई रे!, करते पाठन पठन भाव से भाई रे!
कालाचार के धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे !।।4।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित कालाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हाथ पैर अरु वस्त्र शुद्ध हो भाई रे! विनय करें मन वच तन से जो भाई रे!
विनयाचार का धारी जानो भाई रे! जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।5।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित विनयाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनवाणी का करें स्वाध्याय भाई रे!,त्याग करें कुछ पूर्ण हुए तक भाई रे!
उपधानाचार का धारी जानो भाई रे!,जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।6।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित उपधानाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अंग पूर्व अरु छन्द शास्त्र की भाई रे!, मान त्याग, बहुमान धरें शुभ भाई रे!
बहुमानाचार का धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।। 7।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित बहुमानाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन गुरु से सद्ज्ञान प्राप्त हो भाई रे!, नाम छिपावे नहीं जो गुरु का भाई रे!
अनिह्नवाचार का धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।8।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित अनिन्हावाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठ अंग सद्ज्ञान के, जग में रहे महान।
अर्घ्य चढ़ाकर के यहाँ, किया विशद गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित अष्टांग सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– सर्व सुखों का मूल है, जग में सम्यक् ज्ञान।
जयमाला गाते परम, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

सम्यक् ज्ञान रत्न मनहारी, भवि जीवों का है उपकारी।
आगम तृतिय नेत्र कहाए, अष्ट अंग जिसके बतलाए।।1।।
शब्दाचार प्रथम कहलाया, शुद्ध पठन जिसमें बतलाया।
अर्थाचार अर्थ बतलाए, शब्द अर्थमय उभय कहाए।।2।।
कालाचार सुकाल बताया, विनयाचार विनय युत पाया।
नाम गुरु का नहीं छिपाना, यह अनिह्नवाचार बखाना।।3।।
नियम सहित उपधान कहाए, आगम का बहुमान बढ़ाए।
द्वादशांग जिनवाणी जानो, जन-जन की कल्याणी मानो।।4।।
ॐकारमय जिनवर गाए, झेले गणधर चित्त लगाए।
आचार्यों ने उनसे पाया, भव्यों को उपदेश सुनाया।।5।।
लेखन किया ग्रन्थमय भाई, वह माँ जिनवाणी कहलाई।
वृहस्पति महिमा को गाए, फिर भी पूर्ण नहीं कह पाए।।6।।
बालक कितना जोर लगाए, सागर पार नहीं कर पाए।
सागर से भी बढ़कर भाई, विशद ज्ञान की महिमा गाई।।7।।

दोहा– पञ्च भेद सद्ज्ञान के, मतिश्रुत अवधि महान।
मनःपर्यय कैवल्य शुभ, बतलाए भगवान।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्-ज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सम्यक् ज्ञान महान् है, शिव सुख का आधार।
उभय लोक सुखकर विशद, मोक्ष महल का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सम्यक् चारित्र पूजा 6

(स्थापना)

पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विध चारित गाया।
सम्यक् श्रद्धा सहित भाव से, नहीं आज तक अपनाया।।
संवर और निर्जरा का शुभ, ये ही है अनुपम साधन।
सम्यक्चारित का करते हम, विशद हृदय में आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छंद)

जिन वचनामृत सम शीतल जल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
जन्म-जरा-मृत्यू का हम भी, रोग नशाने आये हैं।।
सम्यक् चारित पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।1।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुगन्धित शीतल चंदन, हम घिसकर के लाए हैं।
भव संताप मिटाकर अपना, शिव पद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।2।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल धवल अखण्डित अक्षय, पद पाने हम आए हैं।
मिथ्यामल हो नाश हमारा, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक् चारित पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।3।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित निज खुशबू से, चतुर्दिशा महकाए हैं।
विषय वासना नाश हेतु हम, अर्पित करने लाए हैं।।

सम्यक् चारित पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।4।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश किए जिन क्षुधा रोग का, अर्हत् पदवी पाए हैं।
यह नैवेद्य चढ़ाकर हम भी, वह पद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।5।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध का नाश किए जिन, केवल ज्ञान जगाए हैं।
अन्तरज्ञान की ज्योति जलाने, दीप जलाकर लाए हैं।।
सम्यक् चारित पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।6।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, सिद्ध सुपद को पाए हैं।
आठों कर्मनाश हों मेरे, धूप जलाने आए हैं।।
सम्यक् चारित पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।7।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल अनुपम अक्षय, हम पाने को आए हैं।
श्रेष्ठ सरस फल लिए थाल में, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक् चारित पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।8।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को हम, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
लख चौरासी भ्रमण नाशकर, शिव सुख पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।9।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

दोहा- सम्यक् चारित्र के यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने सुपद अनर्घ्य ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(चौपाई)

छह निकाय के जीव बताए, मन वच तन से उन्हें बचाए।
परम अहिंसा व्रत का धारी, आयु काल पाले अविकारी।।1 ।।

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य वचन बोलें हितकारी, महाव्रती होते अनगारी।
सत्य महाव्रत यही बताया, जैनागम में ऐसा गाया।।2 ।।

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हीनाधिक वस्तू न देवे, बिन आज्ञा के कुछ न लेवे।
व्रत अचौर्य धारी कहलावे, जिन भक्ति कर दोष नसावे।।3 ।।

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपर अंग में राग न धारे, ब्रह्मचर्य व्रत पूर्ण सम्हारे।
स्त्री में न प्रीति लगावे, संयम द्वारा कर्म नसावे।।4 ।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यंतर परिग्रह त्यागे, आकिञ्चन में ही नित लागे।
परम अपरिग्रह व्रत को धारे, नव कोटी से राग निवारे।।5 ।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम अहिंसा सत्य महाव्रत, अरु अचौर्य व्रत को उर धार।
ब्रह्मचर्य व्रत और अपरिग्रह, धारण करके मुनि अनगार।।
अत्यासादन दोष नशाकर, करते निज आतम का ध्यान।
सर्व कर्म का नाश करें फिर, अनुक्रम से पावे निर्वाण।।6 ।।

ॐ ह्रीं अहिंसादि महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-जोगीरासा)

देख नयन से दिन में यथावत, भूमि दण्ड प्रमाण।
ईर्या समिति धर तज प्रमाद नर, करें स्व-पर कल्याण।।

दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।7 ।।

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय वचन कहते हैं, बोलें शब्द सम्हार।
भाषा समिति प्रयत्नकर पालें, मन के दोष निवार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।8 ।।

ॐ ह्रीं भाषासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्नादनोत्पादन आदि क्रिया में , छियालिस दोष निवार।
ध्यान सिद्धि के हेतू भोजन, लेते मुनि अनगार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।9 ।।

ॐ ह्रीं एषणासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु के आदान निक्षेप में, रखते यत्नाचार।
देखभाल करके प्रमार्जन, समिति धरे मनहार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।10 ।।

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकान्त ठोस निर्जन्तुक भू में, मल का करें निहार।
समिति कही व्युत्सर्ग जिनेश्वर, जीवों के हितकार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।11 ।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्या भाषा समिति ऐषणा, में कर यत्नाचार।
आदान निक्षेपण अरु व्युत्सर्ग यह, पाले योग सम्हार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।12 ।।

ॐ ह्रीं ईर्यादिपंचसमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज- नन्दीश्वर पूजा.....)

हम रागादि के भाव, दूषण नाश करें।
प्रभु धार समाधि भाव, निज में वास करें।।
हो मनोगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।13।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तज कर दुर्नय के शब्द, वचन को गुप्त करें।
चेतन में करके वास, सारे दोष हरें।।
हो वचनगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।14।।

ॐ ह्रीं वचोगुप्तिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की चेष्टा का त्याग, स्थिर आसन हो।
हो निज स्वभाव में वास, निज पर शासन हो।।
हो कायगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।15।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन गुप्ती में मन का गोपन, वचन गुप्ति में शब्द निरोध।
कायगुप्ति में काय रोधकर, प्राणी पावें आतम बोध।।
यही भावना भाते हैं हम, निज स्वभाव में होय रमण।
वीतराग अविकारी बनकर, सब दोषों का करें वमन।।16।।

ॐ ह्रीं त्रिगुप्तिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च महाव्रत, पञ्च समीती, तीन गुप्ति धर जैन मुनीश।
तेरह विधि चारित्र पालते, संयम धारी संत ऋशीष।।
यही भावना भाते हैं हम, निज स्वभाव में होय रमण।
वीतराग अविकारी बनकर, सब दोषों का करें वमन।।17।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधि सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तेरह विध चारित है, अतिशय पूज्य त्रिकाल।
सम्यक् चारित की यहाँ, गाते हम जयमाल।।

(चाल-छन्द)

शुभ सम्यक्चारित जानो, तुम रत्न अनोखा मानो।
जो पाँचों पाप नशाए, फिर पंच महाव्रत पाए।।1।।
हो पञ्च समीती धारी, त्रय गुप्ती का अधिकारी।
जो त्रय हिंसा के त्यागी, हैं देशव्रती बड़ भागी।।2।।
मुनि सब हिंसा के त्यागी, विषयों में रहे विरागी।
निज आतम ध्यान लगाते, तब निजानन्द सुख पाते।।3।।
सामायिक संयम धारी, मुनिवर होते अविकारी।
छेदोपस्थापना जानो, व्रत शुद्धि हो जिससे मानो।।4।।
परिहार विशुद्धी भाई, जिसकी अतिशय प्रभुताई।
जब समवशरण में जावें, अठ वर्ष ज्ञान उपजावें।।5।।
मुनिवर फिर संयम पावें, न प्राणी कष्ट उठावें।
बादर कषाय जब खोवे, तब सूक्ष्म साम्पराय होवे।।6।।
उपशम क्षय जब हो जावे, तब यथाख्यात प्रगटावे।
संयम यह पाँचों पाए, वह केवलज्ञान जगाए।।7।।
हो सर्व कर्म के नाशी, बन जाते शिवपुर वासी।
वे सुख अनन्त को पाते, न लौट यहाँ फिर आते।।8।।

दोहा- सम्यक् चारित प्राप्त कर, करें कर्म का अन्त।
ज्ञान शरीरी सिद्ध जिन, हुए अनन्तानन्त।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भाते हैं यह भावना, पूर्ण करो भगवान।
सम्यक्चारित प्राप्त हो, सुपद मिले निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्*।।*

चौंसठ ऋद्धि पूजा 7

(स्थापना)

तीर्थंकर चौबीस लोक में, मंगलमय मंगलकारी।
गणधर ऋद्धीधारी गुरुवर, होते हैं कल्मषहारी।।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ चौंसठ अनुपम, जिनकी महिमा रही महान्।
तीर्थंकर गणधर का करते, श्रेष्ठ ऋद्धियोंमय आह्वान।।
यही भावना रही हमारी, होवे इस जग का कल्याण।
विशद भाव से करते हैं हम, उन प्रभु का अतिशय गुणगान।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकर मुनीन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकर मुनीन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल टप्पा)

प्रासुक गंगा का जल लाए, भरकर के झारी।
जन्मादि के रोग शांत हों, मिटे व्याधि सारी।।
ऋद्धियाँ हैं मंगलकारी।
बुद्धी आदिक श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, होतीं दुखहारी- ऋद्धियाँ..... ।।1 ।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन मलयागिर का, रहा तापहारी।
भव आताप नाश हो मेरा, जो है अघकारी।।
ऋद्धियाँ हैं मंगलकारी।
बुद्धी आदिक श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, होतीं दुखहारी- ऋद्धियाँ..... ।।2 ।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत चढ़ा रहे हम, अतिशय मनहारी।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें शुभ, जो अक्षयकारी।।
ऋद्धियाँ हैं मंगलकारी।
बुद्धी आदिक श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, होतीं दुखहारी- ऋद्धियाँ..... ।।3 ।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रंग-बिरंगे पुष्प मँगाए, यह सुवासकारी।
कामबाण के नाशक हैं जो, अति महिमाकारी।।
ऋद्धियाँ हैं मंगलकारी।
बुद्धी आदिक श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, होतीं दुखहारी- ऋद्धियाँ..... ।।4 ।।

ॐ ह्रीं चौंसठ ऋद्धियुत तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के यह नैवेद्य मनोहर, भर लाए थारी।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, अतिशय दुखकारी।।
ऋद्धियाँ हैं मंगलकारी।
बुद्धी आदिक श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, होतीं दुखहारी- ऋद्धियाँ..... ।।5 ।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप जलाकर लाए, हम यह मनहारी।
मोह अंध का नाश होय मम, देता दुख भारी।।
ऋद्धियाँ हैं मंगलकारी।
बुद्धी आदिक श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, होतीं दुखहारी- ऋद्धियाँ..... ।।6 ।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंधमय धूप जलाते, यह विस्मयकारी।
कर्मों का हो नाश हमारे, जो हैं दुखकारी।।
ऋद्धियाँ हैं मंगलकारी।
बुद्धी आदिक श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, होतीं दुखहारी- ऋद्धियाँ..... ।।7 ।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे सरस-सरस फल लाए, अतिशय मनहारी।
मोक्ष महल में जाने की है, अब मेरी बारी।।
ऋद्धियाँ हैं मंगलकारी।
बुद्धी आदिक श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, होतीं दुखहारी- ऋद्धियाँ..... ।।8 ।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने को आतुर, है दुनियाँ सारी।
उसको पाने के हैं भाई, हम भी अधिकारी।।

ऋद्धियाँ हैं मंगलकारी।

बुद्धी आदिक श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, होतीं दुखहारी- ऋद्धियाँ.....।।9।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धि के अर्घ्य

चौंसठ ऋद्धी के यहाँ, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने स्वपद अनर्घ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(ताटंक छन्द)

द्वादश तप जो तपते मुनिवर, ऋद्धी पाते कई प्रकार।
अवधि ज्ञान षट् भेद युक्त शुभ, जिनका गुण प्रत्यय आधार।।
देशावधि परमा सर्वावधि, रूपी द्रव्य दिखाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसा चिंतन करे कोई भी, मनःपर्यय से होवे ज्ञात।
ऋजू-मति अरु विपुलमति द्वय, भेद रूप जग में विख्यात।।
अवधि ज्ञान से सूक्ष्म विषय भी, मुनिवर हमें दिखाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मनःपर्यय बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ कर्म घातिया क्षय होते, शुभ केवलज्ञान प्रकट होता।
दर्पण वत् लोकालोक दिखे, सब कर्म कालिमा को खोता।।
ऋद्धी शुभ केवलज्ञान जगे, तब अर्हत् पद को पाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शब्द श्रृंखला के द्वारा, जब एक शब्द का ज्ञान किए।
हो प्रतिभाषित सारा आगम, जागे तब श्रुत सम्पूर्ण हिय।।
है कल्पवृक्ष सम बुद्धि बीज, पाने का भाव बनाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों धान्य भरे कोठे में कई, फिर भी वह भिन्न-भिन्न रहते।
मिश्रण बिन बुद्धी से आगम, वह पृथक्-पृथक् ही मुनि कहते।।
उन कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारी, मुनिवर को शीश झुकाते हैं।
ये संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ग्रन्थों में पद हैं अनेक, मुनि मात्र एक पद ज्ञान करें।
हो पूर्ण ग्रन्थ का सार प्राप्त, करके जग का अज्ञान हरें।।
है श्रेष्ठ ऋद्धि पादानुसारिणी, जिनवर यह बतलाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं पादानुसारिणी बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह श्रवण का विस्मय है विशेष, समझें नर-पशु की भाषा को।
वह नौ योजन की जान रहे, त्यागें सब मन की आशा को।।
जो अक्षर और अनक्षर मय, द्वय भाषा में समझाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं संभिन्न-श्रोतृ बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना इन्द्रिय की दीवानी, दिखती यह सारी जगती है।
गुरु नीरस व्रत उपवास करें, शायद उन्हें भूख न लगती है।।
नौ योजन दूर की वस्तु का, गुरु रसास्वाद पा जाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं दूरास्वादन बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विषय अष्ट स्पर्शन के, जग के प्राणी सब पाते हैं।
जो अशुभ और शुभ रूप रहे, छूने से ज्ञान कराते हैं।।
नौ योजन दूर की वस्तु का, स्पर्श गरू पा जाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गन्ध सुगन्ध घ्राण के द्वय, प्रभु ने यह विषय बताए हैं।
जग के प्राणी उनको पाकर, दुख सुख पाकर अकुलाए हैं।
नौ योजन दूर की वस्तू का, गुरु गंध ज्ञान पा जाते हैं।।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं दूरगन्ध बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतापन आदि तप करने, मुनिवर गिरि ऊपर जाते हैं।
फिर आतम रस में लीन हुए, अरु आत्म सरस रस पाते हैं।।
उत्कृष्ट विषय कर्णेन्द्रिय का, उसकी शक्ति उपजाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं दूर श्रवण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट विषय, तप करके जो प्रकटाते हैं।
नेत्रों की शक्ती से ज्यादा, वह आतम शक्ति बढ़ाते हैं।।
यह श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाकर भी, मुनि हर्ष खेद न पाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविराम ज्ञान उपयोग करें, विश्राम कभी न करते हैं।
प्रज्ञा को स्वयं विकासित कर, अज्ञान तिमिर को हरते हैं।।
जो हैं महान प्रज्ञाधारी, गुरु प्रज्ञा श्रमण कहाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान का विषय अनन्तक है, जो लोकालोक दिखाता है।
अष्टांग निमित्तक है महान्, शुभ अशुभ का ज्ञान कराता है।।
स्वर-अंग भौम व्यंजन आदिक, इनसे पहिचाने जाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्त बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्व पूरा होते ही, महा विद्यायें आ जावें।
शुभ कार्य हेतु आज्ञा माँगे, मुनिवर के मन वह न भावें।।

श्रुत का चिंतन करते-करते, श्रुत केवली बन जाते।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रगटाते।।15।।

ॐ ह्रीं दशम पूर्व ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चिंतन ध्यान मनन करते, नित स्वाध्याय में लीन रहें।
वह ग्यारह अंग पूर्व चौदह, के ज्ञान में सदा प्रवीण रहें।।
हम द्वादशांग का ज्ञान करें, यह विशद भावना भाते हैं।
शुभ संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्व ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पदार्थ से जीव, भिन्न हैं भाई रे !
यातें पर की चाहत, मैटो भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
प्रत्येक-बुद्धि ऋद्धीधर, पूजों भाई रे !।।17।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परवादी ऋषिवर के, सम्मुख आई रे !
स्याद्वाद कर किया, पराजित भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
वादित्य ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे !।।18।।

ॐ ह्रीं वादित्य बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल के ऊपर थलवत्, चालें भाई रे !
जल जंतु का घात, न होवे भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
जल चारण ऋद्धीधर, पूजों भाई रे !।।19।।

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ अंगुल भू ऊपर, चाले भाई रे !
क्षण में बहु योजन, तक जावे भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
जंघा चारण ऋद्धीधर, पूजों भाई रे !।।20।।

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकड़ी के तंतू पर चालें भाई रे !
भार से तंतू भी न टूटे भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
तंतु चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।21।।

ॐ ह्रीं तंतु चारण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प के ऊपर गमन करें सुन भाई रे !
पुष्प जीव को बाधा न हो भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
पुष्प चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।22।।

ॐ ह्रीं पुष्पचारण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्र के ऊपर गमन करें सुन भाई रे !
पत्र जीव को बाधा न हो भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
पत्र चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।23।।

ॐ ह्रीं पत्र चारण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजन पे मुनि गमन करें सुन भाई रे !
बीज जीव को बाधा ना हो भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
बीज सु चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।24।।

ॐ ह्रीं बीज चारण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेणीवत् मुनि गमन करे सुन भाई रे !
षट्काय जीव को घात न होवे भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
श्रेणी चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।25।।

ॐ ह्रीं श्रेणी चारण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि शिखा पे गमन करें सुन भाई रे !
अग्नि शिखा भी हिले नहीं सुन भाई रे !

श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
अग्नि चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।26।।

ॐ ह्रीं अग्नि चारण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युत्सर्गादिक आसन से मुनि भाई रे !
गमन करें नभ माहिं ऋषीश्वर भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
नभ चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।27।।

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आहार करें जाके घर भाई रे !
चक्रवर्ति की सेना जीमें भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
अक्षीण संवास ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।28।।

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हाथ घर में मुनि तिष्ठे भाई रे !
ता घर चक्रवर्ति की सैन्य समाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
अक्षीण महानस ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।29।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे !
क्षीर युक्त सुस्वादू होवे भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
क्षीर स्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।30।।

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे !
मधु सम मिष्ठ सुगुण हो जावे भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
मधु स्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।31।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे !
घृत सम मिष्ठ सुगुण हो जावे भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
श्रेणी चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।32।।

ॐ ह्रीं घृतस्रावी रस चारण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में विष अमृत होवे भाई रे !
वचनामृत संतुष्ट करें सुन भाई रे !
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रकट, किए जिन भाई रे !
श्रेणी चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।33।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अणु बराबर छेद में, घुस जावें मुनिराज।
अणिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।34।।

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुमेरु सम देह को, बढ़ा लेय मुनिराज।
महिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।35।।

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्क तूल सम लघू हों, तप बल से मुनिराज।
लघिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।36।।

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भारी होवे लोह सम, जिनका तन तत्काल।
गरिमा ऋद्धी धारते, मुनिवर दीन दयाल।।37।।

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमी पर रहते खड़े, छूवें सूरज चंद।
प्राप्ती ऋद्धी के धनी, मुनी रहें निर्द्वन्द।।38।।

ॐ ह्रीं प्राप्ति ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में मुनि यों पग धरें, ज्यों थल में चल जाएँ।
ऋद्धीधर प्राकाम्य के, ऐसी महिमा पाएँ।।39।।

ॐ ह्रीं प्राकाम्य ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की प्रभुता प्राप्त कर, बनते ईश समान।
ऋद्धीधर ईशत्व के, जग में सर्व महान।।40।।

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टी पड़ते मुनी की, वश में हों सब लोग।
महिमा होती यह सदा, वशित्व ऋद्धि के योग।।41।।

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घुसें छेद बिन शैल में, बाधा कोई न होय।
अप्रतिघाति ऋद्धिधर, सम न जग में कोय।।42।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघाति ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिखते-दिखते लुप्त हों, न हो मुनि का भान।
ऋद्धी तप से प्रकट हों, मुनि के अन्तर्धान।।43।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित फल पाते मुनी, इच्छित रूप बनाय।
काम रूपिणी ऋद्धिधर, जग में पूजे जायें।।44।।

ॐ ह्रीं कामरूपिणी ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ताटंक छंद)

तप में लीन रहे तपसी नित, उग्र-उग्र तप तपते रोज।
दीक्षा दिन से मरण काल तक, कर उपवास बढ़े शुभ ओज।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।45।।

ॐ ह्रीं उग्र तपोतिशय ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन आदिक तप करने से, क्षीण होय मुनिवर की देह।
दीप्ति तपो ऋद्धी से तन की, दीप्ति बढ़े तब निःसन्देह।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।46।।

ॐ ह्रीं दीप्त तपोतिशय ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से तप ऋद्धि की वृद्धी, करते हैं करके आहार।
तन मन बल बढ़ता है लेकिन, मल धातू न होय निहार।।

कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।47।।

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह निष्क्रीडन आदिक व्रत धर, व्रत पाले जो कई प्रकार।
त्याग करें उत्तम से उत्तम, महा तपो अतिशय को धार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।48।।

ॐ ह्रीं महातपोतिशय ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप तपते हैं मुनिवर, आतापन आदिक धर योग।
घोर तपो अतिशय ऋद्धीधर, हो उपसर्ग तथा कोइ रोग।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।49।।

ॐ ह्रीं घोर तपोतिशय ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकजयी सागर शोषण की, शक्ती पावें कई प्रकार।
घोर पराक्रम ऋद्धी धारी, पाते तप विध के आधार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।50।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत तिय गुप्ती धर, ब्रह्मचर्य व्रत से भरपूर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधर से, कलह आदि भागें सब दूर।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।51।।

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(त्रिभंगी छंद)

मन बल की ऋद्धी रही प्रसिद्धी, श्रुत का चिन्तन होय विशेष।
चिन्तन की शक्ति प्रभु की भक्ती, से मुहूर्त में होय अशेष।।
संयम से पावें ध्यान लगावें, आतम की शुद्धी पावें।
ऋद्धी हम पावें ज्ञान जगावें, मुनिवर के शुभ गुण गावें।।52।।

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों की शक्ती प्रभु की भक्ती, करते श्रुत का उच्चारण।
हों वचन अनोखे जग में चोखे, ऋद्धि सिद्धि का हो कारण।।
मुनिवर की वाणी जग कल्याणी, कर्ण सुने तृप्ती पावें।
ऋद्धी हम पावें ज्ञान जगावें, मुनिवर के शुभ गुण गावें।।53।।

ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड्गासन ठाड़े गर्मी-जाड़े, कष्ट नहीं कोई पावें।
तप की यह शक्ती देवे मुक्ती, अतिशय ऋद्धी दिखलावें।।
है ऋद्धी पावन जन मन भावन, मुनिवर ही इसको पावें।
ऋद्धी हम पावें ज्ञान जगावें, मुनिवर के शुभ गुण गावें।।54।।

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

मुनि तप की अग्नि जलावें, फिर सारे कर्म नशावें।
आमर्षौषधि ऋद्धी धारी, हैं सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।55।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कफ लार थूक आ जावे, जो सारे रोग नशावे।
क्ष्वेल्लौषधि ऋद्धीधारी, हैं सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।56।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेल्लौषधि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में जल स्वेद बनावे, वह शुभ औषधि बन जावे।
जल्लौषधि ऋद्धीधारी, हैं सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।57।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्णादिक जिह्वा का मल, बन जाए औषधि मंगल।
मल्लौषधि ऋद्धीधारी, हैं सारे दोष निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।58।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन जाए मूत्र जल औषधि, हर लेवे पर की व्याधि।
विड् औषधि ऋद्धीधारी, होते जग मंगलकारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।59।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि तन जो छूवे वायू, नश रोग बढ़ावे आयू।
सर्वौषधि ऋद्धीधारी, हर लेते व्याधी सारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।60।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्नादिक में विष होवे, कहते मुनि के सब खोवे।
मुख निर्विष ऋद्धीधारी, हर लेते व्याधी सारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।61।।

ॐ ह्रीं मुखनिर्विषौषधि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टी में औषधि आवे, देखत ही जहर बिलावे।
दश् निर्विष औषध धारी, हर लेते व्याधी सारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।62।।

ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विषौषधि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तातंक छंद)

उत्तम तप करने से मुनिवर, ऐसी ऋद्धी पाते हैं।
मानव से कह दें मरने को, शीघ्र वहीं मर जाते हैं।।

करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।63।।

ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई गलती हो जाने पर, क्रोध यदि मुनि को आवे।
दृष्टी पड़ जावे यदि उस पर, शीघ्र मृत्यु को वह पावे।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।64।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविष रस ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते, केवलज्ञानी तीर्थंकर।
दिव्य देशना झेला करते, ऋद्धिधारी मुनि गणधर।।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन चरणों में अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, तीन योग से बारम्बार।।65।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धि संयुक्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– जिन मुद्राधारी मुनी, पावें ऋद्धि त्रिकाल।
उनकी हम गाते यहाँ, भाव सहित जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

जय–जय तीर्थंकर क्षेमंकर, जय गणधर ऋद्धी के धारी।
जय मोक्ष मार्ग के अभिनेता, जय परम दिगम्बर अविकारी।।
प्रभु सकल व्रतों के धारी हैं, जो सम्यक् तप में लीन रहे।
वह श्रेष्ठ ऋद्धियों के धारी, इस धरती पर जिन संत कहे।।1।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, अतिशयकारी श्रेष्ठ रहे।
और विक्रिया ऋद्धी के भी, एकादश जिनदेव कहे।।
भेद क्रिया चारण ऋद्धी के, नव जानो अतिशयकारी।
तप ऋद्धी के भेद सप्त शुभ, कहे गये मंगलकारी।।2।।

बल ऋद्धी के भेद तीन शुभ, जैनागम में कहे महान्।
आठ भेद औषधी ऋद्धी के, बतलाए हैं जिन भगवान।।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, जिनका कौन करे गुणगान।
अक्षीण ऋद्धि के भेद कहे दो, क्षीण न हो भोजन स्थान।।3।।
चौंसठ भेद कहे यह भाई, आठों ऋद्धि के सुखकार।
संख्यातीत भेद इनके ही, हो जाते हैं मंगलकार।।
बुद्धि ऋद्धि के द्वारा मुनिवर, बुद्धी पाते अतिशयकार।
और विक्रिया ऋद्धी द्वारा, रूप बनाते विविध प्रकार।।4।।
चारण ऋद्धी पाकर ऋषिवर, करते हैं आकाश गमन।
चलें पुष्प जल के ऊपर भी, फिर भी न हो जीव मरण।।
दीप्त सुतप आदिक ऋद्धीधर, तप करते हैं विस्मयकार।
फिर भी काँतिमान तन पाते, मुनिवर करते न आहार।।5।।
तप्त सुतप ऋद्धीधारी मुनि, के न होता कभी निहार।
जगत विजय की शक्ती पाते, मुनिवर अतिशय ऋद्धीधार।।
क्षीर मधुर अमृत स्रावी रस, ऋद्धी से होता आहार।
क्षीर मधुर अमृत सम होता, मुनि के कर में मंगलकार।।6।।
औषधि ऋद्धीधर मुनि के तन, से स्पर्शित वायु के योग।
तन का मल छू जाने से भी, हो जाता है जीव निरोग।।
जिन्हें प्राप्त अक्षीण ऋद्धियाँ, ऐसे श्रेष्ठ मुनी के पास।
अन्न क्षीण न होय कभी भी, अक्षय होता क्षेत्र विकास।।7।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय अविकारी, ऋद्धीधारी और ऋद्धियाँ सर्व प्रकार।
हम पूजें ध्यावें, शीश झुकावें, ऋषि चरणों में बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धियुत तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- ऋद्धि सिद्धियों से 'विशद', पाकर शक्ति अपार।
रत्नत्रय निधि प्राप्त कर, मिले मोक्ष का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

समवशरण पूजन 8

(स्थापना)

तीर्थंकर प्रभु कर्म क्षीण कर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
धनद इन्द्र आज्ञा से रचना, करता है स्वर्गों से आन।।
बारह सभा जहाँ जुड़ती है, जिनवर का होता उपदेश।
ॐकारमय दिव्य देशना, से पाते प्राणी संदेश।
पुण्योदय से समवशरण शुभ, जिन दर्शन हमने पाए।
हृदय कमल में आह्वानन कर, पूजन करने को आए।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(आला छंद)

अष्टादश दोषों से विरहित, अरहंतों को करें नमन।
जिन वचनों का अमृत पीकर, नाश करें हम जन्म-मरण।।
तीर्थंकर के समवशरण में, करते भाव सहित वंदन।
सिद्ध शुद्ध शिवपद पाने को, विशद भाव से है अर्चन।।1।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

छियालिस गुण से मण्डित जिनवर, अर्हंतों के चरण नमन।
चेतन रस चन्दन पा शीतल, भवाताप का करें हरण।।
तीर्थंकर के समवशरण में, करते भाव सहित वंदन।
सिद्ध शुद्ध शिवपद पाने को, विशद भाव से है अर्चन।।2।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय के धारी जिन, अर्हंतों के चरण नमन।
चेतन रसमय अक्षत पाकर, भवसागर से करो तरण।।
तीर्थंकर के समवशरण में, करते भाव सहित वंदन।
सिद्ध शुद्ध शिवपद पाने को, विशद भाव से है अर्चन।।3।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म समय दश अतिशय पाएं, श्री जिनेन्द्र के चरण नमन।
चेतन रस के पुष्प प्राप्त कर, कामबाण का करें हनन।।

तीर्थंकर के समवशरण में, करते भाव सहित वंदन।
सिद्ध शुद्ध शिवपद पाने को, विशद भाव से है अर्चन।।4।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि0 स्वाहा।

केवलज्ञान के दश अतिशय शुभ, धारी जिन के चरण नमन।
चेतन रस चरुवर पाकर के, क्षुधा रोग का करें हनन।।
तीर्थंकर के समवशरण में, करते भाव सहित वंदन।
सिद्ध शुद्ध शिवपद पाने को, विशद भाव से है अर्चन।।5।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि0 स्वाहा।

देवोपम चौदह अतिशय युत, श्री जिन चरणों करें नमन।
चेतन ज्ञान दीप ज्योती से, मोह-तिमिर का करें हनन।।
तीर्थंकर के समवशरण में, करते भाव सहित वंदन।
सिद्ध शुद्ध शिवपद पाने को, विशद भाव से है अर्चन।।6।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि0 स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्यों से शोभित, श्री जिनेन्द्र के चरण नमन।
चेतन गुणमय धूप बनाकर, अष्ट कर्म का करें दहन।।
तीर्थंकर के समवशरण में, करते भाव सहित वंदन।
सिद्ध शुद्ध शिवपद पाने को, विशद भाव से है अर्चन।।7।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु मंगल द्रव्यों से शोभित, गंध कुटी में करें नमन।
चेतन रस के फल अर्पित कर, मोक्ष सुपद को करें वरण।।
तीर्थंकर के समवशरण में, करते भाव सहित वंदन।
सिद्ध शुद्ध शिवपद पाने को, विशद भाव से है अर्चन।।8।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक देह लब्धि नव, धारी जिनपद है अर्चन।
चेतन रसमय अर्घ्य बनाकर, प्रभु अनर्घ्य पद करें वरण।।
तीर्थंकर के समवशरण में, करते भाव सहित वंदन।
सिद्ध शुद्ध शिवपद पाने को, विशद भाव से है अर्चन।।9।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, विविध पुष्प ले हाथ।
विविध गुणों की प्राप्ति हो, झुका रहे हम माथ।।

(दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा- शांतीधारा के लिए, प्रासुक लाए नीर।
अष्ट कर्म का नाश हो, मिटे विभव की पीर।।

(शान्तये शांतिधारा)

मानस्तम्भ के अर्घ्य

जब केवल ज्ञान प्रकट होता, तब देव शरण में आते हैं।
वह समवशरण रचना करते, शुभ मानस्तम्भ बनाते हैं।।
हम मानस्तम्भ में पूरब के, जिन बिम्बों को करते वन्दन।
शुभ अर्घ्य बनाकर के पावन, हम भाव सहित करते अर्चन।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिक मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवशरण के दक्षिण में, शुभ मानस्तम्भ बना मनहार।
जिनबिम्ब विराजे हैं जिसमें, चारों ही दिश में मंगलकार।।
हम मानस्तम्भ में दक्षिण के, जिन बिम्बों को करते वन्दन।
शुभ अर्घ्य बनाकर के पावन, हम भाव सहित करते अर्चन।।2।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिक् मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवशरण के पश्चिम में, शुभ मानस्तम्भ बना मनहार।
जिनबिम्ब विराजे हैं जिसमें, चारों ही दिश में मंगलकार।।
हम मानस्तम्भ में पश्चिम के, जिन बिम्बों को करते वन्दन।
शुभ अर्घ्य बनाकर के पावन, हम भाव सहित करते अर्चन।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिक् मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवशरण के उत्तर में, शुभ मानस्तम्भ बना मनहार।
जिनबिम्ब विराजे हैं जिसमें, चारों ही दिश में मंगलकार।।
हम मानस्तम्भ में उत्तर के, जिन बिम्बों को करते वन्दन।
शुभ अर्घ्य बनाकर के पावन, हम भाव सहित करते अर्चन।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तरदिक् मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8 भूमियों के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

समवशरण के चतुर्दिशा में, प्रासाद बना है मनहारी।
चैत्य भूमि पहली है जिसमें, है शोभा विस्मयकारी।।
शोभित होते जिन मंदिर शुभ, जिनबिम्ब रहे मंगलकारी।
अर्चा करके बन जाएँ हम, समवशरण के अधिकारी।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिश चैत्यभूमि जिनालय संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम भूमि के आगे वेदी, गोपुर बने हैं चारों ओर।
द्वितिय भूमी रही खातिका, करती मन को भाव विभोर।।
कमल खिले हैं जिसमें अनुपम, दिखती है जो मनहारी।
अर्चा करके बन जाएँ हम, समवशरण के अधिकारी।।2।।

ॐ ह्रीं खातिका भूमि संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लता भूमि तृतीय कहलाई, वल्ली वनयुत अपरम्पार।
पुष्प खिले हैं जिसमें अनुपम, भँवरे करते हैं गुंजार।।
आह्लादित करती है मन को, भवि जीवों को सुखकारी।
अर्चा करके बन जाएँ हम, समवशरण के अधिकारी।।3।।

ॐ ह्रीं लता भूमि संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वल्ली वन के चतुर्दिशा में, परकोटा है गोपुर युक्त।
चतुर्थ भूमि उपवन है अनुपम, तरु अशोक से है संयुक्त।।
तरु के ऊपर चतुर्दिशा में, जिन प्रतिमाएँ मनहारी।
अर्चा करके बन जाएँ हम, समवशरण के अधिकारी।।4।।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि मध्ये तरु अशोकवृक्ष परिसंयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

समवशरण में उपवन भूमी, दक्षिण दिश में मंगलकार।
सप्तच्छद तरुवर शोभित है, पत्र पुष्पयुत अपरम्पार।।
तरु के ऊपर चतुर्दिशा में, जिन प्रतिमाएँ मनहारी।
अर्चा करके बन जाएँ हम, समवशरण के अधिकारी।।5।।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि मध्ये सप्तच्छद वृक्ष-परिसंयुक्त समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में उपवन भूमी, पश्चिम दिश में श्रेष्ठ महान।
चम्पक तरु शोभित है अनुपम, जिसका कौन करे गुणगान।।
तरु के ऊपर चतुर्दिशा में, जिन प्रतिमाएँ मनहारी।
अर्चा करके बन जाएँ हम, समवशरण के अधिकारी।।6।।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि मध्ये चम्पक वृक्ष-परिसंयुक्त समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

समवशरण में उपवन भूमी, उत्तर वन में अतिशयकार।
आम्र वृक्ष तरुवर है अनुपम, पत्र पुष्प युत मंगलकार।।
तरु के ऊपर चतुर्दिशा में, जिन प्रतिमाएँ मनहारी।
अर्चा करके बन जाएँ हम, समवशरण के अधिकारी।।7।।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि मध्ये आम्र वृक्ष-परिसंयुक्त समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ध्वज भूमी पञ्चम है भाई, ध्वज लहराएँ चारों ओर।
दश प्रकार चिन्हों से चिन्हित, करतीं मन को भाव-विभोर।।
आह्लादित करती है मन को, भवि जीवों के मनहारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद शुभकारी।।8।।

ॐ ह्रीं ध्वज भूमि मध्ये आम्र वृक्ष-परिसंयुक्त समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कल्पवृक्ष भूमी षष्ठी है, जिसकी महिमा रही महान।
तरुवर है सिद्धार्थ नमेरु, जिसका कौन करे गुणगान।।
वृक्ष मूल में सिद्ध बिम्ब शुभ, शोभित होते अविकारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद शुभकारी।।9।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि सिद्धार्थ वृक्ष-परिसंयुक्त समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कल्पवृक्ष भूमी है षष्ठी, वृक्ष रहा मंदार महान।
नाम रहा सिद्धार्थ मनोहर, जिसके बीचोंबीच प्रधान।।
वृक्ष मूल में सिद्ध बिम्ब शुभ, शोभित होते अविकारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद शुभकारी।।10।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि मंदार वृक्ष-परिसंयुक्त समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष शुभ, जिसकी महिमा अपरम्पार।
कल्पवृक्ष भूमी षष्ठी में, शोभित होते मंगलकार।।
वृक्ष मूल में सिद्ध बिम्ब शुभ, शोभित होते अविकारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद शुभकारी।।11।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि पारिजात वृक्ष-परिसंयुक्त समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

संतानक सिद्धार्थ वृक्ष शुभ, शोभित होता मंगलकार।
कल्पवृक्ष भूमी षष्ठी में, महिमा जिसकी विस्मयकार।।
वृक्ष मूल में सिद्ध बिम्ब शुभ, शोभित होते अविकारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद शुभकारी।।12।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि संतानक वृक्ष-परिसंयुक्त समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भवन भूमि सप्तम है बन्धू, बनी वीथिका चारों ओर।
सिद्ध बिम्ब जिसमें शोभित हैं, करते मन को भाव-विभोर।।
प्रथम वीथिका में बिम्बों की, महिमा है अति मनहारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद शुभकारी।।13।।

ॐ ह्रीं भवन भूमि प्रथम वीथिका संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ वीथिकाओं से सज्जित, भवन भूमि सप्तम भाई।
जिनबिम्बों से शोभित अनुपम, महिमा जग में सुखदायी।।
द्वितिय वीथिका में बिम्बों की, महिमा है अतिशयकारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद शुभकारी।।14।।

ॐ ह्रीं भवन भूमि द्वितीय वीथिका संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्तम भूमी भवन कही है, बनी वीथिकाएँ मनहार।
सिद्ध बिम्ब हैं चतुर्दिशा में, अतिशयकारी मंगलकार।।
तृतीय वीथिका शोभित होती, समवशरण में सुखकारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद शुभकारी।।15।।

ॐ ह्रीं भवन भूमि तृतीय वीथिका संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में सप्तम भूमी, उपवन भू कहलाती है।
श्रेष्ठ वीथिकाओं से सज्जित, मंगल मानी जाती है।।
चतुर्थ वीथिका में शोभित हैं, सिद्ध बिम्ब मंगलकारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद शुभकारी।।16।।

ॐ ह्रीं भवन भूमि चतुर्थ वीथिका संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री मण्डप भूमी है अष्टम, समवशरण में रही महान।
मुनि आर्यिका देव-देवियों, नर पशु का जिनमें स्थान।।
बारह कोठे होते अनुपम, भवि जीवों के शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद शुभकारी।।17।।

ॐ ह्रीं श्री मण्डप भूमि संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभू छन्द)

रत्नों से मंडित प्रथम पीठ, शुभ समवशरण में है पावन।
सुर धर्म चक्र ले खड़े हुए, आह्लादित करते हैं तन मन।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं प्रथम पीठ संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि मुक्ता युक्त पीठ द्वितिय, आठों दिश में ध्वज लहराएँ।
नव निधी द्रव्य मंगल आठों, घट धूप शुभम् शोभा पाएँ।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।19।।

ॐ ह्रीं द्वितीय पीठ संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय वंदित शुभ गंध कुटी, है तृतिय पीठ पर कमलासन।
चऊ अंगुल अधर श्री जिनवर, उनका चलता जग में शासन।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं तृतीय पीठ संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- रचना करते इन्द्र शुभ, समवशरण में आन।
जयमाला गाते विशद, पाने पद निर्वाण।।

(शम्भु छन्द)

मानस्तम्भ सरोवर निर्मल, जलयुत खाई पुष्पवाटी।
कोट नाट्यशाला द्वितियोपवन, बाद वेदि के ध्वज आदी।।
कोट कल्पतरु कोट सुपरिवृत, स्तूप प्रासादों की पंक्ति।
स्वच्छ प्रकर में सुर नर मुनिगण, पीठाग्रे जिनकी जगति।।1।।
कोष चार सौ तक सुभिक्षता, होता है आकाश गमन।
वध न होवे किसी जीव का, चतुर्दिशा में हों दर्शन।।

पूर्ण अन्त हो उपसर्गों का, करते नहीं हैं कवलाहार।
सर्व जगत की विद्याओं पर, पाया है जिनने अधिकार।।2।।
अर्धमागधी भाषा पावन, सर्व प्राणियों की हितकार।
सर्व जगत के जीवों में हो, मैत्री भाव का शुभ संचार।।
छह ऋतुओं के फल के गुच्छे, पत्ते और खिलें शुभ फूल।
वृक्ष सुशोभित होते पावन, मंगलकारी हों अनुकूल।।3।।
पृथ्वी रत्न मई हो सुन्दर, निर्मल होती काँच समान।
हो अनुकूल गमन वायु का, मानो करती हो सम्मान।।
परम सुगन्धित वायु पावन, से आच्छादित हो भू-भाग।
इक योजन पर्यन्त पूर्णतः, नहीं रहे दुर्गन्ध विभाग।।4।।
श्री विहार में पद के नीचे, पद्मराग मणि श्रेष्ठ रहा।
केसर युक्त अतुल सुखकारी, स्वर्ण पत्र संयुक्त कहा।।
एक कमल रहता ऐसे ही, सप्त कमल आगे मानो।
सप्त कमल चरणों के तल में, पन्द्रह वर्ग कमल जानो।।6।।
झुकी हुई ज्यों शाली ब्रीही, धान्य आदि धारण करती।
करती है रोमांच प्राप्त जो, शायद ज्यों वर्षा करती।।
शरद ऋतु के काल में निर्मल, सरवर सम जो होवे खास।
रहित धूलि आदिक मल से शुभ, शोभित होता है आकाश।।6।।
इन्द्रों की आज्ञा से सारे, देवादि भी करें विहार।
आओ-आओ शीघ्र यहाँ पर, करते हैं वह सभी पुकार।।
ज्योतिष व्यन्तर वैमानिक सब, देवों का करते आह्वान।
चारों ओर बुलावा देकर, करते हैं प्रभु का सम्मान।।7।।
सहस रश्मि की कान्ती को भी, तिरस्कृत करता है मनहार।
धर्मचक्र आगे चलता है, सर्व जगत् में मंगलकार।।
श्री विहार में इसी तरह से, मंगल द्रव्य रहें शुभ साथ।
दर्पण आदिक अष्ट कहीं जो, उनके स्वामी हैं जिननाथ।।8।।
हरित मणी से निर्मित पत्रों, की छाया है सघन महान्।
शोक निवारी तरु अशोक है, शोभा युक्त रही पहचान।।
बकुल मालती आदिक पुष्पों, से आच्छादित हो आकाश।

पुष्प वृष्टि होने से लगता, मानो आया हो मधुमास।।9।।
नेत्र कमल दल के समान शुभ, नेत्रों वाले यक्ष महान्।
लीला पूर्वक चँवर युगल जो, ढौर रहे हैं प्रभु पद आन।।
भेद मिटाए दिन रात्री का, भामण्डल अति शोभावान।
सप्त भवों का दर्शायक है, करता है प्रभु का सम्मान।।10।।
श्रेष्ठ बासुरी आदिक उत्तम, बाद्यो सहित दुन्दुभि श्रेष्ठ।
बार-बार गम्भीर शब्द जो, करे ताल के साथ यथेष्ठ।।
बहुत विशाल नील मणियों से, शुभ निर्मित है दण्ड महान्।
अति मनोज्ञ आभा से संयुत, तीन छत्र हैं शोभावान।।11।।
कर्ण हृदय को हरने वाली, दिव्य ध्वनि अनुपम गम्भीर।
चार कोश तक चतुर्दिशा में, श्रवण करें धारण कर धीर।।
शिला स्फटिक मणि की निर्मित, सिंहासन सुन्दर मनहार।
सिंहों का शुभ है प्रतीक जो, समवशरण अति मंगलकार।।12।।
चौंतिस अतिशय रहे श्रेष्ठ गुण, इस जग में जिनके सुखकार।
अष्ट लक्ष्मियाँ प्रातिहार्य की, इन गुण का पाए आधार।
अन्य महत् गुण से संयुक्त हैं, श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव।
तीन लोक के नाथ श्री जिन, अर्हन्तों को नमन् सदैव।।13।।

दोहा- करते हैं हम वन्दना, भक्ति भाव के साथ।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चरण शरण हो आपकी, भव-भव में हर बार।
मिला नहीं हमको विशद, जब तक शिवपद द्वार।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री नवदेवता पूजा 9

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शंभू छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु ! अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।7 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...1

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...।।2।।

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...।।3।।

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...।।4।।

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...।।5।।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...।।6।।

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...।।7।।

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...।।8।।

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...।।9।।

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावें मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री अरहंत पूजा 10

स्थापना

हे परमेष्ठी! हे परमातम! सर्वज्ञ प्रभो! केवल ज्ञानी।
हे तीन लोक के अधिनायक! हे धर्म सुधामृत के दानी।।
हे परम शांत जिन वीतराग! प्रभु सर्व चराचर उपकारी।
हे चिदानन्द आनन्द कन्द! अरहन्त प्रभो! संकट हारी।।
हे कृपा सिन्धु करुणा निधान! बश इतना सा उपकार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो! अब मेरा भी उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

भव–भव में जल पीते–पीते, हम तृषा शान्त न कर पाए।
अब जिन पद की गंगा का जल, पाने प्रभु आज चरण आए।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।1।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जग के वैभव की चाह दाह, जग में ही भ्रमण कराती है।
प्रभु पद की राह शीघ्रता से, क्षण में भव भ्रमण नशाती है।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।2।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के कृत कर्म निजातम को, इस भव वन में भटकाते हैं।
अक्षत ले पूजन करने से, अक्षय पद में पहुँचाते हैं।।

श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।3।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आपकी पूजा शुभ, मन को नित निर्मल करती है।
श्रद्धा के सुमन चढ़ाने से, भव काम वासना हरती है।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।4।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन तज अनशन करके प्रभु, निज आतमबल प्रगटाए हैं।
नैवेद्य करूँ अर्पित पद में, प्रभु क्षुधा नशाने आए हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।5।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये दीप शिखा जगमग करती, होता बाहर में उजियारा।
अब अन्तर ज्ञान का दीप जले, नश जाए मोह का अंधियारा।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।6।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों अंगों में अष्टकर्म, प्रभु मेरे बन्धन डाले हैं।
हम कर्म नशाने हेतु प्रभू, शुभ गंध जलाने वाले हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।7।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय निधि पाने हेतू प्रभु, शरण हम आपकी आए हैं।
भव भ्रमण नाश मुक्ति पाएँ, इस हेतु विविध फल लाए हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।8।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह विविध कर्म के पुञ्ज प्रभू, सदियों से सताते आए हैं।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु, वसु द्रव्य सजाकर लाए हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।9।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

46 मूलगुण के अर्घ्य

जन्म के 10 अतिशय

स्वेद रहित तन पाते जिनवर, ये अतिशय है सुखकारी।
भक्त वंदना करें भाव से, जीवन हो मंगलकारी।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।1।। ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गर्भ जन्म को पाते फिर भी, श्री जिन मल से रहित कहे।
किंचित् मल अरु मूत्र नहीं है, पूर्ण रूप से अमल रहे।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्वेत रुधिर होता है तन का, वात्सल्य दर्शाता है।
दर्शन करके श्री जिनवर का, सबका मन हर्षाता है।

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु का तन सुंदर सुडौल है, होता है अतिशयकारी।
शुभ परमाणू से निर्मित है, समचतुष्क विस्मयकारी।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।4।।

ॐ ह्रीं सम चतुष्क सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वज्र वृषभ नाराच संहनन, जन्म समय से पाते हैं।
अतिशय शक्ती पाने वाले, श्री जिनेन्द्र कहलाते हैं।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं वज्र वृषभ नाराच संहनन सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन की सुंदरता है इतनी, कि सारे रूप लजाते हैं।
कामदेव भी जिनके आगे, अतिशय फीके पड़ जाते हैं।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभुवर के जन्म के अतिशय में, इक यह भी अतिशय आता है।
हो अति सुगंधमय तन पावन जो, तीन लोक महकाता है।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस आठ लक्षण प्रभु तन में, अतिशय शोभा पाते हैं।
सहस नाम के द्वारा भविजन, उनकी महिमा गाते हैं।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं एक हजार आठ शुभ लक्षण सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अप्रमित वीर्य ाार रहे शुभ, बल होता अविकारी है।
इनके आगे सुर चक्री अरु, इन्द्र की शक्ति हारी है।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु की हित मित अरु प्रिय वाणी, शुभ संतोष दिलाती है।
सत् इन्द्र चरण में आ झुक्ते, उन सबका मन हर्षाती है।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं प्रिय हित वचन सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

जब केवलज्ञान प्रकट होता, सुर अतिशय नया दिखाते हैं।
करके सुभिक्ष पृथ्वी तल को, सौ योजन तक महकाते हैं।।
प्रभु पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्यों सूर्य उदय होता नभ में, त्यों प्रभु अधर हो जाते हैं।
बस पाँच हजार धनुष ऊपर, प्रभु गगन गमन को पाते हैं।।

प्रभु पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु दया भाव के कोष रहे, अदया का नाम निशान नहीं।
जो चरण शरण पा जाते हैं, उसको नहिं होता खेद कहीं।।
प्रभु पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केवल ज्ञान का अतिशय है प्रभु, कवलाहार नहीं करते।
फिर भी तन वदन प्रशस्त रहे, जीवों के खेद सभी हरते।।
प्रभु पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित घातिक्षयजातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब केवल ज्ञान प्रकट होता, तब यह अतिशय हो जाता है।
फिर चेतन और अचेतन कृत, उपसर्ग नहीं हो पाता है।।
प्रभु पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ समवशरण में श्रीजिन का, मुख उत्तर पूर्व में रहता है।
दिखता है चारों ओर विशद, शुभ जैनागम ये कहता है।।
प्रभु पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु सब विद्या के ईश्वर हैं अरु, सर्व कला कौशल धारी।
जन-जन पर करुणा करते हैं, प्रभु सर्व लोक में उपकारी।।
प्रभु पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वर घातिक्षयजातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है परमौदारिक तन प्रभु का, न पड़ती है उसकी छाया।
जो पुद्गल से ही बना हुआ, यह प्रभु की है कैसी माया।।
प्रभु पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षयजातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पलकें न कभी झपकती हैं, प्रभु नाशा पर दृष्टी रखते।
बिन देखे द्रव्य चराचर के, वह स्वयं ज्ञान से सब लखते।।
प्रभु पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।19।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद घातिक्षयजातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ये अतिशय महिमाशाली है, प्रभु केवल ज्ञान जगाते हैं।
नहिं बढ़ें केश नख किंचित् भी, ज्यों के त्यों ही रह जाते हैं।
प्रभु पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

तीर्थंकर जिनकी दिव्य देशना, सर्वार्धमागधी भाषा में।
है चमत्कार देवों का ये, समझो सुरकृत परिभाषा में।।

जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीय भाषा देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिस ओर प्रभु के चरण पड़ें, जन–जन में मैत्री भाव रहे।
सब बैर विरोध मिटे मन का, करुणा का उर से स्रोत बहे।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्री भाव देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनवर का गमन जहाँ होता, इक साथ फूल खिल जाते हैं।
सौरभ सुगंध के द्वारा वह, अवनी तल को महकाते हैं।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु चरण पड़े जिस वसुधा पर, भू कंचन वत् हो जाती है।
ज्यों–ज्यों आगे बढ़ते जाते, दर्पण वत् होती जाती है।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।24।।

ॐ ह्रीं दर्पण सम भूमि देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अतिशय ये देवों कृत होता, सुरभित वायु अनुकूल रहे।
सब विषम व्याधि का नाश करे, शुभ मंद सुगंध समीर बहे।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।25।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आनंद सरोवर लहराए मन में, उत्साह उमंग भरे।
प्रभु का दर्शन सारे जग में, जन मन का कल्मष दूर करे।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वायु कुमार सुर आकर के, अतिशय ये खूब दिखाते हैं।
धूली कंटक से रहित भूमि, करके प्रभु गमन कराते हैं।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।27।।

ॐ ह्रीं कंटक रहित भूमि देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर मेघ कुमार सुवृष्टि कर, शुभ गंधोदक वर्षाते हैं।
मेघोंकृत वही सुगंधी से, जन–जन के मन हर्षाते हैं।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।28।।

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु गगन गमन जब करते हैं, सुर स्वर्ण कमल रचते जाते।
पन्द्रह के वर्ग कमल रचना, यह जैनागम में बतलाते।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।29।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फल फूल खिले सब ऋतुओं के, जहँ जिनवर के शुभ चरण पड़े।
फल से तरु डाली झुक जाती, खेतों में धान्य के पौध बढ़े।।

जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।30।।

ॐ ह्रीं फलभार नम्रशालि देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्व दिशाएं निर्मल होती, शरद काल सम हो आकाश।
भक्ति भाव से करें अर्चना, हो जाती है पूरी आस।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।31।।

ॐ ह्रीं सर्व दिशा निर्मलत्व देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आओ—आओ भक्ति कर लो, सबका करते आह्वानन।
भाव सहित भक्ति करते वह, चरणों में करते हैं वंदन।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।32।।

ॐ ह्रीं आकाश जय—जयकार शब्द देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्म चक्र मस्तक पर रखकर, सर्वाहण्य यक्ष आगे चलता।
यक्ष स्वयं दिखलाता अतिशय, भविजन को आनंद मिलता।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।33।।

ॐ ह्रीं धर्म चक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छत्र चंवर दर्पण ध्वज ठोना, पंखा झारी कलश महान्।
अष्ट द्रव्य लेकर आते हैं, स्वर्ग लोक से देव प्रधान।।
जिन पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं।।34।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनंत चतुष्टय के अर्घ्य

तीन लोक के द्रव्य चराचर, एक साथ ही जान रहे।
गुण पर्याय सहित द्रव्यों को, समीचीन पहिचान रहे।।
ज्ञान अनंतानंत प्राप्त कर, केवल ज्ञानी कहलाए।
गुण अनंत के धारी जिन पद, वंदन करने हम आए।।35।।

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुण प्राप्ताय सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशा, केवल दर्शन प्रगटाया।
दिव्य देशना द्वारा जग में, सर्व लोक को दर्शाया।।
पाए दर्श अनंत श्री जिन, ज्ञाता दृष्टा कहलाए।
गुण अनंत के धारी जिन पद, वंदन करने हम आए।।36।।

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन गुण प्राप्ताय र्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोहनीय कर्मों को नाशा, सुख अनंत को पाया है।
नश्वर सुख को त्याग प्रभु ने, शाश्वत् सुख उपजाया है।।
पाए सौख्य अनंत श्री जिन, अर्हंत प्रभु जी कहलाए।
गुण अनंत के धारी जिन पद, वंदन करने हम आए।।37।।

ॐ ह्रीं अनंत सुख गुण प्राप्ताय र्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म नाशकर अंतराय को, आतम शौर्य जगाया है।
आतम की शक्ति खोई थी, उसको भी प्रभु ने पाया है।।
पाए वीर्य अनंत श्री जिन, अर्हंत प्रभु जी कहलाए।
गुण अनंत के धारी जिन पद, वंदन करने हम आए।।38।।

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण प्राप्ताय सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

शोक निवारी तरु अशोक है, प्रातिहार्य कहलाता है।
रत्न जड़ित हैं डाल पात सब, मनहर पवन बहाता है।।

प्रातिहार्य वसु प्रभु ने पाए, अर्हत् जिनवर कहलाए।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए।।39।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत्प्रातिहार्य सहित सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुष्पवृष्टि सुरगण जब करते, शोभा होती अपरंपार।
चारों ओर फैलती सुरभित, अतिशयकारी गंध अपार।।
प्रातिहार्य वसु प्रभु ने पाए, अर्हत् जिनवर कहलाए।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए।।40।।

ॐ ह्रीं पुष्प वृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दिव्य ध्वनि प्रहसित होती है, सब भाषामय चारों ओर।
ऊँकार मय हुई देशना, करती सबको भाव विभोर।।
प्रातिहार्य वसु प्रभु ने पाए, अर्हत् जिनवर कहलाए।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए।।41।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अक्षय कोष पुण्य से भरते, चौंसठ चँवर ढौरकर देव।
प्रभु चरणों में देव समर्पित, तीन योग से रहे सदैव।।
प्रातिहार्य वसु प्रभु ने पाए, अर्हत् जिनवर कहलाए।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए।।42।।

ॐ ह्रीं चतुषष्टि चँवर सत्प्रातिहार्य सहित सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नों से मण्डित होता है, श्री जिनेन्द्र का सिंहासन।
उसके ऊपर अधर में होता, तीर्थंकर जिन का आसन।।
प्रातिहार्य वसु प्रभु ने पाए, अर्हत् जिनवर कहलाए।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए।।43।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूमण्डल को मोहित करता, श्री जिन का आभा मण्डल।
सप्त भवों का दिग्दर्शक है, श्री जिनेन्द्र का भामण्डल।।
प्रातिहार्य वसु प्रभु ने पाए, अर्हत् जिनवर कहलाए।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए।।44।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव दुंदुभी बजती मनहर, मन को आह्लादित करती।
जड़ होकर भी भव्य जीव के, मन का सब कल्मष हरती।।
प्रातिहार्य वसु प्रभु ने पाए, अर्हत् जिनवर कहलाए।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए।।45।।

ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहित सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन छत्र दर्शायक है यह, श्री जिन रहे त्रिलोकी नाथ।
तीन लोक के अधिनायक हैं, झुका रहे तव चरणों माथ।।
प्रातिहार्य वसु प्रभु ने पाए, अर्हत् जिनवर कहलाए।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए।।46।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सहित सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

पूजन कर अरहन्त की, कर्म होय उपशांत।
रोग शोक का नाश हो, कैर–बैर हो शांत।।47।।

ॐ ह्रीं सर्वघातिकर्म विनाशक चतुषष्ठी मूलगुण प्राप्त श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो नमः सर्व शांति कुरु कुरु नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा

कर्म घातिया नाशकर, पावें पद अरहंत।
शीश झुकाते चरण में, सुर नर मुनि सब संत।।

(वीर छन्द)

वीर तुम जग जीवन के युग दृष्टा, सद्ज्ञान प्रदाता अर्हन्त देव।
हे धर्म ! तीर्थ के उन्नायक, पुरुषार्थ साध्य साधन सुदेव।।
हे तीर्थंकर ! तब वाणी का, सर्वत्र गूँजता जयकारा।
हे रत्नत्रय! के सूत्र धार, तुमने जग से जग को तारा।।1।।
हे अरिनाशक अरिहंत प्रभो !, कई होते चरणों चमत्कार।
सद् भक्त आपके द्वारे पर, वन्दन करते हैं बार–बार।।
हे तीन लोक के नाथ प्रभो!, सर्वज्ञ देव जिन वीतराग।
हे मानवता के मुक्ति दूत!, न तुमको जग से रहा राग।।2।।
हित मित प्रिय वचनों को जिनेश, यह नियति सदा दोहराएगी।
हे परम पिता ! हे जगत ईश !, प्रकृति भी तव गुण गाएगी।।
तव दर्शन करने से जग के, सारे संकट कट जाते हैं।
जो चरण शरण में आते है, वह मन वांछित फल पाते हैं।।3।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुःख उनके पास न आते हैं।
वह भी अर्हत् बन जाते हैं, जो अर्हन्त प्रभु को ध्याते हैं।।
जो सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, अरु सम्यक् तप को पाते हैं।
वह पञ्च महाव्रत समिति पञ्च, पञ्च इन्द्रिय जय भी पाते हैं।।4।।
मन को स्थिर कर गुप्ति से, षट्आवश्यक का पालन करते।
निज हाथों करते केश लुंच, शुभ वीतरागता को धरते।।
करते हैं अतिशय भव्य कई, चरणों में शीष झुकाते हैं।
तब देवलोक से देव कई, जिन भक्ति करने आते हैं।।5।।
प्रभु दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य, सुख अनन्त चतुष्टय पाते है।
फिर केवल ज्ञान प्रगट होता, वसु प्रातिहार्य प्रगटाते हैं।।

सब ऋद्धि सिद्धियाँ नत होकर, जिनके चरणों में आतीं हैं।
जो शरणागत बनकर प्रभु पद, में नत होकर के झुक जाती हैं।।6।।
ऐसा निर्मल पावन पवित्र, जो पद प्रभु तुमने पाया है।
उस पद, को पाने हेतु प्रभु, मन मेरा भी ललचाया है।।
जो चलें प्रभु के कदमों पर, वह भी अर्हत् हो जाएगा।
वह कर्म नाशकर अपने सारे, मुक्ति बधु को पाएगा।।7।।

(आर्या छन्द)

हे धर्म ! ध्वजा के अधिनायक! हे 'विशद' ज्ञान ज्योति ललाम!।
हे कृपा! सिन्धु करुणा निधान! चरणों में हो शत्–शत् प्रणाम।।

(छन्द घत्तानंद)

श्री जिनवर स्वामी, अन्तर्यामी, कोटि नमामि जगगाता।
हे जगत् उपाशक पाप विनाशक, अर्हंत प्रभु जग के ज्ञाता।।

ॐ ह्रीं सर्वघाति कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठी जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(कवित्त रूपक)

संयम रतन विभूषण भूषित, नाशक दूषण श्री जिनराज।
सुमति रमा रंजन भव भंजन, तीन लोक के प्रभु सरताज।।
अमल अखण्डित सकल सुमंगल, भव तारक अघ हरन जहाज।
तारण तरण श्री जिन चरणों, आए भाव सुमन ले आज।।

।। इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

श्री सिद्ध पूजा 11

स्थापना

अधिपति हैं प्रभू धवल वन के, स्वर्णिम सौन्दर्य विमल पावन।
अक्षय है अनुपम अविनाशी, प्रभु शौर्य आपका मन भावन।।
हे सिद्ध शिला के अधिनायक !, शुभ ज्ञान मूर्ति चैतन्य धाम।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, हे चिर ज्योति! अमृत ललाम।।

ये भक्त खड़ा है चरणों में, इसकी विनती स्वीकार करो।
तुम अहो पतित पावन प्रभुवर, अब मेरा भी उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

हे प्रभो! हमारे मन के सब, कलुषित भावों को निर्मल कर दो।
मैं आया निर्मल नीर लिए, प्रभु सरल भावना से भर दो।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिने जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं भटक रहा हूँ सदियों से, संसार ताप का नाश करो।
यह सुरभित चंदन लाया प्रभु, मम् हृदय में ज्ञान सुवास भरो।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय तंदुल कर में लाया, अक्षय विश्वास लिए उर में।
मैं भाव सहित गुणगान करूँ, भक्ती के गीत भरो स्वर में।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा हे भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की ज्वाला हे भगवन्!, मैं आया आज नशाने को।
श्रद्धा के सुन्दर सुमन लिए, अब आया नाथ चढ़ाने को।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अगणित व्यंजन खाए लेकिन, मिट सकी न मन की अभिलाषा।
नैवेद्य चरण में लाया हूँ, मिट जाए भोजन की आशा।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर में मोह तिमिर छाया, इसने जग में भरमाया है।
अब मोह अंध के नाश हेतु, भावों का दीप जलाया है।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

फंस कर के जग मिथ्यामति में, सारे जग को अपनाये हैं।
अब धूप दहन करके भगवन्, भव कर्म जलाने आए हैं।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों में मानस रमता है, पर तृप्त कभी न हो पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह भाव सहित फल ले आए।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्ध चक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

होगा अनन्त सुख प्राप्त मुझे, यह भाव बनाकर आया हूँ।
मैं अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।।

हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सिद्ध प्रभू के आठ गुण, होते आदि अनन्त।
अष्ट कर्म का नाश कर, करते भव का अन्त।।
अष्ट गुणों का भाव ले, आया चरणों नाथ।
पुष्पाञ्जलि अर्पित करूँ, झुका चरण में माथ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सिद्धों के आठ मूलगुण के अर्घ्य

यह मोह कर्म दुखदाई है, उसने जग को भरमाया है।
जिसने उसको ठुकराया है, उसने समकित गुण पाया है।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीश झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञान प्रकट न होने दे, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
जो कर्म नाश कर प्रकट करे, वह केवल ज्ञान प्रकाश रहा।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीश झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण जहाँ में, दर्शन गुण का घात करे।
नाश करे इसका जो साधक, केवल दर्शन प्राप्त करे।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीश झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय है कर्म घातिया, सद्गुण का जो नाशी है।
उसका घात किए जिन स्वामी, बल अनन्त की राशि है।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीश झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म का नाश किया प्रभु, गुण सूक्ष्मत्व लिया प्रगटाय।
अविकारी हो गये अमूरत, सिद्ध सिला पर पहुँचे जाय।।
अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, करता सिद्धों का सुमरन।
करके नमित अष्ट अंगों को, करता हूँ शत्–शत् वन्दन।।5।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म का नाश किए प्रभु, अवगाहन गुण उपजाए।
चतुर्गती से मुक्त हुए अरु, इस भव से मुक्ती पाए।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीश झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अवगाहन गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म का नाश किए प्रभु, अगुरूलघु गुण उपजाए।
ऊँच नीच का भेद मैंटकर, सिद्धों के जो सुख पाए।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीश झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघु गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय कर्मों के नाशी, अव्याबाध सुगुण को पाय।
कर्माधीन सुखों को तजकर, निराबाध सुख को उपजाय।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीश झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण आदि कर्मों के, नाशी हैं जो सिद्ध महान्।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, सिद्धि पाने हे भगवान।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीश झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक अनन्तानन्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्रीं सर्व कर्म रहिताय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– सिद्ध अनन्तानन्त पद, वन्दन करूँ त्रिकाल।
अष्ट मूलगुण प्राप्त जिन, की गाऊँ जयमाल।।

(पद्धडि छन्द)

जय–जय अखण्ड चैतन्य रूप, तुम ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप।
रागादि विकारी भाव हीन, तुम हो चित् चेतन ज्ञान लीन।।
निर्द्वन्द निराकुल निर्विकार, निर्मम निर्मल हो निराधार।
कर राग द्वेष नो कर्म नाश, स्वभाविक गुण में किए वास।।
जय शिव वनिता के हृदय हार, प्रभु नित्य निरंजन निराकार।
कर निज परिणति का सत्य भान, सद्धर्म रूप शुभ तत्व ज्ञान।।
प्रभु अशरीरी चैतन्यराज, अविरूद्ध शुद्ध शिव सुख समाज।
सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञानवान, सूक्ष्मत्व अगुरुलघु सुगुण खान।।
अवगाह वीर्य सुख निराबाध, प्रभु धर्म सरोवर हैं अगाध।
प्रभु अशुभ कर्म को मान हेय, माना चित् चेतन उपादेय।।
रागादि रहित निर्मल निरोग, स्वाश्रित शाश्वत् शुभ सुखद भोग।
कुल गोत्र रहित निस्कुल निश्छल, मायादि रहित निश्चल अविकल।।
चैतन्य पिण्ड निष्कर्म साध्य, तुम हो प्रभु भविजन के अराध्य।
मनसिज ज्ञायक प्रतिभाष रूप, हे स्वयं सिद्ध! चैतन्य भूप।।
चैतन्य विलासी द्रव प्रमाण, नाशे प्रभु सारे कर्म वाण।

प्रभु जान सका मैं तुम्हें आज, हो गये सफल सम्पूर्ण काज।।
प्रगट्यो मम् उर में भेद ज्ञान, न तुम सम है कोई महान।
तुम पर के कर्त्ता नहीं नाथ, हम जोड़ प्रार्थना करें हाथ।।
तुम ज्ञाता सबके एक साथ, तव चरणों में झुक गया माथ।
ये भक्त खड़ा है विनय वन्त, प्रभु करो शीघ्र भव का सुअन्त।।
अब हमने भी यह लिया जान, तुम करते सबको निज समान।
जय वीतराग चैतन्य वान, जय–जय अनन्त गुण के निधान।।
तुममें पर का कुछ नहीं लेश, तुम हो जग के ज्ञायक जिनेश।
जो करें आपका 'विशद' ध्यान, वह पाता है कैवल्य ज्ञान।।
फिर करें कर्म का पूर्ण अन्त, हो जाएँ क्षण में श्री संत।
तब सिद्ध सिला पर हो विश्राम, निज पद ही हो आनन्द धाम।।
मेरे मन आवे यही देव, बन जाऊँ मैं भी 'विशद' एव।
मिट जाए आवागमन नाथ, वह पद पाने पद झुका माथ।।

(छन्द घत्तानन्द)

श्री सिद्ध अनन्ता, शिव तिय कन्ता, वीतराग विज्ञान परं।
जय जग उद्धारं शिव दातारं, सर्व मनोहर सौंख्य करं।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक श्री अनन्तानन्त सिद्ध परिमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा – चिदानन्द चिद् ब्रह्म में, चिर निमग्न चैतन्य।
चित् चिन्तन चिद्रूप हो, चिन्मय चेतन जन्य।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचार्य परमेष्ठी की पूजन 12

स्थापना

हे विश्व वंद्य! हे करुणानिधि! वात्सल्य मूर्ति हे रत्नाकर !
हे युग प्रधान! हे वर्धमान! हे सौम्य मूर्ति! हे करुणाकर ।।
त्रैलोक्य पूज्य हे समदृष्टा! हे पुण्य पुंज! ऋषिवर प्रधान।
हे ज्ञान सूर्य! आचार्य प्रवर, तव 'विशद' हृदय में आह्वानन्।।

हे गुरुवर ! गुरु गुण के धारी, हमको सद राह दिखा दीजे।
हे मोक्ष मार्ग के अधिनायक !, हमको गुरु चरण–शरण लीजे।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

कर्म कलंक पंक मल धोने, निर्मल जल भर लाये हैं।
जन्म जरा मृतु रोग नशाने, गुरु चरणों में आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो जन्म, जरा, मृत्यु, विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चमक–दमक मय महक मनोहर, मंगल चंदन लाये हैं।
पाप शाप संताप मिटाने, गुरु गुण गाने आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत अनुपम सुन्दर, अंजलि भरकर लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें गुरु, चरण शरण में आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

चंदन से रंजित अक्षत हम, फूल मानकर लाये हैं।
काम वासना नाश करो गुरु, पद में सुमन चढ़ाये है।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

उत्तम धवल श्रीफल द्वारा, शुभ नैवेद्य बनाए हैं।
क्षुधा वेदना शान्त करो गुरु, तव चरणों को ध्याये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।

भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्न जड़ित शुभ दीप सुमंगल, आरती करने लाये हैं।
निशा नाश हो मोह तिमिर की, तुम सा बनने आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

महकें दशों दिशायें जिससे, धूप दशांगी लाये हैं।
अष्ट कर्म का दमन करो गुरु, कर्म शमन को आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ऐला केला आम सुपाड़ी, लोंग श्रीफल लाये हैं।
मोक्ष महाफल पाने को शुभ, भाव बनाकर आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य सु सुंदर, थाल संजोकर लाये हैं।
पद अनर्घ पाने को गुरुवर, अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – छत्तिस गुण को धारते, गुरु निर्ग्रन्थाचार्य।
पुष्पाञ्जलि से पूजते, उनके पद सब आर्य।।

(अथ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

36 मूलगुण के अर्घ्य

जीवादि तत्त्वों पर करते, दोष रहित जो सद् श्रद्धान्।
प्रथम कषाय अनन्तानुबन्धी, करते मिथ्यातम की हान।।
दर्शनाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संशय और विमोह त्याग कर, करते हैं विभ्रम का नाश।
मिथ्या ज्ञान रहित होकर जो, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।
ज्ञानाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

पंच महाव्रत समिति पाँच तिय, गुप्ती का पालन करते।
तेरह विधि चारित्र पालते, अतीचार को भी हरते।।
चारित्राचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्राचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनशन आदिक बाह्य सुतप छह, अन्तरंग तप पाल रहे।
द्वादश विधि तप धारण करके, संयम रत्न सम्हाल रहे।।
तपाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।4।।

ॐ ह्रीं तपाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म नाश करने की शक्ती, में बुद्धी नित करते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित तप, के भावों से भरते हैं।।
वीर्याचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।5।।

ॐ ह्रीं वीर्याचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीत रहे जो सर्व कषाएँ, करते विषयों का संहार।
क्षुधा वेदना जीत रहे जो, चतुविधी त्यागे आहार।।
अनशन तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।

चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।6।।

ॐ ह्रीं अनशन तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूख से कम आधा चौथाई, एक ग्रास लेते आहार।
उत्तम मध्यम जघन्य रूप से, होता है जो तीन प्रकार।।
ऊनोदर तप पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।7।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चर्या को आहार हेतु जो, व्रत संख्यान करके जावें।
लाभालाभ में तोष रोष नहिं, साम्य भाव मन में पावें।।
व्रत परिसंख्यान पालते हैं तप, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।8।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कभी एक दो तीन रसों का, छोड़–छोड़ करते आहार।
कभी चार रस कभी पाँच का, कभी छोड़ते सर्व प्रकार।।
रस परित्याग का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।9।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

अनाशक्त रहते विविक्त्त जो, शैयाशन से तप करते।
शान्त भाव से रहते हैं जो, बाधाओं से नहिं डरते।।
विविक्त शैयाशन पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।10।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैयाशन तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

तन से रहा ममत्व भाव जो, धीरे–धीरे छोड़ रहे।
आत्म ध्यान में रत रह करके, निज से नाता जोड़ रहे ।।
कायोत्सर्ग तप पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।11।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गमनागमन आदि चर्या में, हो प्रमाद से प्राणी घात।
गुरु के द्वारा लेते प्रायश्चित्, करते दोषों का संघात।।
प्रायश्चित् तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।12।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित् तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चारित्र रूप है, और विनय उपचार कहा।
यथा योग्य आदर करना ही, इनका विनयाचार रहा।।
विनय सु तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।13।।

ॐ ह्रीं विनय तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करें साधना साधक अपनी, उसमें कोइ बाधा आवे।
दूर करें निस्वार्थ भाव से, वैयावृत्ती कहलावे।।
वैयावृत्ति सु तप पालन, करते परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।14।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्ति तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुबह शाम दिन रात निरन्तर, स्वाध्याय में रहते लीन।
वाचना पृक्षना अरु अनुप्रेक्षा, आम्नाय उपदेश प्रवीन।।
स्वाध्याय तप पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।15।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होवे यदि उपसर्ग परीषह, शांत भाव से सहते हैं।
आत्म ध्यान में लीन रहें नित, मोह त्याग कर रहते हैं।।
व्युत्सर्ग तप पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।16।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिंतन मनन ध्यान जप में जो, रहते हैं निशदिन लवलीन।
आत्म ध्यान नित करें भाव से, होते सम्यक् ज्ञान प्रवीन।।
ध्यान सुतप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।17।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश धर्म के अर्घ्य

दुष्ट जीव यदि कोई सतावे, तो भी क्रोध नहीं लावे।
समता भाव धारते मन में, क्षमा धर्म वह कहलावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।18।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमाधर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अहंकार के त्याग भाव से, विनय भाव मन में आवे।
मृदु भाव धारण करने पर, मार्दव धर्म कहा जावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।19।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छल छद्रम माया तजने से, सरल भाव मन में आवे।
समता भाव जगे अन्तर में, आर्जव धर्म कहा जावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।20।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन स्वभाव से अशुचि रहा है, शुद्ध नहीं वह हो पावे।
लोभ त्याग से भाव बने जो, उत्तम शौच कहा जावे ।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।21।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

असद् वचन को पाप कहा है, वह तो जग में भटकावे।
सत्य वचन अभिप्राय जानकर, कहें सत्य वह कहलावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।22।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् कायों की रक्षा करने, इन्द्रिय मन वश में करते।
पंच पाप से निवृत होकर, उभय रूप संयम धरते।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।23।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अन्तरंग बहिरंग उभय तप, द्वादश विधि जो अपनावें।
खेद नहीं करते हैं मन में, उत्तम तप साधू पावें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।24।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पर द्रव्यों को भिन्न जानकर, उनमें राग नहीं लावे।
राग द्वेष से रहित मुनी के, उत्तम त्याग कहा जावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।25।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाह्यभ्यन्तर उभय परिग्रह, में जो मोह नहीं पावे।
समतावान मुनी के भाई, आकिन्चन्य कहा जावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।26।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्त्री में आशक्ती तजकर, काम वासना को जीते।
ब्रह्मचर्य व्रत के धारी मुनि, आत्म ध्यान अमृत पीते।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।27।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुर्ध्यानों का त्याग करें जो, जीवों में समता पावें।
तीन काल करते सामायिक, आवश्यक करते जावें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।28।।

ॐ ह्रीं समता आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौबिस तीर्थंकर की भक्ती, परमेष्ठी को नित ध्यावें।
सरल सौम्य भावों के द्वारा, स्तुति कर जिन गुण गावें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।29।।

ॐ ह्रीं स्तुति आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव वन्दना करें भाव से, दोष रहित जिन गुण गावें।
उनके गुण को पाने हेतू, सतत् भावना जो भावें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।30।।

ॐ ह्रीं वन्दना आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अहोरात्रि में मन, वच, तन से, दोष कोई भी लग जावे।
आलोचन कर प्रायश्चित् लें, प्रतिक्रमण वह कहलावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।31।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मन, वच, तन से त्याग करें जो, नहीं रोष मन में लावें।
प्रत्याख्यान कहा आगम में, साधू नित्य इसे पावें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।32।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन से ममता भाव त्याग कर, निज आतम को जो ध्यावे।
पावन ध्यान लगावे मन से, कायोत्सर्ग कहा जावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।33।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मन मर्कट होता अति चंचल, यत्र तत्र दौड़ा जावे।
उसको वश में करना भाई, मनो गुप्ति जो कहलावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।34।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्ति प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हित मित प्रिय जो वचन उचरते, मधुर वचन मुख से बोलें।
करुणा कारी वचन बोलने, हेतू भी ना मुख खोलें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।35।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्ति प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निज काया को वश में करके, चंचलता को त्याग रहे।
तन में स्थिरता धर के जो, काय गुप्ति में लाग रहे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।36।।

ॐ ह्रीं कायगुप्ति प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – छत्तिस पाए मूल गुण, पालें पंचाचार।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, वन्दूँ बारम्बार।।37।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्ठी मूलगुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रूं पञ्चाचार प्रदायक श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – भरा हुआ जिनके हृदय, जीवों से अनुराग।
मुक्ती के राही परम, नहीं किसी से राग ।।
भरत भूमि को धन्य कर, लिया आप अवतार।
मात पिता जननी सभी, मान रहे उपकार।।

तर्ज – भक्तामर की (वीर छंद)

सम्यक् श्रद्धा की गुण मणियाँ, मोह तिमिर की हैं नाशक।
चित् स्वरूप चेतन के गुण की, दिनकर सम हैं जो भासक।।
सम्यक् श्रद्धा हम पा जायें, गुरुवर दो हमको आशीष।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश।।1।।
लोकालोक प्रकाशित करता, भव्य जनों को सम्यक् ज्ञान।
चेतन और अचेतन का तब, स्वयं आप हो जाता भान।।

सम्यक् ज्ञान निधी देने को, गुरुवर बन जाओ आदीश।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश।।2।।
कर्म कालिमा का नाशक है, पृथ्वी तल पर सदाचरण।
सत् संयम पालन करने को, संतों की है श्रेष्ठ शरण।।
सम्यक् चारित पाने हेतू, चरणों में झुकते आधीष।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीशी।।3।।
शीतल आभा से विकसित है, जैसे नभ से चन्द्र किरण।
चेतन को कुंदन करता है, जग में सम्यक् तपश्चरण।।
सम्यक् तप की अभिलाषा है, चरण शरण दो हमें मुनीश।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश।।4।।
निज शक्ति को नहीं छिपाकर, पालन करते वीर्याचार।
शुभ भावों से स्वयं शुद्ध हो, हो जाते हैं भव से पार।।
वीर्याचार करूँ में पालन, गुरुवर ऐसा दो आशीष।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश।।5।।
पंच महाव्रत समिति गुप्ति तिय, षट् आवश्यक पाल रहे।
पंचेन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर, पंचाचार संभाल रहे।।
वाणी से वचनामृत देते, भव्यजनों को हे वागीश !
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश।।6।।
उत्तम क्षमा आदि धर्मों का, पालन करते जो निर्दोष।
द्वादश अनुप्रेक्षा के चिंतक, गुरुवर रत्नत्रय के कोष।।
रत्नत्रय का दान हमें दो, 'विशद' योग से हे योगीश!।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश।।7।।

दोहा – छत्तिस गुण धारी परम, करते तुम्हें प्रणाम।
चरण शरण के दास की, भक्ति फले अविराम।।

ॐ ह्रूं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – चरण शरण के दास की, लगी है मन में आश।
ज्ञान ध्यान तप शील का, नित प्रति होय विकास।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

उपाध्याय परमेष्ठी की पूजन 13

स्थापना

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, धारी जो ज्ञाता विद्वान।
रत्नत्रय का पालन करते, उपाध्याय हैं सर्व महान्।।
वीतराग, निर्ग्रन्थ दिगम्बर, निर्विकार अविकारी हैं।
मोक्षमार्ग के अधिनायक गुरु, जग में मंगलकारी हैं।।
करते ज्ञानाभ्यास निरन्तर, संतों को करवाते हैं।
उपाध्याय का आह्वानन् कर, अपने हृदय बसाते हैं।।

ॐ ह्रौं रत्नत्रय धारक श्री उपाध्याय परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। ***(ज्ञानोदय छन्द)***

सहज सुनिर्मल जल के अनुपम, कलश भरूँ मंगलकारी।
त्रिविधि रोग का नाश होय मम्, पद पाऊँ मैं अविकारी।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्व.स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान का शीतल चंदन, भव आतप का करता नाश।
मोह महातम हरता है जो, करता ज्ञान स्वरूप प्रकाश।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्व. स्वाहा।

पावन सहज भाव के अक्षत, अक्षय पद प्रगटाते हैं।
पुण्य पाप आस्रव के कारण, उनका नाश कराते हैं।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान के पुष्पों की शुभ, गंध परम सुखदायी है।
काम बाण की नाशक है जो, महाशील शिवदायी है।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा अग्नि से बहुत दुखी हम, तृप्त नहीं हो पाते हैं।
परम तृप्ति दायक समभावी, चरुवर परम चढ़ाते हैं।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम विशद ज्ञान के दीपक, मोह महातम नाशक हैं।
मिथ्यातम के पूर्ण विनाशक, लोकालोक प्रकाशक हैं।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

केवल ज्ञान की धूप मनोहर, अष्ट कर्म की नाशक है।
नित्य निरन्जन शिव सुखदायी, आतम ध्यान विकाशक है।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

सहज स्वभावी आत्म ध्यान के, रसमय फल सुखदायक हैं।
रत्नत्रय के पावन फल ही, मोक्ष मार्ग दर्शायक हैं।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

उत्तम अष्ट द्रव्य का पावन, अर्घ्य परम आनन्द मयी।
पद अनर्घ अपवर्ग रूप है, मंगलमय त्रैलोक्य जयी।।

उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

उपाध्याय के मूल गुण, होते हैं पच्चीस।
पुष्पांजलि कर पूजता, वन्दन करू ऋषीष।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

उपाध्याय परमेष्ठी के 25 मूलगुण

ग्यारह अंग के अर्घ्य (सरसी छन्द)

महाव्रती का चारित है जिसमें, आचारांग कहा।
सहस अठारह पद का वर्णन, जिसमें पूर्ण रहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आचारांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञान विनय क्रिया प्रतिपत्ति का, वर्णन पूर्ण रहा।
छेदोपस्थापना के वर्णन युत, सूत्र कृतांग कहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छह द्रव्यों के वर्णन संयुत, स्थानांग कहा।
जीव स्थान का वर्णन जिसमें, सा विस्तार रहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं स्थानांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन लोक स्वरूप द्रव्य का, जिसमें कथन रहा।
एक लाख चौसठ हजार पद, समवायांग कहा।।

उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं समवायांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अस्तिनास्ति के सप्तभंग युत, व्याख्या प्रज्ञप्ति कहा।
लाख दोय अट्ठाईस सहस पद, से संयुक्त रहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

तीर्थंकर गणधर चारित युत, ज्ञातृ कथांग जानो
पाँच लाख छप्पन हजार पद, उसके पहिचानो।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृकथांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उपासकाध्ययन अंग में भाई, श्रावक चारित्र कहा।
ग्यारह लाख सत्तर हजार पद, से संयुक्त रहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौबीसों तीर्थंकर जिन के, प्रति दश दश जानो।
उपसर्ग सहित अर्न्तमुहूर्त में, मुक्ती पद मानो।।
इसका वर्णन किया है जिसमें, अन्तः कृद्दशांग कहा।
तेइस लाख अठ्ठाईस हजार पद, में विस्तार रहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तः कृद्दशांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौबीसों तीर्थंकर जिनके, प्रति दश–दश जानो।
उपसर्ग सहन कर पंचानुत्तर, उपपाद हुआ मानो।।

इसका वर्णन किया है जिसमें, उपपादिक दशांक रहा।
बानवे लाख चबालीस सहस पद, में विस्तार कहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपादकदशांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाना प्रकार के उत्तर युक्त, प्रश्न व्याकरणांग रहा।
तेरानवे लाख सोलह हजार पद, में विस्तार कहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

उदय उदीरणा कर्म कथन युत, विपाक सूत्रांग रहा।
एक करोड़ चौरासी लाख पद, में विस्तार कहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।11।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(14 पूर्व के अर्घ्य) छन्द रोला

व्यय उत्पाद ध्रौव्य युत वस्तु, ऐसा जानो।
शास्त्र महा उत्पाद पूर्व, भाई पहिचानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।12।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त तत्व छह द्रव्य पदारथ, भाई जानो।
अग्रायणीय पूरव में इनका, कथन बखानों।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।13।।

ॐ ह्रीं अग्रायणी पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीर्थंकर चक्रीश हरी, बलदेव सु जानो।
वीर्यानुवाद पूर्व में भाई, कथन बखानो।।

उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।14।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सर्व वस्तु में सप्त भंग, तुम भाई जानो।
अस्ति–नास्ति प्रवाद पूर्व, भाई पहिचानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।15।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञानोत्पत्ति के कारण, जिन आठ बताए।
ज्ञान प्रवाद पूर्व, शास्त्र, यह भाई गाए।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।16।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वर्ण स्थान द्विइन्द्रियादिक, भाई जानो।
सत्य प्रवाद पूर्व में वर्णन, इसका मानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।17।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गमनागमन सुलक्षण जीवों, का बतलाए।
आत्म प्रवाद पूर्व में वर्णन, इसका गाए।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।18।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

बन्ध उदय कर्मों की सत्ता, भाई जानो।
कर्म प्रवाद पूर्व में भाई, कथन बखानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।19।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रत्याख्यान द्रव्य पर्यायें, भाई जानो।
प्रत्याख्यान पूर्व भाई, इसको पहिचानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।20।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पंच महाव्रत विद्या सत्, लघु वर्णन गाया।
अष्टांग निमित्त युत विद्यानुवाद, पूरव बतलाया।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।21।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीर्थंकर बलभद्र पूर्व में, हुए हैं भाई।
कल्याण वाद पूरव में उनकी, महिमा गाई।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।22।।

ॐ ह्रीं कल्याणनुवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ज्योतिष मंत्र भूत आदि की, नाशक विधियाँ।
अष्टांग निमित्त की प्रणानुवाद में, रही सुनिधियाँ।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।23।।

ॐ ह्रीं प्राणानुवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गीत नृत्य अरु सकल छन्द की, कला महा है।
अलंकार वर्णन युत क्रिया विशाल, ये पूर्व रहा है।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।24।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशाल पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुख दुख का वर्णन त्रिलोक में, जानो भाई।
लोक बिन्दु सार में मोक्ष की, विधि बतलाई।।

उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।25।।

ॐ ह्रीं लोकबिन्दुसार पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्यारह अंग पूर्व–चौदह के, ज्ञाता जानो।
सारे जग में इनकी महिमा, को पहिचानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।26।।

ॐ ह्रौं पंचविंशतिगुण प्राप्ताय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं द्वादशांग श्रुतज्ञान सहिताय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – उपाध्याय की वन्दना, करता रहूँ त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, तिन गुण की जयमाल।।

(पद्धडि छन्द)

जय उपाध्याय मुनिवर महान्, जय ज्ञान ध्यान चारित्रवान।
जय नग्न दिगम्बर रूप धार, शुभ वीतराग मय निर्विकार।।1।।
जय मिथ्यातम नाशक मुनीश, तव चरण झुकावे शीश ईश।
जय आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान हीन, जय धर्म शुक्ल में हुए लीन।।2।।
जय मोह सुभट का नाश कीन, जय आत्म ज्ञान गत गुण प्रवीण।
जय आतापनादि योग धार, जो करते हैं निज में विहार।।3।।
जय सम्यक् दर्शन ज्ञान पाय, जय सम्यक् चारित्र उर वसाय।
जय विषय भोग का कर विनाश, जय त्याग किए सब जगत आश।।4।।
जय विद्वत रत्न कहे मुनीश, कई भक्त झुकाते चरण शीश।
नित प्राप्त करें सम्यक् सुज्ञान, शिष्यों को दे सद् ज्ञान दान।।5।।
जय करें जगत कुज्ञान नाश, जय करें धर्म का सद् प्रकाश।
जाय काम कषाएँ किऐ क्षीण, जय तत्त्व देशना में प्रवीण।।6।।
जय अंग सु एकादश प्रमाण, जय चौदह पूरव लिए जान।
हो गये आप इनके सुनाथ, तव चरण झुकावें भक्त माथ।।7।।

जय धर्म अहिंसा लिए धार, जय गमन करें पग–पग विचार।
जय सौम्य मूर्ति हैं परम शांत, मुद्रा दिखती है अति प्रशांत।।8।।
जय–जय गुण गरिमा जग प्रधान, जय भव्य कमल विज्ञान वान।
जय–जय परमेष्ठी हुए आप, जय भव्य भ्रमर तव करें जाप।।9।।
जय–जय करुणाकर कृपावन्त, तब हुए जगत् में सकल संत।
आध्यात्म रसिक हो सुगुण खान, जय ज्ञानामृत का करें पान।।10।।
तुम पाए गुण जग में अपार, तव चरणों करते नमस्कार।
हमको गुरु भव से करो पार, हमको भी दो गुरु तत्त्व सार।।11।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय सम्यक् ज्ञानी विद्या दानी, उपाध्याय के गुण गाऊँ।
भव ताप निवारी बहुगुण धारी, ज्ञान पुजारी को ध्याऊँ।।

ॐ ह्रौं पंचविंशतिगुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा – उपाध्याय को पूजकर, पाऊँ ज्ञान निधान।
सुख शांति को प्राप्त कर, पाऊ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्व साधु पूजन 14

स्थापना

जो पंच भरत ऐरावत में, रहते हैं बीस विदेहों में।
कम तीन कोटि नव संत विशद, फँसते न गेह सनेहों में।।
जिन संतों के सद्गुण पाने, हम उनके गुण को गाते हैं।
हम भाव सहित पूजा करते, चरणों में शीश झुकाते हैं।।
जो रत्नत्रय के धारी हैं, हम करते उनका आह्वानन्।
चरणों में सर्व साधुओं के, शत् शत् वन्दन शत्–शत् वन्दन।।

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्, अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

तजूँ मिथ्या मोह मद को, भाव समकित से भरूँ।
ज्ञान का निर्मल सलिल ले, चरण में अर्पित करूँ।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भूलकर निज को हमारा, बढ़ रहा संसार है।
चरण चन्दन में चढ़ाऊँ, पाना भव से पार है।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

भव भ्रमण का नाश हो मम्, विषय भावों को तजूँ।
धवल अक्षत मैं चढ़ाऊँ, साम्यभावों से सजूँ।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

चित्त विचलित कर रहा यह, प्रबल कारी काम है।
पुष्प अर्पित करूँ पद में, कई जिनके नाम हैं।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन् ।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा की पीड़ा सताती, पूर्ण न होवे कभी।
सरस व्यंजन मैं चढ़ाऊँ, करूँ अर्पित मैं सभी।।

विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

तम घना है मिथ्यात्व का अब, नाश उसका मैं करूँ।
ज्ञान के दीपक जलाकर, तिमिर को भी परि हरूँ।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो मोह अन्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

भ्रमण करता फिर रहा हूँ, मैं अनादि से विभो!
अब अष्ट कर्मों को जलाऊँ, धूप अग्नि में प्रभो!
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल अनेकों पाए लेकिन, हुए सारे ही विफल।
मैं विविध फल चरण लाया, प्राप्त हो अब मोक्षफल।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अब अष्ट द्रव का अर्घ्य लेकर, करूँ मैं अर्पित चरण।
महाव्रतादि प्राप्त करके, पाऊँ मैं पण्डित मरण।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

साधू के गुण का कथन, करते हैं उर धार।
पुष्पांजलि अर्पित करूँ, पाने भव से पार।।

(पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अठ्ठाईस मूलगुण के अर्घ्य

(ज्ञानोदय छन्द)

त्रस स्थावर जीव सभी को, जान रहे हैं आप समान।
तीन योग से समता धारें, दुष्ट कोई आ जाय महान्।
परम अहिंसा व्रत के धारी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव से, वस्तू जो जिस रूप रही।
नहीं अन्यथा वचन बोलते, कहते जो जिस रूप कही।।
परम सत्यव्रत के धारी शुभ, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी है।।2।।

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिना दिए पर की वस्तू को, छूते लेते नहीं कभी।
रहित याचना नग्न दिगम्बर, त्याग दिए हैं द्रव्य सभी।।
व्रत अचौर्य के धारी पावन, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारी देव मनुष्य पशू की, मन, वच, तन से छोड़ दिए।
शीलव्रती हो मुक्ति वधू से, अपना नाता जोड़ लिए।।
ब्रह्मचर्य व्रत के धारी शुभ, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर रहा परिग्रह, पूर्ण रूप से छोड़ दिया।
सारे जग की आशाओं से जिसने, मुख को मोड़ लिया।।

सर्व परिग्रह व्रत के धारी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हाथ भूमी को लखकर, राह पे चलते जाते हैं।
यत्र तत्र कुछ नहीं देखते, समता हृदय सजाते हैं।।
ईर्या पथ से चलते हैं जो, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी है।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्या समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय वाणी है जिनकी, बोलें आगम के अनुसार।
भव्य जीव सुनकर कर लेते, स्वयं आप ही कंठाधार।।
भाषा समिति धारने वाले, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।7।।

ॐ ह्रीं भाषा समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक शुद्ध अन्न जल को भी, पूर्ण शोध कर लें आहार।
छियालिस दोष टालकर लेते, साम्य भाव से हो अविकार।।
समिति ऐषणा धारण करते, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।8।।

ॐ ह्रीं ऐषणा समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख शोध परिमार्जित करके, वस्तू का करते आदान।
रखने में जीवों की रक्षा, का रखते हैं पूरा ध्यान।।
समिति धरें आदान निक्षेपण, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।9।।

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छिद्र रहित प्रासुक भूमी पर, करते हैं जो मूत्र पुरीश।
जीवों की रक्षा में हरदम, तत्पर रहते जैन मुनीश।।
शुभ व्युत्सर्ग समिति के धारी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।10।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हल्का भारी कड़ा नरम अरु, रूखा चिकना शीत गरम।
स्पर्शन इन्द्रिय विषयों को, जीत रहे हैं संत परम।।
स्पर्शन इन्द्रिय के विजयी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।11।।

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खट्टा मीठा अरु कषायला, कटुक रहा चरपरा विशेष।
विषय कहे रसना इन्द्रिय के, जीत रहे हैं मुनी अशेष।।
रसना इन्द्रिय विजयी मुनिवर, जग जन के उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।12।।

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं दुर्गन्ध सुगन्ध भेद द्वय, घ्राणेन्द्रिय के रहे विशेष।
उन पर विजय प्राप्त करते हैं, वश में करते उन्हें अशेष।।
घ्राणेन्द्रिय के विजयी मुनिवर, जग जन के उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।13।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीला पीला श्वेत श्याम अरु, लाल रंग यह पाँच कहे।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, इन विषयों को जीत रहे।।
चक्षु इन्द्रिय के विजयी मुनि, जग जन के उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।14।।

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सा रे गा मा पा धा नि य, कर्णेन्द्रिय के विषय कहे।
सप्त तत्त्व के चिन्तन द्वारा, सप्त विषय को जीत रहे।।
कर्णेन्द्रिय के विजयी मुनिवर, जग जन के उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।5।।

ॐ ह्रीं कर्णइन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता भाव सभी जीवों पर, निज समान सबको माने।
संयम तप की शुभम् भावना, राग द्वेष से अंजाने।।

आर्त–रौद्र के ध्यान हीन शुभ, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।16।।

ॐ ह्रीं समता आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो अर्हन्त सिद्ध की स्तुति, भक्ति भाव से नित्य करें।
करते हैं गुणगान भाव से, मन के सारे दोष हरें।।
विनयभाव शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।17।।

ॐ ह्रीं स्तुति आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्हत् सिद्धाचार्यों की जो, नित्य वन्दना करते हैं।
पंच पाप से रहित मुनीश्वर, चरणों में सिर धरते हैं।।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।18।।

ॐ ह्रीं वन्दना आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोष लगे मन, वच, तन कोई, करने को उनका क्षयकार।
प्रतिक्रमण से भाव शुद्धि कर, आलोचन निज उर में धार।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।19।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यथा शक्ति पर वस्तू त्यागें, ये ही प्रत्याख्यान रहा।
असन रसादी का नित प्रतिदिन, करने हेतू त्याग कहा।।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।20।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गेह देह से नेह छोड़कर, स्थिर होकर करते जाप।
शांत भाव से कष्ट सहें सब, त्याग करें जो सारे पाप।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।21।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ऊँच–नीच भूमी को पाकर, शिलाखण्ड के ऊपर जाय ।
जीव रहित भूमी निर्जन्तुक, सोवें ऐसी वसुधा पाय ।।
क्षिति शयन गुण के धारी मुनि, जग में रहते हैं अविकार ।
तिनके चरणों शीश झुकाते, भाव सहित हम बारम्बार।।22।।

ॐ ह्रीं भूमिशयन गुण सहित साधु श्री परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध लेप आभरण त्यागकर, करते नहीं कभी संस्कार।
करते नहीं स्नान कभी भी, जीवों के प्रति करुणाधार।
हैं अस्नान मूलगुण धारी, जग में रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।23।।

ॐ ह्रीं अस्नान गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बालक वत् जो रहे दिगम्बर, अस्त्र वस्त्र सब त्याग दिए।
तिल तुष मात्र परिग्रह का जो, मन वच तन से त्याग किए।
हैं अचेलक्य मूल गुण धारी, जग में रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।24।।

ॐ ह्रीं वस्त्रत्याग गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़ी मूँछ शीश के अपने, हाथों से कचलौंच करें।
तन की शोभा के त्यागी मुनि, मन में समता भाव धरें।
केश लुंच गुण सहित मुनीश्वर, जग में रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।25।।

ॐ ह्रीं केशलुंचन गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक बार लघु भोजन करते, रस नीरस का छोड़ विचार।
ममता त्याग उदर पूरण कर, करें साधना समता धार।।
एक भुक्त गुण सहित मुनीश्वर, जग में रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।26।।

ॐ ह्रीं एक भुक्ति गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड्गासन में स्थिर रहकर, स्थित होकर ले आहार।
इन्द्रिय का पोषण न करते, करने चले आत्म उद्धार।
स्थिति भुक्ति सगुण के धारी, मुनिवर रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।27।।

ॐ ह्रीं स्थितिभुक्ति गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म जीव पर करुणा करके, मंजन दांतुन का कर त्याग।
दाँतों को चमकाएँ नहीं मुनि, उनके प्रति भी छोड़ें राग।
हैं अदन्त गुण के धारी मुनि, जग में रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।28।।

ॐ ह्रीं अदन्तधावन गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत समिति पाँच अरु, पंच इन्द्रिय जय करें मुनीश।
षट् आवश्यक क्षिति शयन कर, करें नहीं स्नान ऋशीष।
एक भुक्ति स्थित भोजन कर, वस्त्र त्याग न धोवें दंत।
आठ बीस गुण पालन करते, पूज्यनीय वह मेरे संत।।29।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं रत्नत्रय सहिताय श्री सर्वसाधु परमेष्ठिभ्योः नमः।

जयमाला

दोहा – विषयाशा का त्याग कर, पालें गुण अठबीस।
तिन गुण की जयमाल कर, 'विशद' झुकाऊँ शीश।।

(पद्धडि छन्द)

जय वीतरागधारी मुनीश, तव पद में वन्दन करें ईश।
जय पंच महाव्रत लिए धार, जो समिति पालते कर विचार।।1।।
जय–मन इन्द्रिय को वश करेय, फिर षट् आवश्यक चित्त देय।
मुनि क्षिति शयन गुण रहे पाल, निज हाथों नोचे स्वयं बाल।।2।।
जय वस्त्राभूषण किए त्याग, जिनको तन से न रहा राग।
जय स्थित होकर लें आहार, जो लघु भोजन लें एक बार।।3।।

जय न्हवन आदि छोड़ें मुनीश, तिनके चरणों मम् झुका शीश।
जय दातुन मंजन दिए छोड़, भोगों से नाता लिए तोड़।।4।।
सब जीवों के रक्षक मुनीश, जय सत्य महाव्रत धार ईश।
जय व्रत के धारी हैं अचौर्य, जय ब्रह्मचर्य का लेय शौर्य।।5।।
जय परिग्रह चौबिस त्यागहीन, जो वीतराग मय ध्यान लीन।
जय चार हाथ भूमी विहार, शुभ देखभाल करते निहार।।6।।
जय वचन बोलते कर विचार, अरु भूमि शोध करते निहार।
जय देख शोध लेवें अहार, जो वस्तू लख लेवें विचार।।7।।
व्युत्सर्ग समिति में जो प्रवीण हैं, वीतराग मय ध्यान लीन।
जय स्पर्शन को लिए जीत, जो रसना के न हुए मीत।।8।।
जय गंध दोय जीते मुनीश, चक्षू इन्द्रिय के बने ईश।
जय कर्णेन्द्रिय के विषय जीत, सब त्याग किए हैं बाद्य गीत।।9।।
मुनि अट्ठाईस गुण रहे पाल, वह त्याग किए सब जगत् जाल।
हम करते वन्दन जोड़ हाथ, उनके चरणों यह झुका माथ।।10।।
हम लेकर आए द्रव्य साथ, अब करो कर्म का गुरू घात।
यह भक्त खड़े हैं लिए आस, अब दीजे हमको मुक्तिवास।।11।।

(छन्द घत्तानन्द)

मुनि अविकारी, संयम धारी, रत्नत्रय के कोष महान्।
जय मंगलकारी, ज्ञान पुजारी, वीतरागता के विज्ञान।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – रत्नत्रय को पालते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ।
उनके गुण हम पा सकें, होय कर्म का अन्त।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री जिनधर्म पूजन 15

स्थापना

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण युत, मंगलमय जिन धर्म कहा।
भव–भव के दुख मैटन हारा, नाशक खोटे कर्म रहा।।
धर्म अनादी है अनन्त, हम अपने हृदय सजाते हैं।
वह तीन लोक में अमर रहे हमे, यही भावना भाते हैं।।
जिनधर्म मोक्ष का हेतु रहा, उर में करते हैं आह्वानन्।
हम 'विशद' मोक्ष मंजिल पावें, नित करते हैं शत्–शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्म अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन् ,अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शंभू छन्द)

जन्म–जन्म का प्यासा हूँ मैं, प्यास बुझाने आया हूँ।
जन्म जरा मृतु नाश हेतु मैं, शीतल जल भर लाया हूँ।।
रत्नत्रय को पाने वाला, शुभ जैनधर्म का धारी है।
मोक्षमहल पहुँचाने वाला, अतिशय मंगलकारी है।।1।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चार कषायों की अग्नी से, भव–भव में भटकाया हूँ।
परम सुगंधित चंदन ले भव, ताप नशाने आया हूँ।।
रत्नत्रय को पाने वाला, शुभ जैनधर्म का धारी है।
मोक्षमहल पहुँचाने वाला, अतिशय मंगलकारी है।।2।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।।

स्व–पर भेद विज्ञान बिना, संसार में गोते खाए हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम अक्षत लेकर आए हैं।।
रत्नत्रय को पाने वाला, शुभ जैनधर्म का धारी है।
मोक्षमहल पहुँचाने वाला, अतिशय मंगलकारी है।।3।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

उपवन में पुष्प खिले अनुपम, निज गंध नहीं दे पाए हैं।
हम आत्म सरस की गंध हेतु, यह पुष्प मनोहर लाए हैं।।

रत्नत्रय को पाने वाला, शुभ जैनधर्म का धारी है।
मोक्षमहल पहुँचाने वाला, अतिशय मंगलकारी है।।4।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

भोजन करके हम सदियों से, न अपनी भूख मिटा पाए।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य बनाकर हम लाए।।
रत्नत्रय को पाने वाला, शुभ जैनधर्म का धारी है।
मोक्षमहल पहुँचाने वाला, अतिशय मंगलकारी है।।5।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जगमग करता शुभ ज्ञान दीप, हम सत पथ को पाने आए।
अंतर का तिमिर मिटाने को, यह दीप मनोहर हम लाए।
रत्नत्रय को पाने वाला, शुभ जैनधर्म का धारी है।
मोक्षमहल पहुँचाने वाला, अतिशय मंगलकारी है।।6।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

संसार सुखों के सपने में, हम सदियों से जीते आए।
हों अष्ट कर्म का नाश मेरे, शुभ गंध जलाने को लाए।।
रत्नत्रय को पाने वाला, शुभ जैनधर्म का धारी है।
मोक्षमहल पहुँचाने वाला, अतिशय मंगलकारी है।।7।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मनुष गति को पाकर हमने, कितने पाप कमाए हैं।
अब मोक्ष महाफल पाने को, हम सरस श्री फल लाए हैं।।
रत्नत्रय को पाने वाला, शुभ जैनधर्म का धारी है।
मोक्षमहल पहुँचाने वाला, अतिशय मंगलकारी है।।8।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

जग की झंझट उलझाती है, हम राह समझ न पाए हैं।
अब पद अनर्घ का भाव बनाये, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
रत्नत्रय को पाने वाला, शुभ जैनधर्म का धारी है।
मोक्षमहल पहुँचाने वाला, अतिशय मंगलकारी है।।9।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयस्वरूप जिनधर्मेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निव. स्वाहा।

जिनधर्म के अर्घ्य

दोहा- पूज रहे जिन धर्म को,पुष्पाञ्जलि के साथ।
तीन योग से हम यहाँ, झुका रहे हैं माथ।।

मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चाल-छन्द)

जो आतम तत्त्व जगाए, जग का कल्याण कराए।
है जैन धर्म शुभकारी, जन-जन का करुणाकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आतम तत्त्व जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे वीतराग विज्ञानी!, शाश्वत सुख पाते ज्ञानी।
है जैन धर्म शुभकारी, जन-जन का करुणाकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वीतराग जिनधर्मेभ्यो नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय धर्म कहाए, जो मोक्ष मार्ग दिखलाए।
है जैन धर्म शुभकारी, जन-जन का करुणाकारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रय जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु स्वभाव शत् गाया, जो द्रव्य रूप बतलाया।
है जैन धर्म शुभकारी, जन-जन का करुणाकारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वस्तुस्वभाव जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है सत्य अहिंसा प्यारा, भव सिन्धु से तारण हारा।
है जैन धर्म शुभकारी, जन-जन का करुणाकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सत्य-अहिंसा जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सद् श्रद्धान जगाए, वह शिव पदवी को पाए।
है जैन धर्म शुभकारी, जन-जन का करुणाकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सद्श्रद्धान जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भेद ज्ञान के धारी, ज्ञानी होते अघहारी।।
है जैन धर्म शुभकारी, जन-जन का करुणाकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शुभभेदज्ञान जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सच्चारित्र जगाए, वह निज अनुभूती पाए।
है जैन धर्म शुभकारी, जन-जन का करुणाकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सच्चारित्र जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धडि छन्द)

दश धर्म रहा जग में महान्, जिससे हो भाई भेद ज्ञान।
शुभ विश्व हितैषी श्रेयवान, जिनधर्म रहा जग में प्रधान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री दशधर्म जिनधर्मेभ्यो नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आराधन जानो श्रेष्ठ चार, करके प्राणी हो विभव पार।
शुभ विश्व हितैषी श्रेयवान, जिनधर्म रहा जग में प्रधान।।10।।

ॐ ह्रीं श्री आराधन जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो साम्यभाव धारें विशेष, वे प्राणी बन जाते जिनेश।
शुभ विश्व हितैषी श्रेयवान, जिनधर्म रहा जग में प्रधान।।11।।

ॐ ह्रीं श्री साम्यभाव जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है दया धर्म करुणा प्रधान, जो धारें उसकी बढ़े शान।
शुभ विश्व हितैषी श्रेयवान, जिनधर्म रहा जग में प्रधान।।12।।

ॐ ह्रीं श्री दया जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्त्तव्य बताया श्रेष्ठ धर्म, जिससे नशते हैं शीघ्र कर्म।
शुभ विश्व हितैषी श्रेयवान, जिनधर्म रहा जग में प्रधान।।13।।

ॐ ह्रीं श्री कर्त्तव्य जिनधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

वस्तु स्वरूपी धर्म दश, रत्नत्रय शुभकार।
धर्म अहिंसा मय कहा, जग में अपरम्पार।।14।।

ॐ ह्रीं श्री वस्तुस्वरूपी जिनधर्मेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप- ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा - सब लालों में श्रेष्ठ हैं, रत्नत्रय के लाल।
जैन धर्म की भाव से, गाते हैं जयमाल।।

आल्हा छन्द

जैन धर्म जग के जीवों को, देता है भाई यह ज्ञान।
महिमा धर्म की अनुपम जग में, धर्म धारकर बनो महान्।।
विश्व शांति का प्रेरक है यह, परम अहिंसा का आधार।
मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, जैन धर्म की जय-जय-जयकार।।1।।

स्याद्वाद शैली है प्यारी, जाने इसको ज्ञानी लोग।
महिमाशाली अनेकांत मय, पुण्य योग से मिले संयोग।।
जैन धर्म जग के जीवों का, निष्कारण बन्धु जानो।
सर्व धर्म सौहार्द प्रदायक, सारे जग में पहिचानो।।2।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, धर्म के ईश्वर धर्म कहे।
और शेष जो रहे जगत् में, वह तो सभी अधर्म रहे।।
जैन धर्म जग के जीवों को, सर्व पाप से मुक्त करे।
भव दुखों से मुक्त कराए, मोक्ष सुखों में आन धरे।।3।।
बनता नहीं नपुंसक स्त्री, नरक पशु में न जावे।
विकृत अल्प आयु न होवे, नहीं नीच कुल भी पावे।।
दीन दरिद्री बने नहीं वह, जैन धर्म को जो धारे।
विजय श्री को प्राप्त करे वह, रण में कभी नहीं हारे।।4।।
ओजवान तेजस्वी होकर, विद्याओं का हो स्वामी।
शूर–वीर हो सारे जग में, वृद्धीकर यश हो नामी।।
अतिशय कारी वैभव पाये, हो जाये जग में नर नाथ।
सर्व जहाँ के सारे प्राणी, घूमें आगे–पीछे साथ।।5।।
करता सत पुरूषार्थ महाकुल, पाकर बनता है नर इन्द्र।
अष्ट गुणों का स्वामी होकर, स्वर्गों में बन जाए सुरेन्द्र।।
देव–देवियों की परिषद में, करता है चिरकाल रमण।
सुन्दर तन–मन–वैभव पाकर, जीवन बनता पूर्ण चमन।।6।।
नव निधियों का स्वामी होता, चक्रवर्ति पद को पाएँ।
चौदह निधियाँ स्वयं प्रकट हों, कई नृप चरणों झुक जाएँ।।
छह खण्डों के अधीपति बन, चक्ररत्न के हों स्वामी।
अनुक्रम से तीर्थंकर बनते, बनते मुक्ति पथ गामी।।7।।
सुर नर किन्नर गणधर मुनिवर, सब ही जिनको ध्याते हैं।
दिव्य देशना पाकर प्रभु की, केवल ज्ञान जगाते हैं।।
अष्ट कर्म से मुक्ती पाकर, अजर–अमर पद पाते हैं।
पा लेते है सुख अनन्त फिर, लौट कभी न आते हैं।।8।।
ऐसा पावन पद पाने को, मेरा मन ललचाया है।
तज कर जग के धर्म पन्थ सब, जैनधर्म अपनाया है।।

जैनधर्म के द्वारा हम भी, जग से मुक्ति पाएँगे।
निज वैभव को पाकर भाई, उसमें ही रम जाएँगे।।9।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय परम विशाला, जग में आला, जैन धर्म धन हम पावें।
हम पूजे ध्यावें, बहुगुण गावें, कर्म नाश शिवपुर जावें।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप परम वीतरागमय जिन धर्मेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व.

दोहा – जैन धर्म को धारकर, करें कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, होवे मुक्ती वास।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।)

जैनागम पूजा 16

स्थापना

है जिनवर वाणी, जग कल्याणी, श्री जिनपद की वरदानी।
रत्नों की खानी, जानी मानी, करती कर्मों की हानी।।
भावों से ध्याऊँ, जिन गुण गाऊँ, भाव सहित मैं सिर नाऊँ।
मैं हृदय बसाऊँ, शीश झुकाऊँ, जिन पद पदवी को पाऊँ।।
हे माँ ! गुण गाएँ, शीश झुकाएँ, तुमसे हम आशिष पाएँ।
न जगत् भ्रमाएँ, कर्म नशाएँ, शिव सुख पाने शिव जाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं जिनेन्द्र कथित गणधरदेव रचित जिनागम अशेष ज्ञान सम्पूर्ण आगम अत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

नरेन्द्र–छन्द

प्रासुक जल गंगा का लेकर, मन में अति हर्षाये।
द्रव्य भाव मय श्रुत की पूजा, करने को हम आये।।
ॐकार मय जिनवाणी को, अपने हृदय बसाएँ।
प्रमुदित होकर विशद भाव से, पूजा आज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।।

भव तापों से तप्त हुए हम, कम से रहे सताए।
परम सुगन्धित चंदन लेकर, चरण शरण में हम आए।।
ॐकार मय जिनवाणी को, अपने हृदय बसाएँ।
प्रमुदित होकर विशद भाव से, पूजा आज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

खण्ड–खण्ड पद में अटके हैं, पद अखण्ड न पाये।
अक्षय पद पाने को अक्षत, अक्षय लेकर आये।।
ॐकार मय जिनवाणी को, अपने हृदय बसाएँ।
प्रमुदित होकर विशद भाव से, पूजा आज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

कामबली के वश में होकर, सारा जग भटकाए।
कामबाण विध्वंश हेतु हम, पुष्प मनोहर लाए।।
ॐकार मय जिनवाणी को, अपने हृदय बसाएँ।
प्रमुदित होकर विशद भाव से, पूजा आज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा तृषा की महा वेदना, सहन नहीं कर पाए।
क्षुधा नाश करने को षट्रस, व्यंजन लेकर आए।।
ॐकार मय जिनवाणी को, अपने हृदय बसाएँ।
प्रमुदित होकर विशद भाव से, पूजा आज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह तिमिर ने घेरा जग में, दर–दर ठोकर खाए।
मोह महातम नाश करन को, दीप जलाकर लाए।।
ॐकार मय जिनवाणी को, अपने हृदय बसाएँ।
प्रमुदित होकर विशद भाव से, पूजा आज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

भव भव से हम भटक रहे हैं, आठों कर्म सताए।
अष्ट गंध युत धूप जलाने, तव चरणों में आए।।
ॐकार मय जिनवाणी को, अपने हृदय बसाएँ।
प्रमुदित होकर विशद भाव से, पूजा आज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल की इच्छा लेकर सारे, जग में हम भरमाये।
मोक्ष महाफल पाने हेतू, श्री फल लेकर आये।
ॐकार मय जिनवाणी को, अपने हृदय बसाएँ।
प्रमुदित होकर विशद भाव से, पूजा आज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

जल चंदन आदिक द्रव्यों को, एक मिलाकर लाए।
पद अनर्घ पाने के मन में, भाव संजोकर आए।।
ॐकार मय जिनवाणी को, अपने हृदय बसाएँ।
प्रमुदित होकर विशद भाव से, पूजा आज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनआगम के अर्घ्य

दोहा– जैनागम के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने सुपद अनर्घ्य।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

है सर्वज्ञ हितंकर वाणी, द्वादशांग मय शुभ जिनवाणी।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम श्रेष्ठ अनुयोग बताया, पुरुष शलाका वर्णन गाया।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रथमानुयोग जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करुणानुयोग श्रेष्ठ पहिचानो, तीन लोक का वर्णन मानो।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री करुणानुयोग जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि श्रावक की चर्चा गाए, चरणानुयोग शास्त्र कहलाए।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चरणानुयोग जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यानुयोग शास्त्र कहलाया, द्रव्य गुणों का वर्णन गाया।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्रव्यानुयोग जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तभंग की जननी गाई, नय प्रमाण युत माँ कहलाई।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नयप्रमाणयुत जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्यादस्ति शुभ तत्त्व कहाया, भविजन का निज भाव बताया।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्यादस्ति जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्यादनास्ति शुभ तत्त्व जगाया, परापेक्ष जिसको बतलाया।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्यादनास्ति जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्यादस्ति-नास्ति शुभ गाया, उभय धर्म जिसका गुण गाया।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्यादस्ति-नास्ति उभयधर्म जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्यादवक्तव्य तत्त्व कहाए, बहु धर्मों को न कह पाए।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्यादवक्तव्य बहुधर्म जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति अवक्तव्य तत्त्व बताया, अनुपम तत्त्व प्रकाशी गाया।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनुपम तत्त्व जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नास्ति अवक्तव्य भी शुभ जानो, सूक्ष्म तत्त्व भाषे जो मानो।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सूक्ष्म तत्त्व जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्याद अस्ति-नास्ति अवक्तव्या, सापेक्ष धर्म कहा सद् दिव्या।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सापेक्ष धर्म जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है जिनवाणी जग की माता, नय प्रमाण युत करती साता।
जिनवाणी है जग हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नय प्रमाणयुत जिनआगमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य- स्याद्वाद वाणी विमल, द्वादशांग मय ज्ञान।
जिनवाणी सद्ज्ञान का, प्रकटाए विज्ञान।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनमुखोद्भूत जिनागमाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जापः-ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत द्रव्य भाव श्रुत रूप सरस्वतीदेव्यै नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा - जिनवाणी को नमन् कर, काटूँ जग जंजाल।
श्रुत ज्ञान की भाव से, गाते हैं जयमाल।।

(ताटंक छन्द)

सोलह कारण भाय भावना, बन जाते तीर्थंकर देव।
कर्म घातिया नाश किए फिर, ऽनन्त चतुष्टय पाते एव।।
एक क्षेत्र में तीर्थंकर जिन, एक काल में होते एक।
ऋषभनाथ से महावीर तक, केवलज्ञानी हुए अनेक।।1।।
खिरती दिव्य देशना पावन, ॐकार मय दिव्य अनूप।
अनक्षरी होकर अक्षरमय, जीव समझते निज अनुरूप।।
सर्व महा भाषा अष्टादश, सात शतक भाषाएँ शेष।
अर्ध मागधी भाषा में हो, श्री जिनवाणी का उपदेश।।2।।
छह-छह घड़ी दिव्य ध्वनि द्वारा, तीन काल में हो उपदेश।
भव्य जीव के पुण्य योग से, असमय में भी होय विशेष।।
गणधर झेल के रचना करते, भिन्न मुहूर्त में भिन्न प्रकार।
शेष समय में व्याख्या करते, भवि जीवों का ले आधार।।3।।

भव्य जीव सुनकर जिनवाणी, करते यथा–योग्य श्रद्धान।
ज्ञान और चारित्र प्राप्त कर, करते निज आतम का ध्यान।।
केवल ज्ञानी को होता है, अक्षय केवल ज्ञान अनन्त।
दिव्य देशना में खिरता है, उस अनन्त का भाग अनंत।।4।।
दिव्य ध्वनि में जितना खिरता, गणधर झेल पाएँ कुछ अंश।
गणधर ने जितना झेला है, उसका रच पाते कुछ अंश।।
महावीर का शासन है यह, उनकी वाणी का है ज्ञान।
गौतम स्वामी ने झेली है, दिव्य देशना सह सम्मान।।5।।
मोक्ष गमन पर महावीर के, गौतम ने कीन्हा उपदेश।
बारह बारह वर्ष सुधर्माचार्य ने, दीन्हा शुभ–संदेश।।
जम्बू स्वामी वर्ष सु अड़तिस, तक भव्यों को दीन्हा ज्ञान।
अन्य केवली श्रीधर आदि ने, कीन्हा जग का कल्याण।।6।।
विष्णू नन्दिमित्र अपराजित, श्रुत केवली गोवर्धन।
भद्रबाहु तक पाँच सौ वर्षों, करते रहे श्रुत का वर्णन।।
ग्यारह अंग पूर्व दश धारी, ग्यारह हुए मुनिराज प्रधान।
इकशत् तेरासी वर्षों तक, ज्ञान दान दे किया महान्।।7।।
दो सौ तीस वर्ष में ग्यारह, अंग महाधारी ऋषिराज।
श्री नक्षत्र जयपाल पाण्डु, ध्रुव सेन कंस पाँचों मुनिराज।।
श्री सुभद्र यशोभद्र और यशो बाहू लोहाचार्य मुनीश।
इकशत अष्टादश वर्षों में, आचारांग धर हुए ऋशीष।।8।।
अंग पूर्व धारी मुनियों का, बाद में इसके हुआ वियोग।
एक अंग के कुछ अंशों का, कुछ संतों ने पाया योग।।
कुन्द–कुन्द धरसेन गुरू अरु, पुष्पदन्त श्री भूतबली।
आगम के ज्ञाता संतों से, श्रुत की धारा अग्र चली।।9।।
नगर अंकलेश्वर में पावन, षट् खण्डागम रचा महान्।
पुष्पदन्त और भूतबली ने, लिपिबद्ध कीन्हा श्रुत ज्ञान।।
ज्येष्ठ शुक्ल पचंमी सुदिन को, शास्त्र लेख का हुआ विराम।
बना पर्व का दिन मंगलमय, श्रुत पंचमी पड़ा शुभ नाम।।10।।

मंगलमय जिनवाणी माता, जीवन मंगलमय कर दो।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, हृदय सुघट मेरा भर दो।।
दो हमको आशीष हे माता!, उर में भरो भेद विज्ञान।
स्वपर भेद विज्ञान के द्वारा, विशद ज्ञान से हो कल्याण।।11।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय जय जिन चंदा, आनन्दकन्दा, दिव्य ध्वनि तव पावन है।
जय श्रुतस्कन्धा, सुगुण अनन्ता, श्रुत ज्ञान मन भावन है।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि सम्पन्न सम्पूर्ण परम श्रुतज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – जिनवाणी को पूजकर, हृदय जगे श्रद्धान।
अष्ट कर्म का नाश कर, पाऊँ केवल ज्ञान।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री जिनचैत्य पूजन 17

स्थापना

समचतुष्क अनुपम अति सुन्दर, कृत्रिम चैत्य सुभग मनहार।
चैत्य अकृत्रिम महिमाशाली, तीन लोक में मंगलकार।।
तीर्थंकर जिन के गुण का हम, करते जिसमें स्थापन।
उन चैत्यों का विशद हृदय में, करते हैं हम आह्वानन्।।
सुर नर मुनिगण जिन चैत्यों का, करते हैं शत् शत् वन्दन।
भाव सहित पूजन भक्ती कर, करते हैं हम अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

मिथ्या मोह कषायों का मल, हमें सताता है हे नाथ!
जन्म जरा मृतु नाश करो प्रभु, झुका रहे तव चरणों माथ।।
उत्तम क्षीर नीर के कलशा, चढ़ा रहे हम शुभकारी।
कृपा करो हे नाथ! हमारा, जीवन हो मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य समूह जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भवसागर में गोते खाए, कैसे पार मिले स्वामी।
राह बताओ हमको भगवन्, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।
उत्तम चन्दन लेकर आये, चढ़ा रहे हम शुभकारी।
कृपा करो हे नाथ ! हमारा, जीवन हो मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

जब भी हमने जीवन पाया, पद पाए कई क्षयकारी।
मंगलमय शाश्वत अविनाशी, प्रभु दीजे अक्षयकारी।।
उत्तम अक्षत लेकर आये, चढ़ा रहे हम शुभकारी।
कृपा करो हे नाथ! हमारा, जीवन हो मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

कामदेव ने हमें सताया, सारे जग में भ्रमण किया।
उससे बचने हेतू आये, तव चरणों में शरण लिया।।
सुरभित सुमन सुगन्धित सुन्दर, चढ़ा रहे हम शुभकारी।
कृपा करो हे नाथ! हमारा, जीवन हो मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा रोग से व्याकुल होकर, भव–भव में अकुलाए हैं।
उससे बचने हेतू भगवन्, तव चरणों में आए हैं।।
ले नैवेद्य सरस मन मोहक, चढ़ा रहे हम शुभकारी।
कृपा करो हे नाथ! हमारा, जीवन हो मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह तिमिर में भटक रहा हूँ, सदियों से मारा–मारा।
मिला नहीं हमको हे भगवन्!, सम्यक्ज्ञान का उजियारा।।
घृत का दीप जलाकर लाए, चढ़ा रहे हम शुभकारी।
कृपा करो हे नाथ! हमारा, जीवन हो मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों के बन्धन में जकड़ा, भव–भव में ठोकर खाई।
दर्शन करके प्रभू आपके, मेरे मन में सुधि आई।।
अष्ट गंध युत धूप बनाकर, चढ़ा रहे हम शुभकारी।
कृपा करो हे नाथ! हमारा, जीवन हो मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

रहे कौन से फल वह बाकी, पाए हमने नहीं प्रभो!
केवल एक मोक्ष फल ऐसा, हमने पाया नहीं विभो।।
श्रीफल अरु बादाम सुपाड़ी, चढ़ा रहे हम शुभकारी।
कृपा करो हे नाथ! हमारा, जीवन हो मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट कर्म ने अष्टम भू पर, हमको जाने नहीं दिया।
मिथ्या अविरत के कारण से, तीन लोक में भ्रमण किया।।
कर्मनाश के हेतु अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम शुभकारी।
कृपा करो हे नाथ! हमारा, जीवन हो मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन चैत्य के अर्घ्य

दोहा–

कृत्रिमा–कृत्रिम चैत्य शुभ, वीतराग अविकार।
तीन लोक में श्रेष्ठ हैं, भक्ती के आधार।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

लोक में जिन प्रतिमाएँ सोहें, सौम्य मूर्ति सबके मन मोहें।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनबिम्ब निराले, श्री जिनेन्द्र की महिमा वाले।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्य लोक में चैत्य जो गाए, भवि, जीवों के मन को भाए।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मध्यलोक जिनालय स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढाई द्वीप के मेरू जानो, उनके शुभ जिनबिम्ब बखानो।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अढ़ाई द्वीप पंचमेरु स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गजदन्त सुगिरि शुभकारी, जिनमें प्रतिमायें मनहारी।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं गजदन्तगिरि स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विजयार्द्ध सुगिरि मनहारी, उसमें प्रतिमा शोभाकारी।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं विजयार्द्धगिरि स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्सी हैं वक्षार निराले, प्रतिमायुत अति शोभा वाले।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं वक्षारगिरि स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीस कुलाचल पर चैत्यालय, जो हैं प्रतिमाओं के आलय।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुलाचलोपरि श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बु धातकी पुष्कर जानो, वृक्षों पर प्रतिमाएँ मानो।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं जम्बूधातकी स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च शाल्मलि के गृह भाई, जिनबिम्बों युत हैं सुखदायी।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं पञ्चशाल्मलि स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्वाकार सुगिरि पर सोहें, प्रतिमाएँ सबका मन मोहें।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं इष्वाकारगिरि स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषोत्तर पर्वत शुभकारी, जिसमें प्रतिमाएँ मनहारी।
वीतरागता जो प्रकटाएँ, अर्हतों की याद दिलाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं मानुषोत्तर पर्वत स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

नन्दीश्वर शुभ द्वीप में भाई, बावन मंदिर रहे महान्।
उनमें जिन प्रतिमाएँ अनुपम, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।
जिनकी महिमा सुर-नर गाते, तीन लोक में अपरम्पार।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं नंदीश्वर द्वीप स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुण्डलगिरि पर चतुर्दिशा में, मंदिर शोभित होते चार।
जिन प्रतिमायें जिनमें अनुपम, तीन लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।
जिनकी महिमा सुर-नर गाते, तीन लोक में अपरम्पार।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुण्डलगिरि स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूचकगिरि पर मंदिर सोहें, चतुर्दिशा में भाई चार।
अकृत्रिम जिनबिम्ब विराजे, जिनमें अनुपम मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।
जिनकी महिमा सुर-नर गाते, तीन लोक में अपरम्पार।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं रूचकगिरि स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यन्तर ज्योतिष के विमान शुभ, होते भाई संख्यातीत।
उनके जिनबिम्बों की अर्चा, करने की सब जानो रीत।।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।
जिनकी महिमा सुर-नर गाते, तीन लोक में अपरम्पार।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यन्तर ज्योतिष विमान स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्ताधिक नब्बे हजार अरु, लख चौरासी तेइस विमान।
आगम वर्णित ऊर्ध्व लोक में, चैत्यालय शुभ रहें महान्।।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।
जिनकी महिमा सुर-नर गाते, तीन लोक में अपरम्पार।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्ध्वलोक स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम वर्णित भवनालय में, लाख बहत्तर कोटी सात।
अधो लोक के चैत्यालय शुभ, तीन लोक में हैं विख्यात।।

लाख छियत्तर सैंतिस कोटी, अरब छियत्तर चैत्य महान्।
भवनालय की संख्या जानो, व्यंतर संख्यातीत प्रमाण।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधोलोक स्थित श्री जिनबिम्ब समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व अधो अरु मध्य लोक में, जिन चैत्यालय रहे महान्।
जिनबिम्बों की शोभा अनुपम, उनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।
जिनकी महिमा सुर-नर गाते, तीन लोक में अपरम्पार।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्ध्व अधो मध्यलोक स्थित श्री जिनबिम्ब समूह पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

जिनवर की प्रतिमूर्ति शुभ, हैं जिनबिम्ब महान्।
वन्दन करते भाव से, पाने पद निर्वाण।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जापः- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं जिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा - अकृत्रिम जिन चैत्य शुभ, कृत्रिम रहे विशाल।
अर्हंत् के प्रतिबिम्ब की, गाते हैं जयमाल।।

तर्ज - हे दीन बंधु श्रीपति

जय-जय जिनेन्द्र, वीतराग देव हमारे।
सर्वज्ञ प्रभु जिनवर हैं, जग में सहारे।।
जय जिनवर के बिंब का, गुणगान हम करें।
जय वीतराग मुद्रा का, ध्यान हम करें।।1।।
जय-जय जिनेन्द्र के, सुचैत्य रत्नमई हैं।
जो कृत्रिम-अकृत्रिम द्वय, कर्म क्षई हैं।।
संस्थान समचतुष्क, शुभ देह का कहा।
सुन्दर ललाम जिनवर के, बिम्ब का रहा।।2।।
है ध्यान रूप मुद्रा, पर्यंक आसनी।
है भव्य भक्त के लिए जो, राग नाशिनी।।

जो दर्श करें भव्य जीव, भक्ति भाव से।
होते है पार भव से, सम्यक्त्व नाव से।।3।।
यह वीतराग मुद्रा, जग में महान् है।
होती नहीं जगत् में, इसके समान है।।
जय ऊर्ध्व अधो मध्य, त्रय लोक में रहे।
जिनचैत्य असंख्यात,सर्वलोक में कहे।।4।।
नासाग्रदृष्टि जिनकी, शुभ निर्विकार है।
महिमा अनंत जिनकी, इसका न पार है।।
जय धातु उपल रत्न के, जिन चैत्य हमारे।
भव्यों को श्रद्धा हेतु, हैं श्रेष्ठ सहारे।।5।।
करते हैं दर्श मूर्ती में, मूर्तिमान का।
हो जाय उदय पल में ही, सद् श्रद्धान का।।
जो भाव सहित चैत्य का, अभिषेक शुभ करे।
वह जीव कोष पुण्य से, अपना स्वयं भरे।।6।।
जो अष्ट द्रव्य लेकर के, पूज रचाते।
अरु भक्तिभाव से, प्रभु गुणगान भी गाते।।
वह पुण्य के सुफल से, बहु संपदा पाते।
अरु जीवन का अंत करके, स्वर्ग में जाते।।7।।
फिर स्वर्गों से चलकर, इस लोक में आते।
अरु संयम को धारकर, सब कर्म नशाते।।
वह कर्मों का नाश कर, सद्ज्ञान जगाते।।
शिवपुर में अविनाशी, सौख्य को पाते।।8।।
ऐसे जिन चैत्य की, हम वंदना करें।
अब शुद्ध अष्ट द्रव्य लेकर, अर्चना करें।।
जीवन में अपने शुभ, पुण्य जगाएँ।
संयम को धार करके, हम कर्म नशाएँ।।9।।
हम विशद ज्ञान पाकर, मोक्ष को पाएँ।
अरु शिव सुख को पाकर के, मौज मनाएँ।।

(छन्द घत्तानंद)

जय कृत्रिमाकृत्रिमा, श्री जिन प्रतिमा, को वंदन है भाव भरा।
श्री जिन गुणगाया, पूज रचाया, उनके चरणों शीश धरा।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयस्थ जिनबिम्ब समूह पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – **कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य हैं, तीन लोक में सार।**
विशद भाव से पूजते, हो जावें भव पार।।

(इत्याशीर्वादं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री जिन चैत्यालय पूजन 18

स्थापना

जिन चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, सुभग सु सुन्दर रहे महान्।
सुन्दर शिखर के ऊपर कलशा ,की है अनुपम अद्भुत शान।।
भांति–भांति के ध्वजा कंगूरे, शोभित होते हैं मनहार।
आह्वानन् जिन चैत्यालय का, उर से करते मंगलकार।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, यही भावना भाते हैं।
जिन चैत्यालय के वन्दन में, अपना शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक–वर्ति कृत्रिमा–कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज – हिन्दी भक्तामर (वीर छन्द)

भक्ति भाव से शीश झुकाते, सरल भावना से भरने।
प्रासुक निर्मल जल ले आए, अन्तर का कालुष हरने।।
महिमा मण्डित चैत्यालय शुभ, अनुपम पुण्य प्रकाश भरें।
मोह तिमिर छाया है जग में, उसका पूर्ण विनाश करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा–कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलिन हुए हम मिथ्यामल से, भव बन्धन में अटकाए।
तप्त हृदय हो शांत हमारा, शीतल यह चँदन लाए।।

महिमा मण्डित चैत्यालय शुभ, अनुपम पुण्य प्रकाश भरें।
मोह तिमिर छाया है जग में, उसका पूर्ण विनाश करें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा–कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय बिन व्याकुल होकर, भव–भव में हम भटकाए।
अक्षय पद पाने को अक्षय, अक्षत लेकर हम आए।
महिमा मण्डित चैत्यालय शुभ, अनुपम पुण्य प्रकाश भरें।
मोह तिमिर छाया है जग में, उसका पूर्ण विनाश करें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा–कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह अक्षय पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों के भोगों में, सदियों से हम भरमाए।
काम कषाय मिटाने को हम, पुष्प सुगंधित ले आए।।
महिमा मण्डित चैत्यालय शुभ, अनुपम पुण्य प्रकाश भरें।
मोह तिमिर छाया है जग में, उसका पूर्ण विनाश करें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा–कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

अगणित व्यंजन खाए लेकिन, तृप्त नहीं हम हो पाए।।
क्षुधा वेदना शांति हेतु हम, नैवेद्य सरस लेकर आए।।
महिमा मण्डित चैत्यालय शुभ, अनुपम पुण्य प्रकाश भरें।
मोह तिमिर छाया है जग में, उसका पूर्ण विनाश करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा–कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

छाया है मोह तिमिर जग में, दृष्टी न जिन की ओर गई।
यह दीप समर्पित करते हैं, जागे अंतर में ज्योति नई।।
महिमा मण्डित चैत्यालय शुभ, अनुपम पुण्य प्रकाश भरें।
मोह तिमिर छाया है जग में, उसका पूर्ण विनाश करें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा–कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों ने ऐसा भ्रमित किया, निज में स्थिर न हो पाए।
हम परम सुगंधित धूप लिये, वसु कर्म जलाने को आए।।
महिमा मण्डित चैत्यालय शुभ, अनुपम पुण्य प्रकाश भरें।
मोह तिमिर छाया है जग में, उसका पूर्ण विनाश करें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा–कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

यह जीवन है निष्काम सदा, जीवन में कई इक फल पाए।
अब महा मोक्षफल पाने को, हम मंगलमय श्री फल लाए।।
महिमा मण्डित चैत्यालय शुभ, अनुपम पुण्य प्रकाश भरें।
मोह तिमिर छाया है जग में, उसका पूर्ण विनाश करें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा–कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

होगा अनंत सुख प्राप्त हमें, विश्वास जगाकर आए हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, हम आज चढ़ाने लाए हैं।।
महिमा मण्डित चैत्यालय शुभ, अनुपम पुण्य प्रकाश भरें।
मोह तिमिर छाया है जग में, उसका पूर्ण विनाश करें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा–कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन चैत्यालय के अर्घ्य

दोहा – **जिन चैत्यालय देव की, करूँ वंदना तीन।**
अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से, श्रद्धा ज्ञान प्रवीण।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(शम्भू छन्द)

आठ कोटि छप्पन लख अनुपम, सहस सत्तानवे अरु सौ चार।
अधिक इक्यासी मंदिर सुन्दर, त्रिभुवन में, जिनकाविस्तार।।
रहे अकृत्रिम चैत्यालय शुभ, जिनकी महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से अर्चा करके, वन्दन करते बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्ट कोटि षड्पंचाशत लक्ष सप्त नवति सहस एकाशीतिश्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च मेरु अकृत्रिम जानो, मंदिर अस्सी रहे महान्।
भव्य जीव जिन पूजा करते, करने को आतम कल्याण।।
रहे अकृत्रिम चैत्यालय शुभ, जिनकी महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से अर्चा करके, वन्दन करते बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचमेरु स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बू द्वीप के मध्य सुमेरू, चारों ओर रहे गजदंत।
भद्रशाल वन में शोभित हैं, अतिशयकारी महिमावन्त।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते मंगलकार।
चैत्यालय का वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं जम्बूद्वीप स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्तर अधिक एक सौ गिरियाँ, हैं विजयार्द्ध श्रेष्ठ मनहार।
जिनके ऊपर जिन चैत्यालय, शोभित होते अपरम्पार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते मंगलकार।
चैत्यालय का वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं विजयार्द्धगिरि स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्सी हैं वक्षार सुगिरि के, श्रेष्ठ जिनालय मंगलकार।
नवकोटी से पूज्य कहे जो, तीन लोक में अपरम्पार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते मंगलकार।
चैत्यालय का वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं वक्षारगिरि स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढाई द्वीप के भरत क्षेत्र में, तीस कुलाचल रहे महान्।
विशद भाव से करते हैं हम, विधी सहित अनुपम गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते मंगलकार।
चैत्यालय का वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुलाचल स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बू धातकी पुष्कर तरु पर, जिन चैत्यालय मंगलकार।
अकृत्रिम शोभा पाते हैं, ढाई द्वीप में अपरम्पार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते मंगलकार।
चैत्यालय का वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं जम्बूधातकी खण्ड स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

पञ्च शाल्मलि के वृक्षों पर, जिन चैत्यालय रहे महान्।
इन्द्र सुरेन्द्र सभी मिल करके, जिनका करते हैं गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते मंगलकार।
चैत्यालय का वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पञ्च शाल्मलि वृक्ष स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

इष्वाकार सुगिरि पर मंदिर, शोभित होते अनुपम चार।
सुन्दर मणियों से शोभित हैं, अकृत्रिम जो मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते मंगलकार।
चैत्यालय का वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं इष्वाकार स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषोत्तर पर्वत के ऊपर, चतुर्दिशा में अपरम्पार।
अकृत्रिम चैत्यालय अनुपम, शोभित होते मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते मंगलकार।
चैत्यालय का वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं मानुषोत्तर पर्वत स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

कुण्डलगिरि है गोलाकार, जिस पर चैत्यालय हैं चार।
महिमा जिसकी अपरम्पार, वन्दन मेरा बारम्बार।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुण्डलगिरि स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुचकगिरि का शुभ आकार, जिस पर मंदिर सोहें चार।
महिमा जिसकी अपरम्पार, वन्दन मेरा बारम्बार।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं रुचकगिरि स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार सौ अट्ठावन शुभ जान, मध्यलोक में मंदिर मान।
महिमा जिसकी अपरम्पार, वन्दन मेरा बारम्बार।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं मध्यलोक स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख बहत्तर कोटी सात, अधो में मंदिर हैं विख्यात।
महिमा जिसकी अपरम्पार, वन्दन मेरा बारम्बार।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधोलोक स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर ज्योतिष के स्थान, मंदिर की न गणना जान।
महिमा जिसकी अपरम्पार, वन्दन मेरा बारम्बार।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यंतर ज्योतिष विमान स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में ज्ञाताज्ञात, जिन चैत्यालय हों विख्यात।
महिमा जिसकी अपरम्पार, वन्दन मेरा बारम्बार।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोक स्थित श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

चैत्यालय त्रय लोक में, अनुपम रहे महान्।
विशद भाव से कर रहे, हम उनका गुणगान।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री जिन चैत्यालयेभ्यो नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा

चैत्यालय जिनदेव के, अनुपम रहे विशाल।
कृत्रिमाकृत्रिम दोय की, कहते हैं जयमाल।।

(छंद पडदि)

जय–जय जिन चैत्यालय महान्, जय कृत्रिमाकृत्रिम सुभग जान।
जय तीन लोक में सुखद सार, उनको मैं बंदू बार–बार।।1।।
जय बने शिखर ऊँचे विशाल, जो पूज्य रहे हैं तीन काल।
जय महिमाशाली हैं अपार, उनको मैं बंदू बार–बार।।2।।
जय स्वर्ण कलश हैं शोभमान, शुभ चैत्यालय की रही शान।
जय उड़ें ध्वजाएँ शिखर सार, उनको मैं बंदू बार–बार।।3।।
जय स्वर्ण रत्न निर्मित महान्, जय उपल सुमृतिका के सुजान।
जिन चैत्यालय हैं कई प्रकार, उनको मैं बंदू बार–बार।।4।।
जय बने अनादिकाल माहि, अकृत्रिम चैत्यालय कहांहि।
कई पुरुष किए रचना सुसार, उनको मैं बंदू बार–बार।।5।।

जय घंटा तोरण आदि युक्त, जिन चैत्यालय हैं दोष मुक्त।
भवि स्तुति गावे बार–बार, उनको मैं बंदू बार–बार।।6।।
जय वाद्य यंत्र शोभित महान्, जय धूप घटों से शोभमान।
कई उत्सव होवें धर्म सार, उनको मैं बंदू बार–बार।।7।।
जो पर कोटा से रहे युक्त, कई द्वार झरोखे से संयुक्त।
तिनकी शोभा का नहीं पार, उनको मैं बंदू बार–बार।।8।।
जहँ वन्दन करने पथिक आप, जिनधर्म क्रिया में सौख्य पाय।
हम नमें जिनालय शक्तिधार, उनको मैं बंदू बार–बार।।9।।
हम पूज रहे मन, वचन, काय, अपने अंतर में शक्ति पाय।
अब छूट जाए सारा अगार, उनको मैं बंदू बार–बार।।10।।
जिन चैत्यालय भी देव एक, उसमें जिन प्रतिमाएँ हैं अनेक।
सब भक्त करें भक्ती अपार, उनको मैं बंदू बार–बार।।11।।
जो श्री जिनेन्द्र के हैं आलय, वह कहलाते हैं चैत्यालय।
हम चैत्यालय के खड़े द्वार, उनको मैं बंदू बार–बार।।12।।

(छंद घत्तानन्द)

जय जिन चैत्यालय, जिन के आलय, कृत्रिमाकृत्रिम दोय कहे।
जय मंगलकारी, जग उपकारी सबके मन को मोह रहे।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय समूह अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

जिन चैत्यालय चैत्य को, पूज रचें धीमान।
उभयलोक सुखकर "विशद", हो जावे श्रीमान्।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री त्रिकाल तीर्थंकर पूजन 19

स्थापना

भूतकाल अरु वर्तमान के, अरु भविष्य के जिन चौबीस।
पञ्च विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान होते हैं बीस।।
मन–वच–तन से भाव पुष्प ले, करते हैं सम्यक् अर्चन।
अपने उर के सिंहासन पर, करते हैं हम आह्वानन्।।
हे नाथ ! पधारो आकर के, न हमको प्रभू निराश करो।
हम भक्त रहेंगे सदियों तक, प्रभु मेरा भी विश्वास करो।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी भरतैरावत विदेहस्य अतीत अनागत वर्तमान तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वलोगोत्तम भरतैरावत विदेहस्य अतीत अनागत वर्तमान तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वजगत्शरण भरतैरावत विदेहस्य अतीत अनागत वर्तमान तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

इन्द्रिय के विषयों में फँसकर, हम जग भोगों में अटके हैं।
पाकर के जन्म–जरा–मृत्यु, प्रभु तीन लोक में भटके हैं।।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम नीर चढ़ाने आए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, नहिं शांति जरा भी मिल पाई।
मन आकुल व्याकुल रहा सदा, निज आतम की सुधि बिसराई।।
यह शीतल चंदन घिस करके, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

दुखमय अथाह भवसागर में, सदियों से गोते खाए हैं।
अक्षय अनंत पद बिना जगत में, बार–बार भटकाए हैं।।
यह अक्षय अक्षत धोकर के, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

दिन-रात वासना में रत रहकर, अपने मन में सुख माना।
पुरुषत्व गँवाया है अपना, निज का पुरुषार्थ नहीं जाना।।
हम कामवासना नाश हेतु यह, पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

बहु भोजन खाकर के हमने, भव-भव में भूख मिटाई है।
न तृष्णा नागिन शांत हुई, हर चीज बनाकर खाई है।।
हम क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य बनाकर लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

संसार तिमिर के नाश हेतु, दीपक से कीन्हा उजियाला।
उससे भी काम न चल पाया, है मोह तिमिर अतिशय काला।।
हो नाश मोह का अंध पूर्ण, हम दीप जलाकर लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, हमने संसार बढ़ाया है।
दलदल में फँसते गये अधिक, नहिं छुटकारा मिल पाया है।।
यह कर्म जलाने हेतु नाथ, हम धूप जलाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

भोगों को अमृत फल माना, वश भोग-भोग का योग रहा।
भोगों के संग्रह में हमने, जीवन भर भारी कष्ट सहा।।
हम मोक्ष प्राप्ति के हेतु नाथ, फल श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।

यह जग का सारा वैभव भी, न हमको सुखी बना पाया।
वैभव में जीवन गवाँ दिया, फिर अंत समय में पछताया।।
हम पद अनर्घ के हेतु नाथ!, यह अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर तिय काल के, विद्यमान जिन बीस।
गाते हैं जयमालिका, चरण झुकाकर शीश।।

(शंभु छंद)

तीनकाल त्रय चौबीसी के, रहे बहत्तर जिन तीर्थेश।
ध्यानमयी मुद्रा है पावन, जिनका रहा दिगम्बर भेष।।
पञ्च विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान होते हैं बीस।
उनके चरण कमल की भक्ति, में नत रहते सुर-नर ईश।।1।।
हमने काल अनादि गँवाया, विषय कषायों में फँसकर।
राग-द्वेष अरु मोह में जीवन, बीता मेरा रच-पचकर।।
चतुर्गति में भ्रमण किया है, कष्ट अनंतानंत सहे।
सम्यक्धर्म कभी न भाया, कर्म कुपंथ अनंत गहे।।2।।
आज पुण्य का योग मिला जो, शरण आपकी हम आए।
वीतराग निर्ग्रंथ दिगम्बर, मुद्रा के दर्शन पाए।।
हे प्रभू ! मेरी मति सुमति हो, सम्यक् पथ को ग्रहण। करूँ।।3।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण जिन, धर्म हृदय से वरण करूँ।
रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, उसमें ही अवगाहन हो।।
निज स्वभाव में रमण होय मम्, यह जीवन मनभावन हो।
प्रभु आपकी वाणी सुनकर, मोक्षमार्ग का ज्ञान हुआ।।4।।
अतिशय अनुपम और अलौकिक, निज स्वरूप का भान हुआ।
हे जिनवर ! आशीष दीजिए, निज स्वरूप में रमण करूँ।।
छोड़ के सारे कुपथ पंथ को, मोक्षमार्ग पर गमन करूँ।।
कुछ भी चाह नहीं है मेरी, न ही अंतर में कुछ आश।
अंतिम है यह आश हमारी, मोक्ष महल में हो मम् वास।।5।।

आर्या छंद

हे ज्ञानेश्वर ! है तुम्हें नमन्, हे विमलेश्वर है तुम्हें नमन्।
हे विशद ज्ञान के ईश नमन्, हे तीर्थंकर जिन तुम्हें नमन्।।

ॐ ह्रीं त्रिकाल सम्बन्धी द्विसप्तति तीर्थंकरेभ्यो शाश्वत विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्योः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थंकर जिनतीर्थ हैं, श्रीधर श्री के नाथ।
अर्हत् घाती कर्म के, विशद झुकाऊँ माथ।।

इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिं क्षिपेत्

भूतकालीन श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन 20

स्थापना

अपने सारे कर्म नाशकर, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अनंत चतुष्टय पाने वाले, सर्वलोक में हुए महान्।।
भूतकाल में चौबिस जिनवर, हुए लोक मंगलकारी।
अक्षयपद को पाने वाले, सिद्ध शिला के अधिकारी।।
तीर्थंकर पद धारी जिन का, करते हैं हम आह्वानन्।
तीन योग से चरण कमल में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

हम प्रासुक करके जल निर्मल, प्रभु चरण चढ़ाने लाए हैं।
जन्मादि जरा के रोगों से, छुटकारा पाने आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।1।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शीतल चंदन घिस करके, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं।
भव का संताप नशाने को, तव चरणों में सिर नाए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।2।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

यह अक्षय अक्षत हैं अनुपम, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
जो है अखण्ड अविनाशी पद, वह पद पाने हम आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।3।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

यह भाँति-2 के मनहारी, शुभ पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
हम कामबाण की बाधा को, प्रभु पूर्ण नशाने आए हैं।।

हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।4।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

नैवेद्य बनाकर के मनहर, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, प्रभु चरण शरण में आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।5।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

यह घृत का दीप बनाकर के, प्रभु यहाँ जलाकर लाए हैं।
छाया अंतर में घोर तिमिर, हम उसे नशाने आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

यह धूप बनाकर के ताजी, प्रभु यहाँ जलाने लाए हैं।
हों नष्ट कर्म यह अष्ट मेरे, हम भक्ति करने आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।7।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व0 स्वाहा।

यह सरस पक्व फल लिए नाथ !, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
है मोक्ष महाफल सर्वोत्तम, वह फल पाने को आए हैं।।
हम मोक्ष महाफल प्राप्त करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।8।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निव0 स्वाहा।

हम अष्ट गुणों की प्राप्ति हेतु, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
प्रभु भव बंधन से छूट सके, अतएव शरण में आए हैं।।
हम पद अनर्घ्य शुभ प्राप्त करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।9।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

दोहा- भूतकाल में हुए हैं, श्री जिनेन्द्र चौबीस।
पुष्पांजलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

भूतकाल चौबीस में, हुए मोक्ष के ईश।
तीर्थंकर निर्वाण जी, झुका रहे हम शीश।।1।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री निर्वाण जिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर नाम जिनेन्द्र का, पाए ज्ञान प्रकाश।
उनके वंदन से मिले, हमको मुक्ती वास।।2।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री सागर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासाधु कर साधना, किए कर्म का नाश।
ज्ञान ध्यान तप से किया, केवलज्ञान प्रकाश।।3।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री महासाधु जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल गुणों को प्राप्त कर, हुए विमलप्रभ देव।
विमल गुणों के हेतु हम, वंदन करें सदैव।।4।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री विमलप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध बुद्ध पद में रहे, श्री शुद्धाभ जिनेन्द्र।
अतः वंदना कर रहे, जिनकी देव शतेन्द्र।।5।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री शुद्धाभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय श्री को प्राप्तकर, श्रीधर जिन तीर्थेश।
मोक्ष लक्ष्मी पा गये, क्षण में प्रभु विशेष।।6।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्रीधर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीदत्त जिनदेव ने, किया कर्म का अंत।
मोक्षप्राप्त करके हुए, मुक्ति वधु के कंत।।7।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्रीदत्त जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध बने सिद्धाभ जिन, अष्टकर्म को नाश।
अष्ट गुणों को प्राप्त कर, पाए मोक्ष निवास।।8।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री सिद्धाभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कर्म मल नाशकर, बने अमलप्रभ देव।
विशद गुणों को प्राप्तकर, बनू अमल स्वमेव।।9।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री अमलप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्धर जिन करते सदा, जीवों का उद्धार।
कर्म बली को नाशकर, होते भव से पार।।10।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री उद्धर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निदेव ध्यानाग्नि से, कर्मेंधन को नाश।
पूज्य हुए त्रय लोक में, करके सुगुण विकास।।11।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री अग्निदेव जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम जिनवर ने स्वयं, संयम को उर धार।
शिव रमणी के बन गये, आप स्वयं भरतार।।12।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री संयम जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छंद)

शिवपुर वासी हे शिवदेव !, तव पद वंदन करूँ सदैव।
शिवपद पाने आए द्वार, सर्व जगत में मंगलकार।।13।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री शिवदेव जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर कुसुमाञ्जलि नाथ, झुका रहे तव चरणों माथ।
जोड़ रहे हम दोनों हाथ, मोक्ष महल तक देना साथ।।14।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री कुसुमाञ्जलि जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन उत्साह दिखाओ राह, मन में जगी एक ही चाह।
मोक्षमार्ग न हो अवरुद्ध, ध्यान करूँ आतम का शुद्ध।।15।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री उत्साह जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेश्वर परमानंद दाता, तीन लोक में हुए विधाता।
महिमा जिनकी विस्मयकारी, प्रभु चरणों में ढोक हमारी।।16।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री परमेश्वर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानेश्वर जी ज्ञान जगाए, जिनकी महिमा कही न जाए।
लोकालोक प्रकाशक सारा, जिन चरणों में नमन् हमारा।।17।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री ज्ञानेश्वर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलज्ञान के धारी ईश्वर, विमलेश्वर कहलाए महीश्वर।
दिव्य रही है जिनकी वाणी, जग में जन-जन की कल्याणी।।18।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री विमलेश्वर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका यश फैला है भारी, नाम यशोधर मंगलकारी।
सुर-नर-पशु जिनके गुण गाते, प्रभु के पद हम शीश झुकाते।।19।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री यशोधर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णमती तीर्थंकर भाई, भवि जीवों को हुए सहाई।
मोक्षमार्ग पर कदम बढ़ाया, सबको मोक्षमार्ग दर्शाया।।20।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री कृष्णमती जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानमति जिन ज्ञान स्वरूपी, द्रव्य जानते रूपारूपी।
सबको ज्ञान स्वभाव बताए, सार्थक नाम प्रभु जी पाए।।21।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री ज्ञानमति जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धमति जिनवर कहलाए, शुद्ध मनोबल आप बनाए।
शुद्ध बुद्ध शिवपद को पाए, तव चरणों हम शीश झुकाए।।22।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री शुद्धमति जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण भद्रता को प्रभु पाए, श्री भद्र प्रभु जी कहलाए।
पाने यहाँ भद्रता आए, जिन चरणों में शीश झुकाए।।23।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री भद्र जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य अनंत प्रभु प्रगटाए, सर्व लोक में पूज्य कहाए।
अनंतवीर्य जिनवर कहलाए, तव चरणों में शीश झुकाए।।24।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री अनंतवीर्य जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- यह अतीत के जानिए, तीर्थंकर चौबीस।
तिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं अतीतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- भूतकाल में हो गये, तीर्थंकर चौबीस।
जयमाला गाते यहाँ, चरण झुकाकर शीश।।

(शंभु छंद)

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, यह सौभाग्य बनाया था।
कर्म घातिया नाश किए फिर, केवलज्ञान जगाया था।।
भूतकाल की चौबीसी में, हुए अलौकिक जिन तीर्थेश।
तीर्थंकर पदवी अवनी पर, विस्मयकारी रही विशेष।।1।।

भव्य जीव ही इस पदवी को, संयम द्वारा पाते हैं।
भेदज्ञान के द्वारा पहले, सद्श्रद्धान जगाते हैं।।
सम्यक्दर्शन के द्वारा वह, सम्यक्ज्ञानी बनते हैं।
सम्यक्चारित धारण करके, कर्म श्रृंखला हनतेहैं।।2।।
सम्यक्तप के द्वारा बहुतक, कर्म निर्जरा करते हैं।
आत्मध्यान के द्वारा सारी, कर्म कालिमा हरते हैं।।
क्षपक श्रेणी पर कर आरोहण, हो जाते हैं जा`निर्ग्रंथ।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, बन जाते क्षण में अर्हंत।।3।।
समवशरण की रचना करते, स्वर्ग लोक से आकर इन्द्र।
दिव्य देशना पाते प्रभु की, सुर-नर पशु और राजेन्द्र।।
प्रातिहार्य से सज्जित होता, समवशरण अतिशयमनहार।
अतिशय करते देव अनेकों, भक्ति भावसेमंगलकार।।4।।
कमलासन पर अधर विराजित, समवशरण में होतेदेव।
चतुर्दिशा में मुख मुद्रा के, दर्शन सबको होंय सदैव।।
ऐसी परम विभूति पाकर, भी उससे न रखते राग।
बाह्यभ्यंतर से होता है, जिनके अंदर पूर्ण विराग।।5।।
आयु पूर्ण करते ही क्षण में, हो जाते हैं जिनवर सिद्ध।
सिद्ध शिला पर स्थित होते, जो अनादि से रही प्रसिद्ध।।
ऐसे परम जिनेश्वर के हम, चरणों शीश झुकाते हैं।
हम भी अर्हत् पदवी पावें, यही भावना भाते हैं।।6।।

दोहा- तीर्थंकर पद प्राप्त कर, मिले मुक्ति हे नाथ।
मोक्षमार्ग में दीजिए, हमको भी प्रभु साथ।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- भक्त खड़े हैं द्वार, पूजा करने आपकी।
मिल जाए उपहार, मोक्षमहल में वास हो।।

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

भविष्यकालीन श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन 21

स्थापना

काल अनागत भरत क्षेत्र में, होंगे तीर्थंकर चौबीस।
ज्ञानावरण आदि के नाशी, बनते केवल ज्ञानाधीश।।
तीर्थंकर पद तीन लोक में, श्रेष्ठ रहा है पूज्य त्रिकाल।
अरहंतों का आह्वानन् कर, वंदन करते हैं नतभाल।।
भक्त भावना भाते हैं शुभ, वह पवित्र पद पाने की।
कर्म नाशकर अपने सारे, मोक्ष महल में जाने की।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं अनागतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।ॐ ह्रीं अनागतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद-दिग्बधु)

प्रासुक सुनीर निर्मल, सब कर्म मैल धोवे।
जन्मादि रोग क्षयकर, सारे विकार खोवे।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।1।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित सुगंध द्वारा, भव ताप दूर होवे।
मन का विकार सारा, मम् शीघ्र पूर्ण खोवे।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।2।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत धवल अखण्डित, यह हम चढ़ाने लाए।
निज पद रहा सुअक्षय, वह प्राप्त करने आए।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।3।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

यह पुष्प लिए पुष्पित, पद में चढ़ाने लाए।
कामाग्नि जल रही जो, हम वह बुझाने आए।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।4।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

नैवेद्य सरस हमने, कई भाँति के बनाए।
अपनी क्षुधा की बाधा, हम भी नशाने आए।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।5।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

इस रत्न दीप से शुभ, जगमग प्रकाश होवे।
अज्ञान के तिमिर को, जो पूर्ण रूप खोवे।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।6।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

शुभ धूप अब सुगंधित, हम यह जलाने लाए।
हैं कर्म अष्ट दुखकर, उनको नशाने आए।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।7।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व0 स्वाहा।

कई भाँति के सरस फल, हम यह चढ़ाने लाए।
है मोक्षफल अखण्डित, वह प्राप्त करने आए।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।8।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व0 स्वाहा।

हम अर्घ्य शुभ समर्पित, करते हैं भाव से यह।
पद हम अनर्घ पावें, जो सिद्ध पाए हैं वह।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।9।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

दोहा– तीर्थंकर पद लोक में, अतिशय मंगलकार।
पुष्पांजलि कर पूजते, सविनय बारम्बार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चाल–टप्पा

तीर्थंकर प्रकृति के बंधक, श्रेणिक नृप भाई।
पद्मनाभ तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।1।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री पद्मनाभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्षभाव से सुरगण मिलकर, बाजे बजवाई।
श्री सूरप्रभ जिनवर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।2।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री सूरप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुपथ विनाशक सुपथ प्रकाशक, जग मंगलदायी।
सुप्रभ जिन तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।3।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री सुप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व चराचर द्रव्य अनंतक, युगपद दर्शायी।
श्री स्वयंप्रभ जिनवर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।4।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री स्वयंप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाबली हैं सर्व लोक में, घाती कर्म नशाई।
श्री सर्वायुध जिनवर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।5।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री सर्वायुध तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदर्शन कर जिन बनने की, मन में सुधि आई।
तीर्थंकर जयदेव बनेंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।6।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री जयदेव तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम का ध्यान लगाकर, निज शक्ति पाई।
श्री उदयप्रभ जिनवर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।7।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री उदयप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण की महिमा जग में, जिनने प्रगटाई।
प्रभादेव तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।8।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री प्रभादेव तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ तीर्थंकर पद की, महिमा बतलाई।
श्री उदंक तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।9।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री उदंक तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर बनकर प्रभु पाते, जग में प्रभुताई।
प्रश्नकीर्ति तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।10।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री प्रश्नकीर्ति तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन को लखकर जग की, शोभा शर्माई।
जयकीर्ति तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।

तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।11।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री जयकीर्ति तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र के दर्श पर्स से, प्रकृति हर्षाई।
पूर्णबुद्धि तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।12।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री पूर्णबुद्धि तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-छंद)

जो सर्व कषाय विनाशी, हैं केवलज्ञान प्रकाशी।
श्री निःकषाय जिनदेवा, हम पावें पद की सेवा।।13।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री निःकषाय तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न रहा कर्म का मल है, पाया चेतन का बल है।
जिनराज विमल गुण गाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री विमलप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विपुल गुणों के धारी, इस जग में मंगलकारी।
जिनराज विपुल प्रभ जानो, जग में हितकारी मानो।।15।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री विपुलप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल चेतन चित्धारी, श्री निर्मल जिन अविकारी।
जो जिनवर पद पाएँगे, फिर मोक्षपुरी जाएँगे।।16।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री निर्मल तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो तीन गुप्तियाँ धारे, वह सारे कर्म निवारे।
श्री चित्रगुप्त जिनदेवा, होंगे कर्मों के खेवा।।17।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री चित्रगुप्त तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन परम समाधि धारी, बन जाते हैं अविकारी।
जिनदेव समाधिगुप्ति, पाएँगे भव से मुक्ति।।18।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री समाधिगुप्ति तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वयं बुद्ध होते हैं, वह कर्म सभी खोते हैं।
जिनदेव स्वयंभू ध्यावें, हम भी स्वयंभू बन जावें।।19।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री स्वयंभू तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सर्व दर्प के त्यागी, शुभ मार्दव धर्मानुरागी।
कंदर्पदेव जिन स्वामी, होंगे जो अन्तर्यामी।।20।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री कंदर्पदेव तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकर्म जयी बन जाते, वह सारे कर्म नशाते।
जयनाथ साथ अब दीजे, प्रभु चरण शरण रख लीजे।।21।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री जयनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज विमल गुणधारी, श्री विमलनाथ त्रिपुरारी।
तुमने जो लक्ष्य बनाया, वह मेरे मन भी भाया।।22।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री विमलनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दिव्य देशना देते, जग का कालुष हर लेते।
वह दिव्यदेव जिनराजा, हैं तारण-तरण जहाजा।।23।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री दिव्यदेव तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं अनंत बलधारी, जिन पृथ्वीपति अवतारी।
अंतिम तीर्थंकर जानो, श्री अनंतवीर्य पहिचानो।।24।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री अनंतवीर्य तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भावी तीर्थंकर कहे, आगम में चौबीस।
जिनवर के चरणों विशद, झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्य अनागतकालीन चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- कहे अनागत काल के, तीर्थंकर चौबीस।
जयमाला गाते परम, उन्हें झुकाकर शीश।।

(शम्भू छंद)

तीर्थंकर बनते वह प्राणी, जिनने संयम को धारा।
उनकी महिमा गाने को मम्, अर्पित हैं जीवन सारा।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, सम्यक्दर्शन पाते हैं।
भाग्य उदय आ जावे जिनका, वह सद्ज्ञान जगाते हैं।।1।।

अंतर में वैराग्य जगे तव, सम्यक्चारित आता है।
तीनों के मिलने पर पावन, रत्नत्रय बन जाता है।।
रत्नत्रय की शुभम् त्रिवेणी, में अवगाहन जो करते।
राग-द्वेष मद मोह रहित हो, कर्म कालिमा को हरते।।2।।
त्रय गुप्ति के द्वारा अपने, कर्मों का संवर करते।
आत्मध्यान से कर्म निर्जरा, द्वारा नित्य कर्म झरते।।
लगे अनादि कर्म घातिया, क्षण में उन्हें नशाते हैं।
दर्शन ज्ञान अनंतवीर्य सुख, अनंत चतुष्टय पाते हैं।।3।।
बाह्य विभूति समवशरण भी, आकर देव रचाते हैं।
जय-जयकारों के द्वारा सुर, यह आकाश गुँजाते हैं।।
प्रातिहार्य के द्वारा प्रभु की, महिमा को दिखलाते हैं।
भक्ति भाव से पूजा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।4।।
सर्व श्रेष्ठ पद रहा लोक में, कुछ कहने से अर्थ नहीं।
शब्दों में जिसकी महिमा को, कहने की सामर्थ नहीं।।
यह जान प्रभु तव चरणों में, हम अनुगामी बनकर आए।
पूजा करने को तुच्छ द्रव्य, यह साथ में अपने हम लाए।।5।।
हम पूजा का फल पाने को, शुभ आशा लेकर आए हैं।
दोगे प्रभु मोक्ष महाफल शुभ, चरणों में आश लगाए हैं।।
सुनते हैं इस दर पे कोई, सद्भक्त निराशा नहिं पाते।
जो शरणागत बनकर आते, वह शीघ्र मोक्षफल पा जाते।।6।।

दोहा- मोक्ष महाफल प्राप्त हो, हमको हे जिनदेव!।
जब तक मम् जीवन रहे, करूँ चरण की सेव।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पदवी यह तीर्थेश की, पूजनीय है श्रेष्ठ।
भक्तीमय जीवन बने, मेरा पूर्ण यथेष्ट।।

इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिं क्षिपेत्

वर्तमानकालीन श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन 22

स्थापना

वर्तमान की भरत क्षेत्र में, चौबीसी है सर्व महान्।
वृषभादि महावीर प्रभु का, करते भाव सहित गुणगान।।
भक्ति भाव से नमस्कार कर, विनय सहित करते पूजन।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो मम्, करते हैं हम आह्वानन्।।
जिस पथ पर चलकर के भगवन्, तुमने स्व पद को पाया है।
उस पथ पर बढने का पावन, हमने भी लक्ष्य बनाया है।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्य वर्तमानकालीन घाती कर्मविनाशक सर्वमंगलकारी श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्य वर्तमानकालीन घाती कर्मविनाशक सर्वलोगोत्तम श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्य वर्तमानकालीन घाती कर्मविनाशक सर्वजगतशरण श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

पाप कर्म के कारण प्राणी, जग में कई दुःख पाते हैं।
पाकर जन्म मरण भव-भव में, तीन लोक भटकाते हैं।।
जन्म जरा के नाश हेतु प्रभु, निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य कर्म के प्रबल योग से, जग का वैभव पाते हैं।
भोग पूर्ण न होने से हम, मन में बहु अकुलाते हैं।।
संसार वास के नाश हेतु, सुरभित यह गंध चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

है जीव तत्त्व अक्षय अखण्ड, हम उसे जान न पाते हैं।
फँसकर मिथ्यात्व कषायों में, हम चतुर्गति भटकाते हैं।।

अक्षय अखण्ड पद पाने को, हम अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

हैं भिन्न तत्त्व हमसे अजीव, वह जग में भ्रमण कराते हैं।
सहयोगी बनकर विषयों में, वह लालच दे बहलाते हैं।।
हो कामवासना नाश प्रभु, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

आस्रव के कारण से प्राणी, इस जग में नाच नचाते हैं।
जो क्षुधा व्याधि से हो व्याकुल, मन में अतिशय अकुलाते हैं।।
हम क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, चरणों नैवेद्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

क्षीर नीर सम बंध तत्त्व ने, आतम में बंधन डाला।
सहस्र रश्मिवत् पूर्ण प्रकाशित, चेतन को कीन्हा काला।।
बंध तत्त्व के नाश हेतु हम, घृत का दीप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

गुप्ति समिति व्रताभाव में, संवर कभी न कर पाए।
कर्मों ने भटकाया जग में, उनसे छूट नहीं पाए।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, सुरभित धूप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा न कर पाए, सम्यक् तप से हीन रहे।
जग भोगों के फल पाने में, हमने अगणित कष्ट सहे।।
मोक्ष महाफल पाने को हम, श्रीफल यहाँ चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप के फल हैं निष्फल, उसमें हम भरमाए हैं।
आस्रव बंध के कारण हमने, जग के बहु दुःख पाए हैं।।

पद अनर्घ को पाने हेतु, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- वर्तमान के जानिए, तीर्थंकर चौबीस।
पुष्पाञ्जलि क्षेपण करूँ, चरण झुकाऊँ शीश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सोरठा

मरुदेवी के लाल, नाभिराय के सुत कहे।
चरण झुकाऊँ भाल, ऋषभनाथ के चरण में।।1।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ भगवान, कर्मशत्रु को जीतकर।
जग में हुए महान्, जिन पद वंदन हम करें।।2।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्व चिह्न पहिचान, संभवनाथ जिनेन्द्र की।
करूँ विशद गुणगान, जिन गुण पाने के लिए।।3।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन जिनदेव, चरण वंदना मैं करूँ।
विनती करूँ सदैव, चरण-शरण हमको मिले।।4।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ पद माथ, झुका रहे हम भाव से।
मुक्ति पथ में साथ, दीजे हमको जिन प्रभो।।5।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नृप धारण के लाल, पद्मप्रभ हैं पद्म सम।
वन्दन करूँ त्रिकाल, तव पद पाने के लिए।।6।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के पाद, स्वस्तिक लक्षण शोभता।
रहे सभी को याद, जिनवर की महिमा अगम।।7।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कान्ति चन्द्र समान, चन्द्र चिह्न जिनका परम।
इन्द्र करें गुणगान, भक्ति में तल्लीन हो।।8।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत ने अंत, कीन्हा है संसार का।
आप हुए जयवंत, सद्गुण के सरवर बने।।9।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ जिनेन्द्र, शीलव्रतों को पाए हैं।
पूजें इन्द्र नरेन्द्र, मन में हर्ष मनाए हैं।।10।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय कर्म का नाश, जिन श्रेयांस की भक्ति से।
आतम ज्ञान प्रकाश, होता है भवि जीव का।।11।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य भगवान, तीन लोक में पूज्य हैं।
शत-शत् करूँ प्रणाम, पूजा करके भाव से।।12।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकाल तीर्थंकर श्री वासुपूज्यनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद-हरिगीता)

विमलनाथ का विमल ज्ञान है, द्रव्य चराचर भाषी।
कर्म नाशकर शिवपुर पाएँ, पद पाया अविनाशी।।13।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतनाथ जिनवर ने सारे, घाती कर्म विनाशे।
ज्ञान अनंतानंत प्राप्तकर, लोकालोक प्रकाशे।।14।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ भगवान लोक में, विशद धर्म के धारी।
सर्व लोक में जिनका दर्शन, होता मंगलकारी।।15।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव चक्रीपद पाया, तीर्थंकर पद धारा।
शांतिनाथ है तीन लोक में, पावन नाम तुम्हारा।।16।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ गुणों के सागर, सर्व गुणों के दाता।
तीन लोकवर्ती जीवों के, कुंथुनाथ हैं त्राता।।17।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, आठ गुणों को पाए।
अरहनाथ भगवान जगत् में, सब के हृदय समाए।।18।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म रूप मल्लों की सेना, जिनके आगे हारी।
मल्लिनाथ भगवान आपकी, दुनियाँ बनी पुजारी।।19।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत ने मुनि व्रतों को, अपने हृदय सजाया।
मोक्षमार्ग के राही जिनवर, केवलज्ञान जगाया।।20।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिलापुर नगरी के राजा, विजयसेन कहलाए।
जन्म प्राप्त कर नमीनाथ ने, सबके भाग्य जगाए।।21।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री नमीनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशुओं की पीड़ा को लखकर, मन में करुणा जागी।
नेमिनाथ जग की माया तज, क्षण में बने विरागी।।22।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर उपसर्ग पार्श्व के ऊपर, हार कमठ ने मानी।
ध्यान अग्नि से कर्म जलाए, बन गये केवलज्ञानी।।23।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पर विजय प्राप्त करते जो, महावीर कहलाते।
ऐसे वीर प्रभु के चरणों, सादर शीश झुकाते।।24।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री महावीर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- वर्तमानकालीन के, हैं चौबीस जिनेन्द्र।
करे प्रतिष्ठा बिंब की, जग के इन्द्र नरेन्द्र।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- प्रभु भक्त हम आपके, भक्ति करें त्रिकाल।
चौबीसों जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

चाल-टप्पा

कर्म घातिया नाश किए तव, हुए ज्ञानधारी।
मोक्षमार्ग पर बढ़ने वाले, जन-जन उपकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।1।।
आदिनाथ हैं आदि जिनेश्वर, जिन गुण के धारी।
अजितनाथ हैं नाथ लोक में, अति विस्मयकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।2।।
संभव जिन की भक्ति भाई, जग में हितकारी।
अभिनंदन का वंदन होता, जग मंगलकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।3।।
सुमतिनाथ की दिव्य देशना, अतिशय सुखकारी।
पद्मप्रभु जी रहें लोक में, बनकर अविकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।4।।
जिन सुपार्श्वजी पार्श्वमणि सम, हैं गुण के धारी।
चन्द्रप्रभु जी पूर्ण चाँदनी, सम शीतल भारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।5।।
पुष्पदंत ने कर्म अंत की, कीन्ही तैयारी।
शीतलनाथ जिनेश्वर की तो, महिमा है न्यारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।6।।
श्रेयनाथजी श्रेय प्रदाता, हैं करुणाकारी।
वासुपूज्य जग पूज्य हुए हैं, ऋषिवर अनगारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।7।।
विमलनाथ जी मुक्ति हमको, मिल जाए प्यारी।

श्री अनंत जिन हैं इस जग में, गुण अनंतधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।8।।
धर्मनाथ जिनराज कहे हैं, विशद धर्मधारी।
शांतिनाथ जी हैं इस जग में, परम शांतिकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।9।।
कुंथुनाथ जिन हुए लोक में, त्रयपद के धारी।
अरहनाथ भी रहे जहाँ में, अति महिमाधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।10।।
मल्लिनाथ कर्मों के नाशी, अतिशय अविकारी।
मुनिसुव्रतजी व्रत धारण कर, हुए ज्ञानधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।11।।
नमीनाथ की पूजा करते, सारे नर-नारी।
नेमिनाथ वैराग्य धारकर, पहुँचे गिरनारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।12।।
पार्श्वनाथ ने कठिन परिषह, सहन किए भारी।
महावीर की महिमा जग में, है विस्मयकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।13।।

(छन्द-घत्तानन्द)

जय-जय जिन स्वामी अन्तर्यामी, मोक्षमार्ग के पथगामी।
जय शिवपुरगामी त्रिभुवननामी, सिद्ध शिला के हो स्वामी।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्य वर्तमानकाल सम्बन्धी सर्व तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- चौबीसों जिनराज को, वंदन बारम्बार।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, पाऊँ भवदधि पार।।

इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ऐरावत क्षेत्रस्य जिन पूजा 22

स्थापना

तीर्थंकर पद श्रेष्ठ है, तीनों लोक प्रधान।
कर्म भूमियों में सदा, होते हैं भगवान।।
ऐरावत शुभ क्षेत्र में, जिनवर कहे त्रिकाल।
उनके चरणों में विशद, करते हैं नत भाल।।
तीन काल के जिनों का, तीन योग के साथ।
आह्वानन करते हृदय, चरण झुकाते माथ।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकर ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

ज्ञानोदय छंद

भव-भव में हमने नीर पिया, भव पीर मिटान न पाए हैं।
अब तीर प्राप्त करने भव का, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जंजीर कर्म की कट जाए, हम अर्चा करने आए हैं।
संसार दुखों से छुटकारा, पाने के भाव बनाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार अपार न पार कही, न सार प्राप्त कर पाए हैं।
अविकार हुए अनगार बने, उनने संसार नशाए हैं।।
जंजीर कर्म की कट जाए, हम अर्चा करने आए हैं।
संसार दुखों से छुटकारा, पाने के भाव बनाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकरेभ्यो भवताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय न क्षय हो जिस पद का, वह पाने अक्षत लाए हैं।
क्षयकार निधी जग की तज कर, अक्षय निधि जिनवर पाए हैं।।
जंजीर कर्म की कट जाए, हम अर्चा करने आए हैं।
संसार दुखों से छुटकारा, पाने के भाव बनाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम धाम में भटकाए, विश्राम कहीं न पाए हैं।
अब नाम दाम की आस छोड़, यह फूल चढ़ाने आए हैं।।
जंजीर कर्म की कट जाए, हम अर्चा करने आए हैं।
संसार दुखों से छुटकारा, पाने के भाव बनाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा तृषा से व्याकुल हो, भूखे-प्यासे बिल्लाए हैं।
नैवेद्य चढ़ाकर यह ताजे, हम क्षुधा मिटाने आए हैं।।
जंजीर कर्म की कट जाए, हम अर्चा करने आए हैं।
संसार दुखों से छुटकारा, पाने के भाव बनाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोहित होकर क्षुभित हुए, संसार में बहु भटकाए हैं।
जगमग जलती दीपक लड़ियों से, अर्चा करने आए हैं।।
जंजीर कर्म की कट जाए, हम अर्चा करने आए हैं।
संसार दुखों से छुटकारा, पाने के भाव बनाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह कर्म बड़े वे शर्म कहे, जो धर्म से हमें छुड़ाए हैं।
अब धूप जलाकर आज यहाँ, हम झुके शर्म से आए हैं।।
जंजीर कर्म की कट जाए, हम अर्चा करने आए हैं।
संसार दुखों से छुटकारा, पाने के भाव बनाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पल-पल फल की शुभ चाह जगी, चंचल चित से चपलाए हैं।
अब मोक्ष सुफल पाने को फल, हम यहाँ चढ़ाने आए हैं।।
जंजीर कर्म की कट जाए, हम अर्चा करने आए हैं।
संसार दुखों से छुटकारा, पाने के भाव बनाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाता तन-मन यह चेतन से, शुभ काल अनादि बनाए हैं।
तजकर वह नाता शिवपद से, सम्बन्ध बनाने आए हैं।।

जंजीर कर्म की कट जाए, हम अर्चा करने आए हैं।
संसार दुखों से छुटकारा, पाने के भाव बनाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– ऐरावत शुभ क्षेत्र में, चौबिस तीनों काल।
तीर्थंकर जिनदेव की, गाते हम जयमाल।।

(चौपाई)

ऐरावत शुभ क्षेत्र में जानो, तीर्थंकर चौबिस पहिचानो।
तीन काल में होते भाई, भरत क्षेत्र सम है प्रभुताई।।
पाँचों कल्याणक के धारी, मुनिवर बनते हैं अनगारी।
घोर तपस्या करने वाले, मुनिवर जग से रहे निराले।।1।।
कर्म घातिया पूर्ण विनाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
समवशरण आ देव रचाते, चरणों में आ शीश झुकाते।।
श्रद्धा से जय जय जय गाते, गुण महिमा कोई कह न पाते।
सौ योजन सुभिक्षता होवे, व्याधि रोग आपदा खोवे।।2।।
समवशरण महिमा शुभकारी, होती जग में मंगलकारी।
तीन गति के प्राणी आते, दिव्य ध्वनि सुन ज्ञान जगाते।।
निकट भव्य जो होते प्राणी, सुनकर वे जिनवर की वाणी।
सम्यक् दर्शन पाते प्राणी, भव्य जीव जो होते ज्ञानी।।3।।
देशव्रती कोई बन जाते, कोई उत्तम संयम पाते।
कोई केवलज्ञान जगाते, कोई मोक्ष महल को जाते।।
समवशरण में जाने वाले, भव्य जीव शुभ रहे निराले।
ऐरावत भी पाँच बताए, जम्बूद्वीप उत्तर में गाए।।4।।
धातकी खण्ड में दो शुभ जानो, पुष्करार्द्ध में भी दो मानो।
प्रत्येक में चौबिस जिनवर गाए, छियालिस गुणधारी बतलाए।।
जन्म के अतिशय जो शुभ पाते, केवलज्ञान के भी दश पाते।
देवों कृत चौदह बतलाए, प्रातिहार्य शुभ अष्ट गिनाए।।5।।

अनन्त चतुष्टय पाते स्वामी, मुक्ती पथ के शुभ अनुगामी।
भव बन्धन से मुक्ति पाते, सिद्ध शिला पर धाम बनाते।।
अव्याबाध सौख्य के धारी, सिद्ध श्री पाते शुभकारी।
होते सुख अनन्त के भोगी, निज स्वभाव के जो उपभोगी।।6।।
उनकी हम भी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
तुमने जिस पद को प्रभु पाया, उसका हमने लक्ष्य बनाया।।
गुण गाकर हम गुण प्रगटाएँ, यही भावना हृदय सजाएँ।
मन–वच–तन से शीश झुकाते, तीन योग से तव गुण गाते।।7।।

दोहा– तीर्थंकर पद के धनी, तुम हो पूज्य त्रिकाल।
करते चरणों वंदना, कटे कर्म जंजाल।।

ॐ ह्रीं श्री ऐरावत क्षेत्रवर्ती तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ऐरावत शुभ क्षेत्र में, तीर्थंकर जिन देव।
तव चरणों की वंदना, करते रहें सदैव।।

इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिं क्षिपेत्

विद्यमान बीस तीर्थंकर की पूजन 23

स्थापना

हे लोकपूज्य ! हे महाबली !, हे परम ब्रह्म ! हे तीर्थंकर !
हे ज्ञानदिवाकर धर्मपोत !, हे परमवीर ! हे करुणाकर !
हे महामति ! हे महाप्रज्ञ !, हे महानंद ! हे चतुरानन !
हे विद्यमान तीर्थंकर जिन!, हम करते उर में आह्वानन्।।
हे नाथ ! दया करके उर में, प्रभु मेरा भी उद्धार करो।
यह भक्त आपके हैं साही, हे दयासिन्धु ! उपकार करो।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज-विद्यमान.. बीस तीर्थंकर पूजा..

जन्मादि के रोगों ने, भव भ्रमण कराया।
कर्म बंध करके हमने, संसार बढ़ाया।।
श्री जिनेन्द्र पद दे रहे, प्रासुक जल की धार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।1।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आताप में जलते, जग के जीव हैं।
राग-द्वेष कर बाँधे, कर्म अतीव हैं।।
चरणों चर्चित कर रहे, चंदन केसर गार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।2।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद के हेतु, नहीं पुरुषार्थ किए हैं।
भव अनेक पाकर, यों हमने गवाँ दिए हैं।।
चढ़ा रहे अक्षत धवल, अक्षय विविध प्रकार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।3।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामवासना में फँसकर, प्राणी भरमाया।
कामबली ने वश में कर, जग में भटकाया।।
पुष्प चढ़ाते भाव से, महके अपरम्पार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।4।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग के द्वारा, जग के जीव सताए।
करके सर्वाहार नहीं वह, तृप्ती पाए।।

यह नैवेद्य बनाए हैं, हमने शुभ रसदार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।5।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध के कारण, जग में भटक रहे हैं।
पर पदार्थ पाकर कई, हमने कष्ट सहे हैं।।
दीप जलाकर लाए हैं, मणिमय मंगलकार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।6।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ने हमको जग में बहुत सताया।
कष्ट सहे सदियों से उनका अन्त न आया।।
धूप सुगन्धित अग्नि में खेते अपरम्पार।
पूजा करते भाव से पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।7।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे भटकते फल की आशा में हम भारी।
अतः नहीं बन सके मोक्ष के हम अधिकारी।।
चढ़ा रहे हम भाव से फल यह विविध प्रकार।
पूजा करते भाव से पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।8।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने का मन में भाव न आया।
पञ्च परावर्तन करके संसार बढ़ाया।।
अर्घ्य चढ़ाते चरण में पाने को शिवद्वार।
पूजा करते भाव से पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।9।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- विद्यमान तीर्थेश, जानो बीस विदेह के।
हरते जग का क्लेश, करूँ अर्चना भाव से।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

छंद-ताटंक

जिनका यश सौरभ स्वरूप शुभ, शोभित होता मंगलकार।
समवशरण में सीमंधर जिन, दिव्य देशना दें मनहार।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।1।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री सीमंधर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगमंधरजी है इस युग में, सर्व चराचर के ज्ञाता।
नय प्रमाण युगपत् वस्तू के, ज्ञानी है जग में त्राता।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।2।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री युगमंधर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय को पाकर के शुभ, निज आतम का ध्यान किए।
बाहू जिन तीर्थेश लोक में, जन-जन का कल्याण किए।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।3।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री बाहु जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपथ के नेता सुबाहु जिन, कर्म कलंक विनाश किए।
प्राप्त किए जो शाश्वत शिवसुख, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।4।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री सुबाहु जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वलोक में उत्तम संयम, प्राप्त किए सुजात जिन देव।
कर्मघातिया नाश किए प्रभु, वन्दूँ जिनके चरण सदैव।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।5।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री सुजात जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंप्रभु जिन का चिह्न चन्द्रमा, अभिनव गुण जो प्राप्त किए।
मंगल छाया सर्वलोक में, देवों ने जयकार किए।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।6।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभु जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृष को पाने वाले अनुपम, वृषभानन शुभ नाम रहा।
जिन की पूजा से हो जाता, भक्तों का कल्याण अहा।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।7।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री वृषभानन जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञान सुख पाने वाले, पाए वीर्य अनंत महान।
अनंतवीर्य जिनवर के चरणों, भक्त करें सम्यक्श्रद्धान।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।8।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री अनन्तवीर्य जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका तेज सूर्य की आभा, फीका करता मंगलकार।
श्री सूरप्रभ जिन के चरणों, वंदन मेरा बारम्बार।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।9।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री सूरप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर पद पाने वाले, जन्मे प्रभो! ज्ञानधारी।
श्री विशालप्रभ के चरणों की, भक्ती है शिव सुखकारी।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।10।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री विशालप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : हरिगीता)

प्रभु श्रेष्ठ संयम प्राप्त कीन्हें, वज्रधर कहलाए हैं।
जो कर्मभू के तोड़ने को, वज्र बनकर आए हैं।।

शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभू पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।11।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री वज्रधर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रमा सम नयन जिनके, कहे चन्द्रानन प्रभो।
कर्म का विध्वंस करके, बन गये अर्हत् विभो।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभू पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।12।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री चन्द्रानन जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म शोभित चिह्न जिनके, जो विशद ज्ञानी कहे।
भद्रबाहु जिन प्रभु के, भक्त सब प्राणी रहे।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभू पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।13।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री भद्रबाहु जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाबल को धारते जो, चन्द्रमा लक्षण कहा।
जिन भुजंगम नाथ का यश, यह दिखाई दे रहा।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभू पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।14।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री भुजंगम जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकवर्ती ईश के भी, ईश जिन ईश्वर कहे।
नगर सीमा के सुभानु, धर्म के भूपति कहे।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभू पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।15।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री ईश्वर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिप्रभु ने धर्म नेमि, को सम्हाला हाथ है।
मोक्षपथ के बने राही, सूर्य लक्षण साथ है।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभू पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।16।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री नेमिप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर के भी वीर अनुपम, वीरसेन जिनेश हैं।
कर्म की सेना पराजित, कर हुए तीर्थेश हैं।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभू पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।17।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री वीरसेन जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ज्ञाता और दृष्टा लोक में पहचानिए।
महाभद्र जिनेश जग में, सर्व मंगल मानिए।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभू पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।18।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री महाभद्र जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवयश के चरण में यश, भी झुकाता भाल है।
चिह्न स्वस्तिक से सुशोभित, की यहाँ जयमाल है।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभू पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।19।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री देवयश जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितवीर्य है वीर अनुपम, कर्म का कीन्हे शमन।
नाश करके कर्म आठों, मुक्ति पथ कीन्हें गमन।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभू पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।20।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री अजितवीर्य जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभू छंद

सर्व विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान होते यह बीस।
कभी अधिकतम साठ एक सौ, होते जिन्हें झुकाऊँ शीश।।
समवशरण में शोभित होते, कमलासन पर भली प्रकार।
सर्व जगत् में मंगलकारी, जिनपद वंदन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरआदि विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलादि पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शाश्वत रहे विदेह में, जिन तीर्थंकर बीस।
गाते हैं जयमालिका, चरण झुकाते शीश।।

पद्धरि छन्द

शाश्वत यह लोकालोक जान, शुभ मध्यलोक जिसमें महान्।
है जम्बूद्वीप मध्य पावन, जिसमें मेरु है मन भावन।।1।।
जिसके पूरब पश्चिम विदेह, जिससे प्राणी करते स्नेह।
है क्षेत्र पञ्च पावन महान्, शत् एक षष्टि उपक्षेत्र जान।।2।।
शाश्वत तीर्थंकर जहाँ बीस, सेवा में तत्पर रहें ईश।
यह शाश्वत होते बीस नाम, जिनके चरणों करता प्रणाम।।3।।
जिनवर होते कभी प्रति क्षेत्र, वह पाते केवलज्ञान नेत्र।
संख्या होती शत एक साठ, जो करें नष्ट सब कर्म काठ।।4।।
जिन की भक्ति है सौख्यकार, प्राणी हों भव से शीघ्र पार।
जो चरण-शरण पाते महान्, जिन पद में करते भक्तिगान।।5।।
उन सब जीवों की बढ़े शान, वह पाते प्रभु से ज्ञानदान।
हम भी पा जाएँ शरण नाथ, विनती करते हैं जोड़ हाथ।।6।।
सौभाग्य जगे मेरा जिनेश, मैं रहूँ शरण में ही हमेश।
तव दर्शन कर हों सफल नेत्र, मैं रहूँ कहीं भी किसी क्षेत्र।।7।।
मन में प्रभु जागी यही चाह, मुक्ति की हमको मिले राह।
न पड़े मार्ग में कोई रोध, जागे मम् अंतर में सुबोध।।8।।
हम चातक बनकर खड़े नाथ, रख के माथे पर दोय हाथ।
बरसो स्वाती की बूँद रूप, जागे अंतर में निज स्वरूप।।9।।
बन आओ प्रभु मेरे सुमीत, प्रभु आप निभाओ सही प्रीत।
तुमसे प्रभु मेरी लगी आश, मेरे जीवन का हो विकास।।10।।

छंद-घत्तानंद

बीसों तीर्थंकर, हैं करुणाकर, शुभ विदेह के उपकारी।
महिमा हम गाते, शीश झुकाते, सर्वलोक मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिनवर बीस विदेह के, करते कृपा महान्।
मुक्ती पद के भाव से, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य :- ॐ ह्रीं भूत-भविष्यत-वर्तमान विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकरेभ्यो नमः।

श्री तीर्थंकर पंचकल्याणक समुच्चय पूजन 24

स्थापना *(शंभु छन्द)*

गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पञ्च कल्याणक कहलाते।
तीर्थंकर प्रकृति के बंधक, श्रेष्ठ पुरुष इनको पाते।।
विशद भाव से यही प्रार्थना, हो जाए मेरा कल्याण।
अतः हृदय में कल्याणक का, भाव सहित करते आह्वानन्।।
पंच कल्याणक हमें प्राप्त हों, मन के मेरे भाव रहे।
जब तक मोक्ष प्राप्त न होवे, समता की शुभ धार बहे।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त सर्वमंगलकारी श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त सर्वलोकोत्तम श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त सर्वजगत्शरण श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

वीर छंद

काल अनादी से कीन्हा है, मैंने अब तक जन्म-मरण।
नाश हेतु उस जन्म-मरण के, करता हूँ मैं जल अर्पण।।
गर्भ जन्म आदिक कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।1।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आताप मिटा न मेरा, पर परणति में किया रमण।
नाश होय संसार वास का, करता मैं चंदन अर्पण।।
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।2।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यामति के कारण हमने, सारे जग का किया भ्रमण।
पद अखण्ड अक्षय पाने को, अक्षत धवल करूँ अर्पण।।
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।3।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चार कषायों में फँसकर के, चतुर्गति में किया गमन।
कामबाण विध्वंश हेतु यह, पुष्प करूँ पद में अर्पण।।
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।4।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत के द्वारा मैं, पंचेन्द्रिय का करूँ दमन।
क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य सरस करता अर्पण।।
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।5।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान के द्वारा मैं नित, चित् चेतन का करूँ मनन।
मोह अंध के नाश हेतु यह, जलता दीप करूँ अर्पण।।
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।6।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धी हेतू, अष्ट कर्म का करूँ शमन।
अष्ट कर्म का नाश होय मम्, पावन धूप करूँ अर्पण।।
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।7।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप का भान होय शुभ, पर परणति को करूँ वमन।
मोक्ष महाफल पाने हेतू, फल करता हूँ यह अर्पण।।
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।8।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, उसमें ही कर सकूँ रमण।
पद अनर्घ शाश्वत पाने को, उत्तम अर्घ्य करूँ अर्पण।।
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन।।9।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मन्त्र:- ॐ ह्रीं पंचकल्याणक पदालँकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा- पंच कल्याण की रही, महिमा अपरम्पार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने को भव पार।।

(शम्भू छंद)

तीर्थंकर पदवी के धारी, पंच कल्याणक पाते हैं।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र सभी मिल, उत्सव महत् मनाते हैं।।
गर्भ कल्याणक होता है जब, उससे भी छह महीने पूर्व।
गर्भ नगर में रत्नवृष्टि शुभ, मिलकर करते देव अपूर्व।।1।।
माता सोलह स्वप्न देखती, हर्षित होती अपरम्पार।
नृप से उनका सुफल जानती, जिससे हो आनंद अपार।।
नौ महीने या दो सौ सत्तर, दिन का होता गर्भ कल्याण।
स्वर्ग लोक या नरक लोक से, करके आता जीव 2।।प्रयाण।।
जन्म के अतिशय कहे गये दश, इनको पावे जीव महान्।
इन्द्र भक्ति करते हैं अतिशय, भाव सहित करते गुणगान।।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराते, चिह्न देखकर देते नाम।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।3।।
इस जग की माया को लखकर, तज देते हैं उससे राग।
कारण पाकर कोई एक भी, धारण करते हैं वैराग।।
परम दिगम्बर मुद्रा धारण, करके जाते वन की ओर।
आत्मध्यान में लीन होय कर, तप धारण करते हैं घोर।।4।।
सम्यक् तप की अग्नी से वह, कर्म घातिया करते नाश।
लोकालोक प्रकाशी अनुपम, करते केवलज्ञान प्रकाश।।
केवलज्ञानी बनकर सारे, जग को करते ज्ञान प्रदान।
जिसके द्वारा भव्य जीव सब, जग के करते निज कल्याण।।5।।
आयु कर्म के साथ अन्य सब, कर्मों का करने को घात।
आत्मध्यान करते है फिर वह, केवलज्ञानी जिन समुद्घात।।
अंतर्मुहूर्त मात्र के अन्दर, हो जाता उनका निर्वाण।
एक समय में श्री जिनेन्द्र का, सिद्ध शिला पर होय प्रयाण।।6।।

फिर अक्षय अविचल अखण्ड पद, में होता उनका विश्राम।
ऐसे अनुपम पद पाने को, प्रभु पद करता विशद प्रणाम।।

दोहा– **पंच कल्याणक की इस जग में , महिमा अगम अपार कही।**
भव्य जीव वह प्राप्त करें फिर, होते भव से पारसही।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **हो जाए कल्याण, सर्व दुखी संसार से।**
पाकर केवलज्ञान, सिद्ध शिला पर वास हो।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

तीर्थंकर गर्भ कल्याणक पूजन 25

स्थापना

तीर्थंकर प्रकृति के कारण, पुण्य उदय में आए अतीव।
पाते हैं कल्याण गर्भ का, अतिशयकारी भव्य सजीव।।
माँ की कुक्षी धन्य किए हैं, चौबिस तीर्थंकर भगवान।
'विशद' हृदय में करते हैं हम, भाव सहित उनका आह्वान।।
हो जाए कल्याण हमारा, यही भावना भाते नाथ।
तीन योग से वंदन करके, चरणों झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।।

चाल छंद

भव रोग नशाने आए, जल झारी में भर लाए।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुरभित गंध चढ़ाएँ, भव का संताप नशाएँ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे।।2।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय पद को पाएँ, शुभ अक्षय सुपद चढ़ाएँ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे।।3।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम पुष्प चढ़ाएँ भाई, सब काम नाश हो जाई।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे।।4।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ , अरु क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे।।5।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम घृत के दीप जलाएँ, तम मोह का पूर्ण नशाएँ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे।।6।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आठों कर्म नशाएँ, अग्नी में धूप जलाएँ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे।।7।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह श्रीफल चरण चढ़ाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे।।8।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अरु पद अनर्घ पा जाएँ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे।।9।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा– **चौबिस जिनवर के चरण, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने सुपद अनर्घ।।

(मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(काव्य छन्द)

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह की तिथि अमावस, अजितनाथ लीन्हें अवतार।
धन्य हुई विजया माताश्री, गृह में हुए मंगलाचार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को प्रभु, संभव जिन अवतार लिये।
मात सुसेना के उर आए, जग जन का उपकार किये।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छठी शुक्ल वैशाख माह का, शुभ दिन आया मंगलकार।
सिद्धार्था माँ के उर श्री जिन, अभिनंदन लीन्हें अवतार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ देवाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

द्वितिया शुक्ल माह श्रावण की, मात मंगला उर आए।
सुमतिनाथ की भक्ति में रत, देव सभी मंगल गाए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की षष्ठी को श्री, पद्मप्रभु अवतार लिए।
मात सुसीमा के उर आए, जग में मंगलकार किए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल पक्ष भादव की षष्ठी, हुई लोक में मंगलकार।
श्री सुपार्श्व माता वसुन्धरा, के उर आ लीन्हें अवतार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पंचमी चैत्र कृष्ण की, गर्भ चन्द्रप्रभु जी धारे।
चन्द्रपुरी लक्ष्मीमति माता, की कुक्षी में अवतारे।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की नौमी, काकंदीपुर में भगवान।
पुष्पदंत अवतार लिए हैं, जयमाता के उर में आन।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।9।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्तदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी आठें शीतल जिन, मात सुनंदा उर धारे।
रत्नवृष्टि करके इन्द्रों ने, बोले प्रभु के जयकारे।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।10।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ वदी षष्ठी है पावन, विष्णु श्री माता उर आन।
गर्भकल्याणक प्राप्त किए शुभ, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।11।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

छठवी कृष्ण आषाढ़ की, हुआ गर्भ कल्याण।
सुर-नर करते भाव से, वासुपूज्य गुणगान।।12।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्यदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ वदी दशमी प्रभू, सुश्यामा उर आन।
नगर कम्पिला अवतरे, विमलनाथ भगवान।।13।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

अनंतनाथ भगवान का, हुआ गर्भ कल्याण।
एकम कार्तिक कृष्ण की, जय श्यामा उर आन।।14।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

आठें शुक्ल वैशाख की, मात सुव्रता जान।
जिनके उर में अवतरे, धर्मनाथ भगवान ।।15 ।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला अष्टम्यांगर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादव कृष्णा सप्तमी, हुआ गर्भ कल्याण।
ऐरादेवी मात उर, शांतिनाथ भगवान ।।16 ।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णा सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

श्रीमती के गर्भ में, कुंथुनाथ भगवान।
सावन दशमी कृष्ण की, पाए गर्भ कल्याण ।।17 ।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन शुक्ला तीज को, अरहनाथ भगवान।
मात मित्रसेना वती, उर अवतारे आन ।।18 ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

प्रजावती के गर्भ में, मल्लिनाथ भगवान।
चैत शुक्ल की प्रतिपदा, हुआ गर्भ कल्याण ।।19 ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत भगवान का, हुआ गर्भ कल्याण।
श्रावण कृष्णा दोज को, माँ श्यामा उर आन ।।20 ।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

अश्विन वदी द्वितिया तिथि, नमीनाथ जिनदेव।
माँ विपुला उर अवतरे, पूजूँ उन्हें सदैव ।।21 ।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

कार्तिक शुक्ला षष्ठमी, नेमिनाथ भगवान
शिवादेवी उर आ बसे, पाए गर्भ कल्याण ।।22 ।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

द्वितीया कृष्ण वैशाख की, पार्श्वनाथ भगवान।
वामा माँ उर अवतरे, पाए गर्भ कल्याण ।।23 ।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

षष्ठी शुक्ल आषाढ़ की, महावीर भगवान।
त्रिशला माँ उर अवतरे, जग में हुए महान् ।।24 ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर स्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- पाए गर्भ कल्याण, जिन चौबीस महानतम ।
हुआ आत्म उत्थान, पार हुए संसार में ।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकसहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक पदालँकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

सोरठा- जिन चौबीस त्रिकाल, गर्भ कल्याणक पाए हैं।
गाएँ हम जयमाल, तीन योग से नमन् कर।।

(पद्धरि छंद)

हैं धन्य-धन्य मातु महान्, जिनवर अवतारे गर्भ आन।
जिन अष्ट देवियाँ शरण आय, हों धन्य मात की भक्ति पाय ।।1 ।।
सब इन्द्र भक्ति करते महान्, करते मिलकर के नृत्य गान।
जिनके गुण का है नहीं पार, जिनकी महिमा जग में अपार ।।2 ।।
जो धर्म रूप की रहे खान, जिनके गुण जग में हैं महान्।
जो शील ज्ञान के रहे कोष, न होते जिनमें कोई दोष ।।3 ।।
जो महाशांति की रहे खान, जय-जय तीर्थंकर मात जान।
जिनमात पाय दर्शन महान्, अन्तर में पाया भेद ज्ञान ।।4 ।।
होता यह जानो चमत्कार, करके आहार न हो निहार।
हो वीरवती माता महान्, तन होता है अति कांतिमान ।।5 ।।
माता का तन न क्षीण होय, तन व्याधि को भी पूर्ण खोय।
न मात उदर हो वृद्धिवन्त, हो जाय दोष का पूर्ण अन्त ।।6 ।।
माँ मुक्ती का अधिकार पाय, वह निकट भव्य हो मोक्ष जाय।
यह पूर्व पुण्य का सुफल जान, जो गर्भ प्राप्त कीन्हा महान् ।।7 ।।
सुर-नर करते माँ को प्रणाम, हम वन्दन करते सुबह-शाम।
मन में जागी वश यही चाह, मिल जाय प्रभु की हमें छाँह ।।8 ।।
हम को उस पद का मिले योग, मिट जाय जरादि जन्म रोग।
हम वंदन करते बार-बार, मिल जाए भव का हमें पार ।।9 ।।

(छंद-घत्तानंद)

जय-जय जिन ज्ञाता, जग के त्राता, सर्व जगत् मंगलकारी।
जय धर्म प्रदाता, सुख के दाता, मोक्ष महल के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अर्हन्तों को पूजकर, पाऊँ धर्म अनन्त।
गर्भ कल्याणक प्राप्त कर, करूँ कर्म का अंत।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

तीर्थंकर जन्म कल्याणक पूजा 26

स्थापना

तीर्थंकर का जन्म जगत् में, होता मंगलकार महान्।
तीन लोक में खुशियाँ छावें, हर्षित होवे सर्व जहान।।
भक्ति से प्रेरित हो सुरपति, भाव सहित करते गुणगान।
मंगलमय उत्सव होता है, करते हैं उर में आह्वान।।
जन्म कल्याण मना रहे हम, जन्म रोग का होवे नाश।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण का, मम् अंतर में होय विकास।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(गीता छंद)

जन्मादि जरा के रोगों से, हम चतुर्गती भटकाए हैं।
अब नाश हेतु उन रोगों को, जलधारा देने आए हैं।।
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थंकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें।।1।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव का संताप सताता है, हम पार नहीं हो पाए हैं।
भवसागर पार उतरने को, हम शीतल चंदन लाए हैं।।
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थंकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

न प्राप्त हुआ है अक्षय पद, पर पद में हम अटकाए हैं।
अब अक्षय पद के भाव लिए, यह अक्षत धोकर लाए हैं।।

अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थंकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें।।3।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम व्यथा से व्याकुल होकर, भव-भव में अकुलाए हैं।
उस आकुलता के नाश हेतु, शुभ पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थंकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें।।4।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधा रोग अतिशय दुष्कर, उससे जग जीव सताए हैं।
अब नाश हेतु नैवेद्य परम, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।।
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थंकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें।।5।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह महातम में अटके, न राह प्राप्त कर पाए हैं।
उस मोह महातम नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थंकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें।।6।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म के द्वारा हमने, जग में गोते खाए हैं।
अब अष्ट गंध से युक्त मनोहर, धूप जलाने आए हैं।।
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थंकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें।।7।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी हुए फल निष्फल जग के, मोक्ष सुफल न पाए हैं।
मोक्ष रहा अक्षय अखण्ड शुभ, वह पद पाने को आए हैं।।
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थंकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें।।8।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में भटके लेकिन, पद अनर्घ न पाए हैं।
हम पद अनर्घ पाने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थंकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें।।9।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा- जन्म कल्याणक प्राप्त हैं, तीर्थंकर चौबीस।
पुष्पांजलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।।

मंडलस्योपरि पुष्पाजंलिं क्षिपेत्।

(शेर छंद)

श्री आदिनाथ जिनवर जी, जन्म पाए हैं।
शुभ चैत वदी नौमी को, हर्ष छाए हैं।
इन्द्रों ने रत्नवृष्टि कर, मोद मनाया।
पाण्डुक शिला पे जाकर, अभिषेक कराया।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

शुभ माघ शुक्ल दशमी है, शुभ कर बड़ी।
श्री अजितनाथ जिनवर के, जन्म की घड़ी।।
इन्द्रों ने रत्नवृष्टि कर, मोद मनाया।
पाण्डुक शिला पे जाकर, अभिषेक कराया।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

संभव जिनेन्द्र जन्मे, इस लोक में अहा।
कार्तिक सुदी की पूनम का, दिन शुभम् रहा।।
इन्द्रों ने रत्नवृष्टि कर, मोद मनाया।
पाण्डुक शिला पे जाकर, अभिषेक कराया।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अभिनंदन प्रभु का जन्म, बड़ा पुण्यमयी था।
दिन माघ सुदी बारस का, लोकजयी था।।
इन्द्रों ने रत्नवृष्टि कर, मोद मनाया।
पाण्डुक शिला पे जाकर, अभिषेक कराया।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ जिनवर जी, जन्म पाए हैं।
तिथि चैत सुदी ग्यारस, को हर्ष छाए हैं।।
इन्द्रों ने रत्नवृष्टि कर, मोद मनाया।
पाण्डुक शिला पे जाकर, अभिषेक कराया।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(शंभु छंद)

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, पृथ्वी पर नव सुमन खिला।
भूले भटके नर-नारी को, शुभम् एक आधार मिला।।6।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी तिथि को, श्री सुपार्श्व जी जन्म लिए।
सुप्रतिष्ठ नृप माता पृथ्वी, को आकर प्रभु धन्य किए।।7।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि तिथि को, चंद्रप्रभु जी जन्म लिए।
चन्द्रपुरी नृप महासेन गृह, आकर प्रभुजी धन्य किए।।8।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अगहन शुक्ला प्रतिपदा को, जन्में पुष्पदंत भगवान।
नृप सुग्रीव रमा माता के, गृह में हुआ था मंगलगान।।9।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ वदी द्वादशी सुहावन, भद्दलपुर में शीतलनाथ।
मात सुनंदा के गृह जन्मे, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।10।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

फाल्गुन वदी तिथि ग्यारस को, पाए जन्म श्रेयांस कुमार।
विमलराज रानी विमला के, गृह में हुआ मंगलाचार।।11।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, जन्मे श्री भगवान।
सुर-नर वंदन कर रहे, वासुपूज्य पद आन।।12।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ वदी शुभ चौथ को, विमलनाथ भगवान।
नगर कम्पिला जन्म से, हो गया सर्व महान् ।।13।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की द्वादशी, सिंहसेन दरबार।
जन्मे प्रभो अनंत जिन, हुआ मंगलाचार।।14।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ सुदी तेरस तिथि, जन्मे धर्म जिनेन्द्र।
करते हैं अभिषेक सब, सुर-नर-इन्द्र-महेन्द्र।।15।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(छंट-ताटंक)

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष में, चतुर्दशी है सुखकारी।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदायक, जन्म लिए मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एकम् सुदी वैशाख माह में, कुंथुनाथ जी जन्म लिए।
मात सुव्रता से जन्मे प्रभु, हस्तिनागपुर धन्य किए।।17।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अगहन शुक्ला चतुर्दशी को, भूप सुदर्शन के दरबार।
हस्तिनागपुर अरहनाथ जी, जन्म लिए हैं मंगलकार।।18।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अगहन शुक्ला ग्यारस को प्रभु, जन्में मल्लिनाथ भगवान।
प्रजापति माँ कुंभराज के, गृह में हुआ था मंगलगान।।19।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौपाई

दशमी कृष्ण वैशाख सुजान, सुर-नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, जन्में मुनिसुव्रत भगवान।।20।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी कृष्ण आषाढ़ महान्, जन्में नमीनाथ भगवान।
भूप विजयरथ के गृहद्वार, भारी हुआ मंगलाचार।।21।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रावण शुक्ला षष्ठी पाय, जन्में नेमिनाथ जिनराय।
मात शिवा देवी उर आन, शौरीपुर हो गया महान्।।22।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला षष्ठम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष वदी ग्यारस शुभकार, अश्वसेन नृप के दरबार।
वामादेवी के उर आन, जन्में पार्श्वनाथ भगवान।।23।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत सुदी तेरस मनहार, जग में हुआ मंगलाचार।
माँ त्रिशला सिद्धारथ राज, जन्में वर्द्धमान जिनराज।।24।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा- **हुआ जन्म कल्याण, चौबीसों जिनराज का।**
जग में हुए महान्, जिनका वंदन हम करें।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र: ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक पदालँकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- **महिमा जन्म कल्याण की, कैसे करें बखान।**
जयमाला गाते विशद, करते हैं गुणगान।।

वीर छंद

पूर्व भवों में भव्य भावना, सोलहकारण भाते जीव।
तीर्थंकर के पादमूल में, प्राप्त करे वह पुण्य अतीव।।
बंध करें तीर्थंकर प्रकृति, निकट भव्य हो जाते हैं।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाके, श्रेष्ठ मोक्ष पद पाते हैं।।1।।
तीर्थंकर प्रकृति के पहले, किया पुण्य या पाप अतीव।
उसके फल से स्वर्ग नरक में, जाते हैं इस जग के जीव।।
स्वर्ग नरक की आयु पूर्ण हो, उसके भी छह महीने पूर्व।
तीर्थंकर प्रकृति उदय हो, तब घटनाएँ होय अपूर्व।।2।।
देव सुरक्षा कवच बनाकर, उसमें रखते हैं मनहार।
पूर्ण सुरक्षा का होता फिर, देवों को पूरा अधिकार।।

जन्म नगर में रत्न वृष्टि फिर, देव करें शुभ अपरंपार।
वातावरण वहाँ का होता, श्रेष्ठ मनोहर मंगलकार।।3।।
देव कुमारिकाएँ आकर के, गर्भ का शोधन करती हैं।
माता के मन को प्रमुदित कर, शुभ भावों से भरती हैं।।
नौ महीने तक गर्भ में रहता, तीर्थंकर का जीव महान्।
करते देव अर्चना भक्ति, भाव सहित करते सम्मान।।4।।
सभी नरक के जीवों में भी, अनुपम खुशियाँ छा जावें।
जन्म समय पर सर्वलोक में, क्षण भर को सुख पा जावें।।
इन्द्रों के आसन कंपित हों, वाद्य बजें हो घंटा नाद।
नमन् करें आगे बढ़कर सुर, वहीं से पावें आशीर्वाद।।4।।
ऐरावत लेकर आवें फिर, आवे सभी देव परिवार।
हर्षित होकर नाचे गावें, बोले प्रभु की जय-जयकार।।
पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, न्हवन कराते मंगलकार।
चंदन आदि से श्रृंगारित, शची करे फिर बारम्बार।।5।।
मात-पिता परिवार स्वजन सब, हर्षित होते हैं भारी।
जन्म कल्याणक की इस जग में, महिमा होती है न्यारी।।
हम कल्याणक मना रहे हैं, स्व कल्याण मनाने को।
पूजा अर्चा करते भविजन, निज सौभाग्य जगाने को।।6।।

दोहा- अंतिम है यह भावना, हो मेरा कल्याण।
चरण वंदना कर रहे, करने मोक्ष प्रयाण।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भव तारक तव पाद में, झुका रहे हम शीश।
भवदधि तट के पार से, दो हमको आशीष।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

तीर्थंकर तप कल्याणक पूजा 27

स्थापना

ऋषभनाथ आदिक तीर्थंकर, अंतिम महावीर स्वामी।
तप कल्याणक प्राप्त किए जिन, बने मोक्ष के अनुगामी।।

पञ्च मुष्ठि से केशलोंच कर, परम दिगम्बर हुए महान्।
तप कल्याणक की पूजा को, करते हैं प्रभु का आह्वान।।
प्राप्त हमें संयम तप हो प्रभु, यही भावना भाते हैं।
प्रभु चरणों में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छंद

हृदय सरवर में सुनिर्मल, नीर भर लाया अहा।
हो नाश जन्मादिक जरा सब, कष्ट जिनसे ही सहा।।
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो।।1।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुगन्धित अगुरु पावन, चर्चते चरणों अहा।
जग में भ्रमण हमने किया भव, ताप के कारण महा।।
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो।।2।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अखण्डित धवल मनहर, थाल में भर लाए हैं।
शुभ प्राप्त अक्षय पद हमें हो, भावना कर आए हैं।।
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प सुन्दर श्रेष्ठ अनुपम, अर्चना को लाए हैं।
नाश करने काम बाधा, शान से हम आए हैं।।
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो।।4।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रस भरे पकवान मनहर, हम चढ़ाने लाए हैं।
क्षुधा बाधा नाश हो मम्, हम शरण में आए हैं।।
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो।।5।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप घृत के प्रज्ज्वलित हम, भाव से कर लाए हैं।
मोह का तम नाश करने, हम यहाँ पर आए हैं।।
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो।।6।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुरभित अरु सुगंधित, अग्नि में खेते परम।
कर्म आठों नाश करना, लक्ष्य है अपना चरम।।
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो।।7।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस लेकर अनेकों, हम चढ़ाते हैं अहा।
भाव से पूजा करें प्रभु, मोक्ष फल पाने महा।।
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो।।8।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों का बनाकर, अर्घ्य देते भाव से।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमको, भक्ति करते चाव से।।
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो।।9।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा- ऋषभादिक चौबीस जिन, पाए तप कल्याण।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, करते हैं गुणगान।।

मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अष्टक छंद

शुभ चैत सुदी नौमी प्रभुवर, वृषभेष तपस्या धार लिए।
विषयों के बंधन विष सम हैं, इस जग को प्रभु उपदेश दिए।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

दसमी शुभ माघ सुदी पावन, अजितेश तपस्या धारी है।
इस जग का मोह हटाया है, यह संयम की बलिहारी है।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मगसिर सुदी पूर्णमासी को, संभव जिन वैराग्य लिए।
निज स्वजन और परिजन सारे, वैभव से नाता तोड़ दिए।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वादशी शुभम् थी माघ सुदी, प्रभु अभिनंदन संयम धारे।
ले चले पालकी में नर-सुर, वह सब बोले जय-जयकारे।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ चैत सुदी ग्यारस पावन, श्री सुमतिनाथ दीक्षाधारी।
श्री शिवसुख देने वाली शुभ, है सर्व जगत् मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुदि त्रयोदशी कार्तिक पावन, इस जग से नाता तोड़ चले।
श्री पद्मप्रभु स्वजन परिजन धन, सबकी आशा छोड़ चले।।6।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वीर छंद

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी सुहावन, श्री सुपार्श्व जिनवर तीर्थेश।
केशलोंच कर दीक्षा धारे, प्रभु ने धरा दिगम्बर भेष।।7।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि पावन, चन्द्रप्रभु दीक्षा धारे।
दीक्षा लिए साथ में कई नृप, देव किए तव जयकारे।।8।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अगहन माह शुक्ल की एकम्, दीक्षा धारे जिन तीर्थेश।
पुष्पदंतजी हुए विरागी, राग रहा न मन में लेश।।9।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण द्वादशी सुहावन, जिनवर श्री शीतल स्वामी।
जैन दिगम्बर दीक्षा धारे, बने मोक्ष के अनुगामी।।10।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एकादशी फाल्गुन कृष्णा की, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।
राग-द्वेष तज दीक्षा धारे, सर्व लोक में हुए महान्।।11।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्दशी फाल्गुन कृष्णा की, वासुपूज्य जिन दीक्षाधार।
निज आतम का ध्यान लगाया, त्यागे प्रभू पूर्ण आगार।।12।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(छंद : रोला)

वदि माघ चौथ विमलेश, जिन दीक्षा धारी।
पाए प्रभु सुगुण विशेष, जगत् मंगलकारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बारस वदि ज्येष्ठ महान्, हुए प्रभु अविकारी।
श्री अनंतनाथ भगवान, बने थे अनगारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तेरस सुदि माघ महान्, प्रभो दीक्षा धारे।
श्री धर्मनाथ भगवान, बने मुनिवर प्यारे।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौदस वदि जेठ जिनेन्द्र, मुनी दीक्षा धारी।
श्री शांतिनाथ भगवान, हुए थे अविकारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा चतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौपाई

वैशाख सुदी एकम् तिथि पाय, दीक्षा पाए कुंथु जिनाय।
हुए स्वात्म रस में लवलीन, कर्म किए प्रभु क्षण में क्षीण।।17।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अगहन सुदी दशमी जिनराज, धारे प्रभु संयम का ताज।
भेष दिगम्बर धारे नाथ, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।18।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मगसिर सुदी ग्यारस जिनदेव, मल्लिनाथ तप धारे एव।
केशलुंच कर तप को धार, छोड़ दिया सारा आगार।।19।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी वदी वैशाख महान्, पाए प्रभु जी तप कल्याण।
मुनिसुव्रत मुनिपद को धार, राग-द्वेष सब तजे विकार।।20।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अषाढ़ वदी दशमी को पाय, दीक्षा धारे नमी जिनाय।
अविकारी हो वन में वास, आत्म तत्त्व का किए प्रकाश।।21।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रावण शुक्ला षष्ठी जान, नेमीश्वर तप धरा महान्।
पशुओं पर करुणा को धार, हुई विरक्ती अपरम्पार।।22।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला षष्ठम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एकादशी पौष की श्याम, पार्श्वनाथ काशी के धाम।
तप कल्याणक धारे नाथ, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।23।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अगहन वदी दशमी जिन वीर, संयमधार बने महावीर।
वर्धमान सन्मति भी नाम, अतीवीर पद करूँ प्रणाम।।24।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- तपकल्याणक प्राप्त हैं, चौबीसों जिनराज।
उनकी पूजा कर रहे, विशद भाव से आज।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं तपकल्याण पदालँकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- पूज्य रहे इस लोक में, जिन तीर्थेश त्रिकाल।
तप कल्याणक की विशद, गाते हैं जयमाल।।

शंभु छन्द

पूर्व भवों में सोलह कारण, भव्य भावना भाते हैं।
तीर्थंकर के पादमूल में, बंध प्रकृति का पाते हैं।।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, पञ्च कल्याणक के धारी।
स्वर्ग-नरक से आने वाले, होते हैं जग उपकारी।।1।।
गर्भ जन्म कल्याणक पावन, नर सुर भव्य मनाते हैं।
जन्मभूमि को अतिशयकारी, आकर खूब सजाते हैं।।
पाकर के युवराज राज्य पद, पाते इन्द्रिय के सुखभोग।
मिलने पर कोई निमित्त वह, धारण करते हैं शुभ योग।।2।।
तप कल्याणक के अवसर पर, बैठ पालकी में जाते।
ब्रह्म ऋषि आकर के तप की, महिमा प्रभु से बतलाते।।
पञ्च महाव्रत आदिक संयम, धारण करते भली प्रकार।
सुर-नर असुर सभी मिलकर के, बोलें प्रभु की जय-जयकार।।3।।
पञ्च समीति तीन गुप्तियाँ, का भी पालन करते देव।
तत्त्वों का चिंतन स्वरूप में, रहते हैं जो लीन सदैव।।
निर्वाणादिक भूतकाल में, चौबीस जिनवर हुए महान्।
ऋषभादि का वर्तमान में, भाव सहित करते गुणगान।।4।।
महापद्म आदिक भावी जिन, पाते हैं सब तप कल्याण।
विशद ज्ञान को पाने वाले, सिद्ध शिला पर करें प्रयाण।।
तप कल्याणक के अवसर पर, यही भावना भाते नाथ।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, अतः झुकाते चरणों माथ।।5।।

दोहा- तप कल्याणक प्राप्त कर, करें कर्म की हान।
शिव पद पाने के लिए करते, विशद विधान।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चौबिस जिन तिय काल के, पाते तप कल्याण।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, बनते सर्व महान्।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तीर्थंकर केवलज्ञानकल्याणक पूजन 28

स्थापना

तीर्थंकर चौबीस त्रिकालिक, तीन लोक में रहे महान्।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण तप, से पाते हैं केवलज्ञान।।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, का हम करते आह्वानन।
विशदभाव से चरण कमल में, करते हैं शत्-शत् वंदन।
अब केवलज्ञान प्रकट करके, मेरे अंतर में आ जाओ।
शुभ दिव्यध्वनि की सरिता में, हमको अवगाहन करवाओ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

नीर प्रासुक शुद्ध लेकर, अर्चना को लाए हैं।
जन्म-मृत्यू नाश हो मम्, प्रार्थना को आए हैं।।
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादी से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध निर्मल तव चरण में, चर्चने को लाए हैं।
हो ताप भव का नाश मेरा, वंदना को आए हैं।।
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादी से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतियों सम धवल अक्षत, कर रहे अर्पित यहाँ।
प्राप्त अक्षत हो सुपद शुभ, है अलौकिक जो महा।।
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा।।3।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुरभित अरु सुगंधित, हम चढ़ाते हैं यहाँ।
काम की बाधा नशे मम्, कर्म घाती है महा।।
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस शुभ नैवेद्य लेकर, हम चढ़ाने लाए हैं।
क्षुधा व्याधी नाश करने, हम शरण में आए हैं।।
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा।।5।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह जगमग जलाकर, आरती को लाए हैं।
मोहतम का नाश हो मम्, भावना यह भाए हैं।।
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा।।6।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दशांगी धूप लेकर, हम जलाते हैं यहाँ।
कर्म आठों ने भ्रमण, हमको कराया न कहाँ?।।
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा।।7।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध भाँती के सरस फल, हम चढ़ाते हैं यहाँ।
मोक्ष फल हो प्राप्त हमको, है अलौकिक जोमहाँ।।
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा।।8।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों का मनोहर, अर्घ्य अर्पित कर रहे।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमको, धर्म की सरिता बहे।।
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा।।9।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा- तीर्थंकर चौबीस ने, पाया केवलज्ञान।
भाव सहित वंदन करूँ, पुष्पांजली महान्।।

मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

बेसरी-छंद

एकादशि फाल्गुन वदी जानो, ऋषभनाथ तीर्थंकर मानो।
कर्म घातिया आप विनाशे, पावन केवलज्ञान प्रकाशे।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल एकादशि आई, केवलज्ञान जगाए भाई।
तीर्थंकर अजितेश कहाए, सुर-नर वंदन करने आए।।2।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथ कृष्ण कार्तिक की जानो, संभवनाथ जिनेश्वर मानो।
केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, सुर-नर वंदन करने आए।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश सुदी पौष की आई, अभिनंदन तीर्थंकर भाई।
पावन केवलज्ञान जगाए, सुर-नर वंदन करने आए।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल एकादशि जानो, सुमतिनाथ तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभु जी पाये, समवशरण सुर नाथ रचाए।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूनम चैत शुक्ल की आई, पद्मप्रभु तीर्थंकर भाई।
सारे कर्म घातिया नाशे, क्षण में केवलज्ञान प्रकाशे।।6।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षष्ठी फाल्गुन की अंधियारी, चार घातिया कर्म निवारी।
जिन सुपार्श्व ने ज्ञान जगाया, इस जग को संदेश सुनाया।।7।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण की सातें आई, चन्द्रप्रभु तीर्थंकर भाई।
कर्मघातिया चार विनाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे।।8।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल दोज पहिचानो, पुष्पदंत तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए, समवशरण तब इन्द्र बनाए।।9।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण की चौदश आई, शीतलनाथ जिनेश्वर भाई।
बने उसी दिन केवलज्ञानी, ज्ञान सुधामृत के वरदानी।।10।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

(चामर छंद)

माघ कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री श्रेयांस तीर्थेश, आप हुए सुमंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।11।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ माह शुक्ल पक्ष, दोज पाए मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र वासुपूज्य, आप हुए सुमंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।12।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ माह शुक्ल पक्ष, तिथि षष्ठी मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र विमलनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।13।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चैत कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र अनंतनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।14।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

(छंद-हरिगीता)

पौष शुक्ला पूर्णिमा को, हुए मंगलकार हैं।
धर्म जिन तीर्थेश ज्ञानी, कर्म घाते चार हैं।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।15।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पौष शुक्ला तिथि दशमी, शांति जिन तीर्थेश जी।
ज्ञान केवल प्राप्त कीन्हें, दिए शुभ संदेश जी।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।16।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला दशम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र शुक्ला तीज स्वामी, कुंथु जिन तीर्थेश जी।
ज्ञान केवल प्राप्त कीन्हें, दिए शुभ संदेश जी।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।17।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

द्वादशी कार्तिक सुदी की, कर्म नाशे चार हैं।
जिन अरह तीर्थेश ज्ञानी, हुए मंगलकार हैं।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।18।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

पौष कृष्णा दूज मल्ली, नाथ जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश करके, ज्ञान पाया है महा।।

जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।19।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

वैशाख कृष्णा तिथि नौमी, मुनिसुव्रत तीर्थेश जी।
ज्ञान केवल प्राप्त करके, दिए प्रभु संदेश जी।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।20।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा नवम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

मगसिर शुक्ला तिथि ग्यारस, नमी जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश कीन्हें, ज्ञान पाया है महा।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।21।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व0स्वाहा।

अश्विन शुक्ला तिथि एकम्, नेमि जिन तीर्थेश जी।
ज्ञान केवल प्राप्त करके, दिए शुभ संदेश जी।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।22।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र कृष्णा चौथ पावन, पार्श्व जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश करके, ज्ञान पाया है महा।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने आए हैं।।23।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वैशाख शुक्ला तिथि दशमी, वीर जिन तीर्थेश जी।
ज्ञान केवल प्राप्त करके, दिए शुभ संदेश जी।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने आए हैं।।24।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- केवलज्ञानी बन गये, तीर्थंकर चौबीस।
पूजा करके भाव से, चरण झुकाते शीश।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानकल्याणकसहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र: ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक पदालँकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- पूज्य हुए तिय लोक में, जिन चौबीस त्रिकाल।
पाये केवलज्ञान शुभ, गाते हम जयमाल।।

(चाल-टप्पा)

ज्ञानावरणी नाश हुए प्रभु, त्रिभुवन के स्वामी।
पाकर केवलज्ञान बने हैं, मुक्ती पथगामी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी! .....
केवलज्ञान प्राप्त कर भगवन्, बने मोक्षगामी।।1।।
सम्यक्दर्शन चतुर्गती में, पाते हैं प्राणी।
श्री जिनेन्द्र ने कथन किया यह, कहती जिनवाणी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी !.....।। 2।।
निज आतम की शक्ती जग में, जिनने पहिचानी।
सम्यक्दृष्टी देव शास्त्र गुरु, के हो श्रद्धानी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी !.....।। 3।।
सम्यक्दर्शन पाने वाले, हों सम्यक्ज्ञानी।
द्रव्य भाव श्रुत के ज्ञाता फिर, बनते निजध्यानी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी !.....।। 4।।
अनुक्रम से बन जाते हैं फिर, चारित के स्वामी।
रत्नत्रय को पाने वाले, मुक्ती पथगामी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी !.....।। 5।।
क्षपक श्रेण्यारोहण करके, बनते निज ध्यानी।
ज्ञानावरणी कर्म नाश वह, हों केवलज्ञानी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी !.....।। 6।।

अनंत चतुष्टय पाने वाले, इस जग के स्वामी।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाले, हों त्रिभुवन नामी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी !....।। 7।। .
ज्ञानकल्याणक की महिमा को, कहे कौन ज्ञानी।
त्रिभुवनपति के द्वारे आकर, झुकते सब मानी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी!.....।। 8।।
ज्ञान 'विशद' हम पाने आये, हे जिनवर स्वामी!।
विनती मम स्वीकार करो अब, हे शिवपुर गामी!।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी!.....।। 9।।

दोहा– ज्ञान कल्याणक की रही, महिमा अपरम्पारं।
केवलज्ञानी जीव इस, जग से होते पार।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानकल्याणक सहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– अंतिम है यह भावना, 'विशद' पाऊँ मैं ज्ञान।
भवसागर से शीघ्र ही, हो मेरा कल्याण।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तीर्थंकर मोक्ष कल्याणक पूजा 29

स्थापना

ऋषभादिक चौबीस जिनेश्वर, ने कर्मों का किया विनाश।
महा मोक्षफल पाकर प्रभु ने, सिद्धशिला पर कीन्हा वास।।
परम मोक्षकल्याणक की हम, करते भाव सहित पूजन।
अपने उर के कमलासन पर, करते प्रभु का आह्वानन्।।
हे प्रभु ! हमारी विनती को, स्वीकार करो उर में आओ।
हम भूल रहे हैं मोक्षमार्ग, वह मार्ग हमें प्रभु दिखलाओ।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

शंभू छंद

हम शुभ भावों के निर्मल जल से, जन्म-मरण का नाश करें।
मिथ्यात्व नाश करके अनुपम, सम्यक् श्रद्धान विकास करें।।
यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।
जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे।।1।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शुभ भावों का चंदन लेकर, भव आताप विनाश करें।
अज्ञान तिमिर हो नाश प्रभू, निज सम्यक्ज्ञान प्रकाश करें।।
यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।
जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे।।2।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शुभ भावों के अक्षत से, प्रभु अक्षय पद को प्राप्त करें।
हम मोह महातम से बचकर, सम्यक्चारित्र विकास करें।।
यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।
जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे।।3।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम पुष्प चढ़ाकर भाव सहित, अब कामवासना नाश करें।
शुभ संयम तप की शक्ती से, निज आतम तत्त्व प्रकाश करें।।
यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।
जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे।।4।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस अर्पित करके, हम क्षुधा व्याधि का ह्रास करें।
निज वीर्याचार प्रकट करके, भोजन संज्ञा का नाश करें।।
यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।
जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम दीप समर्पित करके शुभ, प्रभु मोह अंध का नाश करें।
हो भय संज्ञा का पूर्ण नाश, निर्भय हो निज में वास करें।।

यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।
जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे।।6।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म की धूप जला, प्रभु आठों कर्म विनाश करें।
मैथुन संज्ञा पर विजय करें, अरु परम ब्रह्म में वास करें।।
यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।
जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे।।7।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शुभ भावों के फल लेकर, परिग्रह संज्ञा का नाश करें।
शुभ मोक्ष महाफल पाकर के, हम सिद्ध शिला पर वास करें।।
यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।
जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे।।8।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाकर भावों से, सब राग-द्वेष का नाश करें।
पाकर अनर्घ पद सर्वश्रेष्ठ, चेतन स्वभाव में वास करें।।
यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।
जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे।।9।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा- तीर्थंकर पाते सभी, परम सुपद निर्वाण।
केवलज्ञानी जो बनें, करते मोक्ष प्रयाण।।

मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चाल-छंद

वदि माघ सुचौदश जानो, जिन ऋषभनाथ पहिचानो।
कैलाशगिरी से भाई, प्रभुवर ने मुक्ति पाई।।
प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते।
हम मोक्ष कल्याणक पाएँ, बस यही भावना भाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सुदि चैत्र पञ्चमी जानो, सम्मेद शिखर से मानो।
अजितेश जिनेश्वर भाई, शुभ घड़ी में मुक्ति पाई।।
प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते।
हम मोक्ष कल्याणक पाएँ, बस यही भावना भाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

षष्ठी सुदि चैत्र की आई, सम्मेद शिखर से भाई।
संभव जिन मुक्ती पाए, हम चरणों शीश झुकाए।।
प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते।
हम मोक्ष कल्याणक पाएँ, बस यही भावना भाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

षष्ठी शुक्ल वैशाख पिछानो, सम्मेदाचल गिरि से मानो।
अभिनंदन जिन मुक्ती पाए, कर्म नाशकर मोक्ष सिधाए।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी एकादशि आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
सुमतिनाथ जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ती पाए।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।
पद्मप्रभु जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ती पाए।।6।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गीता छंद

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी को, जिन सुपारसनाथ जी।
मोक्ष श्री सम्मेद गिरि से, पाए मुनि कई साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।7।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शुभ शुक्ल फाल्गुन सप्तमी, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
श्री चन्द्रप्रभु जी मोक्ष पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।8।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अष्टमी शुभ अश्विन शुक्ला, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
पुष्पदंत जिन मोक्ष पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।9।।

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अश्विन शुक्ला अष्टमी जिन, श्री शीतलनाथ जी।
मोक्ष गिरि सम्मेद से, पाए कई मुनि साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।10।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पूर्णमासी माह श्रावण, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
श्रेय जिन स्वधाम पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।11।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र चौदश, भाद्रपद शुक्ला परम।
मंदारगिरि से कर्म नाशे, लक्ष्य पाये जो चरम।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।12।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्ला चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(शम्भू छंद)

विमलनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
कृष्ण पक्ष षष्ठी आषाढ़ की, बने आप शिवपुर के नाथ।।

अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी।।13।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णाषष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

श्री अनंत जिन चैत अमावस, मोक्ष कई मुनियों के साथ।
गिरि सम्मेद शिखर से भगवन्, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी।।14।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल पक्ष की, धर्मनाथ जिनवर स्वामी।
गिरि सम्मेद शिखर से जिनवर, बने मोक्ष के अनुगामी।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी।।15।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, जिनवर शांतिनाथ भगवान।
गिरि सम्मेद शिखर से अनुपम, पाए हैं शुभ पद निर्वाण।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी।।16।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुंथुनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
एकम् सुदी वैशाख माह को, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी।।17।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत कृष्ण की तिथी अमावस, गिरि सम्मेदशिखर शुभ धाम।
अरहनाथ जिन मोक्ष पधारे, तिनके चरणों करूँ प्रणाम।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी।।18।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(छंद-विष्णु पद)

तर्ज– कहा गये चक्री....

फाल्गुन शुक्ला तिथि पञ्चमी, मल्लिनाथ स्वामी।
गिरि सम्मेदशिखर से जिनवर, बने मोक्षगामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।19।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गिरि सम्मेद शिखर से जिनवर, मुनिसुव्रत स्वामी।
कृष्ण पक्ष फाल्गुन की बारस, बने मोक्षगामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।20।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्दशी वैशाख कृष्ण की, नमीनाथ स्वामी।
मोक्ष गये सम्मेद शिखर से, जिन अंतर्यामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।21।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सातें शुक्ल अषाढ़ माह की, नेमिनाथ स्वामी।
ऊर्जयन्त से मोक्ष पधारे, जिन अंतर्यामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।22।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ला अष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रावण शुक्ला तिथी सप्तमी, पार्श्वनाथ स्वामी।
गिरि सम्मेद शिखर से भगवन्, बने मोक्षगामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।23।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा तिथी अमावस, महावीर स्वामी।
पद्म सरोवर पावापुर से, बने मोक्षगामी।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।24।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषभादिक चौबीस जिनेश्वर, ने पाया है केवलज्ञान।
अनुपम दिव्य देशना देकर, किया जगत का है कल्याण।।
शुद्ध ध्यान अग्नी में तपकर, अष्ट कर्म का किया विनाश।
मोक्ष प्राप्त करके अनुक्रम से, सिद्ध शिला पर कीन्हा वास।।25।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकसहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र: ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक पदालँकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर तिय लोक में, होते पूज्य त्रिकाल।
मोक्ष कल्याणक की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

बेसरी छंद

काल अनादी यह कहलाया, इसका अंत कहीं न पाया।
जीव अनंतानंत कहे हैं, भवसागर में दुःख सहे हैं।।1।।
जन्म–मरण पाते दुखदायी, राग–द्वेष के कारण भाई।
कर्म बंध होता है भारी, जिससे है संसार दुखारी।।2।।
भव्याभव्य कहे हैं प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।
भव्य मोक्ष की शक्ती पाते, इतर सदा संसार भ्रमाते।।3।।
सम्यक्श्रद्धा जिनके जागे, मोक्षमार्ग में वो ही लागे।
मोक्षमार्ग रत्नत्रय जानो, वीतरागता भी पहिचानो।।4।।
जो हैं वीतरागता धारी, वह हो जाते हैं अविकारी।
निज आतम का ध्यान लगाते, जिससे कर्म निर्जरा पाते।।5।।
सर्व कर्म नशते ही प्राणी, पा लेते हैं मुक्ती रानी।
इन्द्र सभी मिलकर के आते, मोक्षकल्याणक वहाँ मनाते।।6।।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, अपना कोष पुण्य से भरते।
भक्ती करते विस्मयकारी, सर्व जगत् में मंगलकारी।।7।।

अग्नि कुमार देव भी आते, भक्ती से नख केश जलाते।
जयकारा करते हैं भारी, प्रभु होते हैं अतिशयकारी।।8।।
हम भी यही भावना भाते, जिन चरणों में शीश झुकाते।
मुक्ति वधू को हम पा जाएँ, भवसागर में नहीं भ्रमाएँ।।9।।

दोहा- भाते हैं यह भावना, हे शिवपुर के नाथ!।
मोक्ष प्राप्त हम भी करें, कभी न छूटे साथ।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकसहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- श्रेष्ठ मोक्ष कल्याण, वीतरागता से मिले।
जिन का यही विधान, और कोई विधि है नहीं।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप : ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष पंचकल्याणक पदालँकृत त्रिकालवर्ती श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

सहस्त्रनाम पूजन 31

स्थापना

हे तीर्थ प्रवर्तक तीर्थंकर !, हे सहस्र आठ गुण के धारी।
हे विश्व पूज्य ! हे समदृष्टा !, सर्वज्ञ देव मंगलकारी।।
हे ज्ञानसूर्य ! हे तेज पुञ्ज !, आनन्द कन्द हे त्रिपुरारी ! ।
हे धर्मसुधाकर चिदानन्द !, करुणा निधान हे दुखहारी !।।
आह्वानन करके आज तुम्हें, उर में अपने बैठाते हैं।
शुभ सहस्रनाम के द्वारा हम, प्रभु गीत आपके गाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभू छंद)

शुभ जल के कलशा प्रासुक कर, हम पूजन करने आये हैं।
त्रय रोग नशाने हे भगवन्!, त्रयधार कराने लाये हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय

जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में घूम रहे हैं हम, पर साता कहीं न पाई है।
यह सुरभित गंध सुगन्धित ले, शुभ पद में आन चढ़ाई है।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज निधि को भूल रहे हैं हम, अक्षय पद हमने न पाया।
यह अक्षत लाये आज चरण, उस पद को मम मन ललचाया।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

घातक है जग में प्रबल काम, सबके मन में विकृति लाए।
हो कामवासना पूर्ण नाश, यह पुष्प मनोहर हम लाए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

हम कर्म असाता के कारण, सदियों से जग में भटकाए।
अब क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम ज्ञान बिना इस भव वन में, दर-दर की ठोकर खाए हैं।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

वसुकर्म आत्मा को मलीन, सदियों से करते आए हैं।
निज वैभव पाने हेतु अमल, दश गन्ध जलाने लाए हैं।।

ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

इस जग के सारे फल खाए, पर शिवफल प्राप्त न कर पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, हम श्रीफल चरणों में लाए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।

आठों कर्मों के कारण से, हम अष्ट सुगुण न प्रकट किए।
अब पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें, हम पद में आये अर्घ्य लिए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रासुक लेकर नीर से, देते शांतीधार।
पुष्पाञ्जलि करते परम, पाने शिव उपहार।।

शान्तये शांतिधारा...

श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प यह, लेकर दोनों हाथ।
पुष्पाञ्जलि करते परम, पाने शिवपद नाथ।।

पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्

जयमाला

दोहा- जिनवर तीनों लोक में, होते पूज्य त्रिकाल।
सहस्रनाम की गा रहे, भाव सहित जयमाल।।

चौपाई

जय-जय तीन लोक के स्वामी, त्रिभुवनपति हे अन्तर्यामी।
पूर्व भवों में पुण्य कमाया, पुण्योदय से नरभव पाया।।1।।
तन निरोग पाकर के भाई, सुकुल प्राप्त कीन्हा सुखदायी।
तुमने उर में ज्ञान जगाया, अतिशय सम्यक् दर्शन पाया।।2।।
भाव सहित संयम अपनाए, भव्य भावना सोलह भाए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाई, स्वर्गों के सुख भोगे भाई।।3।।
गर्भादिक कल्याणक पाए, रत्न इन्द्र भारी बरषाए।

छह महीने पहले से भाई, देवों ने नगरी सजवाई।।4।।
जन्म कल्याणक प्रभु जी पाये, सहस्राष्ट शुभ गुण प्रगटाए।
गुणानुरूप नाम भी पाए, सहस्र आठ संख्या में गाए।।5।।
नाम सभी सार्थक हैं भाई, सहस्र नाम की महिमा गाई।
तीर्थंकर पदवी के धारी, नामों के होते अधिकारी।।6।।
मंत्र सभी यह नाम कहाए, मंत्रों को श्रद्धा से गाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाए, जो भी इनका ध्यान लगाए।।7।।
महिमा का न पार है भाई, श्री जिनेन्द्र की है प्रभुताई।
जगत प्रकाशी जिन कहलाए, ज्ञानादर्श सुगुण प्रभु पाए।।8।।
श्री जिनेन्द्र रत्नत्रय पाए, अनंत चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।
धर्म चक्र शुभ प्रभु जी धारे, समवशरण युत किए विहारे।।9।।
समवशरण शुभ देव बनाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।
प्राणी अतिशय पुण्य कमाते, पूजा अर्चा कर हर्षाते।।10।।
जय-जयकार लगाते भाई, यह है जिनवर की प्रभुताई।
पुरुषोत्तम यह नाम कहाए, उनकी यह शुभ माल बनाए।।11।।
अर्पित करते तव पद स्वामी, करते हम तव चरण नमामी।
नाथ ! प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।।12।।
रत्नत्रय की निधि हम पाएँ, शिवपथ के राही बन जाएँ।
शिव स्वरूप हम भी प्रगटाएँ, शिवपुर जाकर शिवसुख पाएँ।।13।।

दोहा- सहस्रनाम का कंठ में, धारें कंठाहार।
विशद गुणों को प्राप्त कर, पावें शिव का द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- जिन गुण के अनुपम सुमन, जग में रहे महान्।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

दोहा- श्रीमान् को आदिकर, पढ़ते हम सौ नाम।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करके विशद प्रणाम।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सहस्त्रनाम के अर्घ्य *(गीता छन्द)*

जो उभय लक्ष्मी प्राप्त हैं वह, कहे प्रभु 'श्रीमान' हैं।
जो ज्ञान दर्शन वीर्य सुख, पाये अनन्त महान हैं।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री **श्रीमते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनने अलौकिक ज्ञान, प्रगटाया स्वयं के ध्यान से।
वह 'स्वयंभू'अब स्वयंभू, बना दें निज ज्ञान से।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।2।।

ॐ ह्रीं श्री **स्वयंभुवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धर्म घन बन दिव्य वाणी, की सतत् वर्षा करें।
वे 'वृषभ' जिनवर हम सभी के, धर्म अन्तर में भरें।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।3।।

ॐ ह्रीं श्री **वृषभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शं-सौख्य भवहारी रहे जो, श्रेष्ठ वह 'सम्भव' कहे।
वह शांत मूर्ती सुख प्रदाता, लोक में अनुपम रहे।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।4।।

ॐ ह्रीं श्री **संभवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंभू' परम आनन्दकारी, आप हो हे जिन प्रभो !
हैं दिव्य सुख इन्द्रिय रहित जो, प्राप्त हमको हों विभो !।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री **संभवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुद्ध आतम में निरत हो, 'आत्मभू' कहलाए हैं।
हम आत्मभू बनने प्रभू तव, चरण युग में आए हैं।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री **आत्मभुवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह लोक सारा है प्रकाशित, 'स्वयंप्रभ' की प्रभा से।
इस लोक में जो द्रव्य सारे, वह दमकते विभा से।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।7।।

ॐ ह्रीं श्री **स्वयंप्रभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! तुम हो प्रभू सबके, 'प्रभव' तुम कहलाए हो।
परिपूर्ण हो तुम भक्त जन के, श्रेष्ठ मन में भाए हो।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।8।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रभवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु श्रेष्ठ परमानन्द सुख के 'भोक्ता' कहलाए हैं।
वे ज्ञान दृग सुख वीर्य अनुपम, नन्त चतुष्टय पाए हैं।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।9।।

ॐ ह्रीं श्री **भोक्त्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व के सब भूप चरणों, भक्त बनकर आए हैं।
'विश्वभू' अतएव जिनवर, लोक में कहलाए हैं।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।10।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वभुवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अपुनर्भव' हैं प्रभु जी, भव-भ्रमण से मुक्त हैं।
अरिहन्त हैं सर्वज्ञ प्रभु जी, सर्वसुख संयुक्त हैं।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।11।।

ॐ ह्रीं श्री **अपुनर्भवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वात्मान' विश्व को जो, निज के सदृश जानते।
शुद्ध-चेतन चित्त सबका, आप सबको मानते।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।12।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वात्मानाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'विश्वलोकेश' कहते, विश्व में जो श्रेष्ठ हैं।
विशद गुण के ईश हैं जो, ज्ञानधारी ज्येष्ठ हैं।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।13।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वलोकेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विश्वतश्चक्षु' कहाए, विश्व में सद्ज्ञान से।
जो चक्षु केवल दर्श पाए, आत्मा के ध्यान से।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।14।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वतश्चक्षुषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षर' प्रभु न क्षरण होता, आपके गुण का कभी।
अक्ष इन्द्रियवश किए हैं, स्वयं ही अपनी सभी।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।15।।

ॐ ह्रीं श्री **अक्षराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वविद्' हैं ज्ञान रश्मि, विश्व में प्रगटित हुए।
प्रभु चराचर जगत ज्ञाता, को लखे प्रमुदित हुए।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।16।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वविद्येश' कहे प्रभु जी, ज्ञान के धारी अहा।
ज्ञान का अनुपम उजाला, लोक में फैला रहा।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।17।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वविधेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वयोनि' विश्व में, उत्पाद के कारण रहे।
तत्त्व के उपदेश कर्त्ता, जगत तारक जो कहे।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।18।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वयोनये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अनश्वर' प्रभु तुम ही, विश्व नश्वर यह रहा।
द्रव्य गुण पर्याय से, तुमको अनश्वर ही कहा।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।19।।

ॐ ह्रीं श्री **अनश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वदृश्वा' आप हो प्रभु, देखते क्षण में सभी।
देखने में द्रव्य कोई, नहीं जो आवे कभी।।
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन।।20।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वदृश्वने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मंगलकारी हैं 'विभू', जग में तारणहार।
समवशरण में राजते, करते भव से पार।।21।।

ॐ ह्रीं श्री **विभवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धाता' चऊ गति के सभी, जीव लगाते पार।
सर्व प्राणियों के रहे, जग में पालनहार।।22।।

ॐ ह्रीं श्री **धात्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के स्वामी प्रभू, कहलाते 'विश्वेश'।
हित-मित-प्रिय जग जीव को, देते हैं उपदेश।।23।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विश्वलोचन', कहे, जग के नेत्र समान।
हित उपदेशक हो प्रभू, कौन करे गुणगान।।24।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वलोचनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'विश्वव्यापी' प्रभो !, कण-कण रहा निवास।
अनुपम तीनों लोक में, फैला ज्ञान प्रकाश।।25।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वव्यापिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विधू' आप हो लोक में, कर्त्ता कर्म विधान।
भव्य जीव करते सदा, भाव सहित गुणगान।।26।।

ॐ ह्रीं श्री **विधवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेधा' हो प्रभु धर्म के, सुख के हेतू नाथ।
कर्त्ता मुक्ती मार्ग के, चरण झुकाएँ माथ।।27।।

ॐ ह्रीं श्री **वेधसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शाश्वत' हो प्रभु लोक में, शाश्वत है शुभ नाम।
शाश्वत कर दो भक्त को, करते चरण प्रणाम।।28।।

ॐ ह्रीं श्री **शाश्वताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'विश्वतोमुख' रहे, दीखे मुख चऊ ओर।
दर्शन करके भक्त जन, होते भाव विभोर।।29।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वतोमुखाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'विश्वकर्मा' प्रभो !, दिया कर्म उपदेश।
असि मसि कृषि वाणिज्य अरु, शिल्प कला संदेश।।30।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वकर्मणाए** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्येष्ठ' तुम हो प्रभो !, सर्व श्रेष्ठ है ज्ञान।
बड़ा नहीं कोइ लोक में, तुम सम और समान।।31।।

ॐ ह्रीं श्री **जगज्येष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वमूर्ति' है नाम तव, झुकता सारा लोक।
तव दर्शन करके सभी, मैटें भव का रोग।।32।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वमूर्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संघ चतुर्विध के प्रभू !, रहे 'जिनेश्वर' आप।
पूजा अर्चा कर सभी, धोते अपने पाप।।33।।

ॐ ह्रीं श्री **जिनेश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा 'विश्वदृक्' आपका, आगम में शुभ नाम।
द्रव्य सभी अवलोकते, तुमको करें प्रणाम।।34।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वदृशे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'विश्वभूतेश' तुम, प्राणी मात्र के ईश।
भव्य जीव सब भाव से, झुका रहे हैं शीश।।35।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वभूतेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वज्योति' कहते तुम्हें, जग में ज्ञानी लोग।
विशद ज्ञान दर्शाए तव, सारा लोकालोक।।36।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वज्योतिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं 'अनीश्वर' आप सम, जग में सर्व प्रधान।
ईश्वर सबके हो परम, मंगलमयी महान्।।37।।

ॐ ह्रीं श्री **अनीश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिन' कहलाए हो प्रभो, जीते कर्म कलंक।
इन्द्रिय मन को जीतकर, हुए आप अकलंक।।38।।

ॐ ह्रीं श्री **जिनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मारी को जीतकर, पाया 'जिष्णू' नाम।
शासन है जयशील तव, चरणों करें प्रणाम।।39।।

ॐ ह्रीं श्री **जिष्णवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमेयात्म' तुम हो प्रभो!, गुण का नहीं है पार।
नहीं जान पावे कोई, महिमा अपरम्पार।।40।।

ॐ ह्रीं श्री **अमेयात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

'विश्वरीश' है नाम तुम्हारा, चरणों झुकता है जग सारा।
इस जग के तुम ईश कहाते, चरणों में सब शीश झुकाते।।41।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वरीशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगतपति' कहलाते स्वामी, तुम हो प्रभु जी अन्तर्यामी।
भवि जीवों के तुम हो त्राता, तुम हो जग में भाग्य विधाता।।42।।

ॐ ह्रीं श्री **जगत्पतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनन्तजित्' तुम कहलाए, लोकालोक के स्वामी गाए।
महिमा रही आपकी न्यारी, सर्वजगत में मंगलकारी।।43।।

ॐ ह्रीं श्री **अनन्तजिते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचिन्त्यात्मा' आप कहाए, तव गुण चिन्तन में न आए।
तुम सम कोई और नहीं है, सारे जग में और कहीं है।।44।।

ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्यात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भव्यबन्धु' जग में कहलाए, भव्यों को भव पार लगाए।
जो रत्नत्रय योग्य रहे हैं, तव चरणों के भक्त कहे हैं।।45।।

ॐ ह्रीं श्री **भव्यबंधवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सम कोई 'अबन्धन' नाहीं, जग में तीन लोक के माहीं।
सारे बन्धन आप नशाए, अतः अबन्धन तुम कहलाए।।46।।

ॐ ह्रीं श्री **अबंधनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुष 'युगादी' तुमको कहते, तुमरे शासन में जो रहते।
युग के आदी में तुम आये, अतः 'युगादी पुरुष' कहाए।।47।।

ॐ ह्रीं श्री **युगादिपुरुषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मा' तुमको कहते प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।
तुमने केवल ज्ञान जगाया, ब्रह्मा पदवी को तव पाया।।48।।

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पञ्चब्रह्ममय' तुम कहलाए, पाँचों ज्ञान आपने पाए।
परमेष्ठी जो पाँच कहे हैं, तुममें पाँचों रूप रहे हैं।।49।।

ॐ ह्रीं श्री **पञ्चब्रह्ममयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'शिव' सर्वानन्दमयी हो, अपने सारे दोष क्षयी हो।
तुम निर्वाण मोक्ष पद पाए, शिवपुरवासी आप कहाए।।50।।

ॐ ह्रीं श्री **शिवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम आपका 'पर' भी आता, जीवों पर करुणा को गाता।
अपना सभी आपको माने, फिर भी तुमको जग निज जाने।।51।।

ॐ ह्रीं श्री **पराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परतर' नाम आपका गाया, तुम सम और कोई न पाया।
सर्व जहाँ से पर तुम रहते, परतर अतः आपको कहते।।52।।

ॐ ह्रीं श्री **परतराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिन आप 'सूक्ष्म' कहलाते, इन्द्रिय विषयों में न आते।
आप अतीन्द्रिय हो सद्ज्ञानी, ऐसा कहती है जिनवाणी।।53।।

ॐ ह्रीं श्री **सूक्ष्माय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमेष्ठी' जिन आप कहाए, आप परम पदवी को पाए।
पाँचों पद के तुम अधिकारी, फिर भी बने आप अविकारी।।54।।

ॐ ह्रीं श्री **परमेष्ठिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन को कहा 'सनातन' भाई, प्रभु ने शाश्वत पदवी पाई।
विद्यमान शासन में रहते, अतः सनातन जिन को कहते।।55।।

ॐ ह्रीं श्री **सनातनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं ज्ञान की ज्योति जलाई, तीर्थंकर की पदवी पाई।
'स्वयंज्योति' अतएव कहाए, जग को रोशन करने आए।।56।।

ॐ ह्रीं श्री **स्वयंज्योतिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आप 'अज' भी कहलाए, उत्पत्ति न फिर से पाए।
महिमा जान सका न कोई, ज्ञानी जग में होवे सोई।।57।।

ॐ ह्रीं श्री **अजाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'अजन्मा' आप कहाते, जन्म आप फिर से न पाते।
गर्भ जन्म के मैटन हारे, नाश करो प्रभु रोग हमारे।।58।।

ॐ ह्रीं श्री **अजन्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम ब्रह्म को प्रभु प्रगटाए, 'ब्रह्मयोनि' अतएव कहाए।
बने आप तब केवलज्ञानी, ऐसा कहती माँ जिनवाणी।।59।।

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मयोनये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योनी में उत्पाद नहीं है, लख चौरासी यहाँ कही हैं।
अतः 'अयोनिज' आप कहाए, विस्मयकारी महिमा पाए।।60।।

ॐ ह्रीं श्री **अयोनिजाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

जय 'मोहारी' विजयीश नमो, जय ऋषियों के आधीश नमो।
जय जगतीपति जगदीश नमो, जय 'मोहारी पति' ईश नमो।।61।।

ॐ ह्रीं श्री **मोहारिविजयने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय 'मोहमल्लजेता' महान्, जय जन्म-मृत्यु की किए हान।
जय सर्व लोक के आप मीत, जय कर्म शत्रु सब लिए जीत।।62।।

ॐ ह्रीं श्री **मोहमल्लजेताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय 'धर्मचक्रधारी' मुनीश, चरणों तव झुकते शताधीश।
तुम जैन धर्म के हुए नाथ, तव चरणों में झुक रहा माथ।।63।।

ॐ ह्रीं श्री **धर्मचक्रिणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! 'दयाध्वज' आप नाम, तव चरणों में करते प्रणाम।
अदया का है न जहाँ लेश, हैं लोक पूज्य अनुपम जिनेश।।64।।

ॐ ह्रीं श्री **दयाध्वजाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रशान्तारि' तुमको प्रणाम, हे ज्ञानधारि तुमको प्रणाम।
हे मोहजयी ! तुमको प्रणाम, हे कर्मक्षयी ! तुमको प्रणाम।।65।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रशांतारये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अनन्तात्मा' है प्रणाम, हे परमात्मा पद में प्रणाम।
हे शिवगामी तुमको प्रणाम, हे अविनाशी ! तुमको प्रणाम।।66।।

ॐ ह्रीं श्री **अनन्तात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'योगी' तुमको मम प्रणाम, हे योगजयी जिनवर प्रणाम।
हे कामजयी ! तुमको प्रणाम, हे महामुनि ! तुमको प्रणाम।।67।।

ॐ ह्रीं श्री **योगिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'योगीश्वरार्चित' तुम्हें नमन, हे कर्मारिवर्जित ! तुम्हें नमन।
हे त्रिभुवनपति ! है तुम्हें नमन, हे अभिवनयोगी ! तुम्हें नमन।।68।।

ॐ ह्रीं श्री **योगीश्वरार्चिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय 'ब्रह्माविद्' ब्रह्माणपति, जय ब्रह्म स्वरूपी वृहस्पति।
जय-जय ब्रह्माविद ब्रह्मरूप, तुमने पाया निज का स्वरूप।।69।।

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्माविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'ब्रह्मतत्त्वज्ञ' प्रभो !, हे ब्रह्मलोक ! के नाथ विभो।
हे महामुनि ! हे श्रेष्ठयति !, हे ब्रह्मस्वभावी ! ब्रह्मपति।।70।।

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मतत्त्वज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'ब्रह्मोद्याविद्' तुम्हें नमन, हे ब्रह्मविदाम्बर ! तुम्हें नमन।
हे जिन विद्यापति ! तुम्हें नमन, हे शाश्वतसन्मति तुम्हें नमन।।71।।

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मोद्याविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'यतीश्वर' कहलाए, जो ईश्वर बन जग में आए।
प्रभु रत्नत्रय में यत्न किए, अतएव ज्ञान के जले दिए।।72।।

ॐ ह्रीं श्री **यतीश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शुद्ध' आपका नाम अहा, रागादि का न काम रहा।
जो निर्मल हैं अति अविकारी, चैतन्य रूप गुण के धारी।।73।।

ॐ ह्रीं श्री **शुद्धाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'बुद्ध' आप सम्पूर्ण कहे, वस्तु स्वरूप को जान रहे।
प्रभु पूर्ण सुबुद्धि के धारी, तुम हो चेतन चिन्मयधारी।।74।।

ॐ ह्रीं श्री **बुद्धाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'प्रबुद्धात्मा' कहलाए, आतम में आतम को पाए।
वह प्रभु ज्ञान से जगमगते, प्रभु सहस्र रश्मि जैसे लगते।।75।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रबुद्धात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धार्थ' आपका श्रेष्ठ नाम, तुमको जग करता है प्रणाम।
कर लिए प्रयोजन सभी सिद्ध, अतएव हुए जग में प्रसिद्ध।।76।।

ॐ ह्रीं श्री **सिद्धार्थाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'सिद्धशासन' प्रणाम, तुम कहलाते प्रभु मोक्ष धाम।
है शासन सबका हितकारी, इस सारे जग का उपकारी।।77।।

ॐ ह्रीं श्री **सिद्धशासनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सिद्ध कहाते हो स्वामी, तुम तीन लोक में हो नामी।
तुम मुक्ति पथ के हो गामी, तुम जग में हो अन्तर्यामी।।78।।

ॐ ह्रीं श्री **सिद्धाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको 'सिद्धान्तविद्' कहते है, जो तव चरणों में रहते हैं।
प्रभु द्वादशांग के हो ज्ञाता, अतएव कहे जग के त्राता।।79।।

ॐ ह्रीं श्री **सिद्धान्तविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है ध्येय आपका श्रेष्ठ अहा, अतएव आपको 'ध्येय' कहा।
तुम ध्येय ज्ञेय सबके ज्ञाता, अतएव तुम्हें जग सिर नाता।।80।।

ॐ ह्रीं श्री **ध्येयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'सिद्धसाध्य' कर लिए हैं सारे, कोई शेष न रहे तुम्हारे।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।81।।

ॐ ह्रीं श्री **सिद्धसाध्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'जगद्धित' तुम कहलाए, जग का हित करने को आए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।82।।

ॐ ह्रीं श्री **जगद्धिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'सहिष्णू' आप कहाए, उत्तम क्षमा धर्म को पाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।83।।

ॐ ह्रीं श्री **सहिष्णवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अच्युत' हो तुम च्युत न होते, निज स्वभाव को कभी न खोते।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।84।।

ॐ ह्रीं श्री **अच्युताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अनन्त' कहलाए स्वामी, गुण अनन्त पाए प्रभु नामी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।85।।

ॐ ह्रीं श्री **अनन्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभविष्णू' की प्रभा निराली, तुम सम न कोइ शक्तिशाली।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।86।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रभविष्णवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भवोद्भव' आप कहाए, अन्तिम भव प्रभुजी तुम पाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।87।।

ॐ ह्रीं श्री **भवोद्भवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'प्रभुष्णू' कहते भाई, तुमने सारी विद्या पाई।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।88।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रभुष्णवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजर' तुम्हें न जरा सताए, कोई रोग पास न आए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।89।।

ॐ ह्रीं श्री **अजराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अजर्य' शुभ नाम को पाए, तुमरे गुण इस जग ने गाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।90।।

ॐ ह्रीं श्री **अजर्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भ्राजिष्णू' सब तुमको कहते, तव भक्ति में ही रत रहते।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।91।।

ॐ ह्रीं श्री **भ्राजिष्णवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीश्वर' हो प्रभु केवलज्ञानी, वीतरागता के विज्ञानी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।92।।

ॐ ह्रीं श्री **धीश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अव्यय' व्यय न होंय तुम्हारे, गुण तुमने जो पाए सारे।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।93।।

ॐ ह्रीं श्री **अव्ययाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विभावसु' तुम हो तमहारी, महिमा रही जगत् से न्यारी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।94।।

ॐ ह्रीं श्री **विभावसवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'असंभूष्णू' प्रभु तुम कहलाए, जन्म-जरा से मुक्ति पाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।95।।

ॐ ह्रीं श्री **असम्भूष्णवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंभूष्णू' नाम तुम्हारा, स्वयंसिद्ध हो जग को तारा।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।96।।

ॐ ह्रीं श्री **स्वयंभूष्णवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको नाथ 'पुरातन' कहते, तुम प्राचीन सदा ही रहते।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।97।।

ॐ ह्रीं श्री **पुरातनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमात्मा' अतिशय के धारी, भक्त बनी यह दुनियाँ सारी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।98।।

ॐ ह्रीं श्री **परमात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमज्योति' ज्योतिर्मय ज्ञानी, सर्व सृष्टि तुमने पहिचानी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।99।।

ॐ ह्रीं श्री **परमज्योतिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की प्रभुता पाए, 'त्रिजगत् परमेश्वर' गाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।100।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगत्परमेश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

प्रथम नाम श्रीमान् से लेकर, त्रिजग परमेश्वर शत् नाम।
सुर-नर इन्द्रों से जो पूजित, तिनको हम भी करें प्रणाम।।
नाम मंत्र का जाप निरन्तर, करके हम सिद्धी पाएँ।
तुम सम सिद्ध सुखों को पाकर, निज गुण में ही रम जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं **श्रीमदादिशतनामावलिभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा- प्रथम दिव्यभाषापति से, लेकर शत् नाम।
करते हम पुष्पाञ्जलि, पाने निज का धाम।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(तर्ज - सुन भाई रे...)

प्रभु को 'दिव्यभाषापति' जानो भाई रे !, अष्टादश भाषा के ज्ञाता भाई रे !
सप्त शतक लघु भाषा जाने भाई रे, ज्ञान ज्योति जिन प्रभु ने शुभ प्रगटाई रे !।।101।।

ॐ ह्रीं श्री **दिव्यभाषापतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दिव्य' नाम प्रभु का शुभ जानो भाई रे !, महादिव्यता श्री जिनवर ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !।।102।।

ॐ ह्रीं श्री **दिव्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहते 'पूतवाक्' जिनवर को भाई रे !, वाक् पवित्रता श्री जिनवर ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !।।103।।

ॐ ह्रीं श्री **पूतवाचे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पूतशासन' कहलाते भाई रे !, है पवित्र जिनवर का शासन भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।104।।
ॐ ह्रीं श्री **पूतशासनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूतात्मा' कहते जिनवर को भाई रे !, पूत आत्मा जिनवर की शुभ भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।105।।
ॐ ह्रीं श्री **पूतात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परंज्योति' है नाम प्रभु का भाई रे !, परंज्योति अन्तर में शुभ प्रगटाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।106।।
ॐ ह्रीं श्री **परमज्योतिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माध्यक्ष' कहाते हैं जिन भाई रे !, दश धर्मों की सत्ता प्रभु ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।107।।
ॐ ह्रीं श्री **धर्माध्यक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रसिद्ध शुभ नाम 'दमीश्वर' भाई रे !, इन्द्रिय जय की शक्ति प्रभु ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।108।।
ॐ ह्रीं श्री **दमीश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीपति' की पदवी प्रभु ने शुभ पाई रे !, श्रीपति कहलाते हैं श्री जिन भाई रे!
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।109।।
ॐ ह्रीं श्री **श्रीपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'भगवान' आप इस जग में भाई रे !, ज्ञान और ऐश्वर्य पूर्णता पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।110।।
ॐ ह्रीं श्री **भगवते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अर्हत्' कहते हैं जिनवर को भाई रे !, इन्द्रादिकृत पूजा प्रभु ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।111।।
ॐ ह्रीं श्री **अर्हते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रज से सहित 'अरज' हैं जिन प्रभु भाई रे !, कर्म घातिया नाश किए प्रभु भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।112।।
ॐ ह्रीं श्री **अरजसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विरज' नाम प्रभुवर ने पाया भाई रे !, कर्म धूलि को आप नशाते भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।113।।
ॐ ह्रीं श्री **विरजसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुचि' आपने शुचिता अनुपम पाई रे !, विशद आत्म शक्ति जिन प्रभु प्रगटाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।114।।
ॐ ह्रीं श्री **शुचये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'तीर्थकृत' पदवी पाए भाई रे !, द्वादशांग के श्रुत कर्त्ता जिन भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।115।।
ॐ ह्रीं श्री **तीर्थकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया 'केवल' ज्ञान आपने भाई रे !, मोह आवरण विघ्न नाशता भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।116।।
ॐ ह्रीं श्री **केवलिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी कहें 'ईशान' आपको भाई रे !, सर्व लोक की प्रभुता तुमने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।117।।
ॐ ह्रीं श्री **ईशानाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूजार्ह' कहाते हैं जिनवर सुखदायी रे !, श्रेष्ठ अर्चनायोग्य लोक में भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।118।।
ॐ ह्रीं श्री **पूजार्हाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्नातक' हैं प्रभु इस जग में भाई रे !, कर्म कलंक पंकता पूर्ण नसाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।119।।
ॐ ह्रीं श्री **स्नातकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मलादिक हीन 'अमल' हैं भाई रे !, निर्मलता प्रभु पूर्ण रूप से पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ।।120।।
ॐ ह्रीं श्री **अमलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(बेसरी छन्द)

'अनन्तदीप्त' जिन नाथ कहाए, ज्ञान दीप्ति जग में फैलाए।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।121।।
ॐ ह्रीं श्री **अनंतदीप्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानात्मा' जिनवर को कहते, विशद ज्ञान में सदा विचरते।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।122।।
ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'स्वयंबुद्ध' कहलाए, स्वयं आप ही बोध जगाए।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।123।।
ॐ ह्रीं श्री **स्वयंबुद्धाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रजापती' कहलाए स्वामी, सर्व प्रजा है तव अनुगामी।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।124।।
ॐ ह्रीं श्री **प्रजापतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुक्त' आपने मुक्ती पाई, कर्म श्रृंखला पूर्ण नसाई।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।125।।
ॐ ह्रीं श्री **मुक्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शक्त' सहन परिषह करते हैं, उपसर्गों से न डरते हैं।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।126।।
ॐ ह्रीं श्री **शक्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निराबाध' बाधा परिहारी, हो उपसर्ग रहित अविकारी।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।127।।
ॐ ह्रीं श्री **निराबाधाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कल' कल से हीन कहाए, ज्ञान कला में प्रभुता पाए।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।128।।
ॐ ह्रीं श्री **निष्कलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनेश्वर' त्रिभुवन के स्वामी, जग के त्राता अन्तर्यामी।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।129।।
ॐ ह्रीं श्री **भुवनेश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्जन रहित 'निरंजन' जानो, कर्माञ्जन न जिन के मानो।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।130।।
ॐ ह्रीं श्री **निरंजनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्योति' जिनवर कहलाए, केवलज्ञान ज्योति को पाए।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।131।।
ॐ ह्रीं श्री **जगज्ज्योतिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुक्तोक्ती' नाम पुकारा, पूर्वापर अविरोधी प्यारा।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।132।।
ॐ ह्रीं श्री **निरुक्तोक्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'निरामय' आमय हीना, रहे हमेशा आप नवीना।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।133।।
ॐ ह्रीं श्री **निरामयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचलस्थिति' न चलते भाई, निज में अचल रहे स्थाई।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।134।।
ॐ ह्रीं श्री **अचलस्थितये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अक्षोभ्य' न क्षोभ तिहारे, मोह क्षोभ नाशे प्रभु सारे।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।135।।
ॐ ह्रीं श्री **अक्षोभ्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कूटस्थ' कहाए भाई, सिद्ध शिला पर स्थिति पाई।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।136।।
ॐ ह्रीं श्री **कूटस्थाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थाणु' सम स्थित गाये, लोक शिखर के नाथ कहाए।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।137।।
ॐ ह्रीं श्री **स्थाणवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अक्षय' हैं क्षय न होते, ज्ञानानन्त कभी न खोते।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।138।।
ॐ ह्रीं श्री **अक्षयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को आप 'अग्रणी' जानो, सारे जग से आगे मानो।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।139।।
ॐ ह्रीं श्री **अग्रण्ये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'ग्रामिणी' आप कहाए, जग को मोक्ष मार्ग दिखलाए।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।140।।
ॐ ह्रीं श्री **ग्रामण्ये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरी छन्द)

बने 'नेता' प्रभु जी अविकार, दिखाया जग को मुक्ती द्वार।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।141।।
ॐ ह्रीं श्री **नेत्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणेता' हो आगम के नाथ, झुका तव चरणों मेरा माथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।142।।
ॐ ह्रीं श्री **प्रणेत्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'न्यायशास्त्रवित्' आप, करें हम नाम मंत्र का जाप।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।143।।
ॐ ह्रीं श्री **न्यायशास्त्रविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का नाम 'शास्ता' जान, दिए जग को उपदेश महान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।144।।
ॐ ह्रीं श्री **शास्त्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'धर्मपति' भगवान, प्रभु हैं श्रेष्ठ धर्म की खान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।145।।
ॐ ह्रीं श्री **धर्मपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिए जो 'धर्म' का शुभ उपदेश, नाम पाए प्रभु धर्म विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।146।।
ॐ ह्रीं श्री **धर्म्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'धर्मात्मा' हो तुम एक, विधर्मी प्राणी कई अनेक।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।147।।
ॐ ह्रीं श्री **धर्मात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे हैं 'धर्मतीर्थकृत' देव, किए जो धर्म प्रवर्तन एव।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।148।।
ॐ ह्रीं श्री **धर्मतीर्थकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाते हैं 'वृषध्वज' जिनराज, लगाए प्रभु धर्म का ताज।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।149।।
ॐ ह्रीं श्री **वृषध्वजाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहलाते हैं 'वृषाधीश', धर्म के धारी श्रेष्ठ ऋशीष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।150।।
ॐ ह्रीं श्री **वृषाधीश** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन्हें 'वृषकेतु' कहते लोग, धर्म ध्वज का पाते संयोग।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।151।।
ॐ ह्रीं श्री **वृषकेतवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषायुध' कहलाते जिन आप, नाश करते हो सारे पाप।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।152।।
ॐ ह्रीं श्री **वृषायुधाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू ने 'वृष' पाया शुभ नाम, धर्म के धारी तुम्हें प्रणाम।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।153।।
ॐ ह्रीं श्री **वृषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ तुम 'वृषपति' श्रेष्ठ महान, धर्मधारी तुम रहे प्रधान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।154।।
ॐ ह्रीं श्री **वृषपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'भर्त्ता' हो जग के नाथ, भव्य जीवों का देते साथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।155।।
ॐ ह्रीं श्री **भर्त्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए हैं 'वृषभांक' जिनेश, बैल है जिनका चिन्ह विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।156।।
ॐ ह्रीं श्री **वृषभांकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाये 'वृषभोद्भव' जिनदेव, प्रवर्तन करते आप सदैव।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।157।।
ॐ ह्रीं श्री **वृषोद्भवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हिरण्यनाभि' कहलाते नाथ, रत्न वृष्टि हो गर्भ के साथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।158।।
ॐ ह्रीं श्री **हिरण्यनाभये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए हैं 'भूतात्म' जिनेश, आत्म का कीन्हे ध्यान विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।159।।
ॐ ह्रीं श्री **भूतात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर हैं 'भूभृत्' अविकार, करें सारे जग का उद्धार।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार।।160।।
ॐ ह्रीं श्री **भूभृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द सार)

जिन्हें 'भूतभावन' कहते हैं, जीवों के हितकारी।
हाथ जोड़ हम वन्दन करते, जो हैं करुणाधारी।।161।।
ॐ ह्रीं श्री **भूतभावनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभव' मुक्ति में कारण जानो, भवि जीवों के भाई।
सुख-शांति के दाता जग में, प्रभु की है प्रभुताई।।162।।
ॐ ह्रीं श्री **प्रभवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव से हुए मुक्त हे जिनवर, अतः 'विभव' कहलाए।
भव विशिष्ट पाकर हम भगवन, मुक्ति पाने आए।।163।।
ॐ ह्रीं श्री **विभवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'भास्वान' ज्ञान के सूरज, ज्ञान दीप्ति के धारी।
लोकालोक प्रकाशित करते, मंगलमय अविकारी।।164।।

ॐ ह्रीं श्री **भास्वते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यय उत्पाद ध्रौव्य मय जिनवर, 'भव' संज्ञा को पाए।
जो विभाव परिणमन नाशकर, शास्वत भव को पाए।।165।।

ॐ ह्रीं श्री **भवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित् स्वरूप निज 'भाव' स्वभावी, परम भाव प्रगटाए।
भाव पारिणामिक प्रभु पाकर, सारे भाव नशाए।।166।।

ॐ ह्रीं श्री **भावाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भवान्तक' कहे गये हैं, सर्व भवों के नाशी।
पश्चम भव को पाने वाले, केवल ज्ञान प्रकाशी।।167।।

ॐ ह्रीं श्री **भवान्तकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हिरण्यगर्भ' कहलाए जिनवर, स्वर्ण कान्ति के धारी।
गर्भ समय में वृष्टि करते, इन्द्र हर्षते भारी।।168।।

ॐ ह्रीं श्री **हिरण्यगर्भाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ समय में श्री के धारी, श्री जिन 'गरभ' कहाते।
शत् इन्द्रों से अतः जिनेश्वर, अतिशय पूजे जाते।।169।।

ॐ ह्रीं श्री **गर्भाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु महान भव पाने वाले, 'प्रभूतविभव' कहलाए।
तीन लोक की छोड़ सम्पदा, शाश्वत सुख उपजाए।।170।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रभूतविभवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव का अन्त किया है प्रभु ने, अतः 'अभव' कहलाए।
तव चरणों में भव्य जीव कई, अभव सम्पदा पाए।।171।।

ॐ ह्रीं श्री **अभवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! 'स्वयंप्रभु' आप लोक में, हो महिमा के धारी।
सर्व लोक की सर्व सम्पदा, चरण झुके आ सारी।।172।।

ॐ ह्रीं श्री **स्वयंप्रभवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम शक्ति प्रगटाकर, 'प्रभूतात्म' कहलाए।
शाश्वत सुख चैतन्य स्वरूपी, स्वयं आप ही पाए।।173।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रभूतात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूतनाथ' हैं सर्व जगत् में, सब जीवों के स्वामी।
ऋषि मुनि गणधर अनगारी, बनते तव अनुगामी।।174।।

ॐ ह्रीं श्री **भूतनाथाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगतत्प्रभु' हो सर्व जगत् में, सब जीवों के स्वामी।
सौख्य प्रदाता हैं जन-जन के, अतिशय अन्तर्यामी।।175।।

ॐ ह्रीं श्री **जगत्प्रभवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वादि' तुमने इस युग में, धर्म प्रवर्तन कीन्हा।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े स्वयं भी, भव्यों को पथ दीन्हा।।176।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वादये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'सर्वदृक' ! हो अविनाशी, सबको देखन हारे।
द्रव्य मूर्तामूर्त रहे जो, सर्व झलकते सारे।।177।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वदृशे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सार्व' आप कहलाए जिनवर, सर्व जगत के स्वामी।
सबका हित करने वाले हो, हे मुक्ति पथ गामी।।178।।

ॐ ह्रीं श्री **सार्वाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सर्वज्ञ' जगत के ज्ञाता, तुमने सब कुछ जाना।
द्रव्य और गुण पर्यायों को, ज्यों का त्यों पहिचाना।।179।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्ही 'सर्वदर्शन' कहलाए, सर्व मतों के ज्ञाता।
कुमत विनाशी सुमत प्रकाशी, इस जग के हो त्राता।।180।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वदर्शनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

'सर्वात्म' जगत हितकारी, सब झलके सृष्टि सारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।181।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सर्वलोकेश' कहाए, सबका हित करने आए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।182।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सर्वविद्' गाये, क्षण में सब कुछ दर्शाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।183।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सर्वलोकजितस्वामी', तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।184।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकजिते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगति' आपने पाई, जो सिद्ध गति कहलाई।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।185।।

ॐ ह्रीं श्री **सुगतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुश्रुत' प्रभु कहलाए, सुश्रुत की गंग बहाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।186।।

ॐ ह्रीं श्री **सुश्रुताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत्' हो सुनने वाले, ज्ञानी जग के रखवाले।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।187।।

ॐ ह्रीं श्री **सुश्रुते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हैं 'सुवाक्' के धारी, हैं वचन श्रेष्ठ गुणकारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।188।।

ॐ ह्रीं श्री **सुवाचे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जगत गुरु हे 'सूरि', तुम विद्या पाए पूरी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।189।।

ॐ ह्रीं श्री **सूरये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बहुश्रुत' सब श्रुत के ज्ञाता, प्रभु तीन लोक विख्याता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।190।।

ॐ ह्रीं श्री **बहुश्रुताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्रुत' त्रिभुवन के ज्ञानी, आगम है तव श्रुत वाणी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।191।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्रुताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वतःपाद' जिन गाये, प्रभु लोक पूज्यता पाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।192।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वतःपादाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वशीर्ष' कहलाए, शिवपुर में धाम बनाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।193।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वशीर्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'शुचिश्रवा' हो स्वामी, हो ज्ञानी अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।194।।

ॐ ह्रीं श्री **शुचिश्रवसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'सहस्रशीर्ष' शुभ गाये, प्रभु सुख अनन्त उपजाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।195।।

ॐ ह्रीं श्री **सहस्त्रशीर्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेत्रज्ञ' तुम्हें कहते हैं, प्रभु सर्व क्षेत्र रहते हैं।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।196।।

ॐ ह्रीं श्री **क्षेत्रज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहस्राक्ष' कहलाए, जो सब पदार्थ दर्शाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।197।।

ॐ ह्रीं श्री **सहस्राक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'सहस्रपात' जिन स्वामी, हो वीर बली जग नामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।198।।

ॐ ह्रीं श्री **सहस्रपदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भूतभव्यभवद्भर्त्ता', त्रैकालिक सुख के कर्त्ता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।199।।

ॐ ह्रीं श्री **भूतभव्यभवद्भर्त्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्वविद्यामहेश्वर', तुम हो इस जग के ईश्वर।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।200।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वविद्यामहेश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

दिव्य भाषापति आदि करके, विश्व विद्यामहेश्वर अन्त।
नाममंत्र शत् के धारी जिन, होते तीर्थंकर भगवन्त।।
अतिशय श्रद्धा भक्ति द्वारा, नाम मंत्र का जाप करें।
कर्म महातम का छाया जो, सारा वह संताप हरें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री **दिव्यभाषापत्यादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा

स्थविष्ठ को आदिकर, पुराण पुरुषोत्तम नाम।
पुष्पाञ्जलि के भाव से, करते विशद प्रणाम।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल-छन्द)

प्रभु 'स्थविष्ठ' कहलाए, अतिशय पूजा को पाए।
शुभ नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।201।।

ॐ ह्रीं श्री **स्थविष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नाम 'स्थविर' जानो, सिद्धों में स्थिर मानो।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ।।202।।

ॐ ह्रीं श्री **स्थविराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'ज्येष्ठ' सभी के दाता, तुम बने सभी के त्राता।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।203।।

ॐ ह्रीं श्री **ज्येष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'प्रष्ठ' कहाते स्वामी, यह जग है तव अनुगामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।204।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रेष्ठ' ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।205।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रेष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'वरिष्ठधी' नामी, हे प्रखर बुद्धि के स्वामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।206।।

ॐ ह्रीं श्री **वरिष्ठधिये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेष्ठ' आपको कहते, क्योंकि स्थिर हो रहते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।207।।

ॐ ह्रीं श्री **स्थेष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'गरिष्ठ' हे ज्ञानी, प्रभु वीतराग विज्ञानी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।208।।

ॐ ह्रीं श्री **गरिष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बंहिष्ठ' नाम प्रभु पाये, तव रूप अनेकों गाए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।209।।

ॐ ह्रीं श्री **बंहिष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'श्रेष्ठ' गुणों के धारी, तव दुनियाँ बनी पुजारी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।210।।

ॐ ह्रीं श्री **श्रेष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव नाम 'अणिष्ठ' बखाना, यह सर्व चराचर जाना।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।211।।

ॐ ह्रीं श्री **अणिष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'गरिष्ठगी' कहते, निज गौरव में जो रहते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।212।।

ॐ ह्रीं श्री **गरिष्ठगिरे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'विश्वभृज' स्वामी, भव नाश किए जग नामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।213।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वभृषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'विश्वसृज' स्वामी, कई सृजन किए जग नामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।214।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वसृजे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वेश' के पद में आते, सुर नर मुनि शीश झुकाते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।215।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वेशे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। *(विश्वभुट् भी नाम आता है।)*

जिनदेव 'विश्वभुक्' गाये, जग के रक्षक कहलाए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।216।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वभुजे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विश्वनायक' कहलाए, नीति का ज्ञान कराए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।217।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वनायकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो प्रभु जग 'विश्वाशी', हे मोक्षपुरी के वासी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।218।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वासिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'विश्वरूपात्मा', कहलाते हो परमात्मा।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।219।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वरूपात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप 'विश्वजित' स्वामी, भव विजयी अन्तर्यामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी।।220।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वजिते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

'विजितान्तक' आप कहे स्वामी, तुमने सब कर्म नशाए हैं।
जग में जितने भी मल्ल कहे, सब शरणागत बन आए हैं।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।221।।

ॐ ह्रीं श्री **विजितांतकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विभव' आपका भव अनुपम, जिसकी महिमा का पार नहीं।
भव पार भक्ति कर हो जाते, प्राणी न भटकें और कहीं।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।222।।

ॐ ह्रीं श्री **विभवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विभय' आपके आगे भय, आने से भी भय खाते हैं।
जो चरण शरण को पा लेते, वह भी निर्भय हो जाते हैं।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।223।।

ॐ ह्रीं श्री **विभयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे कर्मजयी जिन 'वीर' प्रभो !, तुमने सब कर्म हराए हैं।
की विजय प्राप्त है कर्मों पर, जो शरणागत बन आये हैं।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।224।।

ॐ ह्रीं श्री **वीराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'विशोक' शुभ नाम आपका, शोक सभी हरने वाले।
भवि जीवों के रक्षक अनुपम, अनुपम हो प्रभु रखवाले।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।225।।

ॐ ह्रीं श्री **विशोकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजर' वृद्ध न होते स्वामी, आप जगाते केवलज्ञान।
पुण्य पुरुष बनकर हरते हो, भवि जीवों का तुम अज्ञान।।

तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।226।।

ॐ ह्रीं श्री **विजराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजरन' हो तुम जीर्ण न होते, रहते तीनों काल समान।
परमानन्द सुखों में रत हो, पाये वीतराग विज्ञान।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।227।।

ॐ ह्रीं श्री **अजरते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विराग' तुम राग रहित हो, नहीं राग का नाम निशान।
वीतराग विज्ञानी होकर, बने ज्ञान के कोष महान।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।228।।

ॐ ह्रीं श्री **विरागाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विरत' आप हो जग भोगों से, योगी बनकर कीन्हा ध्यान।
वीतरागता धारण करके, बने आप अर्हत् भगवान।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।229।।

ॐ ह्रीं श्री **विरताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'असंग' परिग्रह के त्यागी, बने आप अविकारी संत।
निज स्वभाव में लीन हुए तब, ज्ञानी बने आप अरहंत।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।230।।

ॐ ह्रीं श्री **असंगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'विविक्त' विषयों के त्यागी, निज स्वभाव को पाया है।
कर्म श्रृंखला नाश प्रभु ने, केवल ज्ञान जगाया है।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।231।।

ॐ ह्रीं श्री **विविक्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'वीतमत्सर' कहते हैं, जग में जो हैं ज्ञानी जीव।
भक्ति भाव से अर्चा करके, पुण्य कमाते भव्य अतीव।।

तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।232।।
ॐ ह्रीं श्री **वीतमत्सराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विनेयजनताबन्धु' तुम, करते हो जग का कल्याण।
मोक्ष मार्ग की शिक्षा देकर, कर देते हो उनका त्राण।।
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है।।233।।
ॐ ह्रीं श्री **विनेयजनताबंधवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छन्द)

'विलीनाशेषकल्मष' प्रभु जी कहे गये, कर्म लगे थे सभी वह आपने क्षये।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।234।।
ॐ ह्रीं श्री **विलीनाशेषकल्मषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करके 'वियोग' कर्म का स्वतंत्र हो गये, संदेश इस जगत को तुमने दिए नए।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।235।।
ॐ ह्रीं श्री **वियोगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों से हीन हो गये हैं 'योगविद' सभी, शुभ योग नहीं धार सके नाथ हम कभी।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।236।।
ॐ ह्रीं श्री **योगविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ज्ञान पूर्ण हो 'विद्वान' कहाए, अतएव ज्ञान पाने तव द्वार हम आए।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।237।।
ॐ ह्रीं श्री **विदुषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहते 'विधाता' आपको प्राणी सभी यहाँ, हो धर्म सृष्टि के कर्ता लोक में महाँ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।238।।
ॐ ह्रीं श्री **विधात्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग को विधि बताई है श्रेष्ठतम अहा, अतएव 'सुविधि' नाम प्रभु आपका रहा।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।239।।
ॐ ह्रीं श्री **सुविधये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया है ज्ञान केवल तुमने 'सुधी' यहाँ, अतएव चरण आपके यह पूजता जहाँ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।240।।
ॐ ह्रीं श्री **सुधिये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'क्षांतिभाक्' जग में सबसे महान् हो, प्रभु शांत रूप क्षांति के तुम निधान हो।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।241।।
ॐ ह्रीं श्री **क्षांतिभाजे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'पृथ्वीमूर्ति' तुमको कहा गया, तुम लोकवर्ती जीवों पर धारते दया।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।242।।
ॐ ह्रीं श्री **पृथ्वीमूर्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शांतिभाक्' ! तुमने संदेश जो दिया, जीवों ने मार्ग पावन उससे ग्रहण किया।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।243।।
ॐ ह्रीं श्री **शांतिभाजे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सलिलात्मक' प्रभु जी शुभ नाम पाए हैं, जल के समान शीतल प्रभु जी कहाए हैं।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।244।।
ॐ ह्रीं श्री **सलिलात्मकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वायुमूर्ति' ! तुम तो वायु समान हो, भक्तों के आप जग में जीवन्त प्राण हो।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।245।।
ॐ ह्रीं श्री **वायुमूर्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! 'असंगात्मा' न संग कुछ रहा, अतएव असंगात्मा शुभ नाम तव रहा।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।246।।
ॐ ह्रीं श्री **असंगात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वह्निमूर्ति' अग्नि सम आप कहाए, हे नाथ ! कर्म ईंधन तुम पूर्ण जलाए।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।247।।
ॐ ह्रीं श्री **वह्निमूर्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको 'अधर्मधक्' प्रभु इस लोक में कहा, कीन्हा अधर्म तुमने सब भस्म प्रभु अहा।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।248।।
ॐ ह्रीं श्री **अधर्मदहे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको 'सुयज्वा' कहते हैं लोक में सभी, कर्मों का बन्ध होगा तुमको नहीं कभी।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।249।।
ॐ ह्रीं श्री **सुयज्वने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको प्रभुजी कहते 'यजमानात्मा', रहते हो लीन निज में जिन देव महात्मा।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें।।250।।
ॐ ह्रीं श्री **यजमानात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द)

'सुत्वा' आप कहाते हो, निजानन्द रस पाते हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।251।।

ॐ ह्रीं श्री **सुत्वने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुत्रामपूजित' आप कहे, शत इन्द्रों से पूज्य रहे।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।252।।

ॐ ह्रीं श्री **सुत्रामपूजिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ऋत्विक्' तुम कहलाते हो, जग को मार्ग दिखाते हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।253।।

ॐ ह्रीं श्री **ऋत्विजे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'यज्ञपति' तवनाम अहा, सारे जग में पूज्य रहा।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।254।।

ॐ ह्रीं श्री **यज्ञपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'याज्य' आपको कहते हैं, भक्त शरण में रहते हैं।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।255।।

ॐ ह्रीं श्री **याज्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते 'यज्ञांग' प्रभो ! हो पूजा के हेतु विभो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।256।।

ॐ ह्रीं श्री **यज्ञांगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृत' तुम कहलाते हो, सौख्य अनन्त दिलाते हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।257।।

ॐ ह्रीं श्री **अमृताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हवी' नाम को पाये हो, सारे अशुभ जलाए हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।258।।

ॐ ह्रीं श्री **हविषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्योममूर्ति' तव नाम अहा, कर्म लेप न लेश रहा।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।259।।

ॐ ह्रीं श्री **व्योममूर्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमूर्तात्मा' हो स्वामी, ज्ञानी हो अन्तर्यामी।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।260।।

ॐ ह्रीं श्री **अमूर्तात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निर्लेप' कहे जग में, आगे बढ़े मोक्ष मग में।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।261।।

ॐ ह्रीं श्री **निर्लेपाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मल' तुम कहलाते हो, तुम ही कर्म नशाते हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।262।।

ॐ ह्रीं श्री **निर्मलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचल' तुम्हे कहते प्राणी, पाए तुम मुक्ति रानी।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।263।।

ॐ ह्रीं श्री **अचलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सोममूर्ति' तुम हो स्वामी, हो प्रशान्त जग में नामी।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।264।।

ॐ ह्रीं श्री **सोममूर्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुसौम्यात्मा' गाये, सौम्य छवि अतिशय पाये।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।265।।

ॐ ह्रीं श्री **सुसौम्यात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमूर्ति' हे प्रभो तुम्हीं, महा तेज मय रहे तुम्हीं।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।266।।

ॐ ह्रीं श्री **सूर्यमूर्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभ' तुम कहलाते हो, तुम प्रभाव दिखलाते हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।267।।

ॐ ह्रीं श्री **महाप्रभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'मंत्रविद्' हो स्वामी, ज्ञानी हो अन्तर्यामी।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।268।।

ॐ ह्रीं श्री **मंत्रविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'मंत्रकृत' हो आले, सभी मंत्र रचने वाले।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।269।।

ॐ ह्रीं श्री **मंत्रकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'मंत्री' कहलाए, सभी यंत्र तुमने पाये।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।270।।

ॐ ह्रीं श्री **मंत्रिणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'मंत्रमूर्ति' भगवान, कहलाते हो तुम प्रभु।
करूँ विशद गुणगान, सप्ताक्षरी हो मूर्तिमय।।271।।

ॐ ह्रीं श्री **मंत्रमूर्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनन्त' तक नाम, अनुपम पाया आपने।
पद में करूँ प्रणाम, तीन योग से तव चरण।।272।।

ॐ ह्रीं श्री **अनन्तज्ञे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'स्वतंत्र' जिनराज, कर्म बन्ध से हीन हो।
स्व में करते राज, तंत्र देह को मानकर।।273।।

ॐ ह्रीं श्री **स्वतंत्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'तंत्रकृत' आप, मंत्र-तंत्र कर्त्ता कहे।
करूँ आपका जाप, मुक्ति पाने के लिए।।274।।

ॐ ह्रीं श्री **तंत्रकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वान्त' तुम्हीं हो नाथ, अन्त किए हो कर्म का।
चरण झुकाएँ माथ, तव गुण पाने के लिए।।275।।

ॐ ह्रीं श्री **स्वान्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतान्तान्त' शुभ नाम, पाया है जिनदेव ने।
पद में करें प्रणाम, किए कर्म का अन्त तुम।।276।।

ॐ ह्रीं श्री **कृतान्तान्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'कृतान्तकृत' देव, आगम के कर्त्ता तुम्हीं।
वन्दूँ तुम्हें सदैव, शिव सुख पाने के लिए।।277।।

ॐ ह्रीं श्री **कृतान्तकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृती' पुण्यफल रूप, अनन्त चतुष्टय के धनी।
पाये निज स्वरूप, शिवपुर वासी बन गये।।278।।

ॐ ह्रीं श्री **कृतिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'कृतार्थ' भगवान, सफल करो पुरुषार्थ सब।
करें विशद गुणगान, पुरुषार्थ सिद्धि के लिए।।279।।

ॐ ह्रीं श्री **कृतार्थाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो जिनेन्द्र 'सत्कृत्य', इन्द्र करें सत्कार तव।
सुर नर चक्री भृत्य, बने आपके चरण में।।280।।

ॐ ह्रीं श्री **सत्कृत्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए आप 'कृतकृत्य', आत्म कार्य सब कर चुके।
सारा लोक अनित्य, जान स्वयं को ध्याए हो।।281।।

ॐ ह्रीं श्री **कृतकृत्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'कृतक्रतू' जिनेश, पूजा करते इन्द्र भी।
पाये सुफल विशेष, प्राणी जो अर्चा करें।।282।।

ॐ ह्रीं श्री **कृतक्रतवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप हो 'नित्य', सादी आप अनन्त हो।
प्राणी रहे अनित्य, तव पद से जो दूर हैं।।283।।

ॐ ह्रीं श्री **नित्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मृत्युञ्जय' शुभ नाम, मृत्यु को जीते प्रभो !।
शत्-शत् बार प्रणाम, तव पद पाने के लिए।।284।।

ॐ ह्रीं श्री **मृत्युंजयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अमृत्यु' नाथ, मरण रहित हो जिन प्रभो।
दीजे हमको साथ, हम भी तुम जैसे बनें।।285।।

ॐ ह्रीं श्री **अमृत्यवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृतात्मा' आप, कहलाते त्रय लोक में।
करें आपका जाप, तुम सम बनने के लिए।।286।।

ॐ ह्रीं श्री **अमृतात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृतोद्भव' नाम, पाया जिनवर आपने।
अमृत है शिवधाम, पाना हम भी चाहते।।287।।

ॐ ह्रीं श्री **अमृतोद्भवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मनिष्ठ' हे देव !, ब्रह्म आप कहलाए हो।
वन्दन करें सदैव, ब्रह्मादि नर नाथ सब।।288।।

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मनिष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परंब्रह्म' उत्कृष्ट, केवल ज्ञानी बन गये।
रहे सभी को इष्ट, ध्याते हैं अतएव सब।।289।।

ॐ ह्रीं श्री **परंब्रह्मणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मात्मा' शिव रूप, आतम ज्ञानी एक तुम।
अविचल ज्ञान स्वरूप, सर्व गुणों से पूर्ण हो।।290।।

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंगप्रयात छन्द)

तुम्हीं 'ब्रह्मसम्भव' कहाये हो स्वामी, करे भक्ति तव जो बने मोक्ष गामी।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी।।291।।

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मसंभवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाब्रह्मपति' तुम कहाते हो स्वामी, झुके इन्द्र गणधर चरण आके नामी।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी।।292।।

ॐ ह्रीं श्री **महाब्रह्मपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! आपको लोग 'ब्रह्मेट्' कहते, सदा आप परं ब्रह्म में लीन रहते।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी।।293।।

ॐ ह्रीं श्री **ऋत्विजे ब्रह्मेटे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाब्रह्मपदेश्वर' हे मुक्ति के ईश्वर, सभी धन्य होते हैं तव वन्दना कर।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी।।294।।

ॐ ह्रीं श्री **महाब्रह्मपदेश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रसन्न' प्रभु की छवि है निराली, प्राणी को सुख-शांति शुभ देनेवाली।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी।।295।।

ॐ ह्रीं श्री **सुप्रसन्नाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रसन्नात्मा' है प्रभो नाम प्यारा, सभी प्राणियों को दिए तुम सहारा।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी।।296।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रसन्नात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानधर्मदमप्रभु' कहाये हो स्वामी, करें ध्यान तव जो बने मोक्ष गामी।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी।।297।।

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानधर्मदमप्रभवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशमात्मा' आपने नाम पाया, प्रशम गुण प्रभु के हृदय में समाया।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी।।298।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रशमात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तात्मा' हो जहाँ में निराले, तुम हो प्रशान्ति प्रभु देने वाले।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी।।299।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रशान्तात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'पुराणपुरुषोत्तम' जग में कहाये, पुराणों में वर्णन तुम्हारा ही आये।।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी।।300।।

ॐ ह्रीं श्री **पुराणपुरुषोत्तमाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

'स्थविष्ठ' को आदि करके, अन्त पुराण पुरुषोत्तम नाम।
सौ नामों का जाप स्तवन, पूजा कर पाया विश्राम।।
नाम मंत्र की महिमा प्रभु के, सारे जग में अपरम्पार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाते, वन्दन करते बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री **स्थविष्ठादिशतनामेभ्यः** नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा- महाशोक ध्वजादि शत, श्री जिनेन्द्र के नाम।
पूजा विधि के पूर्व में, करते विशद प्रणाम।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(सोरठा)

'महाशोकध्वज' नाम, पाया है प्रभु आपने।
तरु अशोक तल धाम, समवशरण में शोभता।।301।।

ॐ ह्रीं श्री **महाशोकध्वजाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे शोक से हीन, प्रभु अशोक कहलाए हैं।
निज में रहते लीन, शोक निवारी जिन कहे।।302।।

ॐ ह्रीं श्री **अशोकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क' कहलाते आप, महिमा अपरम्पार है।
करें आपका जाप, मुक्ति पाने के लिए।।303।।

ॐ ह्रीं श्री **काय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्रष्टा' तुम हे नाथ !, सृष्टी के कर्त्ता कहे।
चरण झुकाएँ माथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं यहाँ।।304।।

ॐ ह्रीं श्री **स्रष्ट्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आसन पद्म महान, पाया है प्रभु आपने।
किए जगत कल्याण, अतः 'पदमविष्टर' कहे।।305।।

ॐ ह्रीं श्री **पद्मविष्टराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर हे 'पद्मेश', कहलाते हो लोक में।
मुक्ति का संदेश, पाये हैं जग में सभी।।306।।

ॐ ह्रीं श्री **पद्मेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मसंभूति' नाम, आगम में प्रभु का कहा।
बारम्बार प्रणाम, करते हैं हम भाव से।।307।।

ॐ ह्रीं श्री **पद्मसंभूतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मनाभि' जिनराज, नाभि पद्म समान तव।
पूर्ण करो सब काज, आप त्रिलोकी नाथ हो।।308।।

ॐ ह्रीं श्री **पद्मनाभये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनुत्तर' देव, तुम सम कोई भी नहीं।
अक्षय रहे सदैव, गुण गण सारे आप में।।309।।

ॐ ह्रीं श्री **अनुत्तराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मयोनि' शुभ नाम, जिनवर पाया आपने।
योनि पद्म समान, जिससे जन्मे आप हो।।310।।

ॐ ह्रीं श्री **पद्मयोनये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगयोनि' हे नाथ !, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
चरण झुकाएँ माथ, उत्पत्ति जग में किए।।311।।

ॐ ह्रीं श्री **जगदयोनये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इत्य' नाम को पाय, पूज्य हुए संसार में।
सादर शीश झुकाय, हम भी वन्दन कर रहे।।312।।

ॐ ह्रीं श्री **इत्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'स्तुत्य' जिनेश, सुर नर इन्द्र मुनीन्द्र से।
दिए जगत उपदेश, वीतराग का जो परम।।313।।

ॐ ह्रीं श्री **स्तुत्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्तुतिश्वर' हे नाथ !, स्तुति करने आये हम।
चरण झुकाये माथ, हाथ जोड़ तव चरण में।।314।।

ॐ ह्रीं श्री **स्तुतीश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्तवनार्ह' जिनेन्द्र !, आप स्तवन योग्य हो।
इन्द्र और राजेन्द्र, करते हैं तव वन्दना।।315।।

ॐ ह्रीं श्री **स्तवनार्हाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हृषीकेश' उपदेश, दिया लोक में आपने।
नाशे कर्म अशेष, इन्द्रिय मन को जीतकर।।316।।

ॐ ह्रीं श्री **हृषीकेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ! आप 'जितजेय', मोहबली को जीतकर।
जग में हुए अजेय, सर्व जहाँ में श्रेष्ठतम।।317।।

ॐ ह्रीं श्री **जितजेयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतक्रिय' करने योग्य, कार्य किए संसार के।
छोड़े सर्व अयोग्य, नहीं योग्य थे आपके।।318।।

ॐ ह्रीं श्री **कृतक्रियाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! 'गणाधिप'आप, द्वादश गण के श्रेष्ठतम।
करें नाम का जाप, मुक्ति पाने के लिए।।319।।

ॐ ह्रीं श्री **गणाधिपाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व लोक में श्रेष्ठ, 'गणज्येष्ठ' है नाम तव।
पाया नाम यथेष्ठ, गुण गण धारी आपने।।320।।

ॐ ह्रीं श्री **गणज्येष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

हो गणना के योग्य तुम, 'गण्य' आपका नाम।
लाख चौरासी गुण सहित, तव पद करूँ प्रणाम।।321।।

ॐ ह्रीं श्री **गण्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्य' आपका नाम शुभ, हो तुम पूर्ण पवित्र।
आप सभी के हो प्रभु, कोई शत्रु न मित्र।।322।।

ॐ ह्रीं श्री **पुण्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गणाग्रणी' तुमने दिया, शिव पथ का उपदेश।
मुक्ति पथ पर बढ़ चले, धार दिगम्बर भेष।।323।।

ॐ ह्रीं श्री **गणाग्रण्ये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त के कोष तुम, अतः 'गुणाकर' नाम।
सार्थक पाया आपने, तव पद करूँ प्रणाम।।324।।

ॐ ह्रीं श्री **गुणाकराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! 'गुणाम्बोधी' कहे, श्रेष्ठ गुणों की खान।
लाख चौरासी आपने, पाये सुगुण महान।।325।।

ॐ ह्रीं श्री **गुणाम्भोधये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'गुणाज्ञ' गुणवान तुम, श्रेष्ठ जगत के ईश।
सब दोषों से हीन हो, अतः झुकाएँ शीश।।326।।

ॐ ह्रीं श्री **गुणज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणनायक' गुण के धनी, गुण मणि आप विशाल।
तव गुण पाने के लिए, गाते हम जयमाल।।327।।

ॐ ह्रीं श्री **गुणनायकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्त्वादि गुण आदरी, 'गुणादरी' हे नाथ !।
सत्त्वप्राप्त गुण हों मुझे, चरण झुकाते माथ।।328।।

ॐ ह्रीं श्री **गुणादरिणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रज तम आदि विभाव गुण, सर्व नशाए आप।
अतः 'गुणोच्छेदी' हुए, मुझे करो निष्पाप।।329।।

ॐ ह्रीं श्री **गुणाच्छेदिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक गुण हीन तुम, 'निर्गुण' आप महान।
ज्ञानादि गुण धारते, जग में रहे प्रधान।।330।।

ॐ ह्रीं श्री **निर्गुणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए प्रभु 'पुण्यगी', पावन वाणी धार।
पावन वाणी हो मेरी, नमन अनन्तो बार।।331।।

ॐ ह्रीं श्री **पुण्यगिरे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ गुणों को धारकर, पाए 'गुण' प्रभु नाम।
भव्य जीव अतएव सब, करते तुम्हें प्रणाम।।332।।

ॐ ह्रीं श्री **गुणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शरण्य' तव चरण की, शरण जिसे मिल जाए।
ऋद्धि-सिद्धि सुख प्राप्त कर, निश्चय मुक्ति पाए।।333।।

ॐ ह्रीं श्री **शरण्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यवाक्' प्रभु आपके, जग को करें निहाल।
सुख-शांति आनन्द दे, कर देते खुशहाल।।334।।

ॐ ह्रीं श्री **पुण्यवाचे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो पावन इस लोक में, 'पूत' आपका नाम।
पावन हमको भी करो, बारम्बार प्रणाम।।335।।

ॐ ह्रीं श्री **पूताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वरेण्य' मुक्ति पति, मुक्ति रमा के कंत।
सर्वश्रेष्ठ परमात्मा, किए कर्म का अंत।।336।।

ॐ ह्रीं श्री **वरेण्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! 'पुण्यनायक' तुम्हीं, सकल पुण्य के ईश।
श्रेष्ठ पुण्य का दान दो, चरण झुकाएँ शीश।।337।।

ॐ ह्रीं श्री **पुण्यनायकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप नहीं गणनीय हो, हे 'अगण्य' जिनराज।
हमको भी निज सम करो, आन सम्हारो काज।।338।।

ॐ ह्रीं श्री **अगण्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुण्यधी' आप हो, बुद्धि पुण्य स्वरूप।
मम बुद्धि को शुद्ध कर, प्रकट करो निज रूप।।339।।

ॐ ह्रीं श्री **पुण्यधिये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुण्य' आपका नाम है, श्रेष्ठ गुणों के नाथ।
पूर्ण गुणी हम बन सकें, नाथ निभाओ साथ।।340।।

ॐ ह्रीं श्री **गुण्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप शाप को नाशकर, हुए 'पुण्यकृत' आप।
नाम जाप कर आपका, हो जाएँ निष्पाप।।341।।

ॐ ह्रीं श्री **पुण्यकृत** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुण्यशासन' तुम्हीं, तुम्हीं पुण्य के कोष।
तुम्हें छोड़ते जीव यह, है भारी अफसोस।।342।।

ॐ ह्रीं श्री **पुण्यशासनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माराम' यह नाम शुभ, पाए श्री जिनेश।
धर्म से हो आराम सुख, कहते हैं तीर्थेश।।343।।

ॐ ह्रीं श्री **धर्मरामाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूलोत्तर गुण के धनी, श्री जिनेन्द्र 'गुणग्राम'।
ऋद्धि-सिद्धि श्री प्राप्त जिन, पाये हैं यह नाम।।344।।

ॐ ह्रीं श्री **गुणग्रामाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप से हीन तव, 'पुण्यापुण्यनिरोध'।
रत्नत्रय से ध्यान कर, स्वयं जगाए बोध।।345।।

ॐ ह्रीं श्री **पुण्यापुण्यनिरोधाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'पापापेत' नाम प्रभु पाए, पाप रहित निष्पाप कहाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।346।।

ॐ ह्रीं श्री **पापापेताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विपापात्मा' कहलाए, पाप कर्म सब दूर भगाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।347।।

ॐ ह्रीं श्री **विपापात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'विपाप्य' कहते प्राणी, है निर्दोष आपकी वाणी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।348।।

ॐ ह्रीं श्री **विपाप्य** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'वीतकल्मष' कहलाए, कल्मष धो कर शुद्धि पाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।349।।

ॐ ह्रीं श्री **वीत्कल्मषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निर्द्वंद्व' द्वन्द्व के नाशी, परिग्रह हीन रहे अविनाशी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।350।।

ॐ ह्रीं श्री **निर्द्वंद्वाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मद' मद को तुमने नाशा, अतिशय केवलज्ञान प्रकाशा।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।351।।

ॐ ह्रीं श्री **निर्मदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांत' किए उपशांत कषाएँ, जिनकी महिमा हम भी गाएँ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।352।।

ॐ ह्रीं श्री **शांताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निर्मोह' मोह के त्यागी, सिद्ध सनातन वसु गुणभागी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।353।।

ॐ ह्रीं श्री **निर्मोहाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुपद्रव' उपद्रव के नाशी, सिद्ध श्री जिन शिवपुर वासी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।354।।

ॐ ह्रीं श्री **निरुपद्रवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्निमेष' एकटक ही लखते, नहीं कभी भी पलक झपकते।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।355।।

ॐ ह्रीं श्री **निर्निमेषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निराहार' आहार न करते, क्षुधा व्याधि औरों की हरते।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।356।।

ॐ ह्रीं श्री **निराहाराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रिया रहित 'निष्क्रिय' कहलाए, क्रियावान को मुक्ति दिलाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।357।।

ॐ ह्रीं श्री **निष्क्रियाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुपल्लव' जी विघ्न नशाए, तव अर्चा को हम भी आए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।358।।

ॐ ह्रीं श्री **निरुपप्लवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कलंक' अकलंक कहे हैं, कोई कलंक भी नहीं रहे हैं।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।359।।

ॐ ह्रीं श्री **निष्कलंकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! 'निरस्तैना' आप कहाए, तव पद वन्दन करने आए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।360।।

ॐ ह्रीं श्री **निरस्तैनसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्धूतागस्' नाम आपका, रहा नाम न कोई पाप का।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।361।।

ॐ ह्रीं श्री **निर्धूतागसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रवहीन 'निरास्रव' स्वामी, आप हुए प्रभु अन्तर्यामी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।362।।

ॐ ह्रीं श्री **निरास्रवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विशाल' ! तव अन्त नहीं है, तुम सम कोई भगवंत नहीं है।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।363।।

ॐ ह्रीं श्री **विशालाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विपुलज्योति' हे जिनवर ! मेरे, शीश झुकाएँ पद में तेरे।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।364।।

ॐ ह्रीं श्री **विपुलज्योतिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अतुल' आपकी तुलना सोई, कर न सके लोक में कोई।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।365।।

ॐ ह्रीं श्री **अतुलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अचिन्त्यवैभव' कहलाए, बृहस्पति न गुण गा पाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।366।।

ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्यवैभवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'सुसंवृत्त' स्वामी, संवर किए पूर्णतः नामी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।367।।

ॐ ह्रीं श्री **सुसंवृत्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगुप्तात्मा' आप कहाए, कर्मारि छू भी न पाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।368।।

ॐ ह्रीं श्री **सुगुप्तात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुभृत्' नाम आपका प्यारा, जाना लोकालोक है सारा।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।369।।

ॐ ह्रीं श्री **सुबुधे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुनयतत्त्ववित्' नय के ज्ञाता, आप रहे त्रिभुवन के त्राता।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ।।370।।

ॐ ह्रीं श्री **सुनयतत्त्ववित्** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ी छंद)

प्रभु 'एकविद्य' हैं ज्ञान युक्त, हैं क्षद्म ज्ञान से पूर्णमुक्त।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।371।।

ॐ ह्रीं श्री **एकविद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाविद्य' जग में महान, पाए विधाएँ विशद ज्ञान।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।372।।

ॐ ह्रीं श्री **महाविद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'मुनि' आपने मौन धार, जीवों को भव से किया पार।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।373।।

ॐ ह्रीं श्री **मुनये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'परिवृढ' तुममें गुण अनेक, पाकर दिखलाया मार्ग नेक।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।374।।

ॐ ह्रीं श्री **परिवृढाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पति' ! आप हो जग प्रधान, स्वामी जग में हो ज्ञानवान।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।375।।

ॐ ह्रीं श्री **पत्ये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धीश' ! आपकी धी महान, सारे जग में पायी प्रधान।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।376।।

ॐ ह्रीं श्री **धीशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विद्यानिधि' हो तुम अनूप, तव चरणों सुर-नर झुकें भूप।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।377।।

ॐ ह्रीं श्री **विद्यानिधये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'साक्षी' ! कर साक्षात्कार, तव पद में मेरा नमस्कार।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।378।।

ॐ ह्रीं श्री **साक्षिणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु ! 'विनेता' तुम विनीत, जग की सब जाने आप रीत।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।379।।

ॐ ह्रीं श्री **विनेत्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विहतान्तक' कर कर्म अन्त, तुम सिद्ध बने पा गुणानन्त।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।380।।

ॐ ह्रीं श्री **विहितान्तकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पिता' ! आप रक्षक जिनेश, तुम जनक कहे जग में विशेष।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।381।।

ॐ ह्रीं श्री **पित्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहे 'पितामह' जग ज्येष्ठ, तुम सम न त्राता कोई श्रेष्ठ।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।382।।

ॐ ह्रीं श्री **पितामहाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब भवदधि 'पाता' करो पार, हम वन्दन करते बार-बार।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।383।।

ॐ ह्रीं श्री **पात्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम कीन्ही तुमने 'पवित्र', तुम रहे जगत के श्रेष्ठ मित्र।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।384।।

ॐ ह्रीं श्री **पवित्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पावन' ! तव महिमा अपार, न पाये जिसका कोई पार।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।385।।

ॐ ह्रीं श्री **पावनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'गति' आपकी गति महान्, पञ्चम गति पाई जग प्रधान।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।386।।

ॐ ह्रीं श्री **गतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'त्राता' ! जग रक्षक जिनेश, आश्रय दाता हो तुम विशेष।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।387।।

ॐ हीं श्री **त्रात्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे वैद्य ! 'भिषग्वर' तुम प्रधान, सब रोग विनाशक हो महान।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।388।।

ॐ हीं श्री **भिषग्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वर्य' ! आप हैं महति मान, प्रभु मुक्ति रमा के वर महान्।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।389।।

ॐ हीं श्री **वर्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु ! आपका 'वरद' हस्त, कर देता है जीवन प्रशस्त।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप।।390।।

ॐ हीं श्री **वरदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चामर छन्द)

'परम' नाम आपका, जीव सभी जानते, श्रेष्ठतम आपको, लोग सभी मानते।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्।।391।।

ॐ हीं श्री **परमाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिनेन्द्र देव ! तुम, 'पुमान' हो पवित्र हो, सर्वप्राणियों के आप, इष्ट श्रेष्ठ मित्र हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्।।392।।

ॐ हीं श्री **पुंसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'कवि' आप हो, ज्ञान के सनाथ हो, भव्य प्राणियों के लिए, आप साथ-साथ हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्।।393।।

ॐ हीं श्री **कवयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराणपुरुष' आपको, लोग सभी जानते, आदियुक्त हो अनन्त, सत्य यही मानते।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्।।394।।

ॐ हीं श्री **पुराणपुरुषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्षीयान्' नाम आप, श्रेष्ठ प्रभु पाए हो, वर्षों की गणना में, आप न समाए हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्।।395।।

ॐ हीं श्री **वर्षीयसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ऋषभ' देव आपका, नाम जग प्रसिद्ध है, देव इन्द्र आदि से, पूज्य हो ये सिद्ध है।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्।।396।।

ॐ हीं श्री **ऋषभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरु' देव आपकी, लोक करें वन्दना, ध्यान किए आप का, होय कभी बन्ध ना।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्।।397।।

ॐ हीं श्री **पुरुवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रतिष्ठाप्रभवादि' सब, लोक तुम्हें जानते, प्रतिष्ठा के योग्य तुम, सर्व यही मानते।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्।।398।।

ॐ हीं श्री **प्रतिष्ठाप्रभवाय**[1] नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (1) प्रतिष्ठाप्रसव भी नाम आता है।

सर्व कार्य सिद्धि के, आप श्रेष्ठ 'हेतु' हो, विशद जिन धर्म के, आप प्रभु केतु हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्।।399।।

ॐ हीं श्री **हेतवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनैकपितामह', आपका शुभ नाम है, शीर्ष पर इस लोक के, प्रभु शुभ धाम है।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्य कार, मंत्र रहा मंगलम्।।400।।

ॐ हीं श्री **भुवनैकपितामहाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

महाशोक ध्वज आदि नाम है, भुवनेकपितामह अन्तिम नाम।
सुर-नर इन्द्रों से पूजित जिन, प्रभु के चरणों विशद प्रणाम।।
एक-एक शुभ नाम मंत्र यह, सर्व जहाँ में मंगलकार।
अर्घ्यं चढ़ाकर पूजा करते, इन्द्र बोलते जय-जयकार।।4।।

ॐ हीं श्री **महाशोकध्वजादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा- श्री वृक्ष लक्षण प्रथम, से लेकर सौ नाम।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, ध्याएँ आठों याम।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(सखी छन्द)

'श्रीवृक्षलक्षणा' भाई, जिन नाम कहा सुखदायी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।401।।

ॐ हीं श्री **वृक्षलणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनप्रभु 'श्लक्ष्ण' कहलाए, जो शिव रमणी को पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।402।।

ॐ ह्रीं श्री **श्लक्ष्णाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लक्षण्य' कहे जिन स्वामी, सब लक्षण पाए नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।403।।

ॐ ह्रीं श्री **लक्षण्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभलक्षण' प्रभु जी पाए, जो सहस्राष्ट कहलाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।404।।

ॐ ह्रीं श्री **शुभलक्षणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'निरक्ष' कहलाए, प्रभु हीन इन्द्रिय गाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।405।।

ॐ ह्रीं श्री **निरक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'पुण्डरीकाक्ष' कहाए, नाशाग्र दृष्टि शुभ पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।406।।

ॐ ह्रीं श्री **पुण्डरीकाक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्कल' कहलाए स्वामी, जग रक्षक अन्तर्यामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।407।।

ॐ ह्रीं श्री **पुष्कलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'पुष्करेक्षण' हैं भाई, शुभ गमन कमल सुखदायी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।408।।

ॐ ह्रीं श्री **पुष्करेक्षणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'सिद्धिदा' स्वामी, सिद्धि दायक जग नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।409।।

ॐ ह्रीं श्री **सिद्धिदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सिद्धसंकल्प' कहाए, कर पूर्ण सभी दिखलाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।410।।

ॐ ह्रीं श्री **सिद्धसंकल्पाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को 'सिद्धात्मा' जानो, सब सिद्धि पाए मानो।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।411।।

ॐ ह्रीं श्री **सिद्धात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सिद्धसाधन' कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।412।।

ॐ ह्रीं श्री **सिद्धसाधनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'बुद्धबोध्य' जगनामी, बोधी तुम पाये स्वामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।413।।

ॐ ह्रीं श्री **बुद्धबोध्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महाबोधि' कहलाये, जो श्रेष्ठ सिद्धियाँ पाये।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।414।।

ॐ ह्रीं श्री **महाबोधये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वर्धमान' जिन स्वामी, गुण पाये अतिशय नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।415।।

ॐ ह्रीं श्री **वर्धमानाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महर्द्धिक' कहलाए, जो श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाये।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।416।।

ॐ ह्रीं श्री **महर्द्धिकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदांग' नाम अति प्यारा, है सार्थक नाम तुम्हारा।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।417।।

ॐ ह्रीं श्री **वेदांगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'वेदविद्' स्वामी, ज्ञानी वेदों के नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।418।।

ॐ ह्रीं श्री **वेदविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'वेद' स्वयं संवेदी, आठों कर्मों के भेदी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।419।।

ॐ ह्रीं श्री **वेद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'जातरूप' कहलाए, शुभ भेष दिगम्बर पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।420।।

ॐ ह्रीं श्री **जातरूपाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सृग्विणी छन्द)

प्रभु 'विदाम्बर' कहे पूर्ण ज्ञानी अरे !, भव्य जीव को सदा पूर्ण ज्ञानी करे।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।421।।

ॐ ह्रीं श्री **विदांवराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'वेदवेद्य' कहलाए हैं ज्ञानी महा, नहीं जानने योग्य तुम्हें कुछ भी रहा।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।422।।

ॐ ह्रीं श्री **वेदवेद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वसंवेद्य' नाम प्राप्त कीन्हें प्रभो !, स्व का अनुभव प्राप्त किए हैं जिन विभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।423।।

ॐ ह्रीं श्री **स्वसंवेद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विवेद' तुम वेद रहित जग में कहे, तीन लोक में पूज्य आप अतिशय रहे।।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।424।।

ॐ ह्रीं श्री **विवेदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वदताम्बर' कहलाए जग में जिन विभो !, सब भाषामय दिव्य ध्वनि देते प्रभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।425।।

ॐ ह्रीं श्री **वदताम्बराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनादिनिधन' रहे संसार में, भवि जीवों के लिए सेतु उपकार में।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।426।।

ॐ ह्रीं श्री **अनादिनिधनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्यक्त' आपको कहते हैं प्राणी सभी, ज्ञान आपका लुप्त नहीं होवे कभी।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।427।।

ॐ ह्रीं श्री **व्यक्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्यक्तवाक्' कहलाए हैं जिनवर प्रभो !, वचन आपके ग्रहण करें प्राणी विभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।428।।

ॐ ह्रीं श्री **व्यक्तवाचे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'व्यक्तशासन' प्रभो ! जग में अहा, शासन प्रभु का व्यक्त लोक में शुभ रहा।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।429।।

ॐ ह्रीं श्री **व्यक्तशासनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र 'युगादिकृत्' कहलाए हैं, षट् कर्मों की शिक्षा जो बतलाए हैं।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।430।।

ॐ ह्रीं श्री **युगादिकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगाधार' प्रभु को कहता है जग सभी, भूल नहीं पाते प्रभु को कोई कभी।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।431।।

ॐ ह्रीं श्री **युगाधराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादि' जग के कर्त्ता जानिए, त्याग किए आरम्भ जगत् का मानिए।।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।432।।

ॐ ह्रीं श्री **युगादये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदादिज' जिनवर तुम ही कहलाए हो, कर्म भूमि का आदि कर शिव पाए हो।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।433।।

ॐ ह्रीं श्री **जगदादिजाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अतीन्द्र' तुम रहित इन्द्रियों से रहे, ज्ञानेन्द्रिय के धारी इस युग में कहे।।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।434।।

ॐ ह्रीं श्री **अतीन्द्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'अतीन्द्रिय' कहते हैं ज्ञानी सभी, इन्द्रिय सुख की चाह नहीं कीन्हीं कभी।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।435।।

ॐ ह्रीं श्री **अतीन्द्रियाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीन्द्र' आप हो श्रेष्ठ बुद्धि धारी प्रभो !, नहीं आप सम कोई श्रेष्ठ जग में विभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।436।।

ॐ ह्रीं श्री **धीन्द्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महेन्द्र' तुम पूज्य हुए शत इन्द्र से, सुर नर पशु आदि जग के अहमिन्द्र से।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।437।।

ॐ ह्रीं श्री **महेन्द्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अतीन्द्रियार्थदृक्' कहलाए जिनवर अहा, सर्वेन्द्रिय से रहित ज्ञान जिनका रहा।।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।438।।

ॐ ह्रीं श्री **अतीन्द्रियार्थदृशे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'अनिन्द्रिय' हीन इन्द्रियों से प्रभो !, इन्द्रियातीत सौख्य प्राप्त कीन्हें विभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।439।।

ॐ ह्रीं श्री **अनिन्द्रियाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अहमिन्द्रार्च्य' आप इन्द्रों से पूज्य हैं, ज्ञान हीन संसारी सर्व अपूज्य हैं।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा।।440।।

ॐ ह्रीं श्री **अहमिन्द्रार्च्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'महेन्द्र महित' तव नाम, जैनागम में कहा है।
करते विशद प्रणाम, इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सब।।441।।

ॐ ह्रीं श्री **महेन्द्रमहिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन पूज्य 'महान्', आप रहे संसार में।
करें विशद गुणगान, प्रभु गुण पाने के लिए।।442।।

ॐ ह्रीं श्री **महते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उद्भव' जगत् प्रसिद्ध, नाम प्राप्त कीन्हें प्रभो !
सार्थक है जो सिद्ध, उद्भव कीन्हें धर्म का।।443।।

ॐ ह्रीं श्री **उद्भवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कारण' आप महान्, धर्म सौख्य सौभाग्य के।
अतिशय रहे प्रधान, कर्म नाश के हेतु तुम।।444।।

ॐ ह्रीं श्री **कारणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्त्ता' तुम तीर्थेश, असि मसि आदि कर्म के।
धार दिगम्बर भेष, मोक्ष मार्ग पर बढ़ चले।।445।।

ॐ ह्रीं श्री **कर्त्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पारग' पाए नाम, पार हुए संसार से।
पद में करें प्रणाम, पाने भव से पार हम।।446।।

ॐ ह्रीं श्री **पारगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तारण तरण जहाज, 'भवतारक' कहलाए हो।
मोक्ष महल का ताज, पाया है प्रभु आपने।।447।।

ॐ ह्रीं श्री **भवतारकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अग्राह्य' तव नाम, अवगाहन अति कठिन है।
पाए तुम शिवधाम, गुण अवगाहन प्राप्त कर।।448।।

ॐ ह्रीं श्री **अग्राह्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगी जन के गम्य, 'गहन' आप अतिशय रहे।
है स्वरूप तव रम्य, सर्व लोक में श्रेष्ठतम।।449।।

ॐ ह्रीं श्री **गहनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुह्य' गुप्त हो आप, पार नहीं पावे कोई।
करें नाम का जाप, योग धारने के लिए।।450।।

ॐ ह्रीं श्री **गुह्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में हुए महान, है 'परार्ध्य' तव नाम शुभ।
कैसे करें बखान, महिमा तुमरी अगम है।।451।।

ॐ ह्रीं श्री **परार्ध्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति श्री के नाथ, 'परमेश्वर' कहलाए हैं।
चरण झुकाएँ माथ, तव पद पाने के लिए।।452।।

ॐ ह्रीं श्री **परमेश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी आप अनन्त, 'अनन्तर्द्धि' कहलाए हो।
नहीं है जिसका अंत, सर्व ऋद्धियों से सहित।।453।।

ॐ ह्रीं श्री **अनन्तर्द्धये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमेयर्द्धि' भगवान्, मर्यादा जिसकी नहीं।
पाए ऋद्धि महान्, जो गणना से पार हैं।।454।।

ॐ ह्रीं श्री **अमेयर्द्धये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचिन्त्यर्द्धि' जिनराज, तुम अचिन्त्य संसार में।
पाए सौख्य समाज, सर्व ऋद्धियाँ प्राप्त कर।।455।।

ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्यर्द्धये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'समग्रधी' नाथ !, ज्ञाता ज्ञेय प्रमाण के।
चरण झुकाएँ माथ, अपने ज्ञान प्रणाम शुभ।।456।।

ॐ ह्रीं श्री **समग्रधिये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राग्रय' हे जिनदेव !, आप लोक में प्रथम हो।
करें चरण की सेव, मुक्ति पाने कर्म से।।457।।

ॐ ह्रीं श्री **प्राग्रयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'प्राग्रहर' आप, पूज्य सुमंगल कार्य में।
नाशक सारे पाप, परम पूज्य परमात्मा।।458।।

ॐ ह्रीं श्री **प्राग्रहराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अभ्यग्र' जिनेन्द्र, सम्मुख हो लोकाग्र के।
पूजें चरण शतेन्द्र, मन वच तन से आपके।।459।।

ॐ ह्रीं श्री **अभ्यग्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'प्रत्यग्र' महान्, आप विलक्षण जगत से।
करें विशद गुणगान, भाव सहित तव पाद में।।460।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रत्यग्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'अग्रय' तुम कहलाए स्वामी, अग्रणीय हो अन्तर्यामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।461।।

ॐ ह्रीं श्री **अग्रयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्रिम' तुमको कहते प्राणी, रहो अग्र जग के कल्याणी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।462।।

ॐ ह्रीं श्री **अग्रिमाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी तुम 'अग्रज' कहलाए, ज्येष्ठ लोक में बनकर आए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।463।।

ॐ ह्रीं श्री **अग्रजाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातपा' तुमने तप धारा, तप में जीवन बीता सारा।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।464।।

ॐ ह्रीं श्री **महातपसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातेज' प्रभु आप कहाए, आभा शुभ तेजस्वी पाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।465।।

ॐ ह्रीं श्री **महातेजसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोदर्क' है नाम निराला, भव से मुक्ति देने वाला।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।466।।

ॐ ह्रीं श्री **महोदर्काय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐश्वर्यदान 'महोदय' जानो, जगतपति प्रभु को पहिचानो।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।467।।

ॐ ह्रीं श्री **महोदयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महायशा' कहलाए स्वामी, यशोपूत हैं जग में नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।468।।

ॐ ह्रीं श्री **महायशसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधाम' है नाम तुम्हारा, उसको पाना लक्ष्य हमारा।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।469।।

ॐ ह्रीं श्री **महाधाम्ने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महासत्त्व' तुमको कहते हैं, शाश्वत आप सदा रहते हैं।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।470।।

ॐ ह्रीं श्री **महासत्त्वाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृति' जिनवर कहलाए, जग जीवों को धैर्य दिलाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।471।।

ॐ ह्रीं श्री **महाधृतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधैर्य' धारी जिन स्वामी, आकुलता त्यागे जग नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।472।।

ॐ ह्रीं श्री **महाधैर्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावीर्य' धारी हैं भारी, फिर भी कहलाये अविकारी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।473।।

ॐ ह्रीं श्री **महावीर्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'महासम्पत' कहलाए, समवशरण में शोभा पाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।474।।

ॐ ह्रीं श्री **महासंपदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'महाबल' कहते प्राणी, वीर्यवान हो जग कल्याणी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।475।।

ॐ ह्रीं श्री **महाबलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'महाशक्ति' के धारी, त्रिभुवन पति हे करुणाकारी !
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।476।।

ॐ ह्रीं श्री **महाशक्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाज्योति' तुमने शुभ पाई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।477।।

ॐ ह्रीं श्री **महाज्योतिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभूति' कहलाए स्वामी, विभव रूप हे अन्तर्यामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।478।।

ॐ ह्रीं श्री **महाभूतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाद्युति' हैं धुति के धारी, कांतिमान प्रभु अतिशयकारी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।479।।

ॐ ह्रीं श्री **महाद्युतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामति' महाबुद्धि पाए, केवलज्ञानी आप कहाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।480।।

ॐ ह्रीं श्री **महामतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

प्रभु तुम 'महानीति' जग सिद्ध, नीति के धारी जगत् प्रसिद्ध।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।481।।

ॐ ह्रीं श्री **महानीतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'महाक्षांतिवान' विशेष, क्षमा के धारी आप जिनेश।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।482।।

ॐ ह्रीं श्री **महाक्षान्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादय' कहलाए जिनराज, धर्म का जिन के सिर पर ताज।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।483।।

ॐ ह्रीं श्री **महादयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा है 'महाप्रज्ञ' शुभ नाम, करें हम उनको शतत् प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।484।।

ॐ ह्रीं श्री **महाप्रज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तव 'महाभाग' है नाम, तुम्हें हम करते विशद प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।485।।

ॐ ह्रीं श्री **महाभागाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी पाते अति 'आनन्द', कहाते अतः प्रभु 'महानन्द'।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।486।।

ॐ ह्रीं श्री **महानंदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकवि' कहलाते हैं आप, नशाए तुमने सारे पाप।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।487।।

ॐ ह्रीं श्री **महाकवये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामह' तुमको कहते लोग, धरा है तुमने अतिशय योग।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।488।।

ॐ ह्रीं श्री **महामहाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाकीर्ति' धारी आप्त, सुयश है सारे जग में व्याप्त।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।489।।

ॐ ह्रीं श्री **महाकीर्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकांति' तव श्रेष्ठ अपार, छवि है अतिशय अपरम्पार।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।490।।

ॐ ह्रीं श्री **महाकान्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावपु' कहलाए तुम नाथ !, निभाओ मोक्ष महल में साथ।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।491।।

ॐ ह्रीं श्री **महावपुषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का 'महादान' है नाम, करें हम चरणों विशद प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।492।।

ॐ ह्रीं श्री **महादानाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाते 'महाज्ञान' हो आप, नशाए तुमने सारे पाप।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।493।।

ॐ ह्रीं श्री **महाज्ञानाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी कहलाए 'महायोग', त्याग कीन्हें हैं सारे भोग।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।494।।

ॐ ह्रीं श्री **महायोगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महागुण' कहलाते जगदीश, गुणों के आप रहे हैं ईश।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।495।।

ॐ ह्रीं श्री **महागुणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामहपति' है प्रभु का नाम, इन्द्र करते हैं चरण प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।496।।

ॐ ह्रीं श्री **महामहपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राप्तमहाकल्याणपञ्चक', तुम्ही हो इस जग में व्यापक।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।496।।

ॐ ह्रीं श्री **प्राप्तमहाकल्याणपंचकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभु' कहलाते जिनराज, चरण में वन्दन करे समाज।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।498।।

ॐ ह्रीं श्री **महाप्रभवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'महाप्रातिहार्याधीश', पूजते सुर नर जिन्हें ऋशीष।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।499।।

ॐ ह्रीं श्री **महाप्रातिहार्याधीशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेश्वर' पाया प्रभु ने नाम, बनाए शिवपुर में जो धाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान।।500।।

ॐ ह्रीं श्री **महेश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

श्री वृक्षलक्षणादि प्रभु के, नाम कहे हैं मंगलकार।
भाव सहित प्रभु नाप जाप कर, प्राणी होते भव से पार।।

विशद योग से तीर्थंकर के, ध्याते हैं हम भी यह नाम।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री **वृक्षलक्षणादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा- महामुन्यादि नाम सौ का, करते हम ध्यान।
पुष्पाञ्जलि करके यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(वेसरी छंद)

'महामुनि' प्रभु जी कहलाए, मुनियों में जो श्रेष्ठ कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।501।।

ॐ ह्रीं श्री **महामुनये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम प्रभु 'महामौनी' पाए, दीक्षा लेकर निज को ध्याए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।502।।

ॐ ह्रीं श्री **महामौनिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'महाध्यानी' जिन स्वामी, ध्यान किए जिन अन्तर्यामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।503।।

ॐ ह्रीं श्री **महाध्यानिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'महादम' आप कहाए, जित इन्द्रिय हो संयम पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।504।।

ॐ ह्रीं श्री **महादमाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'महाक्षम' प्रभु जी पाए, क्षमा धर्म के ईश कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।505।।

ॐ ह्रीं श्री **महाक्षमाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टादश शीलों के स्वामी, 'महाशील' हो अन्तर्यामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।506।।

ॐ ह्रीं श्री **महाशीलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महायज्ञ' है नाम तुम्हारा, कर्मेंधन को तुमने जारा।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।507।।

ॐ ह्रीं श्री **महायज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महामख' भी कहलाए, लोक पूज्यता अतिशय पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।508।।

ॐ ह्रीं श्री **महामखाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'महाव्रतपति' हे स्वामी !, महाव्रतों को धारे नामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।509।।

ॐ ह्रीं श्री **महाव्रतपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मह्य' आप जगपूज्य कहाए, गणधर साधू भी गुण गाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।510।।

ॐ ह्रीं श्री **मह्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकांतिधर' आप कहाए, अतिशय कांति को प्रभु पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।511।।

ॐ ह्रीं श्री **महाकांतिधराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिप' आप कहलाए भाई, तीन लोक की प्रभुता पाई।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।512।।

ॐ ह्रीं श्री **अधिपाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामैत्रीमय' मैत्री धारें, जीवों को भव पार उतारें।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।513।।

ॐ ह्रीं श्री **महामैत्रीमयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमेय' तुमको हम ध्याते, अपरिमेय गुण तुमरे गाते।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।514।।

ॐ ह्रीं श्री **अमेयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोपाय' कहलाए स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।515।।

ॐ ह्रीं श्री **महोपायाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'महोमय' कहते प्राणी, वाणी है प्रभु तव कल्याणी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।516।।

ॐ ह्रीं श्री **महोमयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकारुणिक' आप कहाए, करुणाकर इस जग में गाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।517।।

ॐ ह्रीं श्री **महाकारुणिकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंता' आप कहे जिन स्वामी, ज्ञाता हो प्रभु अन्तर्यामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।518।।

ॐ ह्रीं श्री **मंत्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामंत्र' है नाम तुम्हारा, लगता अतिशय प्यारा-प्यारा।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।519।।

ॐ ह्रीं श्री **महामंत्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महायति' प्रभु जी कहलाए, सब यतियों में श्रेष्ठ कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।520।।

ॐ ह्रीं श्री **महायतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तोटक छन्द)

जिनदेव 'महानाद' आप कहे, सागर जैसे गंभीर रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।521।।

ॐ ह्रीं श्री **महानादाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महाघोष' कहलाए हैं, जो दिव्य ध्वनि सुनाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।522।।

ॐ ह्रीं श्री **महाघोषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'महेज्य' कहाये हैं, महती पूजा को पाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।523।।

ॐ ह्रीं श्री **महेज्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महसांपति' कहलाए हैं, जग में अतिशय दिखलाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।524।।

ॐ ह्रीं श्री **महसांपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'महाध्वरधर' स्वामी, हैं ज्ञानी मुक्ति पथगामी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।525।।

ॐ ह्रीं श्री **महाध्वरधराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धुर्य कहे महिमाधारी, अनगार बने हैं अविकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।526।।

ॐ ह्रीं श्री **धुर्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महौदार्य' प्रभु कहलाए हैं, अतिशय उदारता पाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।527।।

ॐ ह्रीं श्री **महौदार्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'महिष्ठ' भी कहलाए, जो आगम जग को बतलाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।528।।

ॐ ह्रीं श्री **महिष्ठवाचे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'महात्मा' जिन स्वामी, हर जीव रहा है अनुगामी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।529।।

ॐ ह्रीं श्री **महात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महसांधाम' प्रभाकारी, तव कांति रही जग में न्यारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।530।।

ॐ ह्रीं श्री **महसांधाम्ने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'महर्षि' आप कहे, ऋषियों में अतिशय श्रेष्ठ रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।531।।

ॐ ह्रीं श्री **महर्षये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'महितोदय' कहलाए हो, तीर्थंकर पदवी पाए हो।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।532।।

ॐ ह्रीं श्री **महितोदयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महाक्लेशअंकुश' धारी, उपसर्ग परीषह जयकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।533।।

ॐ ह्रीं श्री **महाक्लेशांकुशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शूर' आप क्षय कर्म किए, तब जगे धर्म के दीप हिए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।534।।

ॐ ह्रीं श्री **शूराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाभूतपति' आप कहे, गणधर भी प्रभु तव भक्त रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।535।।

ॐ ह्रीं श्री **महाभूतपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'गुरु' जगत् के कहलाए, न पार कोई महिमा पाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।536।।

ॐ ह्रीं श्री **गुरवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महापराक्रम' के धारी, हैं मंगलमय मंगलकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।537।।

ॐ ह्रीं श्री **महापराक्रमाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने 'अनन्त' गुण प्रगटाए, न महिमा कोई कह पाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।538।।

ॐ ह्रीं श्री **अनन्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाक्रोधरिपु' के हन्ता, कहलाए अतिशय भगवन्ता।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।539।।

ॐ ह्रीं श्री **महाक्रोधरिपवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वशी' आप अतिशयकारी, वश किए स्वयं को अविकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।540।।

ॐ ह्रीं श्री **वशिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'महाभवाब्धिसंतापि', नाम आपका श्रेष्ठतम।
चारों गति निवारि, मोक्ष महल में जा बसे।।541।।

ॐ ह्रीं श्री **महाभवाब्धिसंतारिणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहारि को नाश, 'महामोहाद्रिसूदन' बने।
कीन्हे कर्म विनाश, परम सिद्ध पद पा लिए।।542।।

ॐ ह्रीं श्री **महामोहाद्रिसूदनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महागुणाकर' आप, रत्नत्रय के कोष हो।
करें नाम का जाप, धर्म निधि हमको मिले।।543।।

ॐ ह्रीं श्री **महागुणाकराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्त' आपका नाम, क्षमा आदि गुण धारते।
चरणों करें प्रणाम, गुण पाने तुम सम विशद।।544।।

ॐ ह्रीं श्री **क्षान्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महायोगीश्वर' आप, कहलाए परमात्मा।
नाश किए सब पाप, नाम आपका हम जपें।।545।।

ॐ ह्रीं श्री **महायोगीश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शमी' शांत परिणाम, रहे आपके नित्य ही।
बारम्बार प्रणाम, शांति पाने के लिए।।546।।

ॐ ह्रीं श्री **शमिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाध्यानपति' नाथ !, ध्यान किए हो श्रेष्ठतम।
चरण झुकाएँ माथ, ध्यान शुभम् हम कर सकें।।547।।

ॐ ह्रीं श्री **महाध्यानपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'ध्यातमहाधर्म', धर्म अहिंसा के धनी।
करें सदा सत् कर्म, मुक्ति पाने के लिए।।548।।

ॐ ह्रीं श्री **ध्यातमहाधर्माय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च 'महाव्रत' श्रेष्ठ, धारण करके अपने।
पाया धर्म यथेष्ठ, पार हुए संसार से।।549।।

ॐ ह्रीं श्री **महाव्रताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म अरि का नाश, 'महाकर्मअरिहा' किए।
कीन्हें ज्ञान प्रकाश, मुक्त हुए वसु कर्म से।।550।।

ॐ ह्रीं श्री **महाकर्मारिघ्ने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बने प्रभु 'आत्मज्ञ', निज स्वरूप को जानकर।
अतिशय हुए गुणज्ञ, गुण अनन्त पाए प्रभो !।।551।।

ॐ ह्रीं श्री **आत्मज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब देवों के देव, 'महादेव' हो आप जिन।
करें चरण की सेव, सब इन्द्रों से पूज्य तुम।।552।।

ॐ ह्रीं श्री **महादेवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'महेशिता' नाम, पाये हो ऐश्वर्य सब।
शत्-शत् करें प्रणाम, कृपा पात्र बनकर रहें।।553।।

ॐ ह्रीं श्री **महेशित्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशे सर्व क्लेश, 'सर्वक्लेशापह' प्रभो !।
पूजें तुम्हें जिनेश, मम क्लेश उपशांत हों।।554।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वक्लेशापहाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'साधु' आप महान्, किए साधना श्रेष्ठतम।
मिले मुझे यह ज्ञान, संयम का पालन करें।।555।।

ॐ ह्रीं श्री **साधवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वदोषहर' देव, सर्व गुणों की खान हैं।
वन्दू तुम्हें सदैव, निज गुण पाने के लिए।।556।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वदोषहराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हर' पाए प्रभु नाम, हर्त्ता पापों के प्रभु।
पाया है निज धाम, कर्म नाशकर आपने।।557।।

ॐ ह्रीं श्री **हराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'असंख्येय', गुण असंख्य धारी प्रभु।
मेरा है यह ध्येय, हम भी वह गुण पा सकें।।558।।

ॐ ह्रीं श्री **असंख्येयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणना के न योग्य, 'अप्रमेयात्मा' हैं प्रभु।
जो भी रहे अयोग्य, वह गुण नाशे आपने।।559।।

ॐ ह्रीं श्री **अप्रमेयात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'शमात्मा' नाथ, शांत स्वरूपी हैं प्रभु।
करता रहूँ प्रणाम, शांत भाव से हर समय।।560।।

ॐ ह्रीं श्री **शमात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-चामर)

'प्रशमाकर' तव नाम रहा, अतिशय कारी श्रेष्ठ अहा।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।561।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रशमाकराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वयोगीश्वर' आप कहे, सब मुनियों में श्रेष्ठ रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।562।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वयोगीश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अचिन्त्य' महिमाधारी, तुम हो अतिशय गुणकारी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।563।।

ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'श्रुतात्मा' कहलाए, श्रुत स्वरूपता को पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।564।।

ॐ ह्रीं श्री **श्रुतात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विष्टरश्रव' जिनदेव कहे, सर्व लोक में श्रेष्ठ रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।565।।

ॐ ह्रीं श्री **विष्टरश्रवसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दान्तात्मा' जिन कहलाए, विजय आप निज पर पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।566।।

ॐ ह्रीं श्री **दान्तात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'दमतीर्थेश' रहे, सकल परीषहजयी कहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।567।।

ॐ ह्रीं श्री **दमतीर्थेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगात्मा' शुभ नाम अहा, प्रभु आपका श्रेष्ठ रहा।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।568।।

ॐ ह्रीं श्री **योगात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानसर्वग' कहे स्वामी, मोक्ष महल के अनुगामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।569।।

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानसर्वगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रधान' अतिशय धारी, महिमा जग से है न्यारी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।570।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रधानाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'आत्मा' कहलाए, निज में निजता को पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।571।।

ॐ ह्रीं श्री **आत्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रकृति' आप कहाते हो, निज स्वरूपता पाते हो।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।572।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रकृतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम' प्रभु हैं लोकजयी, सर्व श्रेष्ठ हैं कर्म क्षयी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।573।।

ॐ ह्रीं श्री **परमाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमोदय' तुम हो स्वामी, घट-घट के अन्तर्यामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।574।।

ॐ ह्रीं श्री **परमोदयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रक्षीणाबंध' कहे, कर्म बन्ध से हीन रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।575।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रक्षीणबंधाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कामारी' कहलाए, काम शत्रु पर जय पाये।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।576।।

ॐ ह्रीं श्री **कामारये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'क्षेमकृत्' हो स्वामी, क्षेम किया करते नामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।577।।

ॐ ह्रीं श्री **क्षेमकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमशासन' जिन आप रहे, मंगलमय भगवन्त कहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।578।।

ॐ ह्रीं श्री **क्षेमशासनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणव' आपका नाम अहा, प्राणी मात्र से प्रेम रहा।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।579।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रणवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणय' आप कहलाते हो, मंत्र रूपता पाते हो।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।580।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रणयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

नाम रहा प्रभु का शुभम्, मंगलकारी 'प्राण'।
दीन बन्धु कहलाए हैं, दिए जगत को त्राण।।581।।

ॐ ह्रीं श्री **प्राणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'प्राणद' कहे, रक्षक जग के ईश।
प्राणी चरणों में सभी, झुका रहे हैं शीश।।582।।

ॐ ह्रीं श्री **प्राणदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणतेश्वर' शुभ नाम है, भव्यों के भगवान।
चरण शरण का दास यह, सारा रहा जहान।।583।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रणतेश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रमाण' ज्ञानी प्रभो, पाये सम्यक् ज्ञान।
सर्व लोक में आपका, है ऊँचा स्थान।।584।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रमाणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणिधी' निधियों के प्रभो !, स्वामी आप महान।
गुण अनन्त की खान हो, करें विशद गुणगान।।585।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रणिधये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग कला में 'दक्ष' प्रभु, अतः 'दक्ष' है नाम।
दक्ष बनूँ दो दक्षिणा, बारम्बार प्रणाम।।586।।

ॐ ह्रीं श्री **दक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन दाता आप हो, 'दक्षिण' आप जिनेश।
चरण वन्दना हम करें, पाने को निज देश।।587।।

ॐ ह्रीं श्री **दक्षिणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अध्वर्य' जिनेश हो, सर्व गुणों के ईश।
अतः आपके चरण में, झुका रहे हम शीश।।588।।

ॐ ह्रीं श्री **अध्वर्यवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपथ के राही बने, 'अध्वर' पाया नाम।
चरण वन्दना हम करें, जिन के ऋजु परिणाम।।589।।

ॐ ह्रीं श्री **अध्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनन्त के कोष प्रभु, पाए शुभ 'आनन्द'।
राग-द्वेष अरु मोहतज, नाश किए सब द्वन्द्व।।590।।

ॐ ह्रीं श्री **आनन्दाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नन्दन' आप जिनेश हो, तीन लोक के नाथ।
दाता तीनों लोक के, चरण झुकाएँ माथ।।591।।

ॐ ह्रीं श्री **नन्दनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-शांति के कोष प्रभु, कहलाते हैं 'नन्द'।
निज स्वभाव में खो गये, मेरे सारे द्वन्द।।592।।

ॐ ह्रीं श्री **नन्दाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन्दनीय प्रभु लोक में 'वन्द्य' कहाए आप।
विशद शुद्ध आदर्श पा, नाशे सारे पाप।।593।।

ॐ ह्रीं श्री **वंद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अनिन्द्य' तुम लोक में, सब दोषों से हीन।
गुण अनन्त के पुञ्ज हो, अतिशय ज्ञान प्रवीण।।594।।

ॐ ह्रीं श्री **अनिंद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभिनन्दन' तव नाम है, जग वन्दन के योग्य।
और लोक में देव जो, सारे रहे अयोग्य।।595।।

ॐ ह्रीं श्री **अभिनंदनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामह' तुमने कर्म का, क्षण में किया विनाश।
बनें आप जैसे प्रभो !, लगी हमारी आस।।596।।

ॐ ह्रीं श्री **कामघ्ने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कामद' है नाम तव, सारे जग में इष्ट।
नाम जाप से आपके, नशते सर्व अनिष्ट।।597।।

ॐ ह्रीं श्री **कामदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'काम्य' आप कामनीय हो, मंगलमयी जिनेन्द्र।
तव चरणों में वन्दना, करते इन्द्र नरेन्द्र।।598।।

ॐ ह्रीं श्री **काम्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामधेनु' कहलाए तव, वांछित फल दातार।
इच्छा मम पूरण करो, वन्दन बारम्बार।।599।।

ॐ ह्रीं श्री **कामधेनवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'अरिञ्जय' आपका, अरि का किया विनाश।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, कीन्हा लोक प्रकाश।।600।।

ॐ ह्रीं श्री **अरिंजयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

महामुनि शुभ नाम आदि कर, रहा अरिञ्जय अन्तिम नाम।
भाव सहित यह नाम जाप कर, प्राणी पावें मुक्ति धाम।।
नाम जाप की महिमा जग में, कही गई है अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करें वन्दना बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं श्री **महामुन्यादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा- आदि का है नाम यह, असंस्कृतसुसंस्कार।
पुष्पाञ्जलि से पूजते, पाने को भव पार।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द भुजंगी)

'असंस्कृतसुसंस्कार' नाम आपका, अन्त किया आपने सर्वपाप का।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें।।601।।

ॐ ह्रीं श्री **असंस्कृतसुसंस्काराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्राकृत' तुम्हीं हो स्वाभाविक प्रभो !, ज्ञान के आप स्वामी कहाए विभो !
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें।।602।।

ॐ ह्रीं श्री **अप्राकृताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो ! 'वैकृतान्तकृत' कहाए तुम्ही, मोह अरु विकारादि नशाए तुम्ही।।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें,भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें।।603।।

ॐ ह्रीं श्री **वैकृतांतकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंतकृत' आप हो कर्म नाशिया, जन्म-जरा-मृत्यु का नाश तुम किया।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें।।604।।

ॐ ह्रीं श्री **अंतकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो ! 'कांतगु' नाम आपका, दिव्य ध्वनि से हो क्षय पूर्ण पाप का।।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें।।605।।

ॐ ह्रीं श्री **कांतगवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कान्त' हो प्रभु आप महारम्य हो, हे त्रिलोकी प्रभु ज्ञान के गम्य हो।।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें।।606।।

ॐ ह्रीं श्री **कांताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आप कहलाए 'चिंतामणि', साधु संघ के प्रभु आप हो गणी।।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें।।607।।

ॐ ह्रीं श्री **चिन्तामणये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभीष्टद' प्रभो लोक में कहे आप हो, नष्ट सभी आप करते संताप हो।।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें।।608।।

ॐ ह्रीं श्री **अभीष्टदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अजित' आप हो कर्म इन्द्रियजयी, अतः कहलाए आप हो कर्म के क्षयी।।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें।।609।।

ॐ ह्रीं श्री **अजिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितकामारि' आप जीत काम को, अन्त किया आपने सर्वपाप का।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें।।610।।

ॐ ह्रीं श्री **जितकामारये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

प्रभु 'अमित' आप कहलाए, न माप कोई भी पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।611।।

ॐ ह्रीं श्री **अमिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अमितशासन' कहलाए, अनुपम पदवी को पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।612।।

ॐ ह्रीं श्री **अमितशासनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्रोध' कहाए स्वामी, जीते कषाय जग नामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।613।।

ॐ ह्रीं श्री **जितक्रोधाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जितामित्र' अविकारी, तुम जीते जगती सारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।614।।

ॐ ह्रीं श्री **जितामित्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्लेश' आप हो स्वामी, तुम हो जिन अन्तर्यामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।615।।

ॐ ह्रीं श्री **जितक्लेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'जितान्तक' भाई, मृत्यु जीते दुखदायी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।616।।

ॐ ह्रीं श्री **जितांतकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'जिनेन्द्र' अविकारी, इस जग में मंगलकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।617।।

ॐ ह्रीं श्री **जिनेन्द्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'परमानन्द' सुखारी, हो जन-जन के हितकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।618।।

ॐ ह्रीं श्री **परमानंदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'मुनीन्द्र' कहलाए, मुनियों के स्वामी गाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।619।।

ॐ ह्रीं श्री **मुनीन्द्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुन्दुभिस्वन' हे स्वामी, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।620।।

ॐ ह्रीं श्री **दुंदुभिस्वनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महेन्द्रवंद्या' जानो, जग पूज्य प्रभु पहिचानो।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।621।।

ॐ ह्रीं श्री **महेन्द्रवंद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगीन्द्र' हुए अविकारी, इस जग में करुणाकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।622।।

ॐ ह्रीं श्री **योगीन्द्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'यतीन्द्र' कहलाए, इस जग में युक्ति पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।623।।

ॐ ह्रीं श्री **यतीन्द्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'नाभिनन्दन' स्वामी, हे मोक्ष महापथ गामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।624।।

ॐ ह्रीं श्री **नाभिनंदनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नाभेय' आप कहलाए, आदिम तीर्थंकर गाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।625।।

ॐ ह्रीं श्री **नाभेयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नाभिजा' कर्म के नाशी, रवि केवलज्ञान प्रकाशी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।626।।

ॐ ह्रीं श्री **नाभिजा** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अजात' हे स्वामी !, हो जन्म रहित शिवगामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।627।।

ॐ ह्रीं श्री **अजाताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुव्रत' सुव्रत के धारी, हे महाव्रती ! अनगारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।628।।

ॐ ह्रीं श्री **सुव्रताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'मनु' सुपथ के दाता, हे कर्मभूमि ! विज्ञाता।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।629।।

ॐ ह्रीं श्री **मनवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उत्तम' से उत्तम गाए, त्रैलोक्यपति कहलाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई।।630।।

ॐ ह्रीं श्री **उत्तमाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री छन्द)

हे जिन ! आप 'अभेद्य' कहाए, तुम्हें भेद कोई न पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।631।।

ॐ ह्रीं श्री **अभेद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अनत्यय' आप कहाए, नष्ट नहीं कोई कर पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।632।।

ॐ ह्रीं श्री **अनत्ययाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी श्रेष्ठ 'अनाशवान' गाए, महिमा पार न कोई पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।633।।

ॐ ह्रीं श्री **अनाश्वते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिक' आपको कहते प्राणी, ऐसा मान रही जिनवाणी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।634।।

ॐ ह्रीं श्री **अधिकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिगुरु' नाम आपने पाया, जन-जन को सद्मार्ग दिखाया।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।635।।

ॐ ह्रीं श्री **अधिगुरवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगी' आपकी है शुभ वाणी, प्राणी मात्र की है कल्याणी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।636।।

ॐ ह्रीं श्री **सुगिरे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुमेधा' बुद्धि के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।637।।

ॐ ह्रीं श्री **सुमेधसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'विक्रमी' जग में आले, सर्व लोक में आप निराले।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।638।।

ॐ ह्रीं श्री **विक्रमिणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वामी' आप प्रभो ! कहलाए, रक्षक सर्व जहाँ में गाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।639।।

ॐ ह्रीं श्री **स्वामिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुरादिधर्ष' कहाए स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।640।।

ॐ ह्रीं श्री **दुराधर्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

'निरुत्सुक' कहलाए जिनराज, सभी प्राणी को तुम पर नाज।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।641।।

ॐ ह्रीं श्री **निरुत्सुकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हो सारे जग को इष्ट, अतः कहलाए आप 'विशिष्ट'।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।642।।

ॐ ह्रीं श्री **विशिष्टाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्टभुक्' कहते हैं कई लोग, शिष्टता का पाये संयोग।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।643।।

ॐ ह्रीं श्री **शिष्टभुजे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्ट' है प्रभु का अतिशय नाम, शिष्ट हो करते चरण प्रणाम।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।644।।

ॐ ह्रीं श्री **शिष्टाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य के 'प्रत्यय' हो हे नाथ !, झुकाते तव चरणों हम माथ।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।645।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रत्ययाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'कमनीय' कहाए आप, दर्श कर मिटते हैं अभिशाप।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।646।।

ॐ ह्रीं श्री **कामनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनघा' हो पाप विहीन, पुण्य के फल में रहते लीन।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।647।।

ॐ ह्रीं श्री **अनघाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमि' है प्रभो आपका नाम, करें हम चरणों विशद प्रणाम।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।648।।

ॐ ह्रीं श्री **क्षेमिणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत के 'क्षेमंकर' जिनराज, चरण में झुकता सकल समाज।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।649।।

ॐ ह्रीं श्री **क्षेमंकराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'अक्षय' हो क्षय से हीन, लोक में रहते हो स्वाधीन।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।650।।

ॐ ह्रीं श्री **अक्षयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हो 'क्षेमधर्मपति' आप, नशाने वाले सारे पाप।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।651।।

ॐ ह्रीं श्री **क्षेमधर्मपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षमी' हो जग में आप विशेष, क्षमा का देते हो संदेश।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।652।।

ॐ ह्रीं श्री **क्षमिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम हो जग में 'अग्राह्य', जगत में रहते जग से बाह्य।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।653।।

ॐ ह्रीं श्री **अग्राह्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप का नाम 'ज्ञाननिग्राह्य', नहीं हो अज्ञानी के ग्राह्य।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।654।।

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञाननिग्राह्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'ज्ञानसुगम्य' जिनेश, जानते ज्ञानी तुम्हें विशेष।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।655।।

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानगम्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुत्तर' तुम हो प्रभु विशेष, नहीं तुम सम कोइ और जिनेश।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।656।।

ॐ ह्रीं श्री **निरुत्तराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'सुकृति' हो अतिशयकार, श्रेष्ठ हो सुकृति के आधार।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।657।।

ॐ ह्रीं श्री **सुकृतिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धातु' हो तुम हे जिन भगवन्त, शब्द के ज्ञाता आप अनन्त।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।658।।

ॐ ह्रीं श्री **धातवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'इज्यार्ह' कहें कई लोग, पूज्य हो तुम पूजा के योग।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।659।।

ॐ ह्रीं श्री **इज्यार्हाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुनय' तुम नय के हो सापेक्ष, कुनय से पूर्ण रहे निरपेक्ष।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।660।।

ॐ ह्रीं श्री **सुनयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री छन्द)

नाथ 'श्रीसुनिवास' कहाए, श्री में प्रभु जी धाम बनाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।661।।

ॐ ह्रीं श्री **सुनिवासाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुरानन' ब्रह्मा तुम स्वामी, मोक्ष मार्ग के हो अनुगामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।662।।

ॐ ह्रीं श्री **चतुराननाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुर्वक्त्र' तुमको सुर देखें, अपना स्वामी प्रभु जी लेखें।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।663।।

ॐ ह्रीं श्री **चतुर्वक्त्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'चतुरास्य' करें पद वन्दन, जन्म-जरादिका हो खण्डन।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।664।।

ॐ ह्रीं श्री **चतुरास्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'चतुर्मुख' आप कहाए, चऊ दिशि दर्शन सबने पाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।665।।

ॐ ह्रीं श्री **चतुर्मुखाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यात्मा' प्रभु सत्य स्वरूपी, आप कहाए हो चिद्रूपी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।666।।

ॐ ह्रीं श्री **सत्यात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यविज्ञान' आप कहलाए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।667।।

ॐ ह्रीं श्री **सत्यविज्ञानाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुवाक्' तुम्ही हो स्वामी, वाक् सुधामृत देते नामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।668।।

ॐ ह्रीं श्री **सत्यवाचे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुशासन' तुमने पाया, भवि जीवों का भाग्य जगाया।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।669।।

ॐ ह्रीं श्री **सत्यशासनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्याशीष' है नाम तुम्हारा, सर्व जहाँ में अपरम्पारा।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।670।।

ॐ ह्रीं श्री **सत्याशिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसंधान' आप कहलाए, तीन लोक की प्रभुता पाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।671।।

ॐ ह्रीं श्री **सत्यसंधानाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्य' आप हो सत् पथदर्शी, द्वादशांग जिन वाक्प्रदर्शी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।672।।

ॐ ह्रीं श्री **सत्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यपरायण' आप कहाए, जन-जन को सन्मार्ग दिखाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।673।।

ॐ ह्रीं श्री **सत्यपरायणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेयान्' स्थिर हो स्वामी, अविकारी हे अन्तर्यामी !।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।674।।

ॐ ह्रीं श्री **स्थेयसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थवीयान्' महिमा के धारी, तीन लोक में करुणाकारी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।675।।

ॐ ह्रीं श्री **स्थवीयसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नेदियान्' प्रभु आप कहाए, अतिशय महिमा को दिखलाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।676।।

ॐ ह्रीं श्री **नेदीयसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दवीयान्' है नाम तुम्हारा, सारे जग का संकटहारा।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।677।।

ॐ ह्रीं श्री **दवीयसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! 'दूरदर्शन' कहलाते, दूर से दर्शन प्राणी पाते।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।678।।

ॐ ह्रीं श्री **दूरदर्शनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अणोरणीयान' कहाते, नहीं दृष्टिगोचर हो पाते।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।679।।

ॐ ह्रीं श्री **अणोरणीयसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनणू' कहते तुमको प्राणी, ऐसी है शुभ आगम वाणी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।680।।

ॐ ह्रीं श्री **अनणवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

'गुरुराद्यगरीयसा' गाए, इस जग के गुरु कहाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।681।।

ॐ ह्रीं श्री **गरीयसमाद्यगुरवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदायोग' हैं आले, चेतन में रमने वाले।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।682।।

ॐ ह्रीं श्री **सदायोगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदाभोग' हैं स्वामी, हैं प्रातिहार्य अनुगामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।683।।

ॐ ह्रीं श्री **सदाभोगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदातृप्त' कहलाते, तृप्ति भोगों से पाते।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।684।।

ॐ ह्रीं श्री **सदातृप्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम 'सदाशिव' प्यारा, भव्यों का एक सहारा।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।685।।

ॐ ह्रीं श्री **सदाशिवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सदागति' के धारी, पञ्चम गति प्यारी-प्यारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।686।।

ॐ ह्रीं श्री **सदागतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदासौख्य' शुभ पाया, यह है संयम की माया।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।687।।

ॐ ह्रीं श्री **सदासौख्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'सदाविद्य' जिन स्वामी, मुक्ति पथ के अनुगामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।688।।

ॐ ह्रीं श्री **सदाविद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'सदोदय' भाई, यह है प्रभु की प्रभुताई।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।689।।

ॐ ह्रीं श्री **सदोदयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'सुघोष' कहलाए, शुभ दिव्य ध्वनि सुनाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।690।।

ॐ ह्रीं श्री **सुघोषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुमुख' के धारी, छवि सुन्दर अतिशयकारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।691।।

ॐ ह्रीं श्री **सुमुखाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सौम्य' मूर्ति कहलाए, जिन श्रेष्ठ सौम्यता पाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।692।।

ॐ ह्रीं श्री **सौम्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुखद' सुखों के धारी, सुखदायी हो अनगारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।693।।

ॐ ह्रीं श्री **सुखदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुहित' सु हितकर गाए, जो शास्वत सुख उपजाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।694।।

ॐ ह्रीं श्री **सुहिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'सुहृत' हितु कहलाए, जग हित करने को आए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।695।।

ॐ ह्रीं श्री **सुहृदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'सुगुप्त' जिन स्वामी, तव चरणों में प्रणमामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।696।।

ॐ ह्रीं श्री **सुगुप्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'गुप्तिभृत' गुप्ति धारी, निज आतम ब्रह्म बिहारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।697।।

ॐ ह्रीं श्री **गुप्तिभृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'गोप्ता' पाए, रक्षक जग के कहलाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।698।।

ॐ ह्रीं श्री **गोप्त्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकाध्यक्ष' कहाते, जो व्याधि उपाधि नशाते।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।699।।

ॐ ह्रीं श्री **लोकाध्यक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कहे 'दमेश्वर' भाई, निज के ऊपर जय पाई।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।700।।

ॐ ह्रीं श्री **दमेश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

प्रथम असंस्कृत को आदिकर, अन्त दमेश्वर तक सौ नाम।
पूज्य हुए हैं तीन लोक में, उनको बारम्बार प्रणाम।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम सम्यक् अर्चन।
तव पद पाने हेतु प्रभु हो, चरणों में शत्-शत् वन्दन।।7।।

ॐ ह्रीं श्री **असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा- वृहद् बृहस्पति आदि शुभ, पढ़कर के शत नाम।
ध्याकर के हम भी विशद, हो जाएँ निष्काम।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(सुखमा छन्द)

'वृहद् बृहस्पति' आप कहाए, सुरपति मिलकर शरण में आए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।701।।

ॐ ह्रीं श्री **वृहद्बृहस्पतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वाग्मी' आप कहाए, श्रेष्ठ वचन सुनने तव आए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।702।।

ॐ ह्रीं श्री **वाग्मिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वाचस्पति' हे अतिशयकारी !, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।703।।

ॐ ह्रीं श्री **वाचस्पतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'उदारधी' जग के स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी !।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।704।।

ॐ ह्रीं श्री **उदारधिये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'मनीषी' प्रभु कहलाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।705।।

ॐ ह्रीं श्री **मनीषिणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धिषण' आपको कहते भाई, प्रभु सर्वज्ञता तुमने पाई।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।706।।

ॐ ह्रीं श्री **धिषणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'धीमान्' कहाए, कौन आपकी महिमा गाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।707।।

ॐ ह्रीं श्री **धीमते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शेमुषीश' हो जग के त्राता, अतिशयकारी भाग्य विधाता।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।708।।

ॐ ह्रीं श्री **शेमुषीशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गिरांपति' प्रभु जो कहलाए, सब भाषामय ध्वनि सुनाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।709।।

ॐ ह्रीं श्री **गिरांपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकरूप' प्रभु आप कहाए, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर गाये।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।710।।

ॐ ह्रीं श्री **नैकरूपाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नयोत्तुंग' तुमको सब जाने, नय के ज्ञाता तुमको माने।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।711।।

ॐ ह्रीं श्री **नयोत्तुंगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकात्मा' त्रिभुवन के स्वामी, गुण पाये तुमने प्रभु नामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।712।।

ॐ ह्रीं श्री **नैकात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकधर्मकृत' आप कहाए, धर्म अनेक वस्तु में गाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।713।।

ॐ ह्रीं श्री **नैकधर्मकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अविज्ञेय' जिन प्रभु कहलाए, महिमा कोई जान न पाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।714।।

ॐ ह्रीं श्री **अविज्ञेयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतर्क्यात्मा' तुम स्वामी, तर्क रहित हो अन्तर्यामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।715।।

ॐ ह्रीं श्री **अप्रतर्क्यात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'कृतज्ञ' तव महिमा न्यारी, जन-जन के हो करुणाकारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।716।।

ॐ ह्रीं श्री **कृतज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतलक्षण' है नाम तुम्हारा, लगता सबको प्यारा-प्यारा।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।717।।

ॐ ह्रीं श्री **कृतलक्षणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानगर्भ' स्वामी कहलाए, निज का अतिशय ज्ञान जगाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।718।।

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानगर्भाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयागर्भ' त्रिभुवन में गाए, प्राणी मात्र पर दया दिखाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।719।।

ॐ ह्रीं श्री **दयागर्भाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रत्नगर्भ' महिमा के धारी, वर्षे रत्न गर्भ में भारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।720।।

ॐ ह्रीं श्री **रत्नगर्भाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ि छन्द)

हे नाथ ! 'प्रभास्वर' कहे आप, त्रैलोक्य प्रकाशी रहित पाप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।721।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रभास्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पद्मगर्भ' तुम हो अनन्त, कीन्हा है गर्भ का पूर्ण अन्त।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।722।।

ॐ ह्रीं श्री **पद्मगर्भाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जगद्गर्भ' जग में महान्, तुमने पाए थे तीन ज्ञान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।723।।

ॐ ह्रीं श्री **जगद्गर्भाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'हेमगर्भ' हैं कांतिमान, है वर्ण स्वर्ण सम शोभमान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।724।।

ॐ ह्रीं श्री **हेमगर्भाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे देव ! 'सुदर्शन' कहे आप, तव दर्शन से कट जाँय पाप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।725।।

ॐ ह्रीं श्री **सुदर्शनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'लक्ष्मीवान्' त्रैलोक्य नाथ, सब वन्दन करते जोड़ हाथ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।726।।

ॐ ह्रीं श्री **लक्ष्मीवते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'त्रिदशाध्यक्ष' जग में महान, अतिशयकारी गुण के निधान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।727।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिदशाध्यक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'दृढ़ीयान' दृढ़ हो अनूप, सुर-नर झुकते तव चरण भूप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।728।।

ॐ ह्रीं श्री **दृढ़ीयसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'इन' त्रिभुवन के रहे ईश, जग जीव झुकाते चरण शीश।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।729।।

ॐ ह्रीं श्री **इनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ईशित' तुम हो जग में जिनेश, सब दोष निवारक हो विशेष।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।730।।

ॐ ह्रीं श्री **ईशित्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है श्रेष्ठ 'मनोहर' विशद रूप, अतिशयकारी जग में अनूप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।731।।

ॐ ह्रीं श्री **मनोहराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'मनोज्ञांग' हो सुभग रूप, सुख-शांति प्रदायक शांत रूप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।732।।

ॐ ह्रीं श्री **मनोज्ञांगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धीर' वीर गुण के निधान, त्रिभुवन के ज्ञाता हो महान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।733।।

ॐ ह्रीं श्री **धीराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गम्भीर' आप जग में विशेष, न तुम सम कोई है जिनेश।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।734।।

ॐ ह्रीं श्री **गम्भीरशासनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धरमयूप' जग में प्रधान, तुम गुण रत्नों के हो निधान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।735।।

ॐ ह्रीं श्री **धर्मयूपाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'दयायाग' सुखप्रद जिनेश, तुम नाश किए सब राग-द्वेष।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।736।।

ॐ ह्रीं श्री **दयायागाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धरमनेमि' जिनवर महान्, तुम धर्म धुरी हो जग में प्रधान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।737।।

ॐ ह्रीं श्री **धर्मनेमये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'मुनीश्वर' रहे आप, अविकारी नाशे सर्व पाप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।738।।

ॐ ह्रीं श्री **मुनीश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धर्मचक्रायुध' धर्म रूप, इस से भी हो तुम प्रथग्रूप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।739।।

ॐ ह्रीं श्री **धर्मचक्रायुधाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'देव' परम गुण के निधान, तुम जगत पूज्य जग में महान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज।।740।।

ॐ ह्रीं श्री **देवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

'कर्महा' तुम हो नाथ, सब कर्मों के नाशी, अनन्त चतुष्टय प्राप्त, केवलज्ञान प्रकाशी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।741।।

ॐ ह्रीं श्री **कर्मघ्ने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धरमघोषण' है नाम, श्रेष्ठ धर्म के धारी, शिव नगरी के साथ, जग में मंगलकारी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।742।।

ॐ ह्रीं श्री **धर्मघोषणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमोघवच' देव, व्यर्थ वचन न जावें, हृदय धारकर जीव, मुक्ति वधु को पावें।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।743।।

ॐ ह्रीं श्री **अमोघवाचे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमोघाज्ञ' भगवान, आज्ञा सुर सिर धारें, प्राणी आज्ञा पाय, मुक्ति मार्ग सम्हारें।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।744।।

ॐ ह्रीं श्री **अमोघाज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मल' मल से हीन, कर्म सभी तुम नाशे, हुए स्वयं में लीन, निज स्वरूप प्रकाशे।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।745।।

ॐ ह्रीं श्री **निर्मलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमोघशासन' सुनाम, जिनवर तुमने पाया, सकल सुखों का धाम, जग को प्रभु बनाया।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।746।।

ॐ ह्रीं श्री **अमोघशासनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुरूप' सुखकार, जग में आप निराले, नर सुरेन्द्र से पूज्य, शांति करने वाले।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।747।।

ॐ ह्रीं श्री **सुरूपाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुभग' आपको देख, सब आकर्षित होते, राग-द्वेष अरु खेद, प्राणी अपना खोते।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।748।।

ॐ ह्रीं श्री **सुभगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम हो 'त्यागि', सब कुछ तुमने त्यागा, लगा अनादि राग, क्षण में तुमसे भागा।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।749।।

ॐ ह्रीं श्री **त्यागिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञातृ' तुम हो नाथ, सारे जग के ज्ञाता, जग में श्रेष्ठ जिनेश, विधि के आप विधाता।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।750।।
ॐ ह्रीं श्री **ज्ञात्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'समाहित' आप, अतिशय ज्ञानी ध्यानी, ध्वनि आपकी श्रेष्ठ, कही जग में जिनवाणी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।751।।
ॐ ह्रीं श्री **समाहिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुस्थित' सुख में वास, आपने अक्षय पाया, मुक्ति रमा के पास, तुमने धाम बनाया।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।752।।
ॐ ह्रीं श्री **सुस्थिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वस्थ' कहाए आप, प्रभु सब रोग विनाशी, हुए आप आत्मस्थ,केवल ज्ञानप्रकाशी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।753।।
ॐ ह्रीं श्री **स्वस्थाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वास्थ्यभाक्' जिनराज, रोग न होते कोई, शिव नगरी के ताज, आपने बाधा खोई।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।754।।
ॐ ह्रीं श्री **स्वास्थ्यभाजे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नीरजस्क' जिन देव, कर्म रहित कहलाए, रज कर्मों की एव, सारी आप उड़ाए।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।755।।
ॐ ह्रीं श्री **नीरजस्काय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'निरुद्भव' देव, त्रिभुवन स्वामी गाए, गर्भादि पर श्रेष्ठ, उत्सव इन्द्र मनाए।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।756।।
ॐ ह्रीं श्री **निरुद्भवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अलेप' भगवान, कर्म लेप के नाशी, करें विशद गुणगान, तुम हो शिवपुर वासी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।757।।
ॐ ह्रीं श्री **अलेपाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कलंक' आत्मान, न कलंक हैं कोई, करलो आप समान, आये चरणों सोई।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।758।।
ॐ ह्रीं श्री **निष्कलंकात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वीतराग' न राग, रहा आपके तन में, अतः समाए आप, जिनवर मेरे मन में।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।759।।
ॐ ह्रीं श्री **वीतरागाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गतस्पृह' शुभ नाम, जग में पूजा जाए, मन की सारी चाह, अपनी पूर्ण नशाए।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए।।760।।
ॐ ह्रीं श्री **गतस्पृहाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

इन्द्री वश में कर लिए, 'वश्येन्द्रिय' भगवान।
आए दर पे इसलिए, बनने आप समान।।761।।
ॐ ह्रीं श्री **वश्येन्द्रियाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विमुक्तात्मन' हो प्रभो, हुए कर्म से मुक्त।
अनन्त चतुष्टय पा लिए, गुणानन्त से युक्त।।762।।
ॐ ह्रीं श्री **विमुक्तात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निःसपत्ना' कहलाए तुम, राग-द्वेष से हीन।
निजानन्द में लीन हो, किया मोह को क्षीण।।763।।
ॐ ह्रीं श्री **निःसपत्नाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जितेन्द्रिय' हो गये, अविकारी भगवान।
जीते इन्द्रिय के विषय, जग में हुए महान।।764।।
ॐ ह्रीं श्री **जितेन्द्रियाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रशान्त' तुमने किए, कर्म सभी निर्मूल।
मोक्ष मार्ग मेरा करो, हे जिनेन्द्र ! अनुकूल।।765।।
ॐ ह्रीं श्री **प्रशांताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनन्तधामर्षि' तुम, ऋषियों के सरताज।
चरण कमल में वन्दना, करती सकल समाज।।766।।
ॐ ह्रीं श्री **अनन्तधामर्षये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय 'मंगल' परम, तीन लोक के ईश।
वन्दन करते भाव से, चरणों में धर शीश।।767।।
ॐ ह्रीं श्री **मंगलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मलहा' नाशी पाप के, हुए आप भगवान।
कर्म मैल को धो प्रभु, जग में हुए महान।।768।।
ॐ ह्रीं श्री **मलघ्ने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनघ' आपने पाप का, कीन्हा पूर्ण विनाश।
चेतन शक्ति प्रकट कर, कीन्हा शिवपुर वास।।769।।

ॐ ह्रीं श्री **अनघाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अनीदृक्' आप हो, जग में उपमातीत।
श्रेष्ठ गुणों से आपके, रखता है जग प्रीत।।770।।

ॐ ह्रीं श्री **अनीदृशे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आपका नाम शुभ, अतिशय 'उपमाभूत'।
अतः हृदय में आपको, करते हैं आहूत।।771।।

ॐ ह्रीं श्री **उपमाभूताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दिष्ट' आप इस लोक में, अतिशय हुए महान।
नित्य निरंजन श्रेष्ठतम, गुण अनन्त की खान।।772।।

ॐ ह्रीं श्री **दिष्टये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दैव' आपकी जगत में, महिमा अपरम्पार।
शरणागत को शीघ्र ही, कर देते भवपार।।773।।

ॐ ह्रीं श्री **दैवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अगोचर' आप हो, नभ में किया विहार।
कमल चरण तल सुर रचें, महिमा का नहिं पार।।774।।

ॐ ह्रीं श्री **अगोचराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूपादि से शून्य तुम, हे 'अमूर्त' जिनराज।
राह दिखाओ नाथ अब, आन सम्हारो काज।।775।।

ॐ ह्रीं श्री **अमूर्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मूर्तिमान' तुम मूर्त हो, जग में अपरम्पार।
परमौदारिक देह का, पाया शुभ आधार।।776।।

ॐ ह्रीं श्री **मूर्तिमते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एक' अनादि आप हो, रहे जगत में एक।
जग में रहकर के स्वयं, धारे रूप अनेक।।777।।

ॐ ह्रीं श्री **एकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैक' आपके गुण कई, जो हैं गणनातीत।
गुण पाने प्रभु आपके, रखते चरणों प्रीत।।778।।

ॐ ह्रीं श्री **नैकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए नानैक जिन, गुण अनन्त के कोष।
जिनकी पूजा से विशद, जीवन हो निर्दोष।।779।।

ॐ ह्रीं श्री **नानैकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अध्यात्मगम्या' हो तुम्हीं, आत्म तत्त्व के कोष।
तव स्वरूप पावें वही, जो होते निर्दोष।।780।।

ॐ ह्रीं श्री **अध्यात्मगम्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

'अगम्यात्मा' प्रभु कहलाए, मिथ्या ज्ञानी जान न पाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।781।।

ॐ ह्रीं श्री **अगम्यात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'योगविद्' अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के प्रभु अनुगामी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।782।।

ॐ ह्रीं श्री **योगविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगिवंदित' आप कहाए, मुक्ति वधु के स्वामी गाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।783।।

ॐ ह्रीं श्री **योगिवंदिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वत्रग' हे जग के स्वामी, वन्दनीय हो जग में नामी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।784।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वत्रगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाभावी' कहलाए, नित्य रूपता प्रभु जी पाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।785।।

ॐ ह्रीं श्री **सदाभाविने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'त्रिकालविषयार्थ' कहाए, त्रैकालिक वस्तु प्रगटाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।786।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिकालविषयार्थदृशे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंकर' आप रहे सुखदाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।787।।

ॐ ह्रीं श्री **शंकराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंवद' हो अतिशय सुखकारी, वन्दनीय हो मंगलकारी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।788।।

ॐ ह्रीं श्री **शंवदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दान्त' आप इन्द्रिय के जेता, मन मर्कट के रहे विजेता।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।789।।

ॐ ह्रीं श्री **दांताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दमी' इन्द्रियों को तुम दमते, अतः लोग चरणों में नमते।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।790।।

ॐ ह्रीं श्री **दमिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्तिपरायण' क्षमा के धारी, क्षमा धारते हो अनगारी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।791।।

ॐ ह्रीं श्री **क्षान्तिपरायणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिप' आपको कहते प्राणी, जन-जन के हो तुम कल्याणी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।792।।

ॐ ह्रीं श्री **अधिपाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमानंद' आपने पाया, निजानंद को तुमने ध्याया।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।793।।

ॐ ह्रीं श्री **परमानंदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमात्मज्ञ'आप कहलाए, पर को जिन सम आप बनाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।794।।

ॐ ह्रीं श्री **परमात्मज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'परात्पर' हो अविकारी, श्रेष्ठ जगत में मंगलकारी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।795।।

ॐ ह्रीं श्री **परात्पराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगद्वल्लभ' हो तुम स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।796।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगद्वल्लभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अभ्यर्च्य' पूज्यता पाए, सुर नर मुनि से पूज्य कहाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।797।।

ॐ ह्रीं श्री **अभ्यर्च्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगन्मंगलोदय' अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।798।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगन्मंगलोदयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्री' स्वामी, पूज्य शतेन्द्रों से जग नामी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।799।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिलोकाग्रशिखामणि' जिनराज, शिवपुर नगरी के सरताज।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।800।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिलोकाग्रशिखामणये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

'वृहद्बृहस्पति' नाम आदि सौ, पाने वाले जगत महान्।
सर्व अमंगल हरने वाले, करते हैं जग का कल्याण।।
भवि जीवों के भाग्य विधाता, सर्व जहाँ में अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, प्रभु चरणों में बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री **वृहद्बृहस्पत्यादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा- हे त्रिकालदर्शी प्रभु, सौ नामों के साथ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, झुका रहे पद माथ।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(अनुष्टुप)

हे 'त्रिकालदर्शी' तुम, सब पदार्थ जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते।।801।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिकालदर्शिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'लोकेश' आप, सर्व लोक जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते।।802।।

ॐ ह्रीं श्री **लोकेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकधाता' आप हो, श्रेष्ठ वृत धारते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते।।803।।

ॐ ह्रीं श्री **लोकधात्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृढ़वत हो लोक में, सर्व कर्म हानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते।।804।।

ॐ ह्रीं श्री **दृढ़व्रताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकातिग', लोग तुम्हें जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते।।805।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकातिगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूज्य' आप लोक में, सर्व कर्म हानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते।।806।।

ॐ ह्रीं श्री **पूज्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकैकसारथी', कर रहे हम आरती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती।।807।।

ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकैकसारथये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पुराण' आपको, ये सृष्टि पुकारती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती।।808।।

ॐ ह्रीं श्री **पुराणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरुष' नाम आत्मा, अनादि से धारती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती।।809।।

ॐ ह्रीं श्री **पुरुषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूर्व' नाम आपका, ये जगती पुकारती।
दिव्य ध्वनि आपकी है, पूज्यनीय भारती।।810।।

ॐ ह्रीं श्री **पूर्वाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतपूर्वांगविस्तर', हो अंग पूर्ण धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी।।811।।

ॐ ह्रीं श्री **कृतपूर्वांगविस्तराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आदिदेव' आप हो, जिन धर्म धारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी।।812।।

ॐ ह्रीं श्री **आदिदेवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराणाद्य' आप हो, समता के धारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी।।813।।

ॐ ह्रीं श्री **पुराणाद्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरुदेव' आप रहे, हो कल्याणकारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी।।814।।

ॐ ह्रीं श्री **पुरुदेवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिदेवता' की है, महिमा कुछ न्यारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी।।815।।

ॐ ह्रीं श्री **अधिदेवतायै** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगमुख्य' आप हो, युग के अवतारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी।।816।।

ॐ ह्रीं श्री **युगमुख्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगज्येष्ठ' युग के, हो श्रेष्ठ धर्म धारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी।।817।।

ॐ ह्रीं श्री **युगज्येष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगादिस्थितिदेशक', हे देशना के धारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी।।818।।

ॐ ह्रीं श्री **युगादिस्थितिदेशकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्याणवर्ण' हो, जग में कल्याणकारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी।।819।।

ॐ ह्रीं श्री **कल्याणवर्णाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! 'कल्याण' करो, आये हैं पुजारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी।।820।।

ॐ ह्रीं श्री **कल्याणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

नाथ है 'कल्य' आपका नाम, मोक्ष तव अतिशयकारी धाम।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।821।।

ॐ ह्रीं श्री **कल्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'कल्याणलक्षणः' आप, करें हम सदा आपका जाप।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।822।।

ॐ ह्रीं श्री **कल्याणलक्षणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'कल्याणप्रकृति' देव, बने कल्याणी प्रभु सदैव।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।823।।

ॐ ह्रीं श्री **कल्याणप्रकृतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दीप्रकल्याणआतमा' आप, नशाओ मेरा प्रभु संताप।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।824।।

ॐ ह्रीं श्री **दीप्रकल्याणात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विकल्मष' कहलाए जिननाथ, चरण में झुका रहे तव माथ।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।825।।

ॐ ह्रीं श्री **विकल्मषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विकलंक' आप हो सिद्ध, जिनेश्वर तुम हो जगत प्रसिद्ध।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।826।।
ॐ ह्रीं श्री **विकलंकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी आप कहे 'कलातीत', कलाएँ सारी किए अतीत।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।827।।
ॐ ह्रीं श्री **कलातीताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'कलिलघ्न' जिनदेव, पाप का छालन करें सदैव।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।828।।
ॐ ह्रीं श्री **कलिलघ्नाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर आप रहे 'कलाधार', कलाओं के शुभ हो आधार।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।829।।
ॐ ह्रीं श्री **कलाधराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य तुम देवों के भी देव, अतः कहलाए हो 'देवदेव'।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।830।।
ॐ ह्रीं श्री **देवदेवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए आप प्रभु 'जगन्नाथ', अतः तव चरण झुकाते माथ।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।831।।
ॐ ह्रीं श्री **जगन्नाथाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तव 'जगतबन्धु' है नाम, करें तव चरणों विशद प्रणाम।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।832।।
ॐ ह्रीं श्री **जगद्बंधवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तव 'जगतविभु' है नाम, करे यह सारा जगत प्रणाम।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।833।।
ॐ ह्रीं श्री **जगतद्विभवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाते 'जगतहितैषी' नाथ, जगत का हित करते हो साथ।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल।।834।।
ॐ ह्रीं श्री **जगद्धितैषिणे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

हे 'लोकज्ञ' जगत के ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।835।।
ॐ ह्रीं श्री **लोकज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सर्वज्ञ' आप हितकारी, व्याप्त लोक में हो अविकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।836।।
ॐ ह्रीं श्री **सर्वगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदग्रज' हो अन्तर्यामी, ज्येष्ठ लोक में हो तुम स्वामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।837।।
ॐ ह्रीं श्री **जगदग्रजाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'चराचरगुरु' कहाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।838।।
ॐ ह्रीं श्री **चराचरगुरवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गोप्य' आप गुप्ति के धारी, रक्षक हो तुम विस्मयकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।839।।
ॐ ह्रीं श्री **गोप्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गूढ़ात्मा' हे नाथ कहाए, इन्द्रिय गोचर न हो पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।840।।
ॐ ह्रीं श्री **गूढ़ात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गूढ़सुगोचर' तुम हो स्वामी, ज्ञानी जन हैं तव अनुगामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।841।।
ॐ ह्रीं श्री **गूढ़गोचराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सद्योजात' आप कहलाए, भेष दिगम्बर प्रभु जी पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।842।।
ॐ ह्रीं श्री **सद्योजाताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'प्रकाशात्मा' जिनदेवा, सुर नर करे आपकी सेवा।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।843।।
ॐ ह्रीं श्री **प्रकाशात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्वलज्ज्वलनसप्रभ' हे स्वामी !, कांतिमान हे अन्तर्यामी !।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।844।।
ॐ ह्रीं श्री **ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'आदित्यवर्ण' कहलाए, सहस रश्मि सम कांति पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।845।।
ॐ ह्रीं श्री **आदित्यवर्णाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भर्माभ' श्रेष्ठ छवि धारी, महिमा है इस जग से न्यारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।846।।
ॐ ह्रीं श्री **भर्माभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रभ' अतिशय शोभा पाते, सूर्य चन्द्रमा कई लजाते।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।847।।
ॐ ह्रीं श्री **सुप्रभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कनकप्रभ' तव दीप्ति निराली, तप्त स्वर्ण समकांती वाली।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।848।।
ॐ ह्रीं श्री **कनकप्रभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुवर्णवर्ण' तव महिमा न्यारी, दीप्तिमान हो जिन अविकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।849।।
ॐ ह्रीं श्री **सुवर्णवर्णाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'रुक्माभ' स्वर्ण छविधारी, तीन लोक में मंगलकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।850।।
ॐ ह्रीं श्री **रुक्माभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यकोटिसमप्रभ' तुम स्वामी, दयानिधि हे अन्तर्यामी !।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।851।।
ॐ ह्रीं श्री **सूर्यकोटिसमप्रभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तपनीयनिभ' प्रभु जी कहलाए, तप्त स्वर्ण सम आभा पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।852।।
ॐ ह्रीं श्री **तपनीयनिभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च देह धर 'तुंग' कहाए, पद सर्वोच्च प्रभु जी पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।853।।
ॐ ह्रीं श्री **तुंगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बालार्काभो' यह जग जाने, उदित सूर्य सम कांति माने।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।854।।
ॐ ह्रीं श्री **बालार्काभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनलप्रभ' हो अन्तर्यामी, निर्मल कांति है तव नामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।855।।
ॐ ह्रीं श्री **अनलप्रभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'संध्याभ्रबभ्रू' छवि धारी, छवि सांझ के रवि सम प्यारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।856।।
ॐ ह्रीं श्री **संध्याभ्रबभ्रवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'हेमाभ' आप कहलाए, स्वर्ग समान देह प्रभु पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।857।।
ॐ ह्रीं श्री **हेमाभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्ताचामीकरप्रभ' स्वामी, हेम वर्ण धारी तव नामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।858।।
ॐ ह्रीं श्री **तप्तचामीकरप्रभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्टप्तकनकच्छाय' कहाए, यहाँ दीप्ति धारी कहलाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।859।।
ॐ ह्रीं श्री **निष्टप्तकनकच्छायाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कनत्कांचनासन्निभ' देही, पाकर भी हो तुम वैदेही।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।860।।
ॐ ह्रीं श्री **कनत्कांचनसन्निभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंग प्रयात)

'हिरण्यवर्ण' शुभ तव है नाम स्वामी, अतुल कांतिधारी जिनेश्वर हो नामी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।861।।
ॐ ह्रीं श्री **हिरण्यवर्णाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण छविधारी 'स्वर्णाभ' गाए, सुर नर यति सब पूजा रचाए।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।862।।
ॐ ह्रीं श्री **स्वर्णाभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतकुंभनिभप्रभ' हैं शांतिधारी, प्रभु हैं निजातम के ब्रह्म बिहारी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।863।।
ॐ ह्रीं श्री **शांतकुंभनिभप्रभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'द्युम्नाभ' तुमको कहते हैं प्राणी, ॐकार मयी श्रेष्ठ है प्रभु की वाणी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।864।।
ॐ ह्रीं श्री **द्युम्नाभास** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जातरूपाभ' कहलाए स्वामी, करुणानिधि हैं जिन अन्तर्यामी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।865।।
ॐ ह्रीं श्री **जातरूपाभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'तप्तजांबूनदद्युति' के धारी, महिमा तुम्हारी है इस जग से न्यारी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।866।।
ॐ ह्रीं श्री **तप्तंजांबूनदद्युतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सधौतकलधौतश्री' हे जिनेन्द्रा, तुम्हारे चरण पूजते हैं शतेन्द्रा।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।867।।
ॐ ह्रीं श्री **सुधौतकलधौतश्रिये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रदीप्त' दीप्ति मान विशद ज्ञानधारी, सर्वलोक में महान श्रेष्ठ अविकारी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।868।।
ॐ ह्रीं श्री **प्रदीप्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिनेन्द्र 'हाटकद्युति' सूर्य को लजाते, दीप्तिमान हेमाम आप जिन कहाते।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।869।।
ॐ ह्रीं श्री **हाटकद्युतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्टेष्ट' आप जिन लोक में कहाते, वन्दना को संत भी भाव सहित आते।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।870।।
ॐ ह्रीं श्री **शिष्टेष्टाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्टी के कर्त्ता जिन 'पुष्टिद' हो स्वामी, पुष्टि करो नाथ हे अन्तर्यामी !।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।871।।
ॐ ह्रीं श्री **पुष्टिदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्टी करो 'पुष्ट' होके हमारी, करुणा करो नाथ करुणा के धारी।।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।872।।
ॐ ह्रीं श्री **पुष्टाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'स्पष्ट' सब द्रव्य जानी, भव्यों के कल्याण हेतु बखानी।।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।873।।
ॐ ह्रीं श्री **स्पष्टाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'स्पष्टाक्षर' तुम्हें जानते हैं, हितकारी वाणी सभी मानते हैं।।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।874।।
ॐ ह्रीं श्री **स्पष्टाक्षराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्ही 'क्षम' हो भव नाश करने में स्वामी, अतएव कहलाए तुम मोक्षगामी।।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।875।।
ॐ ह्रीं श्री **क्षमाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शत्रुघ्न' तुमने सर्व शत्रु हराये, कर्मों की सेना भगाने हम आए।।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।876।।
ॐ ह्रीं श्री **शत्रुघ्नाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अप्रतिघ' हो न शत्रु तव कोई, महिमा प्रभु तुमने अतिशय संजोई।।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।877।।
ॐ ह्रीं श्री **अप्रतिघाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमोघ' तुमने सफलता को पाया, संयम को धारणकर जीवन सजाया।।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।878।।
ॐ ह्रीं श्री **अमोघाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'प्रशास्ता' हो जग में निराले, सर्वोत्तम उपदेश तुम देने वाले।।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।879।।
ॐ ह्रीं श्री **प्रशास्त्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'शासिता' आप रक्षा के धारी, भक्तों के हो आप कल्याणकारी।।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ।।880।।
ॐ ह्रीं श्री **शासित्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'स्वभू' आपको देव, जाने जग के जीव सब।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके।।881।।
ॐ ह्रीं श्री **स्वभुवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिनिष्ठ जिनदेव, शांति के दाता कहे।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके।।882।।
ॐ ह्रीं श्री **शांतिनिष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुनिज्येष्ठ' हे नाथ, सब मुनियों में बड़े हो।
चरण झुकाकर माथ, नाम मंत्र को पूजते।।883।।
ॐ ह्रीं श्री **मुनिज्येष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवताति' हे नाथ !, शिव के कर्त्ता आप हो।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके।।884।।
ॐ ह्रीं श्री **शिवतातये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवप्रद' हे भगवान, शिवपद हमको दीजिए।
करते तव गुणगान, भक्ती भाव से चरण में।।885।।
ॐ ह्रीं श्री **शिवप्रदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिद' आप सदैव, जग जीवों को दे रहे।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ।।886 ।।

ॐ ह्रीं श्री **शांतिदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिकृत' हे नाथ !, शांति इस जग में करो।
चरण झुकाकर माथ, नाम मंत्र को पूजते ।।887 ।।

ॐ ह्रीं श्री **शांतिकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांति' दाता नाथ, त्रिभुवन में शांति करो।
चरण झुकाकर माथ, नाम मंत्र को पूजते ।।888 ।।

ॐ ह्रीं श्री **शांतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कांतिमान' जिनदेव, कांति के धारी अहा।
वन्दू चरण सदैव, तव चरणों में विनत हो ।।889 ।।

ॐ ह्रीं श्री **कांतिमते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कांतिप्रद' भगवान, पूर्ण मनोरथ कीजिए।
करें विशद गुणगान, नाम मंत्र को आपके ।।890 ।।

ॐ ह्रीं श्री **कांतिमते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रेयोनिधि' गुणखान, श्रेय हमें प्रभु दीजिए।
करें विशद गुणगान, तव चरणों में विनत हो ।।891 ।।

ॐ ह्रीं श्री **श्रेयोनिधये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिष्ठान' जिनदेव, जैन धर्म के मूल हो।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ।।892 ।।

ॐ ह्रीं श्री **अधिष्ठानाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतिष्ठ' हे देव !, पूजित फिर भी लोक में।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ।।893 ।।

ॐ ह्रीं श्री **अप्रतिष्ठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे 'प्रतिष्ठित' आप, तीन लोक में हर समय।
करें नाम का जाप, शिव सुख पाने के लिए ।।894 ।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रतिष्ठिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुस्थिर' आप सदैव, रहते निज स्वभाव में।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ।।895 ।।

ॐ ह्रीं श्री **सुस्थिराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थावर' हे जिनराज !, स्थित रहते हर समय।
यह जग करता नाज, श्री जिनके शुभ नाम पर ।।896 ।।

ॐ ह्रीं श्री **स्थावराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थाणु' हे जिनदेव !, अचल अटल अविकार हो।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ।।897 ।।

ॐ ह्रीं श्री **स्थाणवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रथीयान्' तव नाम, सर्वलोक में पूज्य हो।
बारम्बार प्रणाम, विशद गुणों के कोष तुम ।।898 ।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रथीयसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रथित' मिले विश्राम, भव सागर में गमन से।
बारम्बार प्रणाम, नाम मंत्र तव पूजते ।।899 ।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रथिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पृथु' आपका धाम, तीन लोक में श्रेष्ठ है।
बारम्बार प्रणाम, पूजा करते भाव से ।।900 ।।

ॐ ह्रीं श्री **पृथवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

प्रभु त्रिकालदर्शी आदिकर, पृथु, नाम तक सौ यह नाम।
श्रेष्ठ सुसुन्दर विस्मयकारी, शोभनीक अतिशय अभिराम ।।
चिन्तन मनन ध्यान कर प्राणी, कर देते कर्मों का क्षय।
सहस्रनाम में वर्णित अनुपम, इन नामों की जय-जय-जय ।।9 ।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिकालदर्श्यादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा- दिग्वासादि नाम सौ का, करते हम गुणगान।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने पद निर्वाण ।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द-लोलतरंग)

'दिग्वासा' दिश ही अम्बर है, धारें ऐसी मुद्रा स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ।।901 ।।

ॐ ह्रीं श्री **दिग्वाससे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वातरशन' तव नाम जिनेश, कहाते हो प्रभु अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।902।।
ॐ ह्रीं श्री **वातरशनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्ग्रंथेश' जिनेश अशेष, परिग्रह तुमने छोड़ा स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।903।।
ॐ ह्रीं श्री **निर्ग्रंथेशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'दिगम्बर' हो जिनराज, दिशाएँ अम्बर हैं तव नामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।904।।
ॐ ह्रीं श्री **दिगम्बराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्किंचन' किन्चित परिग्रह से, हीन कहे हैं अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।905।।
ॐ ह्रीं श्री **निष्किंचनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निराशंस' इच्छा के त्यागी, कहलाए हैं मेरे स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।906।।
ॐ ह्रीं श्री **निराशंसाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानचक्षु' हैं केवल ज्ञानी, आप हुए हो शिवपुर गामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।907।।
ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानचक्षुषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अमोमुह' मोह विनाशी, हुए लोक में अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।908।।
ॐ ह्रीं श्री **अमोमुहाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोराशि' तेज पुंज के, धारी हो हे जिनवर स्वामी !।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।909।।
ॐ ह्रीं श्री **तेजोराशये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतौज' ओजस्वी अनुपम, आप हुए हो जग में नामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।910।।
ॐ ह्रीं श्री **अनंतौजसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानाब्धि' हे ज्ञान सरोवर, आप कहाए अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।911।।
ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानाब्धये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शीलसागर' हे स्वामी !, आप हुए हो शील के धारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।912।।
ॐ ह्रीं श्री **शीलसागराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोमय' शुभ तेज पुंज हैं, अतिशय तेज रूप के धारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।913।।
ॐ ह्रीं श्री **तेजोमयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितज्योति' हे ज्योति स्वरूपी, पावन केवल ज्ञान के धारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।914।।
ॐ ह्रीं श्री **अमितज्योतिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिमूर्ति' ज्योर्तिमय अनुपम, मंगलमय पावन अविकारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।915।।
ॐ ह्रीं श्री **ज्योतिर्मूर्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'तमोपह' आप कहाए, मोहारि के नाशनकारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।916।।
ॐ ह्रीं श्री **तमोपहाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जगच्चूड़ामणि' अनुपम, तीन लोक में मंगलकारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।917।।
ॐ ह्रीं श्री **जगच्चूड़ामणये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप्ति आप 'दैदीप्यात्मा' हो, अतिशय प्रभु दीप्ति के धारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।918।।
ॐ ह्रीं श्री **दीप्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शंवान्' सौख्य शांतिमय, पावन हो समता के धारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।919।।
ॐ ह्रीं श्री **शंवते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विघ्नविनायक' आप प्रभु हो, इस जग में विघ्नों के नाशी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी।।920।।
ॐ ह्रीं श्री **विघ्नविनायकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

प्रभु 'कलिघ्न' आप कहलाए, सब विघ्नों को दूर भगाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।921।।
ॐ ह्रीं श्री **कलिघ्नाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मशत्रुघ्न' नाम के धारी, चऊ कर्मों के नाशनकारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।922।।
ॐ ह्रीं श्री **कर्मशत्रुघ्नाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकालोकप्रकाशक' ज्ञानी, वाणी तव जग की कल्याणी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।923।।
ॐ ह्रीं श्री **लोकालोकप्रकाशकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'अनिद्रालु' जिन स्वामी, मोहक्षयी मुक्ति पथगामी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।924।।
ॐ ह्रीं श्री **अनिद्रालवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अतन्द्रालु' कहलाए, आलस तद्रा पर जय पाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।925।।
ॐ ह्रीं श्री **अतंद्रालवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जागरूक' तुम जाग्रत रहते, हर उपसर्ग परीषह सहते।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।926।।
ॐ ह्रीं श्री **जागरूकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रमामय' ज्ञान के धारी, गुण अनन्त के हो अधिकारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।927।।
ॐ ह्रीं श्री **प्रमामयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लक्ष्मीपति' आप हो स्वामी, अनन्त चतुष्टय पाये नामी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।928।।
ॐ ह्रीं श्री **लक्ष्मीपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्ज्योति' हो मंगलकारी, अतिशय ज्ञान ज्योति के धारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।929।।
ॐ ह्रीं श्री **जगज्ज्योतिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मराज' है नाम तुम्हारा, भवि जीवों को तारण हारा।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।930।।
ॐ ह्रीं श्री **धर्मराजाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'प्रजाहित' करने वाले, जग जीवों के हो रखवाले।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।931।।
ॐ ह्रीं श्री **प्रजाहिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मुमुक्षु' भी कहलाए, मोक्ष की इच्छा भी न पाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।932।।
ॐ ह्रीं श्री **मुमुक्षवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बन्धमोक्षज्ञा' प्रभु कहलाए, बन्ध मोक्ष की विधि बताए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।933।।
ॐ ह्रीं श्री **बंधमोक्षज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जिताक्ष' इन्द्रिय मन जेता, मोहादि वसु कर्म विजेता।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।934।।
ॐ ह्रीं श्री **जिताक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितमन्मथ' हे नाथ कहाए, काम अरि को मार भगाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।935।।
ॐ ह्रीं श्री **जितमन्मथाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रशान्तरसशैलुष' स्वामी, शांति मार्ग के हे अनुगामी !।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।936।।
ॐ ह्रीं श्री **प्रशांतरसशैलूषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भव्यपेटकनायक' तुम स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी !।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।937।।
ॐ ह्रीं श्री **भव्यपेटकनायकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मूलकर्त्ता' कहलाए, आदि धर्म प्रवर्तक गाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।938।।
ॐ ह्रीं श्री **मूलकर्त्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अखिलज्योति' तुमने प्रगटाई, निधिज्ञान की तुमने पाई।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।939।।
ॐ ह्रीं श्री **अखिलज्योतिषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'मलघ्न' मलके हो नाशी, धवल अमल आतम के वासी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।940।।
ॐ ह्रीं श्री **मलघ्नाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज– हे दीन बन्धु..)

हे नाथ 'मूलसुकारण' प्रभु आप कहाए, मुक्ति का मार्ग जग को प्रभु आप दिखाए।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए।।941।।

ॐ ह्रीं श्री **मूलकारणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'आप्त' हो सर्वज्ञ वीतराग हितैषी, प्रभु दर्श करे आपका हो भावना वैसी।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए।।942।।

ॐ ह्रीं श्री **आप्ताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आप 'वागीश्वर' श्रेष्ठ कहाए, शुभ दिव्य ध्वनि आपकी शिव मार्ग दिखाए।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए।।943।।

ॐ ह्रीं श्री **वागीश्वराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयान् आप अनुपम ही 'श्रेय' जगाए, हम श्रेय पाने हेतु तव द्वार पे आए।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए।।944।।

ॐ ह्रीं श्री **श्रेयसे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'श्रायसोक्तये' वाणी है श्रेष्ठ आपकी, नाशक रही है लोक में सारे ही पाप की।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए।।945।।

ॐ ह्रीं श्री **श्रायसोक्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निरुक्तवाक्' आपकी वाणी महान है, अनुपम है लोक में जो अतिशय प्रधान है।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए।।946।।

ॐ ह्रीं श्री **निरुक्तवाचे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! 'प्रवक्ता' जिनेश आप कहाए, शुभ देशना जिनेन्द्र आप श्रेष्ठ सुनाए।।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए।।947।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रवक्त्रे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! श्रेष्ठ 'वचसामिश' आप कहाए, प्रभु दिव्य ध्वनि की अनुपम गंग बहाए।।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए।।948।।

ॐ ह्रीं श्री **वचसामीशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आप 'मारजिता' मोह जयी हो, इस लोक में जिनेन्द्र आप कर्म क्षयी हो।।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए।।949।।

ॐ ह्रीं श्री **मारजिते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्वभाववित्' प्रभु श्रेष्ठ कहाए, चरणों में भक्त भक्ति को भाव से आए।।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए।।950।।

ॐ ह्रीं श्री **विश्वभाविदे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

हे 'सुतनु' श्रेष्ठ तनधारी, व्याधि के नाशन हारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।951।।

ॐ ह्रीं श्री **सुतनवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'तनुनिर्मुक्त' कहाए, इस भव से मुक्ति पाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।952।।

ॐ ह्रीं श्री **तनुनिर्मुक्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगत' आप हो स्वामी, हो मुक्ति के अनुगामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।953।।

ॐ ह्रीं श्री **सुगताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हतदुर्नय' आप कहाए, नय मिथ्या सभी नशाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।954।।

ॐ ह्रीं श्री **हतदुर्नयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'श्रीश' आप जिन स्वामी, श्री पति हो अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।955।।

ॐ ह्रीं श्री **श्रीशाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीश्रितपादाब्ज' कहाते, सुर चरण आपके ध्याते।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।956।।

ॐ ह्रीं श्री **श्रितपादाब्जाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वीतभी' आप निराले, प्रभु अभय दिलाने वाले।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।957।।

ॐ ह्रीं श्री **वीतभिये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अभयंकर' हितकारी, प्रभु जन-जन के उपकारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।958।।

ॐ ह्रीं श्री **अभयंकराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उत्सन्नदोष' तुम स्वामी, बन गये मोक्ष पथ गामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।959।।

ॐ ह्रीं श्री **उत्सन्नदोषाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्विघ्न' आप कहलाते, प्रभु सारे विघ्न नशाते।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।960।।

ॐ ह्रीं श्री **निर्विघ्नाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निश्चल' जिन अविकारी, प्रभु आतम ब्रह्म विहारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।961।।

ॐ ह्रीं श्री **निश्चलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'लोकसुवत्सल' ज्ञानी, हे वीतराग विज्ञानी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।962।।

ॐ ह्रीं श्री **लोकवत्सलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकोत्तर' अविनाशी, हे लोक शिखर के वासी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।963।।

ॐ ह्रीं श्री **लोकोत्तराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकपति' जिन स्वामी, हे शिवपुर के पथगामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।964।।

ॐ ह्रीं श्री **लोकपतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकचक्षु' कहलाए, मुक्ति का मार्ग दिखाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।965।।

ॐ ह्रीं श्री **लोकचक्षुषे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अपारधी' स्वामी, धी है तव अतिशय नामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।966।।

ॐ ह्रीं श्री **अपारधिये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु रहे 'धीरधी' ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।967।।

ॐ ह्रीं श्री **धीरधिये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'बुद्धसन्मार्ग' प्रदाता, हे त्रिभुवन के सुखदाता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।968।।

ॐ ह्रीं श्री **बुद्धसन्मार्गाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शुद्ध' बुद्ध अविनाशी, हो निज स्वभाव के नासी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें।।969।।

ॐ ह्रीं श्री **शुद्धाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

हे 'सत्यासूनृतवाक्', सत्य वचन धारी प्रभो।
पाने कर्म विपाक, नाम मंत्र ध्याएँ विशद।।970।।

ॐ ह्रीं श्री **सत्यसूनृतवाचे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरम बुद्धि को प्राप्त, होके 'प्रज्ञापारमित'।
बने श्रेष्ठ हो आप्त, नाम मंत्र ध्याऊँ विशद।।971।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रज्ञापारमिताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राज्ञ' कहाए नाथ, सुर गण करते वन्दना।
चरण झुकाएँ माथ, प्रज्ञा पाने के लिए।।972।।

ॐ ह्रीं श्री **प्राज्ञाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'यति' विषय विषहीन, स्वात्म निरत रहते सदा।
रहते निज में लीन, ध्यायें तव हम नाम को।।973।।

ॐ ह्रीं श्री **यतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नियमितेन्द्रिय' हे देव !, जीते इन्द्रियों के विषय।
ध्याएँ तुम्हें सदैव, मन वच तन तिय योग से।।974।।

ॐ ह्रीं श्री **नियमितेन्द्रियाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भदंत' यतिराज, सुर नर यति से पूज्य हो।
तुम पर जग को नाज, नाम मंत्र ध्याते अहा।।975।।

ॐ ह्रीं श्री **भदंताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे 'भद्रकृत' आप, श्रेष्ठ भद्रता धारते।
करें नाम तव जाप, तव पद पाने के लिए।।976।।

ॐ ह्रीं श्री **भद्रकृते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भद्र' आपका नाम, है प्रसिद्ध इस लोक में।
शत्-शत् करें प्रणाम, नाम मंत्र ध्याते सदा।।977।।

ॐ ह्रीं श्री **भद्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्पवृक्ष' भगवान, वाञ्छित फल देते सदा।
करें विशद गुणगान, ध्याते हम तव नाम को।।978।।

ॐ ह्रीं श्री **कल्पवृक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वरप्रद' कहे जिनेश, देते हैं वरदान शुभ।
ध्याते तुम्हें विशेष, तव पद पाने के लिए।।979।।

ॐ ह्रीं श्री **वरप्रदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समुन्मूलिकर्मारि', कर्मों के नाशी प्रभो !
करके श्रेष्ठ विचार, ध्याते हैं हम आपको।।980।।

ॐ ह्रीं श्री **समुन्मूलिकर्मारये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किए कर्म का नाश, 'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी'।
करके ज्ञान प्रकाश, शिव पद के धारी बने।।981।।

ॐ ह्रीं श्री **कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'कर्मण्य' महान्, सब कर्मों में निपुण तुम।
करते हम गुणगान, सहस्र नाम का भाव से।।982।।

ॐ ह्रीं श्री **कर्मण्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मठ' आप जिनेन्द्र, सब कार्यों में दक्ष हो।
पूजें तुम्हें शतेन्द्र, सहस्र नाम के रूप में।।983।।

ॐ ह्रीं श्री **कर्मठाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रांशु' पाया नाम, सर्व सौख्य दाता कहे।
करते सभी प्रणाम, नाम मंत्र का ध्यान कर।।984।।

ॐ ह्रीं श्री **प्रांशवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए हिताहित ज्ञान, 'हेयआदेयवीचक्षणः'।
जग में रहे प्रधान, विशद ध्यान करते सभी।।985।।

ॐ ह्रीं श्री **हेयादेयविचक्षणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए शक्ति विशेष, हे 'अनन्तशक्ति' तुम्ही।
तुमको हे तीर्थेश, ध्याते हैं हम भाव से।।986।।

ॐ ह्रीं श्री **अनन्तशक्तये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अच्छेद्य' प्रधान, आप स्वयंभू श्रेष्ठतम्।
वीतराग विज्ञान, तुमको ध्याते हम अहा।।987।।

ॐ ह्रीं श्री **अच्छेद्या** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिपुरारि' हे नाथ, ज्ञाता तीनों लोक में।
नाम मंत्र का जाप, करते तीनों योग से।।988।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिपुरारये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'त्रिलोचन' आप, तीन नेत्रधारी रहे।
नाश किए सब पाप, विशद ज्ञान को प्राप्त कर।।989।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिलोचनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'त्रिनेत्र' भगवान, तीन ज्ञान जन्मत हुए।
पाए केवल ज्ञान, तुमको ध्याते हम अहा ।। 990।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिनेत्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धडी छन्द)

जिनराज 'त्र्यंबक' कहे आप, प्रभु नाश किए त्रय विधि पाप।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।991।।

ॐ ह्रीं श्री **त्र्यंबकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'त्रयक्ष' अतिशय महान्, पाए हो तुम प्रभु ज्ञान भान।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।992।।

ॐ ह्रीं श्री **त्र्यक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'केवलज्ञानवीक्षण' सुनाम, करता यह जग तुमको प्रणाम।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।993।।

ॐ ह्रीं श्री **केवलज्ञानवीक्षणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'समंतभद्र' तुम हो महान्, मंगलमय तुम जग में प्रधान।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।994।।

ॐ ह्रीं श्री **समंतभद्राय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शांतारि' हो शांत रूप, तुम शांतिकर जग में अनूप।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।995।।

ॐ ह्रीं श्री **'शांतारये'** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धर्माचार्य' हो धर्मवान, तुम प्रकट किया अतिशय महान्।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।996।।

ॐ ह्रीं श्री **धर्माचार्याय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'दयानिधि' हो दयावान, दो नाथ भक्त को दया दान।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।997।।

ॐ ह्रीं श्री **दयानिधये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो प्रभु 'सूक्ष्मदर्शी' विशेष, तुम सूक्ष्म द्रव्य लखते जिनेश।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।998।।

ॐ ह्रीं श्री **सूक्ष्मदर्शिने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जितानंग' कर्मारि जीत, तुम हुए जगत में श्रेष्ठ मीत।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।999।।

ॐ ह्रीं श्री **जितानंगाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'कृपालु' रहे आप, नाशे हैं जग के सर्व पाप।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।1000।।

ॐ ह्रीं श्री **कृपालवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'धर्मदेशक' महान्, जन-जन को देते भेद ज्ञान।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।1001।।

ॐ ह्रीं श्री **धर्मदेशकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'शुभंयु' आप नाम, पाकर के पाए मोक्ष धाम।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।1002।।

ॐ ह्रीं श्री **शुभंयवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुखसाद्भुत' हो सुखाधीन, रहते हो निज में ध्यान लीन।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।1003।।
ॐ ह्रीं श्री **सुखसाद्भूताय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पुण्यराशि' तुम पुण्यवान, होकर पदवी पाई महान्।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।1004।।
ॐ ह्रीं श्री **पुण्यराशये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'अनामय' हो महान्, हे व्याधि रहित जग में प्रधान।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।1005।।
ॐ ह्रीं श्री **अनामयाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे धर्मरक्ष प्रभु 'धर्मपाल', नाशा है क्षण में कर्म जाल।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।1006।।
ॐ ह्रीं श्री **धर्मपालाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव आप हो 'जगत्पाल', हम झुका रहे तव चरण भाल।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ।।1007।।
ॐ ह्रीं श्री **जगत्पालाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- 'धर्मसाम्राज्यनायक' प्रभो, जग में हुए महान्।
विशद नाम तव जाप कर, करते हैं गुणगान।।1008।।
ॐ ह्रीं श्री **धर्मसाम्राज्यनायकाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

दिग्वासादि को आदिकर, नाम एक सौ आठ महान्।
नाम मंत्र यह जाप करे कोइ, कोई करता है गुणगान।।
विशद भाव से अर्चा करके, ध्याता हूँ मैं यह शुभ नाम।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतु, करता बारम्बार प्रणाम।।10।।
ॐ ह्रीं श्री **दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जाप्य ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री जिन अष्टोत्तर सहस्रनामेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- जिन गुण पावे सहस्र वसु, मंगलमयी त्रिकाल।
सहस्रनाम की हम विशद, गाते हैं जयमाल।।

(चौपाई छन्द)

प्रभु ने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।
अनन्त चतुष्टय पाये स्वामी, बने मोक्षपथ के अनुगामी।।1।।
देव वन्दना करने आये, सुन्दर समवशरण बनवाए।
सहस्र नाम की पूजा कीन्हे, अतिशय ढोक चरण में दीन्हें।।2।।
गुणानन्त के धारी स्वामी, आप कहाए अन्तर्यामी।
एक आप हो जगत प्रकाशी, मोह महातम के प्रभु नाशी।।3।।
ज्ञानादर्श गुणों के धारी, उभय लोक में जिन उपकारी।
रत्नत्रय को तुमने पाया, तीन रूपता को अपनाया।।4।।
अनन्त चतुष्टय भी प्रगटाए, चार रूप जिनवर कहलाए।
बने आप शिवपुर के वासी, पंचम गति के हुए प्रवासी।।5।।
छह द्रव्यों के हो तुम ज्ञाता, जन-जन के हो प्रभु जी त्राता।
सप्त नयों को तुमने जाना, सप्त रूप तुमको भी माना।।6।।
सम्यक्त्वादि गुण वसु गायें, प्रभु तुमने वे गुण प्रगटाए।
नव केवल लब्धि के धारी, नव स्वरूप के प्रभु अधिकारी।।7।।
प्रभु की महिमा को हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
विविध नाम तुमने यह पाये, सार्थक नाम सभी कहलाए।।8।।
इन नामों का अतिशयकारी, है स्तोत्र जगत हितकारी।
भाव सहित इसको जो ध्याते, हृदय कमल में इसे सजाते।।9।।
अक्षय निधियाँ वे पा जाते, स्वयं उसी पदवी को पाते।
मन वच तन हो मंगलकारी, सहस्र नाम की है बलिहारी।।10।।
नित्य पाठ करके शुभकारी, वाणी होती मंगलकारी।
बुद्धिमान वैभव के धारी, प्राणी बनते जग हितकारी।।11।।
मन में उठे भाव यह मेरे, नशें जन्म मरणादि फेरे।
अतः शरण में हम भी आये, भाव पुष्प उर में हम लाए।।12।।
बुद्धिहीन हम हैं अज्ञानी, फिर भी मन में हमने ठानी।
जब तक जीवन रहे हमारा, तव चरणों का रहे सहारा।।13।।
भव-भव तुमको हृदय सजाएँ, जब तक शिव पदवी न पाएँ।
विशद ज्ञान पाकर हे स्वामी !, बने मोक्षपद के अनुगामी।।14।।

अष्ट कर्म मेरे नश जाएँ, अष्ट गुणों की सिद्धि पाएँ।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, होय भावना पूर्ण हमारी।।15।।

दोहा- सहस्र नाम का पाठ कर, अर्घ्य चढ़ाकर साथ।
हृदय सजाकर भाव से, बने श्री के नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सहस्र नाम के पाठ की, महिमा अगम अपार।
अर्चा पूजन ध्यान कर, होवे भव से पार।।

।। इत्याशीर्वादः ।। शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

24 तीर्थंकर गणधर मुनि पूजन

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवलज्ञानी, सर्वज्ञ प्रभू जग हितकारी।
हे गणधर स्वामी ! जिनवर के, तुम कृपा करो हे त्रिपुरारी।।
निर्ग्रन्थ मुनीश्वर ऋद्धीधर, तव करते हैं हम आह्वानन।
दो हमको शुभ आशीष विशद, हम करते हैं शत्-शत् वन्दन।
हे नाथ ! पुजारी चरणों में, तव पूजा करने आए हैं।
पूजा को अनुपम द्रव्यों के, यह थाल सजाकर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर तृषा शान्त न हो पाई।
अति लगा हुआ है मिथ्या मल, हमने आतम न चमकाई।।
अब जन्म जरा हो नाश मेरा, हम नीर चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जलं निर्व0 स्वाहा।

चन्दन के वन घिस गये कई, पर शीतलता न मिल पाई।
सद् दर्शन की शुभ कली हृदय, में नहीं हमारे खिल पाई।।

चन्दन घिसकर मलयागिरि का, हम आज चढ़ाने आए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चंदनं निर्व0 स्वाहा।

भर-भर कर थाल तन्दुलों के, कई खाकर बहुत नशाए हैं।
अक्षय पद जो है अखण्ड, वह प्राप्त नहीं कर पाए हैं।।
अब अक्षय पद के हेतु यहाँ, यह अक्षय अक्षत लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अक्षतं निर्व0 स्वाहा।

तृष्णा की खाई है असीम, वह पूर्ण नहीं हो पाती है।
है काम वासना दुखदायी, भव-भव में हमें सताती है।।
हम काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पुष्पं निर्व0 स्वाहा।

यह क्षुधा वेदना जीवों को, सदियों से छलती आई है।
खाकर मिष्ठान अनादी से, न तृप्ति हमें मिल पाई है।।
अब क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः नैवेद्यं निर्व0 स्वाहा।

जड़ दीपक तिमिर का नाशक है, मिथ्यातम को न हरण करे।
चैतन्य प्रकाशित करता वह, रत्नत्रय को जो ग्रहण करे।।
अब विशद ज्ञान का दीप जले, हम दीप जलाकर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः दीपं निर्व0 स्वाहा।

अग्नि में धूप जलाने से, आकाश सुवासित होता है।
जब तीव्र कर्म का वेग बढ़े, चेतन शक्ती तब खोता है।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु यहाँ, यह धूप जलाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः धूपं निर्व0 स्वाहा।

यह सरस मधुर फल खाने से, रसना की चाह बढ़ाते हैं।
हम चाह दाह के नाश हेतु, यह फल तव चरण चढ़ाते हैं।।

हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, तव हर्ष-हर्ष गुण गाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः फलं निर्व0 स्वाहा।

हमने अनर्घ पद पाने का, सदियों से भाव बनाया है।
किन्तू विषयों में फँसने से, वह पद हमने न पाया है।।
अब पद अनर्घ के हेतु प्रभो !, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

24 गणधर के अर्घ्य

वृषभादिक जिनके हुए, गणधर ऋषि चौबीस।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, चरण झुकाकर शीश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ऋषभ नाथ के समवशरण में, 'वृषभसेन' गणधर स्वामी।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, हुए मोक्ष के अनुगामी।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।1।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री वृषभनामस्य 'वृषभसेनादि' चतुरशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नब्बे गणधर अजितनाथ के, 'सिंहसेन' जी रहे प्रधान।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, का हम करते हैं सम्मान।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।2।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री अजितनाथस्य 'सिंहसेनादि' नवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर पञ्च एक सौ जानो, श्री सम्भव जिनवर के साथ।
'चारूदत्त' गणधर मुनिवर कई, के पद झुका रहे हम माथ।।

दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।3।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री संभवनाथस्य 'चारूदत्तादि' पंचोत्तरशतम् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन जिनवर के गणधर, 'वज्रादिक' हैं एक सौ तीन।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, कहे गये हैं ज्ञान प्रवीण।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।4।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री अभिनन्दन नाथस्य 'वज्रादि' त्र्याधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तौटक' आदिक एक सौ सोलह, सुमतिनाथ के रहे गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दुखहर्त्ता सुख कर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।5।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री सुमतिनाथस्य 'तौटक' षोडशाधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वज्रचमर' आदिक दश इक सौ, पद्मप्रभु के हुए गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।6।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री पद्मनाथस्य 'वज्रचमरादि' दशधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च ऊन इक शतक गणी थे, श्री सुपार्श्व जिनवर के साथ।
'बलदत्तादिक' अन्य मुनीश्वर, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।7।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री सुपार्श्वनाथस्य 'बलदत्तादि' पंचनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन अधिक नब्बे गणधर थे, चन्द्र प्रभु के साथ महान।
'दत्तादिक' कई अन्य मुनीश्वर, का हम करते हैं गुणगान।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।8।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चंद्रप्रभस्य 'दत्तादि' त्रिनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अधिक अस्सी गणधर शुभ, पुष्पदन्त के साथ रहे।
'श्री नंगादिक' अन्य मुनीश्वर, श्रेष्ठ प्रभु के भक्त कहे।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पुष्पदंतस्य 'नंगादि' अष्टाशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक अधिक अस्सी गणधर शुभ, शीतलनाथ के हुए महान।
'अनगारादिक' अन्य मुनीश्वर, का हम करते हैं सम्मान।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।10।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शीतलनाथस्य 'अनगारादि' एकाशीतिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सौधर्मादिक' रहे सतत्तर, जिन श्रेयांस के गणधर साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।11।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री श्रेयांसनाथस्य 'सौधर्मादि' सप्तसप्तति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंदर आदिक छियासठ शुभ, गणधर वासुपूज्य के साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।12।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वासुपूज्यस्य 'मंदरादि' षट्वष्टिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल नाथ के 'जयक' आदि शुभ, पचपन गणधर रहे महान।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।13।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री विमलनाथस्य 'जयादि' पंचपंचाशत गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्त जिनवर के गणधर, आगम में बतलाए पचास।
'अरिष्टादिक' कई अन्य मुनीश्वर, के पद में हो मेरा वास।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।14।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अनन्तनाथस्य 'अरिष्टादिक' पंचाशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अरिष्ट सेनादिक' तैतालिस, धर्मनाथ के कहे गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।15।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री धर्मनाथस्य 'अरिष्टसेनादि' त्रिचत्वारिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ स्वामी के गणधर, 'चक्रायुध' आदिक छत्तीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।16।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शांतिनाथस्य 'चक्रायुधादि' षट्त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ जिनवर के गणधर, 'अमृतसेनादिक' पैतीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।17।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री कुंथुनाथस्य 'अमृतसेनादि' पंचत्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ जिनवर के गणधर, 'श्री सुषेण' आदिक थे तीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।18।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अरहनाथस्य 'श्री सुषेणादि' त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ जिनवर के गणधर, 'श्री विशाख' आदिक अठबीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।19।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मल्लिनाथस्य 'विशाखाचार्यादि' अष्टाविंशति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के गणधर जानो, अष्टादश 'धारण' आदी।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, हरते है सबकी व्याधी।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।20।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मुनिसुव्रतनाथस्य 'धारण' आदि अष्टादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ के सत्रह गणधर, जानो भाई 'सोमादी'।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, हरते हैं सबकी व्याधी।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।21।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नमिनाथस्य 'सोमादि' सप्तदश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वरदत्तादिक' ग्यारह गणधर, नेमिनाथ के साथ कहे।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के चरणों मम माथ रहे।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।22।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नेमिनाथस्य 'वरदत्तादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर श्रेष्ठ 'स्वयंभू आदिक, पार्श्वनाथ के दश जानो।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, मुनियों को भी पहिचानो।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।23।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पार्श्वनाथस्य 'स्वयंभ्वादि' दश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इन्द्रभूति' आदिक गणधर थे, ग्यारह महावीर के साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के पद झुका रहे हम माथ।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।24।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री महावीरनाथस्य 'इन्द्रभूत्यादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर चौबिस के गणधर, चौदह सौ बावन जानो।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाने वाले, शुभ मंगलकारी मानो।।
मोक्षमार्ग के राही अनुपम, अतिशयकारी रहे ऋशीष।
अर्घ्य चढ़ाकर उनके चरणों, झुका रहे हम अपना शीश।।25।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वृषभादि द्विपञ्चाशदिधक चतुर्दशशत गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप- ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर गणधर मुनी, होते पूज्य त्रिकाल।
चौंसठ ऋद्धीवान की, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

परिशुद्ध हृदय जिनका निर्मल, गुणगण के अनुपम कोष रहे।
तीर्थंकर जिनके गणनायक, आगम में गणधर देव कहे।।
जो मति श्रुत अवधि मनःपर्यय, शुभ चार ज्ञान के धारी हैं।
जो भौतिक तत्त्वों के ज्ञाता, अरु पूर्ण रूप अविकारी हैं।।1।।
धर स्याद्वाद ज्ञान की गंगा, पर मत का खण्डन करते हैं।
अनेकांत गुण पाने वाले, गुरु पञ्च महाव्रत धरते हैं।।

जो अंग पूर्व के धारी हैं, अष्टांग निमित्त के ज्ञाता हैं।
शुभ दिव्य देशना झेल रहे, जग में भव्यों के त्राता हैं।।2।।
गुरु अष्ट ऋद्धि के धारी हैं, जिन प्रज्ञा श्रमण कहाते हैं।
शुभ स्वप्न शकुन ज्योतिष ज्ञाता, तन परमौदारिक पाते हैं।।
जो अनेकांत के धारी हैं, एकान्त ध्यान में लीन रहे।
हैं परम अहिंसा व्रतधारी, गणधर जिनेन्द्र के श्रेष्ठ कहे।।3।।
गुरु घोर पराक्रम के धारी, जो घोर परीषह सहते हैं।
हर एक विषमता को सहकर, जो शान्त भाव से रहते हैं।।
तीर्थंकर जिन के दिव्य वचन, ॐकार रूप से आते हैं।
किरणों की प्रखर रोशनी सम, गणधर में आन समाते हैं।।4।।
जिन वचन महोदधि है अनन्त, जिसका होता न अंत कहीं।
शत् इन्द्र चक्रवर्ति आदी, जिन संत समझते पूर्ण नहीं।।
गणधर गूंथित जैनागम ही, भवि जीवों का ज्ञान प्रदाता है।
रत्नत्रय धर्म प्रदायक है, जो मोक्ष महल का दाता है।।5।।
जिनधर्म धारकर भवि प्राणी, कर्मों का पूर्ण विनाश करें।
फिर अनन्त चतुष्टय को पाकर, जिन केवल ज्ञान प्रकाश करें।।
हम तीन काल के तीर्थंकर, गणधर को शीश झुकाते हैं।
अब गुण पाने जिन गणधर के, हम चरण-शरण को पाते हैं।।6।।

(छन्द घत्तानन्द)

जिन पद अनुगामी, गणधर स्वामी, मोक्षमार्ग के पथगामी।
जय गण के स्वामी, तुम्हें नमामी, द्रव्य भाव श्रुतधर नामी।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां श्री वृषभसेनादि एक सहस्र चतुर्शतक द्विपंचाशत गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

तीर्थंकर के पद नमूँ, गणधर करूँ प्रणाम।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, पाऊँ मुक्तीधाम।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जाप- ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिनव कल्पतरू स्वयंभू जिनाय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- अभिनव कल्पतरु कहे, मंगलमय भगवान।
जयमाला गाते यहाँ, करने निज कल्याण।।

शम्भू छन्द

अभिनव कल्पतरु शुभकारी, तीन लोक में रहे महान्।
श्रेष्ठ सर्वतोभद्र स्वयंभू, का हम करते हैं गुणगान।।
ऋद्धि-सिद्धि के धाम कहे जो, प्रभु लोकोत्तर शक्तीवान।
अनुपम वैभव के धारी हैं, सर्व तत्त्व का पाए ज्ञान।।1
जो देवत्व प्राप्त कीन्हे हैं, नव देवों का महति महान्।
महामंत्र गर्भित है जिनमें, तीन लोक का श्रेष्ठ प्रधान।।
तीर्थंकर चौबिस हैं भाई, काल तीन के अपरम्पार।
स्वयं स्वयंभू गुण के आगर, होते जग में मंगलकार।।2
सोलह कारण भव्य भावना, भाते हैं आगम अनुसार।
दश धर्मों का पालन करते, संयम धारी विस्मयकार।।
चिंचित चिंता के निधान जो, सहस्रनाम का जिसमें गान।
श्री जिनसेन स्वयं ही कीन्हें, भक्ति सहित जिनका यशगान।।3
बल-बुद्धी यश का विकास हो, शत्रू दल का होय विनाश।
भाव सहित भक्ती करने से, भक्तों की हो पूरी आश।।
पञ्चकल्याणक जिनने पाए, वह करते जग का कल्याण।
भक्ती का सागर लहराए, ऐसा है यह श्रेष्ठ विधान।।4
निज के गुण में लीन रहे प्रभु, कर्म कालिमा हरते हैं।
रत्नत्रय की ज्योति जगाकर, कोष पुण्य से भरते हैं।।
शुद्ध भाव को पाने वाले, शुद्ध गुणों के दाता हैं।
भविजन के उपकारी अनुपम, विधि के आप विधाता हैं।।5

(घत्ता छन्द)

जय-जय उपकारी संयमधारी, जिन अविकारी भव हारी।
जय करुणधारी संकटहारी, शिव करतारी अविकारी।।

ॐ ह्रीं अभिनवकल्पतरु स्वयंभू जिनेन्द्र जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा अभिनव कल्पतरु, पूर्ण हुई यह आज।
पुष्पाञ्जलि करने खड़ी, मिलकर सकल समाज।।
भाव सुमन लेकर यहाँ, आए हे जगदीश !।
तीन योग से मिल सभी, झुका रहे हैं शीश।।
मन मंदिर में आन के, हमको दो आशीष।
'विशद' भाव से तव चरण, झुका रहे हम शीश।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलि क्षिपामि)

प्रशस्ति

भरत क्षेत्र में देश शुभ, भारत जिसका नाम।
हरियाणा शुभ प्रांत है, हरियाली का धाम।।
तीर्थ तिजारा के निकट, शोभित है स्थान।
रेवाड़ी शुभ जिला है, जिसकी अलग है शान।।
दो हजार ग्यारह शुभम्, कीन्हा वर्षायोग।
पूजा लिखने का यहाँ, बना श्रेष्ठ संयोग।।
अभिनव कल्पतरु शुभम्, है विधान का नाम।
जिनवर के आशीष का, है सारा यह काम।।
वीर निर्वाण पच्चीस सौ, सैंतिस रहा महान्।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, पार्श्वनाथ निर्वाण।।
समय लगे शुभ योग में, लेखन कीन्हा कार्य।
पूजन भक्ती अर्चना, करें सभी जन आर्य।।
अर्हन्तों के चरण में, रहे सदा ही ध्यान।
सिद्धों का मुख से मेरे, होय सदा गुणगान।।
आचार्यों की वंदना, करते रहें त्रिकाल।
उपाध्याय के पद युगल, में वन्दन नत भाल।।

सर्व साधु के ध्यान से, जागे आतम ज्ञान।
जागे मेरे हृदय में, वीतराग विज्ञान।।
भूल-चूक को भूलकर, होय धर्म का ध्यान।
मेरी अन्तिम भावना, शीघ्र होय निर्वाण।।
सुख शान्तिमय शुभ रहे, सारा यह संसार।
राग त्याग कर हम बनें, 'विशद' शीघ्र अनगार।।

तीर्थंकर की आरती

तर्ज– आज करें श्री विशदसागर की...

आज करें जिन तीर्थंकर की, आरती अतिशयकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, जिनवर के दरबार।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....
सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाई।
शुभ तीर्थंकर प्रकृति पद में, तीर्थंकर के पाई।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।1।।
मिथ्या कर्म नाशकर क्षायक, सम्यक्दर्शन पाया।
प्रबल पुण्य का योग प्रभू के, शुभ जीवन में आया।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।2।।
गर्भ जन्मकल्याणक आदिक, आकर देव मनाते।
केवलज्ञान प्रकट होने पर, समवशरण बनवाते।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।3।।
समवशरण के मध्य प्रभु की, शोभा है मनहारी।
उभय लक्ष्मी से सज्जित है, महिमा अतिशयकारी।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।4।।
सर्व कर्म को नाश प्रभु जी, मोक्ष महल में जाते।
'विशद' सौख्य में लीन हुए फिर, लौट कभी न आते।।

हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।5।।
तीर्थंकर पद सर्वश्रेष्ठ है, उसको तुमने पाया।
उस पदवी को पाने हेतू, मेरा मन ललचाया।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।6।।
नाथ आपकी आरती करके, उसके फल को पाएँ।
जगत् वास को छोड़ प्रभु जी, मोक्ष महल को पाएँ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।7।।

आरती अभिनव कल्पतरु

तर्ज–ॐ जय महावीर प्रभो...

ॐ जय अभिनव कल्पतरू, स्वामी अभिनव कल्पतरू।
परम स्वयंभू जिन की, आरती आज करूँ।
ॐ जय अभिनव..
प्रथम आरती देव–शास्त्र–गुरु, की करते भाई।
जो हैं मोक्ष मार्ग के दाता, जग मंगलदायी।।
ॐ जय अभिनव..
द्वितीय आरति नव देवों की, करते हम स्वामी।
अर्चा करने वाले जिन की, बनें मोक्ष गामी।।
ॐ जय अभिनव..
तृतीय आरति ऋद्धी धारी, मुनियों की करते।
भक्त बनें जो उनके प्रभू, सब संकट हरते।।
ॐ जय अभिनव..
चौथी आरती चौबिस जिन की, करने हम आये।
तीर्थंकर जिन तीन काल के, जग में कहलाए।।
ॐ जय अभिनव..
पंचम आरती सहस्रनाम की, मुक्ती पथ गामी।
अष्ट कर्म का नाश किए हैं, जिन अन्तर्यामी।।

ॐ जय अभिनव..
छठी आरती कल्पतरू की, करते हम भाई।
स्वयं स्वयंभू समवशरण में, राजें सुखदाई।।
ॐ जय अभिनव..
सप्तम आरती गणधर की सब, करें भव्य प्राणी।
'विशद' लोक में जग जीवों की, जो है कल्याणी।।
ॐ जय अभिनव..

समवशरण की आरती

आज करें हम समवशरण की, आरति मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, प्रभुवर के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, केवलज्ञान जगाया।
अनन्त चतुष्टय पाए तुमने, सुख अनन्त को पाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।

इन्द्र की आज्ञा पाकर भाई, धन कुबेर यहाँ आया।
स्वर्ण और रत्नों से सज्जित, समवशरण बनवाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।

स्वर्ग से आकर इन्द्रों ने शुभ, प्रातिहार्य प्रगटाए।
प्रभु की भक्ति अर्चा करके, सादर शीश झुकाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।

जिनबिम्बों से सज्जित अनुपम, अष्ट भूमियाँ जानो।
श्रेष्ठ सभाएँ सुर नर मुनि की, विस्मयकारी मानो।।

हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।

xa/ dqVh ds Åij ftuoj]
deyk'ku ij lksgsA
ohrjkx eqnzk ls ftuoj] tx
tu dkeu eksgsAA

हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।

ॐकारमय दिव्य देशना, अतिशय प्रभु सुनाए।
'विशद' पुण्य का योग मिला यह, प्रभु के दर्शन पाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री अर्हंत पूजूँ सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भाव सों।।1।।

अर्हन्त-भाषित बै न पूजूँ द्वादशांग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरन शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।

त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजत भजूँ।।4।।

कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।

चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जयि होय पति शिव गेह के।।6।।

दोहा- **जल गंधाक्षत पुष्प चरु दीप धूप फल लाय।**
सर्वपूज्य पद पूजहूँ बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करै करावै भावना भावै श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन-विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभयो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशंतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

em§{VnmR> (^mfm)

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सो आठ बिराजे, निरखत नयन कमलदल लाजै।।1।।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की बरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघको।।4।।

वसंत तिलका

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहि शांति सदा अनूप।।5।।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा–प्रजा राष्ट्रसुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांति को दे।।6।।

स्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुखबल युत धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समे पे तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा।।
होवे चोरी न जारी सुसमय वरते हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारै जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी।।7।।

दोहा– घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में वृषभादिक जिनराज।।8।।

अथेष्टक प्रार्थना (मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढांकुं सभी का।।
बोलु प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं।
तोलों सेऊं चरण जिनके मोक्ष जौलों न पाऊं।।1।।

आर्या छन्द

तब पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने।।10।।

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुःख से।।11।।

हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मोंका क्षय हो सुबोध सुखकारी।।12।।

(परिपुष्पांजलि क्षेपण) यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिए।

इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा

चौपाई

मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहुविधि भक्ति करो मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि।।

कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेवा भवसागर तरुं।।

नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव।।

जिनपूजा तें सब सुख होय, जिनपूजा सम और न कोय।
जिनपूजा तें स्वर्ग विमान, अनुक्रमतें पावे निर्वाण।।

मैं आयो पूजन के काज, मेरे जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश।।

दोहा

सुख देना दुःख मेटना, यही आपकी बान।
मो गरीब की विनती, सुन लिज्यो भगवान।।

पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावे मोक्ष निदान।।

जैसी महिमा तुम विषें, और धरे नहिं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहि तारगण होय।।

नाथ तिहारे नामते अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाशतें, अन्धकार विनशाय।।

बहुत प्रशंसा क्या करूँ मैं प्रभु बहुत अजान।
पूजाविधि जानूं नहीं शरण राखो भगवान।।

इस अपार संसार में शरण नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तव पद भक्तको भक्ति सहाई होय।।

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोई।
आप प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरण होय।।1।।

पूजनविधि जानूँ नहीं, नहीं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।2।।

मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव।।3।।

आये जो-जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते सब मेरे मन बसो, चौबीसों भगवान।।4।।

इत्याशीर्वादः।

आशिका लेना

श्रीजिनवर की आशिका, लीजै शीश चढ़ाय।
भव-भवके पातक कटे, दुःख दूर हो जाय।।1।।

***

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं

निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥

बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तु हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिग बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति किया जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तु हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रीं क्त आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

**जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....**

**ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....**

**सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....**

**जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....**

**धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।**

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मनः स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
46. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पञ्च विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान

55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पञ्चमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान
60. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
61. श्री दशलक्षण धर्म विधान
62. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
63. श्री सिद्धचक्र विधान
64. विशद अभिनव कल्पतरू विधान